मुहूर्तप्रकाश



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन

॥ श्रीः ॥

मुहूर्त्तप्रकाशः

—: अथवा :—

चतुर्थीलालप्रकाशः ।

वसिष्ठ, गर्ग, नारद, पराशर, भृगु, बृहस्पति, कश्यपादि-
महर्षिप्रणीतसंहिताभ्यो राजमार्त्तण्डादिप्राचीननिबन्धे-
भ्यश्च सारमादाय लोकोपकारार्थं बालबोधार्थश्च
पण्डित—वैद्य—श्रीचतुर्थीलाल (चौथमल)
शर्म्मणा विरचितः ।

स्वनिर्मितया चतुर्थीलालीभाषाटीकया
समलङ्कृतश्च ।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

संस्करण : फरवरी २०१६, सवंत् २०७२

मूल्य : २०० रुपये मात्र ।

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

भूमिका ।

विदित हो कि-वर्तमान समयमें अनेक प्रकारके ज्योतिष ग्रन्थ प्राचीन व उनके अनुसार आधुनिक बन बन कर छपगये हैं परन्तु मुहूर्त्त विषयका कोई भी ऐसा अनुपम ग्रन्थ देखनेमें नहीं आता, कि जिसके द्वारा प्रत्येक प्रकारके मुहूर्त्त सर्वशास्त्रोक्त सर्वसाधारण जन निकाल सकें अर्थात् अपना काम चला सकें । जिन भूदेवगणोंको मुहूर्त निकालनेका काम अधिकताके साथ रहता है उनको शीघ्रबोध मुहूर्तगणपति आदि अनेक प्रकारके ग्रंथ खरीदनेपर भी उनका काम भलीभांति नहीं चल सकता. दूसरे मुहूर्तविषयके जो ग्रन्थ संस्कृतके छपे हैं उनसे सिवाय संस्कृतज्ञ विद्वानोंके किसी साधारण बुद्धिवाले ब्राह्मणदेवताका काम नहीं चल सकता;इत्यादि कारणोंसे जिसमें सर्वसिद्धान्तोंके अनुसार सर्व प्रकारके मुहूर्त निकालना अत्यन्त सरलताके साथ लिखा हो और जिसको पढ़कर साधारण बुद्धिका धारक भी प्रत्येक प्रकारका मुहूर्त बातकी बातमें निकाल ले और अपना काम चला ले. इसप्रकार हमारे कई विद्वज्जन मित्रोंने अनुरोध किया तो उन सबकी आज्ञा शिरोधारण कर यह " मुहूर्तप्रकाश " अपरनाम चतुर्थीलालप्रकाश नामका ग्रन्थ वशिष्ठ, नारद, पराशर, भृगु, कश्यप और गर्गादि संहिता व राजमार्तण्डादि अनेक प्राचीन ग्रन्थोंके अनुसार संग्रह किया है. जिसमें संज्ञा १, त्याज्य २, नानामुहूर्त ३, गोचर ४, संस्कार ५, विवाह ६, यात्रा ७, वास्तु ८ और मिश्रित ९ ये नव प्रकरण विस्तारपूर्वक जहांतक मुझसे बना उक्त महाशयोंके अभिप्रायानुसार सरलताके साथ हिन्दीभाषाटीका सहित लिखे हैं. यदि इस ग्रन्थके प्रकाशित होनेसे हमारे सजातीय भूदेवगणोंका कुछ भी उपकार साधन हुआ तो मेरा व प्रकाशक महाशयका परिश्रम व व्यय सफल समझा जायगा.

अनुष्ठानप्रकाश, गौडीयश्राद्धप्रकाश, जलाशयोत्सर्गप्रकाश, तुलसीविवाहपद्धति, नित्यकर्मप्रयोगमाला, व्रतोद्यापनप्रकाश, विवाहपद्धति, शान्तिप्रकाश, सर्वदेवप्रतिष्ठाप्रकाश, संस्कारप्रकाश, आदि स्वनिर्मितग्रन्थोंके समान इस ग्रन्थके छापने बेचने आदिका भी सर्वाधिकार सहर्ष हमने सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजी बम्बईस्थित " श्रीवेङ्कटेश्वर " यन्त्रालयाधिकारीको दे दिया है. इसलिये और कोई इसके मुद्रणादिका साहस न करें नहीं तो लाभके बदले क्षति उठानी पडेगी.

रतनगढ़
ता० २९-१-१९००

द्विजातिहितैषी-
पंडित चतुर्थीलालशर्मा.

धन्यवाद पत्र ।

यह मुहूर्त्तप्रकाश ग्रन्थ पण्डित चतुर्थीलालजीने सं० १९६७ में निर्मित किया था. इसकी द्वितीयावृत्तिसे सदाके लिये छापने आदिका अधिकार उक्त पण्डितजीने हमको दिया है, हम इसके लिये पण्डिजीको सहर्ष अनेक धन्यवाद देते हैं,इस आवृत्तिमें पण्डितजीने इसको और भी शुद्ध किया है, आशा है कि गुणग्राहक लोग इससे और भी अधिक लाभ उठावेंगे ।

आपके रचित ग्रन्थोंको देखकर विद्वान्लोग बहुत प्रसन्न होकर धन्यवाद देते हैं और कर्मठलोग तो आपके निर्मित ग्रन्थोंके उपयोगसे लाभ उठाते हुए चिरकाल उपकृत हैं ।

आपका—

खेमराज श्रीकृष्णदास.

अथ मुहूर्तप्रकाशपूर्वार्द्धस्य विषयानुक्रमणिका प्रारभ्यते ।

नानामुहूर्तप्रकरणम् ४.

इति मुहूर्त्तप्रकाशपूर्वार्द्धस्य विषयानुक्रमणिका समाप्ता।

अथ मुहूर्तप्रकाशोत्तरार्द्धस्थयंत्राणां विषयानुक्रमणिका ।

इति मुहूर्त्तप्रकाशोत्तरार्द्धस्थयन्त्राणां विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीः ॥

अथ मुहूर्त्तप्रकाशः ।

भाषाटीकासहितः ।

(पूर्वार्धम्)

संज्ञाप्रकरणम् १ ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ प्रणम्य विश्वेश्वरमिष्टदेवं दृष्ट्वा वसिष्ठादिकृताश्च संहिताः । बालप्रबोधाय करोमि ग्रन्थं मुहूर्तकाशं सुगमं समासतः ॥ १ ॥ तावत्संवत्सरपरिज्ञानम् । विक्रमादित्यशाकस्य पञ्चत्रिंशाधिके शते । शोधिते जायते शाकश्चैत्रशुक्लादितः क्रमात् ॥ २ ॥ अथ प्रभवादिसंवत्सरज्ञानम् । शकेन्द्रकालः पृथगाकृति २२ घ्नः शशांकनंदाब्धियुगैः ४२९१ समेतः । शराद्रिवस्विंदु १८७५ हृतः सलब्धः षष्ट्यावशिष्टाः प्रभवादयोऽब्दाः ॥ ३ ॥ अथायनसंज्ञा । मकराद्राशिषट्केऽर्के प्रोक्तं चैवोत्तरायणम् । षट्सु कर्कादिति ज्ञेयं दक्षिणं ह्ययन रवेः ॥ ४ ॥ अथ ऋतुसंज्ञा । मीनमेषगते सूर्ये वसन्तः परिकीर्तितः । वृषभे मिथुने ग्रीष्मो वर्षासिंहेऽथ कर्कटे ॥ ५ ॥ कन्यायां च तुलायां च शरदृतुरुदाहृतः । हेमन्तो वृश्चिकद्वन्द्वे शिशिरो मृगकुम्भयोः ॥ ६ ॥

अथ भाषाभावार्थो लिख्यते । प्रथम ग्रंथकर्ता शिष्टाचारको अंगीकार करके ग्रंथके निर्विघ्नतापूर्वक समाप्तिके अर्थ नमस्कारात्मक मंगलाचरण करता है, (प्रणम्य इति) विश्वका ईश्वर और हमारा इष्टदेव विश्वेश्वर है, उनको नमस्कार करके तथा वशिष्ठ-नारद-गर्ग-पराशर-भृगु आदि महर्षिकृत संहिताओंको देख करके यह ज्योतिषका "मुहूर्त्तप्रकाश" नाम ग्रंथ अतिसुगम और संक्षेपसे बालकोंके बोधके अर्थ करता हूं ॥ १ ॥ (तत्रादौ संवत्सरज्ञानम्) विक्रमादित्यके वर्त्तमान संवत्में से १३५ निकाल ले तो शालिवाहनक शक निकल आता है । यह शक चैत्र शुक्ल प्रतिपदासे जानना चाहिये ॥ २ ॥ (प्रभवादिसंवत्सरज्ञानम्) वर्तमान शकको बाईस २२ से गुणा करे फिर ४२९१ करके संयुक्त करे और १८७५ से भाग दे, फिर जो लब्ध हो उसे अंकके साथ वर्तमान शकको जोडे, फिर ६० का भाग दे, जो शेष रहे हुए

अंक हैं उनको प्रभवादि गत संवत्सर जानना ॥ ३ ॥ ॥ (अयनसंज्ञा) मकरसे लेके छः राशियोंमें सूर्य होनेसे उत्तरायण कहलाता है और कर्कादि छः राशियोंपर सूर्य होनेसे दक्षिणायण जानना चाहिये ॥ ४ ॥ (ऋतुसंज्ञा) मीन १२ मेष १ का सूर्य होनेसे वसंतऋतु, वृष २ मिथुन ३ के सूर्यसे ग्रीष्मऋतु और कर्क ४ सिंह ५ के सूर्यसे वर्षाऋतु होती है ॥ ५ ॥ कन्या ६ तुला ७ के सूर्यसे शरदृऋतु, वृश्चिक ८ धन ९ के सूर्यमें हेमंत और मकर १० कुंभ ११ में सूर्य होनेसे शिशिरऋतु कहते हैं ॥ ६ ॥

अथ माससंज्ञा । मासश्चैत्रोऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढसंज्ञकः ततस्तु श्रावणो भाद्रपदाथोऽश्विनसंज्ञकः ॥ ७ ॥ कार्त्तिको मार्गशीर्षश्च पौषो माघोऽथ फाल्गुनः । मासो दर्शावधिश्चांद्रः सौरः संक्रमणाद्रवेः ॥ ८ ॥ त्रिंशद्दिनः सावनिको नाक्षत्रो विधुसंभ्रमात् । चांद्रस्तु द्विविधो मासो दर्शांतः पौर्णिमांतिमः ॥ ९ ॥ अथ तिथिसंज्ञा ॥ प्रतिपच्च द्वितीया च तृतीया तदनन्तरम् । चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥ १० ॥ नवमी दशमी चैवकादशी द्वादशी ततः । त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी ॥ पूर्णिमा शुक्लपक्षेऽन्त्या कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता ॥ ११ ॥

(माससंज्ञा) चैत्र १, वैशाख २, ज्येष्ठ ३, आषाढ ४, श्रावण, ५, भाद्रपद ६, आश्विन ७, कार्त्तिक ८, मार्गशिर ९, पौष १०, माघ ११ और फाल्गुन १२ यह बारह मास हैं । अमावास्या अन्तमें होनेसे चांद्रमास और सूर्यकी संक्रातिसे सौर मास कहा है ॥ ७ ॥ ८ ॥ तीस दिनके मासकी सावनिक संज्ञा है और चन्द्रमासे नाक्षत्रसंज्ञा होती है । चांद्रमास भी दो प्रकारके हैं—एक तो अमावास्या अंतका, दूसरा पूर्णिमाके अंतका ॥ ९ ॥ (तिथिसंज्ञा) प्रतिपदा १, द्वितीया २, तृतीया ३, चतुर्थी ४, पंचमी ५, षष्ठी ६, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नवमी ९, दशमी १० एका-दशी ११, द्वादशी १२, त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, शुक्लपक्षके अंतमें पूर्णिमा १५ और कृष्णपक्षके अन्तमें अमावास्या ३० होती है ॥ १० ॥ ११ ॥

अथ तिथीशाः । तिथीशा वह्निकौ गौरी गणेशोऽहिर्गुहो रविः ॥ १२ ॥ शिवो दुर्गाऽन्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी । अमावास्यातिथेरीशाः पितरः संप्रकीर्तिताः ॥ १३ ॥ अथ नन्दादिसंज्ञा । नन्दाभद्राजयारिक्तापूर्णाश्च तिथयः क्रमात् । वारत्रयं समावर्त्य तिथयः प्रतिपन्मुखाः ॥ १४ ॥ अथ वारसंज्ञा । आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ।

शुक्रश्शनैश्वरश्चैते वारेशाः परिकीर्तिताः ॥ १५ ॥ शिवो दुर्गा गुहो विष्णु-
र्ब्रह्मेन्द्रः कालसंज्ञकः । सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ १६॥
अथ शुभाशुभसंज्ञा । गुरुश्चन्द्रो बुधः शुक्रः शुभा वाराः शुभे स्मृताः ।
क्रूरास्तु क्रूरकृत्येषु ग्राह्या भौमार्कसूर्यजाः ॥ १७ ॥ अथ स्थिरचर-
संज्ञा । स्थिरः सूर्यश्चरश्चन्द्रो भौमश्चोग्रो बुधः समः । लघुर्जीवो मृदुः
शुक्रः शनिस्तीक्ष्णः समीरितः ॥ १८ ॥

(तिथीनामधिपतयः) प्रतिपदासे लेके सोलह तिथियोंके क्रमसे अधिपति जानना । प्रतिपदाके अग्नि स्वामी १, द्वितीयाके ब्रह्मा २, तृतीयाके गौरी ३, चतुर्थीके गणेश ४, पंचमीके सर्प ५, षष्ठीके स्वामिकार्तिक ६, सप्तमीके सूर्य ७ ॥ १२ ॥ अष्टमीके शिव ८, नवमीके दुर्गा ९, दशमीके काल १०, एकादशीके विश्वेदेव ११, द्वादशीके विष्णु १२, त्रयोदशीके कामदेव १३, चतुर्दशीके शिव १४, पूर्णिमाके चन्द्रमा १५ और अमावस्याके पितर अधिपति जानना ॥ १३ ॥ (नंदादिसंज्ञा) प्रतिपदासे लेके तीन वेर गिननेसे नन्दा आदि तिथियोंकी संज्ञा होती है, जैसे १ । ६ । ११ नन्दा, २ । ७ । १२ भद्रा, ३ । ८ । १३ जया, ४ । ९ । १४ रिक्ता, ५ । १० । १५ । पूर्णा जानना ॥ १४ ॥ (वारसंज्ञा आदित्यवार १, सोम २, मंगल ३, बुध ४, बृहस्पति ५, शुक्र ६, शनैश्चर ७ यह सात वार हैं ॥ १५ ॥ आदित्यवारके शिव अधिपति, सोमके दुर्गा, भौमके स्वामिकार्तिक, बुधके विष्णु, गुरुके ब्रह्मा, शुक्रके इंद्र, शनिके काल स्वामी हैं ॥ १६ ॥ (शुभाशुभसंज्ञा) गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र यह शुभ कर्मके योग्य शुभवार है और भौम, आदित्य, शनि क्रूरकामके योग्य क्रूर वार जानना ॥१७॥ (स्थिरचरसंज्ञा) सूर्य स्थिरसंज्ञक है, चन्द्रमा चर मंगल उग्र, बुध सम, गुरु लघुसंज्ञक, शुक्र मृदु, शनि तीक्ष्ण संज्ञावाले हैं ॥ १८ ॥

अथ नक्षत्रनामानि । अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः ।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघा तथा ॥ १९ ॥ पूर्वाफाल्गुनिका
तस्मादुत्तराफाल्गुनी ततः । हस्तश्चित्रा तथा स्वातिर्विशाखा तदनन्त-
रम् ॥ २० ॥ अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते । पूर्वाषाढोत्तरा-
षाढा त्वभिजिच्छ्रवणस्ततः । धनिष्ठा शततारााख्या पूर्वाभाद्रपदा ततः ।
उत्तराभाद्रपच्चैव रेवत्येतानि भानि च ॥ २१ ॥ अथ नक्षत्रेशाः । दस्रो
यमोऽनलो धाता चन्द्रो रुद्रोऽदितिर्गुरुः । भुजंगमश्च पितरो भगोऽर्यमदि-

षाकरी ॥ २२ ॥ त्वष्टा वायुश्च शक्राग्नी मित्रः शक्रश्च नैर्ऋतिः । जलं विश्वे विधिर्विष्णुर्वासवो वरुणस्तथा ॥ २३ ॥ अजैकपादहिर्बुध्न्यः पूषेति कथितो बुधैः । अष्टाविंशतिसंख्यानां नक्षत्राणामधीश्वराः ॥ २४ ॥

(नक्षत्रनाम) अ. भ. कृ. रो. मृ. आ. पु. पु. आ. मघा. पू. फा. उ. फा. ह. चि. स्वा. वि. अनु. ज्ये. मू. पू. षा. उ. षा. अभि. श्र. ध, श. पु. भा. उ. भा रे. यह अठाईस नक्षत्र हैं ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ (नक्षत्रस्वामी) अश्विनीका अश्विनीकुमार स्वामी १, भरणीका यमराज २, कृत्तिकाका अग्नि ३. रो. ब्रह्मा ४. मृ, चंद्रमा ५, आ. शिव ६, पुन. अदिती ७, पुष्य. आंगिरा ८, आश्ले. सर्प ९, म. पितर १०, पू. भग ११, उ. अर्यमा १२, ह. रवि १३. चि. त्वष्टा १४, स्वा. वायु १५, वि. इंद्राग्नी १६, अनु. मित्र १७, ज्ये. इंद्र १८ मू. निर्ऋति १९, पू. जल २०, उ. विश्वेदेवा २१, अ. विधि २२, श्र. विष्णु २३, ध. वसु २४, श वरुण २५, पू. अजैकपाद् २६ उ. अहिर्बुध्न्य २७ और रेवतीका पूषा २८ स्वामी जानना ॥ २२–२४ ॥

अथ ध्रुवस्थिरादिसंज्ञा ।ध्रुवं स्थिरामिति स्यातं रोहिणी चोत्तरात्रयम् । मृगाश्वत्राऽनुराधा च रेवती मृदु मैत्रकम् ॥ २५ ॥ पुष्याश्विन्यभिजिद्धस्तं लघु क्षिप्रमुदाहृतम् । ज्येष्ठाऽऽर्द्रा मूलमाश्लेषा तीक्ष्णं दारुणमुच्यते ॥ २६ ॥ श्रवणादित्रिभं स्वाति पुनर्वसु चरं चलम् । भरणी च मघा पूर्वा क्रूरमुग्रमुदाहृतम् ॥ विशाखा कृत्तिका चैव मिश्रं साधारणं स्मृतम् ॥ २७ ॥ अथाधऊर्ध्वतिर्यङ्मुखनक्षत्राणि । मूलाश्लेषा मघा पूर्वा विशाखा भरणीद्वयम् । अधोमुखानि भान्यत्र कर्म कुर्यादधोमुखम् ॥ २८ ॥ पुनर्वस्वनुराधाख्यं ज्येष्ठा हस्तत्रयं मृगः । रेवतीद्वितयं तिर्यग्वक्त्रं तस्मिंस्तथा क्रियाः ॥ २९ ॥ उत्तरा रोहिणी चैव पुष्यार्द्रा श्रवणत्रयम् । एतान्यूर्ध्वमुखान्यत्र कर्मोक्तं तादृशं बुधैः ॥ ६० ॥

(ध्रुवस्थिरादिसंज्ञा) रो. तीनों उत्तरा ध्रुव स्थिर संज्ञक हैं, मृ, चि. अनु. रे. उत्तरा मृदु मैत्र संज्ञक हैं ॥२५॥ पुष्य, अश्विनी, अभिजित्, हस्त इनकी लघु क्षिप्र संज्ञा है और ज्ये. आ. मू. आश्लेषा, इनकी तीक्ष्ण संज्ञा है ॥ २६ ॥ श्र. ध. श. स्वा. पुन. यह चर चल हैं । भ. मघा. पूर्वा तीनों यह क्रूर तथा उग्र संज्ञक हैं । वि. कृ. यह मिश्र साधारण संज्ञावाले हैं ॥ २७ ॥ (अधऊर्ध्वतिर्यङ्मुखनक्षत्र) मू. आश्ले. मघा पूर्वा तीनों, वि. भ. कृ. यह अधोमुख नक्षत्र हैं इनमें खात आदि कार्य करना योग्य

है ॥ २८ ॥ पुन. अनु. ज्ये. ह. चि. स्वा. मृ. रे. अश्वि. इनका टेढा मुख है सो ऐसा ही कार्य करना चाहिये ॥ २९ ॥ उ. ३, रो. पुष्य. आर्द्रा, श्र. ध. श. इन नक्षत्रोंका ऊपरको मुख है सो इनमें खात भरण आदिका कार्य करना ॥ ३० ॥

अथाश्विन्यादिभानां तारकासंख्या । रामा ३ त्रि ३ ऋतु ६ बाणा ५ त्रि ३ भू १ वेदा ४ त्रि ३ शरे५षवः ५ । नेत्र २ बाहु २ शरें द्विं १ द्रु १ युग ४ वेदा४त्रि ३ शंकराः ११ । द्वय २ शिव २ राम ३ रामा ३ ब्धि४शतं १०० बाहु २ क्षणं२रदाः ३२ । अश्विनीप्रमुखानां च तारासंख्या यथाक्रमम् ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ अथ अंधादिसंज्ञा । अंधाक्षश्चिपटाक्षश्च काणाक्षो दिव्यलोचनः । गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥ ३३ ॥ अंधे चौरहृतं द्रव्यं लभेद्यत्नात्तु केकरे । काणाक्षे श्रवणं याति दिव्यनेत्रे न किंचन ॥ ३४ ॥ अंधे च लभते शीघ्रं काणे चैव दिनत्रयम् । चिपटे मासमेकं तु सुलोचे च न लभ्यते ॥ ३५ ॥ अंधे पूर्वं गतं वस्तु काणे चैव तु दक्षिणे । चिपटे पश्चिमायां तु सुलोचे चैव उत्तरे ॥ ३६ ॥

(नक्षत्रोंके तारोंकी संख्या) अश्विनीका ३, भ. ३ कृ. ६, रो. ५, मृ. ३, आ. १, पु. ४, पु. ३, आश्ले. ५, म. ५, पू. फा. २, उ. फा. २, ह. ५, चि. १ स्वा. १, वि. ४, अनु. ४, ज्ये. ३, मू. ११, पू. षा. २, उ. षा. २, अ. ३, श्र. ३, ध. ४, शनि. १००, पू. भा. २, उ. भा. २ और रेवतीका ३२ तारा जानना ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ (अंधादिसंज्ञा) रोहिणीसे लेकर अट्ठाईस नक्षत्रोंकी क्रमसे अन्धाक्ष–चिपटाक्ष-काणाक्ष-दिव्यलोचन-यह चार संज्ञा जाननी ॥ ३३ ॥ अन्धसंज्ञक नक्षत्रोंमें गया हुआ धन शीघ्र मिलता है, चिपटाक्ष (केकर) में गया हुआ यत्नसे मिलेगा, काणाक्षका धन सुननेमें आता है और दिव्यलोचनमें गया हुआ धन कदापि नहीं मिलता है ॥ ३४ ॥ अन्धाक्षका शीघ्र धन मिले और काणाक्षका तीन ३ दिनसे मिले, चिपटाक्षका एक १ माससे और सुलोचनका मिलता ही नहीं है ॥ ३५ ॥ अन्धाक्षमें वस्तु पूर्वको गयी जानो, काणाक्षमें दक्षिणको, चिपटाक्षमें पश्चिमको और सुलोचनमें गयी वस्तु उत्तरको जानना ॥ ३६ ॥

रो	पु	उ	वि	पू	ध	रे	अंधाक्ष.
मृ	आ	ह	अ	उ	श	अ	चिपटाक्ष.
आ	म	चि	ज्ये	अ	पू	भ	काणाक्ष.
पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	दिव्यलो०

अथ योगनामानि। विष्कंभः प्रीतिरायुष्मान् सौभाग्यः शोभनस्तथा । अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ ३७ ॥

गंडो वृद्धिर्ध्रुवश्चाथ व्याघातो हर्षणस्तथा । वज्रं सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान् परिघः शिवः ॥ ३८ ॥ सिद्धिः साध्यःशुभः शुक्लो ब्रह्मा ऐंद्रोऽथ वैधृतिः। योगानां ज्ञेयमेतेषां स्वनामसदृशं फलम् ॥ ३९ ॥ अथ करणनामानि । तिथिं च द्विगुणीकृत्य एकहीनं च कारयेत् । सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं करणमुच्यते ॥ ४० ॥ ववश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा । गरश्च वणिजो विष्टिः सप्तैतानि चराणि च॥१४॥कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले। चतुष्पादश्च नागश्च अमावास्यादलद्वये ॥४२॥ शुक्लप्रतिपदाद्यास्तु किंस्तुघ्नः प्रथमे दले । शुक्लप्रतिपदांते च ववाख्यः करणो भवेत्॥४४॥स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः । एकादशैव ज्ञेयानि चरस्थिरविभागतः॥४४॥

(योगनाम) विष्कम्भः १, प्री. २, आ. ३, सौ. ४, शो. ५, अ. ६, सु. ७, धृ. ८, शू. ९, गं. १०, वृ. ११, ध्रु. १२, व्या. १३, ह. १४, व. १५, सि. १६, व्य. १७, व. १८, प. १९, शि. २०, सि. २१, सा. २२, शु. २३, शु. २४, ब्र. २५, ऐं. २६, वैधृति २७, यह सताईस योगोंके नाम हैं और नामसदृश ही फल जानो ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ (करणनाम) वर्तमान तिथिको दूणी करके एक १ कमती करे और सातका भाग देवे शेष बचे सो करण क्रमसे जाने ॥ ४० ॥ वव १, बालव २, कौलव ३, तैतिल ४, गर ५, वणिज् ६, विष्टि (भद्रा) ७, यह सात करण हैं इनकी चर संज्ञा है ॥ ४१ ॥ कृष्णपक्षकी चतुर्दशीके पश्चात् भागमें अर्थात् पीछेकी ३० घडियोंमें शकुनि नाम करण रहता है और अमावस्याके दोनों भागमें चतुष्पाद् १, नाग २, नाम करण रहता है ॥ ४२ ॥ शुक्लपक्षकी प्रतिपदाके प्रथम भागमें किंस्तुघ्न और द्वितिय भागमें वव करण होता है ॥ ४३ ॥ यह चार करण स्थिर संज्ञक हैं और पहले कहे हुए ७ चर संज्ञावाले मिलके ग्यारह जानना ॥ ४४ ॥

अथ भद्रा । दशम्यां च तृतीयायां कृष्णपक्षे परे दले । सप्तम्यां च चतुर्दश्यां विष्टिः पूर्वदले स्मृता ॥ ४५ ॥ एकादश्यां चतुर्थ्यां च शुक्लपक्षे परे दले । अष्टम्यां पूर्णिमायां च भद्रा पूर्वदले स्मृता ॥ ४६ ॥ अथ भद्रावासस्तत्फलं च । मेषत्रयालिगे चन्द्रे भद्रा स्वर्लोकचारिणी । कन्याद्वये धनुर्युग्मे चन्द्रे भद्रा रसातले ॥ ४७ ॥ कुम्भे मीने तथा कर्के सिंहे चन्द्रे भुवि स्थिताभूर्लोकस्था सदा त्याज्या स्वर्गपातालगा शुभा ॥४८॥

(भद्राविचार) कृष्णपक्षकी दशमी १० तृतीया ३ के परदल (पिछाडीकी तीस घडियों) में भद्रा रहती हैं और सप्तमी ७ चतुर्दशी १४ की पहली तीस घडियोंमें

रहे ॥ ४९ ॥ शुक्लपक्षकी एकादशी ११ चतुर्थीके परभाग (दूसरे भाग) में और अष्टमी ८ पूर्णिमाके १५ पूर्व दलमें भद्रा जाननी चाहिये ॥ ४६ ॥ (भद्रावास और उसका फल) मेष १ वृष २ मिथुन ३ वृश्चिक ८ के चंद्रमामें स्वर्गलोकमें भद्रा रहती है । कन्या ६ तु. ७ ध. ९ म. १० के चंद्रमामें पातालमें भद्रा रहती है॥४७॥ कुं. ११ मी. १२ कर्क. ४ सिं. ५ के चंद्रमामें भूलोक (पृथ्वी) में भद्रा रहती है सो पृथ्वीमें रहनेवाली भद्रा शुभकाममें त्याज्य है और स्वर्ग, पातालमें रहनेवाली भद्रा शुभ है ॥४८॥

अथ भद्राया अंगविभागस्तत्फलं च । मुखे पञ्च ५ गले त्वेका १ वक्षस्यैकादश ११ स्मृताः । नाभौ चतस्रः ४ षट् ६ कट्यां तिस्रः ३ पुच्छाख्यनाडिकाः ॥ ४९ ॥ कार्यहानिर्मुखे मृत्युर्गले वक्षसि निःस्वता । कट्यामुन्मत्तता नाभौ च्युतिः पुच्छे ध्रुवो जयः ॥ ५० ॥ ज्ञेयं क्रमात्फलं विष्टरिदमगसम्भुद्भवम् । कार्ये त्वावश्यके विष्टेर्मुखमात्रं परित्यजेत ॥ ५१ ॥ अथ भद्रापुच्छम् । चतुर्थ्याश्चाष्टमे यामे प्रथमे चाष्टमीदिने । एकादश्यास्तथा षष्ठे पूर्णिमायास्तृतीयके ॥ ५२ ॥ सप्तमे स्याचृतीयायाः सप्तम्यास्तु द्वितीयके । दशम्याः पंचमे यामे चतुर्दश्याश्चतुर्थके । प्रांते घटात्रयं पुच्छ शुभकार्ये शुभावहम् ॥ ५३ ॥ अथ भद्रास्वरूपम् । पुरा देवासुरे युद्धे शंभुकायाद्विनिर्गता । दैत्यघ्नी रासभास्या च विष्टिर्लांगूलिनी त्रिपात् ॥ ५४ ॥ सिंहग्रीवा शवारूढा सप्तहस्ता कृशोदरी । अमरैः श्रवणप्रांते सा नियुक्ता शिवाज्ञया ॥ ५५ ॥ महोग्रा विकरालास्या पृथुदंष्ट्रा भयानका । कार्यघ्नी भुवमायाति वह्निज्वालासमाकुला ॥५६॥

(भद्राका अंगविभाग और उसका फल) पहली ५ घडी भद्राकी मुखकी है । फिर १ घडी गलेकी है । ११ घडी वक्षस्थल (छाती) की है । ४ घडी नाभिकी है । ६ घडी कटीकी है । फिर ३ घडी अंतकी (पुच्छकी) जाननी॥४९॥ मुखकी ५ घडियोंमें शुभकार्य करनेसे कार्यका नाश होता है । गलेकी १ घडी मृत्यु करती है और छातीकी ११ घडियोंमें दारिद्रता होती है । कटीकी ६ घडियोंमें पागल हो जावे और नाभिकी ४ घडी नाशकारक हैं । पुच्छकी ३ घडी जयके अर्थात् कार्यको सिद्ध करनेवाली हैं ।। ५० ॥ इस प्रकार क्रमसे भद्राके अंगकी घडियोंका फल जानके कार्य करे । यदि अतिही जरूरत हो तो भद्राके मुख मात्रकी ५ घडी ही त्याग देवे ॥ ५१ ॥ (भद्राके पुच्छकी घडी) शुक्लपक्षमें चतुर्थी ४ के आठवें ८ पहरके अंतकी तीन घडी भद्राके पूँछकी हैं और अष्टमी ८ के प्रथम १ प्रहरके अंत-

की ३ घडी भद्राके पूँछकी हैं । एकादशी ११ के छठे ६ पहरके अंतकी ३ घडी और पूर्णिमा १५ के तीसरे ३ प्रहरके अंतकी तीन ३ घडी पूँछकी जाननी चाहिये ॥ ॥ ५२ ॥ कृष्णपक्षमें तृतीया ३ के सातवें ७ पहरकी तीन ३ घडी और सप्तमी ७ को दूसरे २ पहरकी ३ घडी दशमी १० के पांचके ५ प्रहरके अंतकी ३ और चौदशके १४ के चौथे ४ प्रहरके अंतकी ३ घडी शुभकामोंके योग्य हैं ॥ ५३ ॥

भद्रा पुच्छ घटी चक्रम् ।

तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	८	१	६	६	७	२	५	४
घटी	३	३	३	३	३	३	३	३

(भद्रास्वरूप) पूर्वकालमें देव दैत्योंके युद्धमें महादेवजीके शरीरसे यह भद्रा (देवी) उत्पन्न हुई है । दैत्योंको मारनेके लिये गर्दभके मुख और लंबे पूंछसहित और तीन पैर (पग) युक्त उत्पन्न हुई है ॥५४॥ और सिंह जैसी ग्रीवा,-मुर्देपर चढी हुई,-सात हाथ, और शुष्क पेटवाली, महाभयंकर, विकरालमुखी, पृथुदंष्ट्रा, भयानक, कार्यको नाश करनेवाली अग्निकी ज्वालासहित देवोंकी भेजी हुई पृथ्वीपर उतरी है ॥ ५५ ॥ ५६ ॥

अथ भद्रापरिहारः । तिथेः पूर्वार्द्धजा रात्रौ दिने भद्रा परार्द्धजा । भद्रादोषो न तत्र स्यात्कार्ये त्वावश्यके सति ॥ ५७ ॥ शुक्ले तु वृश्चिकी भद्रा कृष्णपक्षे भुजंगमा । सा दिवा सर्पिणी रात्रौ वृश्चिकी चापरे जगुः ॥ मुखं त्याज्यं तु सर्पिण्या वृश्चिक्याः पुच्छमेव च ॥ ५८ ॥ अथ भद्राकृत्यम् । वधबन्धविषाग्न्यस्त्रच्छेदनोच्चाटनादि यत् ॥ तुरंगमहिषोष्ट्रादिकर्म विष्टयां तु सिध्यति ॥ ५९ ॥ न कुर्यान्मंगलं विष्टयां जीवितार्थी कदाचन ॥ कुर्वन्नज्ञस्तदा क्षिप्रं तत्सर्वं नाशतां व्रजेत् ॥ ६० ॥ अथ दिवारात्रौ पंचदश मुहूर्त्ताः । दिवा मुहूर्त्ता रुद्राहिमित्राः पितृवसूदकम् ॥ विश्वे विधातृब्रह्मेंद्रा इंद्राग्न्यसुरतोयपाः ॥ ६१ ॥ अर्य्यमा भागसंज्ञश्च विज्ञेया दश पंच च ॥ अह्नः पंचदशो भागो मुहूर्त्तोऽथ तथा निशि ॥ ६२ । ईशाजपादहिर्बुध्न्यपूषाश्वियमवह्नयः । धातृचंद्रादितीज्याख्यविष्णवर्कत्वष्टृवायवः ॥ ६३ ॥

(भद्रापरिहार) तिथिके पूर्वार्द्धमें अर्थात् पहली तीस घडियोंमें होनेवाली भद्राका रात्रिमें दोष नहीं है और तिथिके पश्चात् भागमें अर्थात् पिछाडीकी तीस घडियोंमें होनेवाली भद्रा दिनमें हो तो आवश्यक काममें दोष नहीं है ॥ ५७ ॥ (दूसरी रीतिसे परिहार) शुक्लपक्षकी भद्रा वृश्चिकसंज्ञक है और कृष्णपक्षकी सर्पसंज्ञक है तथा कई आचार्योंके मतसे दिनकी भद्रा सर्पसंज्ञक है और रात्रिकी वृश्चिकसंज्ञक मानी है सो सर्पसंज्ञाके मुखकी ५ घडी और वृश्चिकसंज्ञाके पुच्छकी ३

घड़ी शुभकार्यमें त्याग देनी चाहिये ॥ ५८ ॥ (भद्राकृत्य) भद्रामें वध, बन्धन, विष, अग्नि, शस्त्र, छेदन, उच्चाटन आदि निंदितकार्य, घोड़ा, महिष, ऊँट आदिका दमन करना शुभदायक होता है ॥ ५९ ॥ परंतु शुभकामकी इच्छावालोंको भद्रामें शुभकार्य कदापि नहीं करना योग्य है, यदि मूर्खपनेसे करेगा तो तत्काल ही कार्य-सहित नाश होवेगा ॥ ६० ॥ (दिन रात्रि मुहूर्त्त) रुद्र १, अहि २, मित्र ३, पितृ ४, वसु ५, उदक ६, विश्वेदेव ७, विधाता ८, ब्रह्म ९, इंद्र १०, इन्द्राग्नि ११, असुर १२, वरुण १३, अर्यमा १४, भग १५। यही १५ मुहूर्त्त क्रमसे दिनमें आते हैं, और १ मुहूर्त्त दिनके पंदरहवें हिस्सेका होता है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ और रुद्र १, अजैकपात् २, अहिर्बुध्न्य ३, पूषा ४, दस्र ५, यम ६, वह्नि ७, धाता ८, चन्द्र ९, अदिति १०, गुरु ११, विष्णु १२, अर्क १३, त्वष्टा १४, वायु १५ यह १५ मुहूर्त्त क्रमसे रात्रिमें जानना ॥ ६३ ॥

अथैषां प्रयोजनम् । यस्मिन्नृक्षे हि यत्कर्म्म कथितं निखिलं च यत् । तद्दैवतये तन्मुहूर्त्ते कार्य्यं यात्रादिकं सदा ॥ ६४ ॥ दिनमध्येऽभि-जित्संज्ञे दोषमध्येषु सत्स्वपि । सर्वं कुर्याच्छुभं कर्म्म याम्यदिग्गमनं विना ॥ ६५ ॥ अथ रव्यादिवारेषु त्याज्यमुहूर्त्ताः । अर्य्यमा भानुम-द्वारे चन्द्रेऽह्नि विधिराक्षसौ । पित्र्याग्नी कुजवारे तु चन्द्रपुत्रे तथाऽभि-जित् ॥ ६६ ॥ पित्र्यब्राह्मौ भृगोर्वारे रक्षस्सार्पौ गुरोर्दिने । रौद्रसार्पौ शनेरह्नि त्याज्याश्चैते मुहूर्त्तकाः ॥ ६७ ॥ अथ पौराणिकमुहूर्त्ताः । पौराणिका रौद्रचैत्रसितमैत्रभवाक्षणाः । सावित्रवैराजिकाख्यौ गन्धर्वश्चाष्ट-मोऽभिजित् ॥ ६८ ॥ रौहिणो बलसंज्ञश्च विजयो नैर्ऋतस्तथा । इन्द्रो जलेश्वरः पंचदशमो भगसंज्ञकः । अष्टमो योऽभिजित्संज्ञः स एव कुतुपः स्मृतः ॥ ६९ ॥ रौद्रगन्धर्वयक्षेशाश्चारुणो मारुतोऽनलः । रक्षो धाता तथा सौम्यः पद्मजो वाक्पतिः स्मृतः । पूषा हरिर्वायुनिर्ऋत्न्मुहूर्त्ता रात्रिसं-ज्ञिताः । ७० ॥ सितवैराजविजयमैत्राणि चित्रसंज्ञकाः । अभिजिद्बलयु-कास्ते सर्वकार्येषु सिद्धिदाः ॥ ७१ ॥

(मुहूर्त्तप्रयोजन) जिस नक्षत्रमें जो कार्य करना लिखा है सोही समग्र कर्म उसी नक्षत्रके स्वामीके मुहूर्त्तमें यात्रा आदि शुभकार्य करना चाहिये ॥ ६४ ॥ और दिनके ११॥ बजे अभिजित् नाम मुहूर्त्त सदैव आता है सो इस मुहूर्त्तमें अशुभ-

दिन होवे तो भी यात्रा आदि कार्य करना शुभदायक है परंतु दक्षिण दिशाके गमनमें त्याज्य है ॥ ६५ ॥ (वारमें त्याज्य मुहूर्त्त) अर्यमा नाम मुहूर्त्त आदित्यवारको त्याज्य है और विधि राक्षस सोमवारको, पितृ अग्नि मंगलको, अभिजित् बुधको ॥ ६६ ॥ पितृ ब्राह्म शुक्रको, राक्षस सर्प गुरुवारको, रौद्र शनिवारको शुभकार्यमें त्याग देना चाहिये ॥ ६७ ॥ (पुराणोक्त मुहूर्त्त) रौद्र १, चैत्र २, सित ३, मैत्र ४, सावित्र ५, वैराजिक ६, गांधर्व ७, अभिजित् ८, रौहिण ९, बल १०, विजय ११, निर्ऋति १२, माहेंद्र १३, जलेश्वर १४, भग १५ यह १५ मुहूर्त्त दिनमें पुराणोंके मतसे जानना और इनमें आठवां अभिजित् मुहूर्त्त है उसका कुतुप भी नाम है ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ रौद्र १. गंधर्व २, यक्षेश ३, अरुण ४, मारुत, ५, अनल ६, राक्षस ७, धाता ८, सौम्य, ९, पद्मज १०, वाक्पति ११, पूषा १२, हरि १३, वायु १४. निर्ऋति १५ यह रात्रिके मुहूर्त्त हैं ॥ ७० ॥ इन मुहूर्त्तोंमेंसे सित, वैराज, विजय, मैत्र, चित्र, अभिजित् यह छः मुहूर्त्त संपूर्ण कार्योंकी सिद्धि करनेवाले हैं ॥ ७१ ॥

अथ आनन्दादियोगाः । आनन्दः कालदण्डश्च धूम्राक्षोऽथ प्रजापतिः । सौम्यो ध्वांक्षो ध्वजश्चैव श्रीवत्सो वज्रमुद्गरौ ॥ ७२ ॥ छत्रं मित्रं मानसं च पद्माख्यो लुम्बकस्तथा । उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धिश्चाथ शुभोऽमृतिः ॥ ७३ ॥ मुसलो गदमातंगौ राक्षसश्च चरः स्थिरः ॥ प्रवर्द्धमाना विज्ञेया अष्टाविंशतिरित्यमी ॥ फले स्वनामसदृशा योगा दैवज्ञभाषिताः ॥ ७४ ॥

(आनन्दादि योगनाम) आनन्द १, कालदंड २, धूम्राक्ष ३, प्रजापति ४, सौम्य ५, ध्वांक्ष ६, ध्वज ७, श्रीवत्स ८, वज्र ९, मुद्गर १०, छत्र ११, मित्र १२, मानस १३, पद्म १४, लुम्बक १५, उत्पात १६, मृत्यु १७. काण १८, सिद्धि १९, शुभ २०, अमृत २१, मुसल २२, गद २३, मांतग २४, राक्षस २५, चर २६, स्थिर २७, प्रवर्द्धमान २८, यह अट्ठाईस योग हैं और इन योगोंके नामसदृश फल जानना चाहिये ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥

अथानन्दादिसंज्ञा । अश्विनी रविवारे च योगो ह्यानन्दसंज्ञकः॥७५॥ मृगशीर्षं शीतरश्मावाश्लेषा क्षितिनन्दने । बुधे हस्तोऽनुराधा च देवराजपुरोहिते ॥ ७६ ॥ भार्गवे चोत्तराषाढा शनौ शतभिषा यदि । तदाऽऽनंदाख्ययोगः स्यात्कालदण्डादयः क्रमात् ॥ ७७ ॥ **अथामृतसिद्धि-**

योगः । हस्तः सूर्ये मृगः सोमे वारे भौमे तथाऽश्विनी । बुधे मैत्रं गुरौ पुष्यो रेवती भृगुनन्दने ॥७८॥रोहिणी सूर्यपुत्रे च सर्वसिद्धिप्रदायकः । असावमृतसिद्धिश्च योगः प्रोक्तः पुरातनैः ॥ ७९ ॥ अथ उत्पातमृत्युकाणसिद्धियोगाः।विशाखादिचतुष्के च सूर्यवारक्रमेण च। उत्पातमृत्युकाणाश्च सिद्धिश्चाथ शुभो भवेत् ॥८०॥अथ क्रकचयोगः । तिथ्यकेन समायुक्तो वारांको यदि जायते । त्रयोदशांकः क्रकचो योगो निंद्यस्तदा शुभे ॥ ८१ ॥

(आनन्द) योग आदित्यवारको अश्विनी नक्षत्र होवे तब आनन्दयोग होता है ॥ ७५ ॥ और सोमवारको मृगशिरा हो, मंगलवारको आश्लेषा हो, बुधको हस्त हो, गुरुको अनुराधा हो तो आनन्द योग जानना ॥ ७६ ॥ शुक्रवारको उत्तराषाढा हो और शनिवारको शतभिषा होवे तब आनन्दयोग होता है और इसीतरह क्रमसे काल दण्डादि योग जानना ॥ ७७ ॥ (अमृतसिद्धि योग) आदित्यवारको हस्त नक्षत्र होवे, सोमवारको मृगशिर हो, मंगलवारको अश्विनी हो, बुधवारको अनुराधा हो, गुरुवारको पुष्य हो, शुक्रवारको रेवती हो, शनिवारको रोहिणी होवे तब सर्वसिद्धि देनेवाला अमृतसिद्धि योग होता है ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ (उत्पात मृत्यु काण सिद्धियोग) आदित्यवारको विशाखा नक्षत्र होवे तो उत्पातयोग होता है और अनुराधा होवे तो मृत्युयोग, ज्येष्ठा होवे तो काण योग और मूल होवे तो सिद्धि योग जानना ॥८०॥ (क्रकच योग) तिथिकी संख्याके साथ वारकी संख्या मिलाके तेरह १३ हो जावें तब क्रकच योग शुभकार्यमें निंदित होता है ॥ ८१ ॥

अथ यमघंटाः । मघा सूर्ये विशाखेंदौ भौमे चार्द्राऽनलो गुरौ । बुधे मूल विधिः शुक्रे यमघटः शनौ करः ॥ ८२ ॥ अथ मृत्युयोगः । नन्दा सूर्ये मंगले च भद्रा भार्गवचन्द्रयोः । बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥८३॥ अथ सिद्धियोगः । प्रोक्ता च भार्गवे नन्दा भद्रा सौम्ये प्रकीर्तिता ॥ जया भौमे शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा च सिद्धिदा ॥ ८४ ॥ (ज्योतिस्तत्त्वे) "बुधमदगता नंदा कुजे भद्रा गुरौ जया। शुक्रे रिक्ताऽमृतं प्रोक्तं पूर्णा च रविचन्द्रयो ॥ १ ॥" अथ संवर्त्तकयोगः । सप्तम्यां च रवेर्वारो बुधस्य प्रतिपद्दिने । संवर्त्ताख्यस्तदा योगो वर्जितव्यः सदा बुधैः ॥ ८५ ॥ अथ राशिसंज्ञा । सप्तविंशतिभानां च नवभिर्नवभिः पदैः । अश्विनीप्रमुखानां च मेषाद्या राशयः स्मृताः ॥ ८६ ॥ मेषो १

वृषोऽथ २ मिथुनं ३ कर्कः ४ सिंहश्च ५ कन्यका ६ । तुला ७ वृश्चिक ८ चापौ ९ च मकरः १० कुम्भ ११ मीनकौ १२॥ राशयस्तु क्रमादेते पुंस्त्रियौ क्रूरसौम्यकौ । ज्ञेयश्चरः स्थिरश्चैव द्विस्वभावः क्रमात्पुनः ॥ ८७ ॥

(यमघंट) आदित्यवारको मघा नक्षत्र हो, सोमवारको विशाखा हो, मंगलवारको आर्द्रा हो, गुरुवारको कृत्तिका हो, बुधको मूल हो, शुक्रको रोहिणी हो, शनिवारको हस्त होवे तब यमघंट योग होता है ॥८२॥ (मृत्युयोग) आदित्य या मंगलवारको नन्दा १ । ६ । ११ । तिथि होवे और शुक्र सोमको भद्रा २ । ७ । १२ तिथि हों, बुधको जया ३ । ८ १३ । तिथि हों, गुरुवारको रिक्ता ४ । ९ । १४ और शनिवारको पूर्णा ५ । १० । १५ तिथि होवें तो मृत्युयोग होता है ॥ ८३ ॥ (सिद्धियोग) शुक्रवारको नंदा १ । ६ । ११ तिथि हों, बुधवारको भद्रा २ । ७ । १२ होवें और मंगलको जया । ३ । ८ । १३ । तिथि हों, शनिवारको रिक्ता ४ । ९ ।१४हों तथा गुरुवारकों पूर्णा ५ । १० । १५ तिथि होवें तब सिद्धि योग होता है ॥८४॥ (संवर्त्त योग) सप्तमी तिथिको रविवार हो, प्रतिपदाको बुधवार हो तब संवर्त्तनाम योग होवे सो यह योग अशुभ है ॥ ८५ ॥ (राशिसंज्ञा) अश्विनीसे लेके सत्ताईस २७ नक्षत्रोंके नौ नौ चरणों करके क्रमसे मेषादि बारह १२ राशि होते हैं ॥ ८६ ॥ मेष. १, वृष. २, मि. ३, क. ४, सिं. ५, क. ६, तु. ७, वृ. ८. ध. ९, म. १०, कुं. ११, मीन १२ यह द्वादश १२ राशि हैं इन राशियोंकी मेषादि क्रमसे पुरुष-स्त्री-संज्ञा है और क्रूर-सौम्य संज्ञा है तथा चर स्थिर द्विस्वभाव संज्ञा जानना ॥ ८७ ॥

अथ नक्षत्राणां प्रत्येकं राशेर्भोगः । अश्विनी भरणी कृत्तिकापादं मेषः १ । कृत्तिका त्रयः पादा रोहिणी मृगशिरोऽर्द्धं वृषभः २ । मृगशिरोत्तरार्धार्द्रापुनर्वसुत्रयो मिथुनः ३ । पुनर्वस्वंत्यपादपुष्याश्लेषांतं कर्काटकः ४। मघा पूर्वा उत्तरापादःसिंहः५।उत्तरात्रयः पादाः हस्तचित्रार्द्धं कन्या६। चित्रोत्तरर्द्धं स्वाती विशाखात्रयस्तुला ७।विशाखांत्यपादानुराधाज्येष्ठांतं वृश्चिकः ८।मूलपूर्वाषाढोत्तराषाढापादं धनुः ९। उत्तराषाढात्रयः पादाः श्रवणधनिष्ठार्द्धं मकरः१०। धनिष्ठोत्तरार्द्धं शततारकापूर्वाभाद्रपदात्रयः कुंभः ११।पूर्वाभाद्रपदांत्यप द उत्तराभाद्रपदा रेवत्यंतं मीनः १२॥ अथाऽवकहडादिचक्रानुसारेण नक्षत्रचरणानां वर्णाः । चूचेचोलाऽश्विनी प्रोक्ता लीलूलेलोभर-

ण्यथ । आईऊए कृत्तिका स्यादोवावीवू तु रोहिणी ॥ ८८ ॥ वेवोकाकी मृगशिरः कूघङछ तथाऽऽर्द्रका । केकोहाही पुनर्वसु हूहेहोडा तु पुष्यभम् ॥ ८९ ॥ डीडूडेडो तु आश्लेषा मामीमूमे मघा स्मृता । मोटाटीटू पूर्वा फल्गु टेटोपाप्युत्तर तथा ॥ ९० ॥ पूषणाठा हस्तवारा पेपोरारी तु चित्रका । रूरेरोता स्मृता स्वाती तीतूतेतो विशाखिका ॥ ९१ ॥ नानीनूनेऽनुराधर्क्षं ज्येष्ठा नोयायियूः स्मृता । येयोभाभी मूलतारा पूर्वाषाढा भुधाफढा ॥ ९२ ॥ भेभोजाज्युत्तराषाढा जूजेजोखाऽभिजिद्भवेत् । खीखूखेखो श्रवण भ गागीगूगे धनिष्ठिका ॥ ९३ ॥ गोसासीसू शतभिषक्सेसोदादी तु पूर्वभाक् । दूथझञोत्तरा भाद्रा देदोचाची तु रेवती ॥ ९४ ॥

(नक्षत्र राशि भोगविचार) अश्विनी भरणी संपूर्ण और कृत्तिकाके प्रथम पादतक मेष राशि है १ । और कृत्तिकाके तीन पाद रोहिणी संपूर्ण मृगशिरके दो पादतक वृष जानो २ । मृगशिरका दो चरण और आर्द्रा सारी पुनर्वसुके तीन पादतक मिथुन राशि है ३ । पुनर्वसुका अंत चरण और पुष्य आश्लेषाके संपूर्ण तक कर्क है ४ । मघा पूर्वाफाल्गुनी संपूर्ण और उत्तराफाल्गुनिके प्रथम पादतक सिंहराशि जानो ५ । उत्तराका तीन पाद हस्त संपूर्ण चित्राके दो चरणतक कन्या है ६ । चित्राका दो चरण स्वाती संपूर्ण विशाखाके तीन पादतक तुलाराशि है ७ । विशाखाके अंतको चरण और अनुराधा ज्येष्ठा सम्पूर्ण होनेसे वृश्चिक है ८ । मूल पूर्वाषाढा संपूर्ण उत्तराषाढाके प्रथम पादतक धनूराशि है ९ । उत्तराके तीन पाद श्रवण सम्पूर्ण धनिष्ठाके दो पादतक मकरराशि जानो १० । धनिष्ठाका उत्तरार्द्ध शतभिषा सम्पूर्ण पूर्वाभाद्रपदाके तीन चरणतक कुंभराशि है ११ । पूर्वाभाद्रपदाका अन्त्य चरण और उत्तराभाद्रपदा रेवती सम्पूर्ण तक मीनराशि होती है १२ ॥ ८८–९४ ॥

॥ अवकहडचक्रम् ॥

चूचेचोला अश्विनी	लीलूलेलो भ.	आईऊए कृ.	ओवावीवू रो.	वेवोकाकी मृ.	कूघङछ आ.	केकोहाही पु.
हूहेहोडा पुष्य	डीडूडेडो आ.	मामीमूमे म.	मोटाटीटू पू.फा.	टेटोपापी उ. फा.	पूषणाठा हस्त.	पेपोरारी चि.
रूरेरोता स्वा.	तीतूतेतो वि.	नानीनूने अनु.	नोयायियू ज्ये.	येयोभाभी मू.	भुधाफढा पू.षा.	भेभोजाजी उ.षा.
जूजेजोखा अभिजित	खीखूखेखो श्र.	गागीगूगे ध.	गोसासीसू शत.	सेसोदादी पू. भा.	दूथझञ उ.भा.	देदोचाची रेवती.

अथ नामतो राशिज्ञानम् । चूचेचोलालीलूलेलोआ मेषः १, ईऊए ओवावीवूवेवो वृषः २, काकीकूघङछकेकोहा मिथुनः ३, हीहूहेहोडाडी डूडेडो कर्कः ४, मामीमूमेमोटाटीटूटे सिंहः ५, टोपापीपूषणाठापेपो कन्या ६ रारीरूरेरोतातीतूते तुला ७, तोनानीनूनेनोयायीयू वृश्चिकः ८, येयोभा-भीभूधाफढाभे धनुः९, भोजाजीजूजेजोखाखीखूखेखोगागी मकरः १०, गूगेगोसासीसूसेसोदा कुम्भः ११, दीदूथझञदेदोचाची मीनः १२ इति द्वादश राशयः ॥ अथ राश्यधिपतयः । मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाप्रभुः । बुधः कन्यामिथुनयोः पतिः कर्कस्य चन्द्रमाः ॥ ९५ ॥ स्यान्मीनधनुषोर्जीवः शनिर्मकरकुम्भयोः । सिंहस्याधिपतिः सूर्यः कथितो गणकोत्तमैः ॥ ९६ ॥ अथ पृष्ठोदयादिसंज्ञा । पृष्ठोदया धनुर्मेषौ मकरो वृषकर्कटौ । उभयोदयवान् मीनस्ततोऽन्ये मस्तकोदयाः ॥ ९७ ॥ मेषो वृषो धनुर्युग्म कर्कनक्रौ निशाबलाः । दिवाबलास्तु तेभ्योऽन्ये स्वस्वकाले बलाधिकाः ॥ ९८ ॥ अथ ग्रहोच्चसंज्ञा । मेषो वृषस्तथा नक्रः कन्याकर्कझषास्तुला । सूर्यादीनां क्रमादेते कथिता उच्चराशयः ॥ ९९ ॥ परमोच्चांशकाः सूर्याद्दशो १० रामा ३ गजाश्विनः २८ । बाणचंद्राः १५ शराः ५शैलदृशः २७ खाश्वि२०मिताः क्रमात्॥१००॥

नामसे राशिज्ञानका चक्र ऊपर लिखा है उसे समझ लेना । (राशिस्वामी) मेष, वृश्चिकका मङ्गल स्वामी है. वृष, तुलाका शुक्र स्वामी है. कन्या, मिथुनका बुध है. कर्कका स्वामी चंद्रमा है ॥ ९५ ॥ धनु, मीनका बृहस्पति स्वामी है, मकर, कुंभका शनैश्चर है, सिंहराशिका सूर्य मालिक जानना ॥ ९६ ॥ (पृष्ठोदयादिसंज्ञा) धन ८ मेष १ मकर १० वृष २ कर्क ४ यह राशि पृष्ठोदयसंज्ञक हैं अर्थात् पृष्ठभागसे उदय होती हैं, और मीन १२ राशि उभयोदयवान् अर्थात् पृष्ठ तथा मस्तक दोनों अंग प्रथम उदय करता है और शेष रही हुई राशि अर्थात् मिथुन ३ सिंह ५ कन्या ६ तुला ७ वृश्चिक ८ कुंभ ११ राशि मस्तकको अगाड़ी करके उदय होती हैं ॥ ९७ ॥ मेष १, वृषभ २, धन ९, मिथुन ३, कर्क ४, मकर १० यह राश या लग्न रात्रिमें बलवान् हैं और सिंह ५, कन्या ६, तुला ७, वृश्चिक ८, कुम्भ ११

मीन १२ यह राशि या लग्न दिनमें बलवान् हैं सो अपने अपने समयमें बल देते हैं ॥ ॥ ९८ ॥ (ग्रहोंकी उच्च संज्ञा) सूर्यकी मेष १ उच्चराशि है, चंद्रमाकी वृष २, मंगलकी मकर १०, बुधकी कन्या ६, गुरुकी कर्क ४, शुक्रकी मीन १२, शनैश्चरकी तुला ७ राशि उच्चकी है ॥ ९९ ॥ और सूर्य दश १० अंशतक परम उच्चका है। चंद्रमा ३ अंशतक। मंगल २८ अंशतक। बुध १५ अंशतक। गुरु ५ अंशतक। शुक्र २७ अंशतक। शनैश्चर २० अंशतक परम उच्चका होता है ॥ १०० ॥

अथ नीचसंज्ञा । सूर्यादीनां जगुर्नीचं स्वोच्चभाच्च सप्तमम् । राहोस्तु कन्यकागेहं मिथुन स्वोच्चभ स्मृतम् ॥ १०१ ॥ अथ मूलत्रिकोणम् । सिंहो वृषभमेषौ च कन्याधन्वितुलाघटाः । रव्यादीनां क्रमान्मूलत्रिकोणा राशयः स्मृताः ॥ १०२ ॥ अथ तिथ्यादीनां बलम् । तिथिरेकगुणा वारो द्विगुणस्त्रिगुण च भम्। योगश्चतुर्गुणः पंचगुणं तिथ्यर्द्धसंज्ञकम् १०३ ततो मुहूर्तो बलवांस्ततो लग्न बलाधिकम् । लग्नं कोटिगुणं विद्याद्ग्रहवीर्यबलान्वितम् ॥ तस्मात्सर्वेषु कार्येषु लग्नवीर्यं विलोकयेत् ॥ १०४ ॥ अथ षड्वर्गः । विलग्नहोराद्रेष्काणनवांशद्वादशांशकाः । त्रिंशांशश्चेति षड्वर्गास्ते सौम्यग्रहजाः शुभाः ॥ १०५ ॥ अथ लग्नादीनां लक्षणानि। त्रिंशद्भागात्मकं लग्नं होरा तस्यार्द्धमुच्यते । लग्नत्रिभागो द्रेष्काणो नवमांशो नवांशकः ॥ १०६ ॥ द्वादशांशो द्वादशांशस्त्रिंशांशस्त्रिंशदंशकः । लग्नराशिपतिः खेटो गृहेशः परिकीर्तितः ॥ १०७ ॥

(नीचसंज्ञा) सूर्यादि ग्रहोंके पूर्व कहे हुए उच्चस्थानोंसे सातवां ७ स्थान क्रमसे नीचका स्थान जानना चाहिये ॥ १०१ ॥ (मूलत्रिकोणसंज्ञा) सूर्य सिंहका मूल त्रिकोणी है और चंद्रमा वृषका, मंगल मेषका, बुध कन्याका, गुरु धनका, शुक्र तुलाका, शनैश्चर कुंभका मूल त्रिकोणी होता है ॥१०२ ॥ (तिथ्यादिबल) तिथिमें एक १ गुण है, वारमें २ गुण, नक्षत्रमें ३ गुण, योगमें ४ गुण, करणमें ५ गुण हैं॥ ॥ १०३ ॥ और करणसे पूर्वोक्त मुहूर्त्त बलवान् हैं, उससे लग्न बलवान् है तथा ग्रहोंके बलवीर्यसहित लग्न होवे तो करोड गुण समझना, इसवास्ते संपूर्ण कार्योंमें लग्नका बल देखना चाहिये ॥ १०४ ॥ (षड्वर्गसंज्ञा) लग्न १, होरा २, द्रेष्काण ३, नवांशक ४, द्वादशांश ५, त्रिंशांशक ६, यह षड्वर्ग हैं सो शुभग्रहका शुभ जानना चाहिये ॥ १०५ ॥ (लग्न आदिका लक्षण) तीस ३० अंशका लग्न होता है और पंदरह १५ अंशका होरा जानना, दश १० अंशका द्रेष्काण होता है और लग्नके नौवें ९ हिस्सेको नवांशक कहते हैं ॥ १०६ ॥ लग्नके बारहवें १२ हिस्सेको द्वादशां-

शक और तीसवें ३० हिस्सेको त्रिंशांशक जानना चाहिये और लग्नकी राशिके पतिको गृहेश कहते हैं ॥ १०७ ॥

अथ होरासंज्ञा । होरयोरोजराशौ तु रवींदू क्रमशः पती ! समराशौ तु चन्द्राकौं होरेशौ क्रमशो वदेत् ॥ १०८ ॥ अथ द्रेष्काणसंज्ञा । द्रेष्काण आद्यो लग्नस्य द्वितीयः पंचमस्य च । द्रेष्काणस्य तृतीयस्तु लग्न नवमराशिषु ॥ १०९ ॥ अथ नवांशसंज्ञा । मेषे नवांशा मेषाद्या वृषे च मकरादिकाः ॥ मिथुने च तुलाद्याः स्युः कर्कटे कर्कटादिकाः ॥ ११० ॥ मेषाद्यो च धनुःसिंहौ कन्यैणौ मकरादिकौ । तुलाद्यौ तुलकुम्भौ च कर्काद्यौ मीनवृश्चिकौ ॥ गोतुलायुग्मकन्यानां नवांशाः शुभदाः स्मृताः ॥ १११ ॥ अथ द्वादशांशम् । लग्नस्य द्वादशांशस्तु स्वराशेरेव कीर्त्तितः ॥ ११२ ॥

(होरासंज्ञा) विषम राशिमें प्रथम सूर्यकी होरा तदनंतर चंद्रमाकी होरा जानना और समराशिमें प्रथम चंद्रमाकी होरा फिर सूर्यकी होरा होती है ॥ १०८ ॥ (द्रेष्काण संज्ञा) लग्नके ३० अंशोंमेंसे प्रथम दश अंशतक द्रेष्काण हो तो लग्नका स्वामी द्रेष्काणका अधिपति होता है और दूसरा द्रेष्काण २० अंशतक हो तो पंचमस्थानका पति द्रेष्काणका अधिपति होता है । यदि तीसरा द्रेष्काण ३० अंशतक हो तो नवमका स्वामी द्रेष्काणपति होता है परंतु शनि, सूर्य, मंगलका द्रेष्काण अशुभ है ॥ १०९ ॥ (नवांशक कथन) मेषलग्नमें मेषसे लेके नवांशक जानना और वृषमें मकरसे लेके, मिथुनमें तुलासे जानना और कर्कमें कर्कसे, सिंहमें तथा धनमें मेषसे जानना, कन्यामें और मकरमें मकरसे, तुला तथा कुंभमें तुलासे, मीनवृश्चिकमें कर्कसे लेके नवांशक जानना चाहिये परंतु संपूर्ण नवांशोंमें वृष २, तुला ७, मिथुन ३, कन्या ६ के नवांशक शुभकार्यमें श्रेष्ठ हैं ॥ ११० ॥ १११ ॥ (द्वादशांश कथन) लग्नके तीस अंश और बारहवें १२ हिस्सेका नाम द्वादशांश है सो यह द्वादशांश पापग्रहोंका अशुभ है ॥ ११२ ॥

अथ लग्नविचारः । तत्रादौ लग्ननामानि । मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कः सिंहश्च कन्यका । तुलाऽथ वृश्चिको धन्वी मकरः कुम्भमीनकौ ॥ ११३ ॥ अथ लग्नज्ञानम् । यस्मिन् राशौ यदा सूर्यस्तल्लग्नमुदये भवेत् । तस्मात्सप्तमराशिस्तु अस्तलग्नं तदुच्यते ॥ ११४ ॥

अथ लग्नस्पष्टीकरणम् । सूर्यस्य राश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं त्विष्टघटीयुतं यत् । तत्तुल्यकोष्ठे तु गतांशयुक्तं लग्नं प्रवाच्यं सुधियाऽतिसौख्यम् ॥ ११५ ॥ अथ लग्नानां घटिकाप्रमाणम् । तिस्रो ३ मीने च मेषे च घट्यः पंच श्रुतिः २५ पलाः चतस्रश्च ४ वृषे कुम्भे पलाः प्रोक्ताश्च षोडश १६ ॥ मिथुने मकरे पंच ५ घटिका विंशतिः २० पलाः । पंच ५ कर्के च चापे च शशिवेदाः ४१ पलाः स्मृताः ॥११६॥ घटिकाः पंच ५ सिंहेऽलौ द्वयं वेदाः ४२ पलाः स्मृताः । कन्यायां च तुले पंच ५ पलाश्चन्द्रस्तथाऽग्नयः ३१ ॥ ११७ ॥ अथ द्वितीयः प्रकारः । वस्वेकपक्षा २१८ वसुधेषुपक्षा २५१ द्विव्योमरामा ३०३ गुणवेदरामाः ३४३ । सप्ताब्धिरामा ३४७ वसुरामरामाः ३३८ क्रमेण मेषादिपलाश्च ज्ञेयाः ॥ ११८ ॥

(लग्नविचार) मेष १, वृष २, मिथुन ३, कर्क ४, सिंह ५, कन्या ६, तुला ७ वृश्चिक ८, धन ९, मकर १०, कुंभ ११, मीन १२, यह १२ लग्न हैं ॥ ११३ ॥ (लग्नज्ञानम्) जिस राशिपर सूर्य होवे सो ही लग्न सूर्योदयके समय आता है और उसी लग्नसे सातवें लग्नमें सूर्यका अस्त होता है ॥ ११४ ॥ (लग्न स्पष्ट करनेकी रीति) सूर्यकी राशिका जितना अंश गया हुआ हो उतनेही अंशका सारणीके कोष्ठमें अंक देखना फिर उसी अंकके नीचे और लग्नके सामने जो अंक हैं उन अंकोंमें इष्टकी घडी पलसहित रीतिमुजब मिला देवे फिर ६० का भाग देवे जो शेष अंक रहे सो सारणीके कोष्ठमें जहां मिले तहांही देखे जितने अंशके नीचे जिस लग्नके सामने अंक हो उसी लग्नका गत अंश बुद्धिमानको जान लेना चाहिये ॥ ११५ ॥ (लग्नोंकी घटी) मीन १२ मेष १ की तीन ३ घटी २५ पल हैं, वृष २ कुंभ ११ की चार ४ घटी १६ पल हैं, मिथुन ३ मकर १० की पांच घटी २० पल हैं, कर्क ४ धन ९ की पांच घटी ४१ पल हैं, सिंह ५ वृश्चिक ८ की पांच घटी ४२ पल हैं और कन्या ६ तुला ७ की ५ घटी ३१ पल जानना ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ (दूसरा प्रकार) मीन, मेषकी २१८ पल हैं, वृष, कुंभकी २५१ पल हैं, मिथुन, मकरकी ३०३ पल हैं, कर्क, धनकी ३४३ पल हैं, सिंह, वृश्चिककी ३४७ पल हैं, और कन्या, तुलाकी ३३८ पल जानना ॥ ११८ ॥

लग्नघटिकायंत्रम् ॥

मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	ल.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं.	मी.	ल.
३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घ.	३	४	५	५	५	५	५	५	५	५	४	३	घ.
१५	१६	३०	४१	४८	३१	३१	४२	४१	२०	१६	२५	प.	३८	११	३	४३	४७	३८	३८	४७	४२	३	११	२८	प.

अथ तन्वादिद्वादशभावसंज्ञा ॥ तनु १ धनं २ सहोत्थाख्यं ३ सुहृत् ४ पुत्रा ५ ऽरि ६ योषितः ७ । निधनं ८ धर्म ९ कर्मा १० य ११ व्यया १२ भावास्तनोः क्रमात् ॥ ११९ ॥ अथ केंद्रादि संज्ञा । केंद्र १ । ४ । ७ । १० पणफरं २ । ५ । ८ ११ चापो- क्लीमं ३ । ६ । ९ । १२ लग्नात्पुनः पुनः । नवमं ९ पंचमं ५ स्थानं त्रिकोणं परिकीर्तितम् ॥ १२० ॥ त्रि ३ दशै १० कादशं ११ षष्ठं ६ प्रोक्तं चोपचयाह्वयम् । यामित्रं सप्तमं ७ द्यूनं द्यूतं च मदनाभिधम् ॥ १२१ ॥ रिःफं तु द्वादशं १२ ज्ञेयं दुश्चिक्यं स्यात्तृतीयकम् ३ । चतु रस्रं तुरीया ४ ष्ट ८ संख्यं रंध्र ८ मथाष्टमम् ॥ १२२ ॥ अथ ग्रहदृ- ष्टिज्ञानम् । यामित्रमे ७ दृष्टिफलं समग्रं स्वपादहीनं चतुरस्रयो ४ । ८ श्च । त्रिकोणयो ९ । ५ र्दृष्टिफलार्द्धमाहुर्दुश्चिक्य ३ संख्ये दशमे १० च पादम् ॥ १२३ ॥ फलं विशेषं प्रवदाम्यथातो भौमस्य पूर्णं चतुरस्र ४ । ८ के स्यात् । फलं च जीवस्य तथा त्रिकोणे ९ । ५ पूर्णं शनेः स्याद्दशमे १० तृतीये ३ । स्वाक्रांतभात्सप्तमभे समस्तं फलं दृगुत्थं निखिलग्रहाणाम् ॥ १२४ ॥ अथ दिनलग्नज्ञानम् । छाया १ पादे २ रसो ६ पेतैरेकविंशच्छतं १२१ भजेत् । लब्धांके घटिका ज्ञेयाः शेषांके च पलाः स्मृताः ॥ १२५ ॥ अथ रात्रिलग्नज्ञानम् ॥ सूर्यभान्मौलिभं गण्य सप्त ७ हीनं च शेषकम् । द्विगुणं च द्वि २ हीनं च गता रात्रिः स्फुटा भवेत् ॥ १२६ ॥

इति श्रीरत्नगढनगरनिवासिना पंडितगौड़श्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचित मुहूर्तप्रकाशेऽद्भुतनिबन्धे प्रथमं संज्ञाप्रकरणम् ॥ १ ॥

(तन्वादिद्वादश भाव) तनु १, धन २, सहज ३, सुहृत् ४, सुत ५, रिपु ६, जाया ७, मृत्यु ८, धम ९, कर्म १०, आय ११, व्यय १२, यह १२ भावोंके नाम हैं ॥ ११९ ॥

(केंद्रादिसंज्ञा) लग्न १, चतुर्थ ४, सप्तम ७, दशम १० इनकी केंद्र संज्ञा है। और दूसरे २, पांचवें ५, आठवें ८, ग्यारहवें ११ की पणफर संज्ञा है। तीसरे ३, छठे ६, नौवें ९, बारहवें १२ की आपोक्लीम संज्ञा है। और नौवें ९, पांचवें ५ की त्रिकोण संज्ञा कहते हैं ॥ १२० ॥ तीसरे ३, दशवें १०, ग्यारहवें ११, छठे ६ स्थानकी उपचयसंज्ञा है। और जामित्र, द्यून द्यूत, मदन, यह ४ नाम सातवें स्थानके हैं॥१२१॥रिःफ नाम बारहवें १२ स्थानका है। दुश्चिक्य नाम तीसरे ३ स्थानका है। और चतुरस्त्र, तुरीयाष्ट, रंध्र यह तीन नाम आठवें ८ स्थानके हैं ॥ १२२ ॥ (ग्रहदृष्टिज्ञान) यामित्र नाम सातवें स्थानमें सम्पूर्ण ग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि होती है। और चौथे ४, आठवें ८ त्रिपाद दृष्टि है। नौवें ९, पांचवें ५ द्विपाद दृष्टि और तीसरे ३, दशवें १० एकपाद दृष्टि जाननी चाहिये ॥ १२३ ॥ (विशेषदृष्टिका विचार) चौथे ४, आठवें ८ मंगलकी पूर्ण दृष्टि। नौवें ९, पांचवें ५ बृहस्पतिकी पूर्ण दृष्टि होती है। और तीसरे ३, दशवें १० शनिकी पूर्ण दृष्टि जाननी चाहिये। और अपने स्थित हुए स्थानसे सातवें सम्पूर्ण ग्रहोंकी पूर्ण दृष्टि होती है ॥ १२४ ॥ (दिनलग्नज्ञान) प्रथम अपने शरीरकी छाया अपने पगोंसे मापना, फिर उस छायामें छः मिलाना, अनन्तर १२१ का भाग देना जो अंक प्राप्त हो सो घटी जानना और शेष बचे सो पल जानना चाहिये ॥ १२५ ॥ (रात्रिलग्नज्ञान) सूर्यके नक्षत्रसे रात्रिमें मस्तकके ऊपरके नक्षत्र तक गिनना, फिर उसमेंसे सात ७ घटाके दूना करना, फिर दो २ घटाना जो शेष अंक बचे इतनी घटी रात्रि गई जानना ॥ १२६ ॥

इति श्रीमुहूर्तप्रकाशे भाषाटीकायां प्रथमं संज्ञाप्रकरणम् ॥ १ ॥

त्याज्यप्रकरणम् २.

तिथिनक्षत्रवाराणां दुष्टयोगान् परस्परम्। व्यतीपातादिदुर्योगान् विष्टि दर्शार्कसंक्रमान् ॥ १ ॥ जन्मर्क्षतिथिमासांश्च तिथ्यृद्धिं त्ववमं दिनम्। पापैर्भुक्तं युतं भोग्यं विद्धं लत्तितमृक्षकम् ॥ २ ॥ उत्पातग्रहभिन्नं च खग्रासे ग्रहणर्क्षकम्। षण्मासविधिमासेषु त्रिषु ग्रासेऽर्द्धके सति ॥ ३ ॥ मासमेकं तु तुर्यांशे ग्रस्ते चंद्रे च भास्करे। त्र्यहं प्राक्ग्रहणात्सप्त दिनानि ग्रहणोत्तरम् ॥ ४ ॥ ग्रस्तास्ते तु त्र्यहं पूर्वं त्र्यहं ग्रस्तोदये परम्। पूर्णे ग्रासे त्विदं ज्ञेयं खंडग्रासेऽनुपाततः ॥ ५ ॥ गंडांतं त्रिविधं दुष्टक्षीणेंदुः पापकर्त्तरी। पापहोरा खले वारे यामार्द्धं कुलिकादिकान् ॥ ६ ॥

(त्याज्यप्रकरणं लिख्यते) तिथि, नक्षत्र, वारोंसे उत्पन्न होनेवाला मृत्यु आदि दुष्टयोग और व्यतीपात, वैधृती आदि निषिद्ध योग, भद्रा, अमावस्या

और सूर्यके संक्रांतिका दिन शुभ काममें त्याग देना चाहिये ॥ १ ॥ जन्मनक्षत्र, जन्मतिथि, जन्ममास और तिथिवृद्धि अर्थात् बढी हुई तिथि तथा अवमदिन (टूटी हुई तिथि) और पापग्रहों करके भोगा हुआ तथा पापग्रहयुक्त नक्षत्र, या जिस नक्षत्र-पर पापग्रह आता हो तथा ग्रहोंकरके वेधित हो अथवा लत्तादोषयुक्त हो तो उस नक्षत्रमें शुभकार्य नहीं करना ॥ २ ॥ और उत्पातोंसे दूषित्त नक्षत्र तथा ग्रहोंकरके वेधित नक्षत्र और सूर्य चन्द्रमाके खग्रास ग्रहणका नक्षत्र छः मासतक त्यागे तथा आधा ग्रास हो तो तीन मासतक त्यागना चाहिये ॥ ३ ॥ चौथे हिस्सेका ग्रहण हो तो एकमास १ और ग्रहणसे तीन ३ दिन पहिलेका तथा सात ७ दिन ग्रहणके अनंतर त्यागना योग्य है ॥ ४ ॥ ग्रस्तास्त हो तो पहले तीन ३ दिन और ग्रस्तोदय हो तो पीछेके तीन ३ दिन त्याग देवे, परन्तु यह व्यवस्था पूर्णग्रहणमें जानना यदि न्यून होवे तो कम दिन त्याग देना चाहिये ॥ ५ ॥ ॥ तिथिगंडांत, नक्षत्रगंडांत, लग्नगंडांत और दुष्टक्षीण चंद्रमा पापग्रहोंका कर्त्तरी योग तथा पापहोरा, पापवार' वारवेला, कुलिक आदि योग भी त्याग देवे ॥ ६ ॥

चंद्रपापयुतं लग्नमंशं वा कुनवांशकम् । जन्मराशिविलग्नाभ्यामष्टमं लग्नमेव च ॥ ७ ॥ दिनमेकं तु मासांते नक्षत्रांते घटीद्वयम् । घटीमेकां तु तिथ्यंते लग्नांते घटिकार्द्धकम् ॥ ८ ॥ विषाख्या नाडिका भानां पातमेकार्गलं तथा । दग्धाहं क्रांतिसाम्यं च लग्नेशं रिपुमृत्युगम् ॥ ९ ॥ दिनार्द्धे च रजन्यर्द्धे संधौ च पलविंशतिम् । मलमासं कवीज्यास्तं बाल्यवार्द्धक्यमेव च ॥ १० ॥ जन्मेशास्तं मनोभंगं सूतकं मातुरार्त्तवम् । रोगोत्पाताद्यरिष्टानि शुभेष्वेतानि संत्यजेत् ॥ ११ ॥ अथायनकृत्यम् । गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबंधपूर्वम् । सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥ १२ ॥

चन्द्रमा करके तथा पापग्रह करके युक्त लग्न और नवांशक तथा पापनवांशक और जन्मराशि जन्मलग्नसे आठवें ८ लग्न भी त्यागे ॥ ७ ॥ मासके अंतका १ दिन, नक्षत्रके अंतकी दो २ घडी तथा तिथिके अंतकी एक १ घडी और लग्नके अंतकी आधी घडी अशुभ है ॥ ८ ॥ नक्षत्रोंकी विषघडी, पातदोष, एकार्गल दोष, दग्धयोग, क्रांतिसाम्य, और लग्नके पति छठें ६, आठवें ८ अशुभ हैं ॥ ९ ॥ मध्याह्नमें अर्द्धरात्रिमें और सन्ध्याकालमें वीस २० पल त्याग देवे और मलमास, शुक्र, बृहस्पतिका अस्त तथा बालवृद्ध संज्ञाका दिन भी त्याज्य है ॥ १० ॥ जन्मलग्नका स्वामी अस्त हो और मन प्रसन्न नहीं हो तथा सूतक हो या माता

रजस्वला हो गई हो या रोग, उत्पात, अरिष्ट आदि होवें तो शुभकाम नहीं करना ॥ ११ ॥ (अयनकृत्य) नवीन घरमें प्रवेश, देवस्थापन, विवाह, चूडाकर्म, यज्ञोपवीत इत्यादि शुभकर्म उत्तरायणमें ही करना चाहिये और निंदित अशुभ कार्य होवे सो दक्षिणायनमें करना योग्य है ॥ १२ ॥

अथ शुक्रास्तादिनिषिद्धकाले त्याज्यकर्माणि ॥ वापीकूपतडागयज्ञगमनं क्षौरं प्रतिष्ठाव्रतं विद्यामंदिरकर्णवेधनमहादानं गुरोः सेवनम् । तीर्थस्नानविवाहकाम्यहवनं मन्त्रोपदेशं शुभं दूरेणैव जिजीविषुः परिहरेदस्ते गुरौ भार्गवे ॥ १३ ॥ अथ विशेषः ॥ जलाशयगृहारामप्रतिष्ठारंभणे तथा । व्रतारम्भसमाप्ती च दीक्षां सोमाऽध्वरादिकम् ॥ १४ ॥ महादानतुलापाकर्माग्रयणारम्भमष्टकम् । केशांतं वृषभोत्सर्गं देवतास्थापनं प्रपा ॥ १५ ॥ व्रतबन्धमथोद्वाहं मुण्डनं कर्णवेधनम् । गर्भाधानादिसंस्कारान्कालातिक्रमणे शिशोः ॥ १६ ॥ देवतीर्थे क्षण चाद्यं भूमिपालाभिषेचनम् । अग्न्याधानं च संन्यासं चातुर्मास्यमथो गमम् ॥ १७ ॥ वेदव्रतं व्रतोत्सर्गमाद्यं वध्वाः प्रवेशनम् । अस्ते शुक्रेज्ययोर्बाल्ये वार्द्धके सिंहगे गुरौ ॥ १८ ॥ त्रयोदशदिने पक्षे मासे न्यूनेऽधिके त्यजेत् । धार्यं नेति जगुः केचिदस्तादौ भूषणादिकम् ॥ १९ ॥ केचिद्वक्रेऽतिचारेऽपि नीचराशिगते गुरौ । धनुर्मीनगते सूर्ये गुरुणा संयुतेऽपि च ॥ २० ॥

(शुक्रादिकोंके अस्तसमयमें त्याज्य कर्म) बावडी, कुवा, तालाव आदिका आरंभ, यज्ञ, यात्रा, प्रथम क्षौरकर्म, देवालय, तालाव आदिकी प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, प्रथम विद्यारंभ, गृहारंभ, गृहप्रवेश, कर्णवेध, तुलादान, गुरुसेवारंभ, तीर्थस्नान, विवाह, काम्यहोम, मंत्रोपदेश इत्यादि शुभकार्य शुक्र और बृहस्पतिके अस्तमें नहीं करना चाहिये ॥ १३ ॥ (ग्रंथांतरमें विशेष) जलाशय, घर, बगीचा आदिका आरंभ तथा प्रतिष्ठा, यज्ञोपवीत, दीक्षा, सोमयज्ञ, तुलादान, उपाकर्म, आग्रयणारंभ, अष्टकाश्राद्ध, केशांतकर्म, काम्यवृषोत्सर्ग, देवस्थापन, प्रपा, विवाह, चौलकर्म, कर्णवेध गर्भाधानादि संस्कार, देव, या तीर्थदर्शन, राज्याभिषेक, अग्न्याधान, सन्यास, चातुर्मास्ययाग, देवव्रत, उद्यापन, वधूप्रवेश, यात्रा इत्यादि कर्म शुक्रके तथा गुरुके अस्तमें और बालक तथा वृद्धपनेमें और सिंहके बृहस्पतिमें और तेरा १३ दिनके पक्षमें तथा क्षय, अधिकमासमें नहीं करना चाहिये । और कई आचार्योंका ऐसा भी मत है कि आभूषण, चूडा, आदिका धारण भी नहीं करना योग्य है और केचित्

का यह भी मत है कि गुरु वक्री हो अर्थात् अपनी राशिसे पीछेकी राशिपर पीछा चला जावे अथवा अतिशीघ्रतासे दूसरी राशिमें जानेको होवे तब भी और धन मीनके सूर्यमें तथा गुरुके साथ सूर्य होवे तो भी शुभकार्य नहीं करना ॥ १४–२० ॥

अथगुरुशुक्रयोर्बाल्यवार्धक्यम् । बाले वृद्धे च संध्यंशे चतु४ष्पंच५ त्रि ३ वासरान् । जीवे च भार्गवे चैव विवाहादिषु वर्जयेत् ॥ २१ ॥ अथ गुरोर्वक्रातिचारे विशेषः । वक्रातिचारगे जीवे त्वष्टाविंशति २८ वासरान् । परित्यज्य ततः कुर्याद्व्रतोद्वाहादिकं शुभम् ॥ २२ ॥ अथ वक्रातिचारदोषापवादः । त्रिकोण ९ । ५ द्व्याय २ । ११ संस्थे तु जीवे वक्रातिचारगे । न दोषस्तत्र विज्ञेयः कुर्यादुद्वाहनादिकम् ॥ २३ ॥ अथ सिंहस्थगुरोर्दोषः । सिंहसिंहांशगे जीवे विवाहादि न कारयेत् । गोदाया उत्तरे भागे भागीरथ्याश्च दक्षिणे ॥ २४ ॥

(गुरुशुक्रकी बाल वृद्ध अवस्था) गुरु शुक्रके बालकपनेके चार ४ दिन हैं, और वृद्धपनेके पांच ५ दिन जानना, और संधिके ३ दिन हैं । सो विवाह आदि शुभ कार्योंमें त्याज्य हैं । और केचित् आचार्य ऐसे भी कहते हैं कि अस्तके पहले सात ७ दिन वृद्धसंज्ञाके हैं और उदयके अनन्तर सात ७ दिन बालकसंज्ञाके हैं परंतु अति आवश्यकतामें तीन ३ दिन भी वर्ज्य हैं ॥ २१ ॥ (गुरुके वक्रातिचारमें विशेष) और गुरु वक्र हो या अतिचार हो तो अट्ठाईस दिन त्यागके यज्ञोपवीत, विवाह आदि करना शुभ है ॥ २२ ॥ परंतु जन्मराशिसे गुरु त्रिकोण ९।५ में या २।११ में हो तो वक्र अतिचारका दोष नहीं है जरूर विवाह आदि शुभकार्य करो ॥ २३ ॥ (सिंहके गुरुका दोष) सिंहराशिमें तथा सिंहके नवांशकमें गुरु हो तो विवाहादि नहीं करना परंतु गोदावरी नदीके उत्तर भागमें और भागीरथी) गंगा) के दक्षिण भागमें त्याज्य है ॥ २४ ॥

अथ देशविशेषेण सिंहस्थगुरोर्दोषाभावः । गोदाया याम्यदिग्भागे भागीरथ्यास्तथोत्तरे । विवाहाद्यखिलं कार्यं सिंहस्थेऽपि बृहस्पतौ ॥ २५ ॥ अथ सिंहस्थगुरोः सर्वदेशेषु दोषापवादः । सिंहराशिस्थिते जीवे मेषेऽर्के तु न दूषणम् । आवश्यके विवाहादौ सर्वदेशेष्वपि स्मृतम् ॥ २६ ॥ अथ मकरस्थे गुरौ विशेषः । मगधे गौडदेशे च सिंधुदेशे च कोंकणे । विवाहादिशुभे त्याज्यो नान्यस्मिन्नक्रगो गुरुः ॥

॥ २७ ॥ अथ लुप्तसंवत्सरः । अतिचारगतो जीवस्तं राशिं नैति चेत्पुनः । लुप्तसंवत्सरो ज्ञेयो गर्हितः सर्वकर्मसु ॥ २८ ॥ अथ लुप्तसंवत्सरापवादः । मेषे १ वृषे २ झषे १२ कुम्भे ११ यद्यतीचारगे गुरौ । न तत्र कालदोषः स्यादित्याह भगवान्यमः ॥ २९ ॥ अथ त्याज्यतिथ्यादि । तत्रादौ पक्षरन्ध्रतिथयः । चतुर्दशी १४ चतुर्थी ४ च अष्टमी ८ नवमी ९ तथा । षष्ठी ६ च द्वादशी १२ चैव पक्षरंध्राह्वया इमाः ॥ ३० ॥

(देशविशेषसे सिंहके गुरुका दोषाभाव) गोदावरीके दक्षिण देशमें और भागीरथीके उत्तरदेशमें सिंहके बृहस्पतिका विवाह आदिमें दोष नहीं है ॥ २५ ॥ (सिंहके गुरुका सब देशोंमें दोषापवाद) यदि सिंहमें गुरु हो और मेषमें सूर्य हो तो विवाह आदि करनेमें सर्वत्र ही दोष नहीं है यह सर्व देशमें ग्राह्य है ॥ २६ ॥ (मकर राशिम गुरुका विशेष) और मकर राशिमें गुरु हो तब मगध देशमें अर्थात् गयाजीके पासका जिला और गौडदेश अर्थात् बंगालेके उत्तर पुरनियेके पासका जिला और सिन्धुदेश अर्थात् पश्चिममें सिंधका देश और कोंकणदेश अर्थात् बम्बईके पास प्रसिद्ध हैं इन देशोंमें विवाहादि शुभकार्य त्याज्य है और इनसे अन्यदेशोंमें दोष नहीं है ॥ २७ ॥ (लुप्त संवत्सर) यदि बृहस्पति अतिचार होके अपनी राशिसे मार्गी हो जावे और वक्री होके पूर्व राशिपर नहीं आवे तब लुप्तसंवत्सर होता है सो यह संपूर्ण कार्योंमें निंदित है ॥ २८ ॥ (लुप्त संवत्सरापवाद) परन्तु बृहस्पति मेष १, वृष २, मीन १२ या कुंभ ११ का मार्गी या वक्री हो तो लुप्त संवत्का दोष नहीं है ऐसे भगवान् यमराजने कहा है ॥ २९ ॥ (त्याज्यतिथ्यादि) चतुर्दशी १४, चौथ ४, अष्टमी ८, नौमी ९, छठ ६, बारस १२ यह तिथि पक्षरंध्र संज्ञक हैं ॥ ३० ॥

अथैषां फलम् । विवाहे विधवा नारी व्रात्यः स्याच्चोपनायने । सीमंते गर्भनाशः स्यात्प्राशने मरणं ध्रुवम् ॥ ३१ ॥ अग्निना दह्यते शीघ्रं गृहारंभे विशेषतः । राजराष्ट्रविनाशः स्यात्प्रतिष्ठायां विशेषतः । किमत्र बहुनोक्तेन कृतं कर्म विनश्यति ॥ ३२ ॥ आवश्यके पक्षरंध्रतिथीनां वर्ज्या घटिकाः । क्रमादेतासु तिथिषु १४।४।८।९।६।१२ वर्जनीयाश्च नाडिकाः । भूता ५ ष्ट ८ मनु १४ तत्त्वा २५ ङ्क ९ दश १० शेषास्तु शोभनाः ॥ ३३ ॥ दोषनाडीषु यत्कर्म कृतं सर्वं विनश्यति ॥ ३४ ॥

अथ संक्रांतौ त्याज्यकालः । अयने विषुवे १।७त्याज्यं पूर्वं मध्यं पर दिनम् । शेषसक्रमणे पूर्वं पश्चात्षोडश नाडिकाः॥ ३५॥ **अथ षडशीतिमुखादिसंज्ञा ।** षडशीत्याननं चाप ९ नृयुक्कन्या ३।६ झषे १२ भवेत् । तुला ७ जौ १ विषुवं विष्णुपद सिंहा ५ लि ८ गो २ घटे ११ ॥३६॥

(तिथियोंका फल) इन तिथियोंमें विवाह करे तो कन्या विधवा हो और यज्ञोपवीत लेनेसे शूद्रके आचरणोंको धारण करे तथा सीमंतोन्नयन संस्कार करे तो गर्भपात हो और अन्नप्राशन करे तो मृत्यु हो ॥ ३१ ॥ गृहारंभ करे तो आग्निसे घर दग्ध हो तथा प्रतिष्ठा आदि करनेसे राजा और देशका नाश होता है, अर्थात् किया हुआ कार्य संपूर्ण नष्ट होता है ॥ ३२ ॥ (वृक्षरंध्र तिथियोंकी वर्ज्य घटिका) परन्तु यदि कामकी अति जरूरत हो तो इन तिथियोंकी क्रमसे आद्यकी घडी त्याग देवे अर्थात् चौदसकी ५ घडी, चौथकी ८ घडी, अष्टमीकी १४ घडी, नौमीकी २५ घडी, छठकी ९ घडी, बारसकी १० घडी त्याग देनी चाहिये ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ (संक्रांतिकी त्याज्य घडी) सूर्य उत्तरायण या दक्षिणायनमें आवे और विषुव अर्थात् मेष १ तुला ७ की संक्रांति हो तो संक्रांतिसे पहला दिन और दूसरा दिन और संक्रांतिका दिन इस तरह तीन ३ दिन शुभकर्ममें अशुभ हैं और वृष २ मि. ३ क. ४ सिं. ५ क. ६ वृ. ८ ध. ९ म. १० कुं. ११ मीन १२ इनकी संक्रांति हो तो संक्रांतिसे पहली १६ घडी और पीछेकी १६ घडी त्यागनी चाहिये. ॥ ३५ ॥ (षडशीतिमुखादिसंज्ञा) धन ९ मिथुन ३ कन्या ६ मीन १२ इन संक्रांतियोंकी षडशीतिमुख संज्ञा है और तुला ७ मेष १ की विषुव संज्ञा है, सिंह ५ वृश्चिक ८ वृष २ कुंभ ११ की विष्णुपद संज्ञा जाननी चाहिये ॥ ३६ ॥

अथ सकलग्रहाणां संक्रांतौ त्याज्यकालः। त्याज्याः सूर्यस्य संक्रांतेः पूर्वतः परतस्तथा । विवाहादिषु कार्येषु नाड्यः षोडश षोडश॥३७॥ देव३३ द्वचं२क९तंवो ६ ष्टाष्टौ ८८ नाड्योऽकाः ९ खनृपाः १६० क्रमात् । वर्ज्याः संक्रमणेऽर्कादेः प्रायोऽर्कस्यातिनिंदिताः ॥ ३८ ॥ **अथ विरुद्धयोगानां त्याज्यघटिकाः ।** वैधृतिव्यतिपाताख्यौ संपूर्णौ वर्जयेच्छुभे । वज्रविष्कंभयोश्चैव घटिकात्रयमादिकम् ॥ ३९ ॥ परिघार्धं पंच ५ शूले व्याघाते घटिका नव ॥ गंडातिगंडयोः षट् ६ च हेयाः सर्वेषु कर्मसु॥४०॥ एतेषामपि योगानां शेषं साधारणं स्मृतम् । एके विरुद्धयोगानां पादमाद्यं त्यजति हि ॥४१॥ **अथ ध्वांक्षादिदुर्योगानां त्याज्यघटिकाः ।** ध्वांक्षमु-

द्वरवज्राणां घटीपंचकमादिषु । काणमौसलयोर्द्वे द्वे चतस्रः पद्मलुम्बयोः ॥ ४२॥ एकां धूम्रे गदे सप्त चरे तिस्रो घटीस्त्यजेत् । त्यजेत्सर्वांऽशुभे मृत्युकालोत्पाताख्यराक्षसान् ॥ ४३ ॥

(संपूर्ण ग्रहोंकी संक्रांतिकी त्याज्य घटी) सूर्यकी संक्रांतिसे पहले १६ घडी और पीछेकी १६ घडी विवाह आदि कार्योंमें त्याज्य हैं ॥ ३७ ॥ और क्रमसे सूर्यके संक्रांतिकी ३३ घडी, चन्द्रमाके संक्रमणकी २ घडी, मंगलकी ९ घडी, बुधकी ६ घडी, गुरुकी ८८ घडी शुक्रकी ९ घडी, शनैश्चरके संक्रमणकी १६० घडी शुभकार्यमें त्यागना योग्य है परंतु सूर्यके संक्रांतिकी घडी तो अवश्य ही त्यागना चाहिये कारण कि अत्यन्त निंदित हैं ॥ ६८ ॥ (विरुद्धयोगोंकी वर्जित घडी) वैधृति, व्यतीपात संपूर्ण ही शुभकार्योंमें अशुभ हैं और वज्र, विष्कंभकी तीन ३ घडी अशुभ हैं ॥ ३९ ॥ परिघकी तीस ३० घडी, शूलकी ९ घडी, व्याघातकी ९ घडी और गंड, अतिगण्डकी ६ घडी सर्वकाममें त्याज्य हैं ॥ ४० ॥ और इन योगोंकी शेष घडी साधारण हैं तथा कई आचार्योंके मतमें इन योगोंका प्रथम चरण अशुभ है ॥ ४१ ॥ (ध्वांक्षादिदुर्योगकी त्याज्य घटिका) ध्वांक्ष, मुद्गर, वज्रके आद्यकी पांच ५ घडी और काण मुसलकी २ घडी तथा पद्म, लुम्बककी ४ घडी अशुभ हैं ॥ ४२ ॥ धूम्रयोगकी १ घडी, गदयोगकी ७ घड़ी, चरकी ३ घडी त्यागने योग्य हैं और मृत्यु, काल, उत्पात, राक्षस, यह योग संपूर्ण ही त्याज्य हैं ॥ ४३ ॥

अथावश्यककृत्ये विशेषः । यमघण्टे त्यजेदष्टौ मृत्यौ द्वादशनाडिकाः । अन्येषां पापयोगानां मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥ ४४ ॥ मृत्युक्रकचदग्धादीनिंदौ शस्ते शुभाञ्जगुः । केचिद्यामोत्तरं चान्ये यात्रायामेव निंदिवान् ॥ ४५ ॥ वारर्क्षतिथियोगेषु यात्रामेव विवर्जयेत् । विवाहादीनि कुर्वीत गर्गादीनामिदं वचः ॥ ४६ ॥अथ देशविशेषेण विरुद्धयोगपरिहारः । विरुद्धयोगास्तिथिवारजाता नक्षत्रवारप्रभवाश्च ये च । हूणेषु वंगेषु खसेषु वर्ज्याः शेषेषु देशेषु न ते निषिद्धाः ॥ ४७ ॥ कुयोगः सिद्धियोगश्च यदि स्यातामुभावपि । सुयोगो हंति दुर्योगं कार्यसिद्ध्यै शुभावहः ॥ ४८ ॥

(आवश्यक कार्यमें विशेषता) यमघंटकी ८ घडी और मृत्युयोगकी १२ घडी ही अति जरूरत होवे तो त्याग देना और संपूर्णही पापयोग मध्याह्नके अनंतर शुभ जानना चाहिये ॥ ४४ ॥ बहुतसे आचार्योंका ऐसा भी मत है कि मृत्यु, क्रकच, दग्ध आदि दुष्ट

योग चंद्रमा बली होनेसे शुभ हैं । केचित् आचार्य प्रहर १ दिन चढनेके अनंतर शुभ कहते हैं परन्तु मृत्यु आदि अशुभयोग केवल यात्रामें ही वर्जित हैं ॥ ४५ ॥ कारण कि वार, नक्षत्र, तिथिसे उत्पन्न होनेवाले योगोंमें यात्रा ही निषेध है और विवाहादि शुभकर्म्म करनेमें दोष नहीं है ऐसा गर्गादि मुनियोंका वाक्य है ॥ ४६ ॥ (देशभेद करके विरुद्ध योगोंका परिहार) तिथि, वार, नक्षत्रोंसे उत्पन्न होनेवाले मृत्युयोगादि दुष्टयोग हूण वंग (बंगाला) खस देशमें वर्जनीय हैं और अन्यदेशोंमें निषिद्ध नहीं हैं ॥ ४७ ॥ और एक दिनमें यदि कुयोग तथा सिद्धियोग दोनों होवें तो श्रेष्ठयोग दुष्टयोगको दूर करता है और कार्यकी सिद्धि करता है ॥ ४८ ॥

अथ पापसौम्यग्रहाः । सूर्यभौमशनिराहुकेतवः पापसंज्ञखचराः क्षयी विधुः । पूर्णचन्द्रगुरुशुक्रसोमजाः सर्वकर्मसु हि सौम्यखेचराः ॥ ४९ ॥ **अथ लग्नस्थचन्द्रविचारः ।** पापेंदू सप्नगौ त्याज्यौ सर्वेण सर्वकर्मसु । अक्षीणं कर्कि ४ गो २ जस्थ १ केऽप्याहुर्लग्नगं शुभम् ॥ ५० ॥ चन्द्रान्निधनगाः पापा लग्नाद्वा निधनोपगाः । कर्तुश्च फलनाशः स्याद्भग्नभांडे पयो यथा ॥ ५१ ॥ द्वंद्वाष्टमगान् पापान् वर्जयेन्निधनं विलग्नं च । चंद्रं च निधनसंस्थं सर्वारंभेषु कार्याणाम् ॥ ५२ ॥ शुभश्चन्द्रोऽप्यस्तपापात्सप्तमः पापयुक्तथा । पापमध्यगतः क्षीणो नीचगः शत्रुवर्गगः ॥ ५३ ॥ अशुभोऽपि शुभश्चन्द्रो गुरुणाऽऽलोकितो युतः । स्वर्क्षोच्चस्थः शुभांशे वा स्वाधिमित्रांशके तथा ॥ ५४ ॥

(पाप सौम्यग्रह विचार) सूर्य, भौम, शनि, राहु, केतु, क्षीण चन्द्रमा यह पापी ग्रह हैं और पूर्ण चन्द्रमा, गुरु, शुक्र, बुध, यह संपूर्ण कार्योंमें शुभके देनेवाले शुभग्रह हैं ॥ ४९ ॥) लग्नमें चंद्रमाका विचार) पापग्रह और चन्द्रमा लग्नमें संपूर्ण कार्योंमें त्याज्य हैं, कई आचार्य पूर्ण चन्द्रमाको और कर्क ४ वृष २ मेष १ स्थित चन्द्रमाको लग्नमें शुभ कहते हैं ॥ ५० ॥ और चन्द्रमासे या लग्नसे आठवें पापग्रह कर्ताके कार्यनाशक हैं जैसे फूटे हुए भांडे (पात्र) मेंसे जल निकल जावे ॥ ५१ ॥ और चन्द्रमासे आठवें पापग्रह तथा लग्न और लग्नसे आठवें चन्द्रमाको संपूर्ण कार्योंमें त्याग देना चाहिये ॥ ५२ ॥ और यदि चन्द्रमा शुभ ही है परंतु पापग्रहसे सातवें हो या पापग्रह सहित हो तथा पापग्रहोंके मध्यगत हो अथवा क्षीण या नीचराशिका हो या शत्रुकी राशिमें हो तो अशुभ है ॥ ५३ ॥ और चंद्रमा अशुभ भी है परंतु बृहस्पति देखता हो या उच्चराशिपर हो या शुभग्रहके या अपने मित्रके नवांशकमें हो तो शुभ होता है ॥ ५४ ॥

अपि सौम्यग्रहैर्युक्तं गुणैः सर्वैः समन्वितम् । व्यया १२ ष्ट ८ रिपुगे ६ चन्द्रे लग्नदोषः स संज्ञितः ॥ ५५ ॥ तल्लग्नं वर्जयेद्यत्नाज्जीवशुक्रसमान्वितम् । उच्चगे नीचगे वाऽपि मित्रगे शत्रुराशिगे ॥ ५६ ॥ अपि सर्वगुणोपेतं दम्पत्योर्निधनप्रदम् । शशांके पापसंयुक्ते दोषसंग्रहकारकः ॥ ५७ ॥ अथ सर्वकार्ये लग्नबलम् । सर्वेषु शुभकार्येषु नेष्टाः खेटा व्ययाष्टगाः । लग्ने पापरिपौ सौम्याः पापा केन्द्रत्रिकोणगाः ॥ ५८ ॥ सौम्याः केंद्रत्रिकोणस्थाः पापास्तु त्रिषडायगाः ते सर्वे लाभगाः खेटाः श्रेष्ठाः स्युः शुभकर्मणि ॥ ५९ ॥ भावः स्वपतिना सौम्यैर्दृष्टो युक्तो बलाधिकः । पूर्णं फलं निजं धत्ते व्यस्तं पापैर्युतेक्षितः ॥ ६० ॥

यदि लग्न शुभग्रहोंकरके तथा संपूर्ण गुणोंकरके युक्त भी है परंतु चंद्रमा १२।८। ६ हा तो अशुभ ही जानना ॥ ५५ ॥ और उस लग्नमें यदि गुरु, शुक्र भी हैं तथा चन्द्रमा उच्चराशि ४ या नीचराशि ८ अथवा मित्रके या शत्रुके घरमें है और संपूर्ण गुणोंकरके सहित लग्न है परंतु पापग्रहयुक्त चन्द्रमा हो तो दोषकारक ही होता है और स्त्री पुरुषकी मृत्यु करता है ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ (संपूर्ण कार्ययोग्य लग्नबलविचार) संपूर्णकार्योंमें पापग्रह १२ । ८।१ इन जगहमें तथा ६ में शुभग्रह और पापग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ में अशुभ होते हैं ॥ ५८ ॥ और सौम्यग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ में और पापग्रह ३ । ६ । ११ इन स्थानोंमें तथा संपूर्ण ग्रह ग्यारवें ११ श्रेष्ठ होते हैं ॥ ५९ ॥ और जो स्थान अपने स्वामीकरके या शुभग्रहोंकरके देखा हुआ हो और बलयुक्त हो परंतु उससे सातवें ७ कोई ग्रह होवे नहीं तथा पापग्रहों करके देखा हुआ नहीं हो तो पूर्णफल देता है ॥ ६० ॥

अथावश्यककृत्ये दुष्टतिथिवारर्क्षचंद्रतारादीनां दानम् ॥ तंडुलाश्च तिथौ दुष्टवारे रत्नं सकांचनम् ॥ गामृक्षे कनकं योगे करणे धान्यमेव च ६१ ॥ शंखं रौप्ययुतं चंद्रे तारायां सैंधवं तथा । नाड्यां हेमं नरो दद्यात्कार्येऽत्यावश्यके सति ॥ ६२ ॥ अथ दुष्टचंद्रेविशेषदानम् । श्वेतं वासः सिता धेनुः शंखो वा क्षीरपूरितः । देयो वा राजतश्चन्द्रश्चन्द्रदोषोपशांतये ॥ ६३ ॥

इति श्रीरत्नगढनगरनिवासिना पंडितगौड-श्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्तप्रकाशेऽद्भुतनिबन्धे द्वितीयं त्याज्यप्रकरणम् ॥ २ ॥

(अति जरूरतमें दुष्टतिथि वार नक्षत्र चंद्र ताराका दान) यदि तिथि दुष्ट हो तो तंडुलका दान करे और वार दुष्ट हो तो सुवर्णसहित रत्न देवे, राशि अशुभ हो तो गोदान और योग दुष्ट हो तो सुवर्णदान तथा करण अशुभ हो तो धान्यका दान करना चाहिये ॥ ६१ ॥ और चंद्रमा अशुभ हो तो शंख चांदीसहित तथा तारा दुष्ट हो तो सैंधव लवण और नाडी अशुभ हो तो सुवर्णदान आवश्यक कार्यमें करे ॥६२॥ (दुष्टचन्द्रमाका विशेष दान) श्वेतवस्त्र, सफेद धेनु, दुग्धपूरित शंख और चांदीका चन्द्रमा चन्द्रशांतिके अर्थ देना चाहिये ॥ ६३ ॥

इति मुहूर्त्तप्रकाशे त्याज्यप्रकरणं द्वितीयम् ॥ २ ॥

अथ गोचरप्रकरणम् ॥ तत्रादौ ग्रहाणां राशिभोगः । सपादर्क्षद्वयं भोगो मेषादीनामनुक्रमात् । अश्विभाद्रेवती यावद्राशिभोगो नवांघ्रिकः ॥ १ ॥ मासं १ शुक्रबुधादित्याः सार्द्ध १ ॥ मासं तु मंगलः । त्रयोदश १३ गुरुश्चैवं सपाद २। द्विदिने शशी ॥ २ राहुरष्टादश मासान् १८ त्रिंशन्मासान्‌ ३० शनैश्चरः । राहुवत् केतु १८ रुक्तस्तु राशिभोगाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ३ ॥ अथ ग्रहाणां फलसमयः । राशेरादौ कुजः सूर्यौ मध्ये शुक्रबृहस्पती । अन्ते चन्द्रः शनिर्ज्ञेयः फलदः सर्वदा बुधः ॥ ४ ॥ सूर्यः पंचदिनात्पूर्वं शीतरश्मिर्घटीत्रयात् । भौमो घस्राष्टकादर्वाक् शुक्रज्ञौ सप्तवासरात् ॥५॥ गुरुर्मासद्वयाच्चैव षण्मासात्तु शनैश्चरः । राहुर्मासत्रया-देव्यग्राशेस्तु फलदाः स्मृताः ॥ ६ ॥

(अथ गोचरप्रकरणं लिख्यते) प्रथम ग्रहोंके राशि भोगनेकी अवधि लिखते हैं– अश्विन्यादि सवा दो २। नक्षत्रोंके नौ ९ चरणतक एक मेषराशि १ होती है, इसीतरह वृषसे लेके ग्यारह ११ राशि फिर समझनी चाहिये ॥ १ ॥ शुक्र, बुध, सूर्य राशिमें एक मास रहते हैं । और मंगल १॥ मास, गुरु तेरह १३ मास, चन्द्रमा २। दिन ॥ २ ॥ राहु, केतु १८ मास. शनैश्चर ३० मास एकराशिको भोगता है ॥ ३ ॥ (ग्रहोके फलका समय) मंगल, सूर्य राशिके पहले ही फल देते हैं और शुक्र, बृहस्पति बीचमें अर्थात् आधी राशि भोगनेके अनंतर फल कहते हैं और चन्द्रमा शनैश्चर राशिके अन्त्यमें तथा बुध संपूर्ण राशिभर ही फलकारक है ॥ ४ ॥ परंतु सूर्य ५ दिन पहले, और चन्द्रमा तीन घडी पहले मंगल आठ ८ दिन पहले तथा

शुक्र बुध सात ७ रोज पहले देते हैं ॥ ५ ॥ बृहस्पति २ मास पहले, शनैश्वर ६ मास और राहु केतु तीन मास पहले ही अगाडी आनेवाली राशिका फल करते हैं ॥ ६ ॥

अथ कार्यविशेषे ग्रहफलम् । उद्वाहे चोत्सवे जीवः सूर्यो भूपालदर्शने । संग्रामे धरणीपुत्रो विद्याभ्यासे बुधो बली ॥ ७ ॥ यात्रायां भार्गवः प्रोक्तो दीक्षायां च शनैश्वरः । चंद्रमाः सर्वकार्येषु प्रशस्तो गृह्यते बुधैः ॥ ८ ॥ **अथ जन्मराशेः सकाशाच्छुभफलदा ग्रहाः** । तृतीये ३ दशमे १० षष्ठे ६ सदा सूर्यः शुभावहः । प्रथमे १ दशमे १० षष्ठे ६ तृतीये ३ सप्तमे ७ शशी ॥ ९ ॥ शुक्लपक्षे द्वितीय २ श्च पंचमो ५ नवमः ९ शुभः । त्रि ३ षष्ठे ६ दशमे १० भौमो राहुः केतुः शनिः शुभः ॥१०॥ षष्ठे ६ ऽष्टमे ८ द्वितीये २ च चतुर्थे ४ दशमे १० बुधः । द्वितीये २ पंचमे ५ जीवः सप्तमे ७ नवमे ९ शुभः॥ विहाय शुक्रो दशमं १० षष्ठं ६ च सप्तम ७ शुभः ॥ ११ ॥ एकादशे ग्रहाः सर्वे सर्वकार्येषु शोभनाः । ग्रहाणां गोचरं ज्ञेयं फलं विज्ञैः शुभाशुभम् ॥ १२ ॥

(कार्योंमें ग्रहोंकी विशेषता) विवाह या उत्सवमें गुरुका बल देखना और राजाके दर्शन (मिलने) में सूर्यका, संग्राममें मंगलका, विद्यारंभमें बुधका और यात्रामें शुक्रका, दीक्षामें शनिका और संपूर्ण कार्योंमें चंद्रमाका बल देखना चाहिये ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ (जन्मराशिसे ग्रहोंका फल) तीसरे ३ छठे ६ दशवें १० सदैव सूर्य शुभ होता है । जन्मका १, दशवें १०, छठे ६, तीसरे ३, सातवें ७ चंद्रमा सदा शुभ है ॥ ॥ ९ ॥ और शुक्लपक्षमें दूसरा २, पांचवां ५, नौवां ९ चंद्रमा शुभ जानना । और तीसरे ३ छठे ६ दशवें १० मंगल, राहु, केतु, शनि शुभ होते हैं ॥ १० ॥ छठे ६, आठवें ८, दूसरे २, चौथे ४, दशवें १० बुध शुभ है । दूसरे २ पांचवें ५, सातवें ७, नौवें ९ बृहस्पति शुभ जानना ॥ ११ ॥ और दशवें १०, छठे ६, सातवें ७ स्थानोंके विना शेष जगह शुक्र शुभ होता है और ग्यारहवें ११ स्थानमें संपूर्ण ही सूर्यादि ग्रह श्रेष्ठ जानने चाहिये, इस प्रकार गोचरग्रहोंका फल ज्योतिषियोंको कहना योग्य है ॥ १२ ॥

अथ चंद्रबले विशेषः । आश्रित्य चंद्रस्य बलानि सर्वे ग्रहाः प्रयच्छंति शुभाशुभानि । मनःसमेतानि यथेंद्रियाणि कर्मण्यतां याति न

केवलानि ॥ १३ ॥ चंद्रबलेन विहीनो न मनःपरितोषदः क्रियारंभः । अन्यगुणैरपि युक्तो जरीव रमणो नहि स्त्रीणाम् ॥ १४ ॥ चंद्रे शुद्धिगोचरे वा वेधे पक्षादिकेऽपि वा । शुभे शीतकरे कुर्याद्यात्रापाणिग्रहादिकम् ॥ १५ ॥ अथावश्यके नेष्टस्थानस्थचंद्रबलम् । द्वि २ पंच ५ नवमे ९ शुक्ले श्रेष्ठश्चन्द्रो हि उच्यते । अष्टमे ८ द्वादशे १२ कृष्णे चतुर्थे ४ श्रेष्ठ उच्यते ॥ १६ ॥ अथ द्वादशचंद्रे विशेषः । उत्सवे चाभिषेके च जनने व्रतबंधने । पाणिग्रहे प्रयाणे च शशी द्वादशगः शुभः ॥ १७ ॥ अथ चंद्रस्य पूर्णावधिः । दशम्य १० वधि कृष्णे तु पक्षे पूर्णो हि चंद्रमाः । ततः परं क्षीणचंद्रः शुभे कर्मणि वर्जयेत् ॥ १८ ॥

(चंद्रमाके बलका विशेष विचार) चंद्रमाके बलका आसरा लेके संपूर्ण ग्रह फल देते हैं, जिसतरह मनके आसरेसे इंद्रियां फल देती हैं ॥ १३ ॥ चंद्रमाके बलके विना कार्यका आरंभ अनेक गुणसहित भी है, परंतु चित्त प्रसन्न नहीं कर सकता है, जैसे कि वृद्ध मनुष्य युवती स्त्रियोंको आनंद नहीं देवे ॥ १४ ॥ चंद्रमाकी शुद्धि गोचर वेध, पक्ष आदिद्वारा देखके विवाह, यात्रादि शुभ कार्य करना चाहिये ॥ १५ ॥ (आवश्यक काममें नेष्ट चंद्रविचार) शुक्लपक्षमें २ । ५ । ९ चंद्रमा श्रेष्ठ होता है और कृष्णपक्षमें ४ । ८ । १२ चंद्रमा श्रेष्ठ कहा है ॥ १६ ॥ (द्वादशचंद्रविचार) उत्सव, राज्याभिषेक, जन्मकाल, यज्ञोपवीत, विवाह, यात्रामें चंद्रमा बारहवें १२ आवश्यक कार्यमें शुभ है ॥ १७ ॥ (पूर्णचंद्रका विचार) कृष्णपक्षकी दशमी १० तक पूर्ण चन्द्रमा होता है उसके अनंतर क्षीण चंद्र है सो संपूर्ण कार्योंमें त्यागना चाहिये ॥ १८ ॥

अथ तारादिबलादन्येषां बलम् । ताराया बलतश्चंद्रबलं सूर्यस्य चंद्रतः । सूर्यतः सर्वखेटानां बलं ज्ञेयं शुभाशुभम् ॥ १९ ॥ अथ ताराविचारः । जन्मर्क्षं गणयेदादौ दिननक्षत्रं च जायते । नवभिस्तु हरेद्भाग शेषा तारा प्रकीर्त्तिता ॥ २० ॥ अथ तारानामानि । जन्म १ संपत् २ विपत् ३ क्षेम ४ प्रत्यरिः ५ साधको ६ वधः ७ । मैत्रा ८ विमैत्रा ९ स्तारास्युस्त्रिरावृत्त्या नवैव हि ॥ २१ ।

अथ ताराफलम् । जन्मतारा १ द्वितीया २ च षष्ठी ६ चैव चतुर्थिका ४ । अष्टमी ८ नवमी ९ चैव षट् च ताराः शुभाग्रहाः ।

॥ २२ ॥ यदि स्यात्सबलश्चन्द्रस्तथाऽपि क्लेशदायिनी । तृतीया ३ पंचमी ५ तारा सप्तमी ७ च नृणां भवेत् ॥ २३ ॥ अथ जन्मतारायां विशेषः । जन्मर्क्षगे शशांके तु पंच कर्मणि वर्जयेत् । यात्रां युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ॥ २४ ॥ कृष्णे बलवती तारा शुक्लपक्षे तु चन्द्रमाः । सदा ग्राह्या बुधैरेव कृष्णे तारा न चन्द्रमाः ॥ २५ ॥

(ताराबलविचार)तारा (नक्षत्र) के बलसे चंद्रमा और चंद्रमाके बलसे सूर्य सूर्यके बलसे संपूर्ण ग्रहोंका शुभाशुभ बल देखना योग्य है ॥ १९ ॥ (ताराज्ञान) जन्मनक्षत्रसे कार्यके नक्षत्रतक गिने और नव ९ का भाग देवे जितना अंक बचे उतनी ही संख्या तारोंकी जाननी चाहिये ॥ २० ॥ (तारानामानि) जन्म १, संपत्त २ विपत् ३, क्षेम ४, प्रत्यरि ५, साधक ६, वुध ७, मैत्र ८, अतिमैत्र ९ यह नव तारा जन्मके नक्षत्रसे दिननक्षत्र तक तीन आवृत्ति करके होते हैं ॥ २१ ॥ (ताराफल) जन्मकी १, दूसरी २, छठी ६, चौथी ४, आठवीं ८, नवमी ९ यह छः तारा शुभ हैं ॥ २२ ॥ यदि चंद्रमा बलवान् भी है तब भी तीसरी ३, पांचवीं ५, सातवीं ७ तारा क्लेशके देनेवाली होती है ॥ २३ ॥ (जन्मताराका विशेषविचार) जन्मनक्षत्रमें यात्रा, युद्ध, विवाह, चौलकर्म, गृहप्रवेश, यह पांच कर्म वर्जनीय हैं ॥ २४ ॥ कृष्ण-पक्षमें तारा बलवान् हैं और शुक्लपक्षमें चन्द्रमा बलवान् जानना । परन्तु कृष्णपक्षमें तो तारा ही बलवान् है चंद्रमा नहीं है ॥ २५ ॥

अथावश्यके दुष्टतारासु दानम् । लवणैर्युवतिप्रतिमामभिनवशूर्पोदरे समालिख्य । तारादोषोपशमनाय हिताय दद्याद्विशुद्धये मर्त्यः ॥ एकत्रिपंच-सप्त द्विजाय दद्यात्पलानि लवणस्य । क्रमशश्च जन्म विपदि प्रत्यरिमर-णाख्यतारासु ॥ २६ ॥ सप्तम्यां तारकायां च दद्यात्स्वर्णं तिलानपि । गुडं तृतीयतारायां पंचम्यां लवणं तथा । दोषापनुत्तये तासां दद्याच्छाकं त्रिजन्मसु ॥ अथ गोचरवर्षदशा । जन्मना विंशतिः २० सूर्ये तृतीये दश १० चन्द्रमाः । चतुर्थे भौमचाष्टौ च षष्ठे बुधचतुर्थकम् ॥ २७ ॥ सप्तम दश सौरिः स्यान्नवमे चाष्टमं गुरोः दशमे राहुर्विंशत्या तदूर्ध्वं तु भृगोर्दशा ॥ २८ ॥ अथ दिनसंख्या । रविदिननख २० संख्या चन्द्रमा व्योमबाणैः ५० क्षितितनयगजाश्वी २८ चन्द्रजः षट् शराश्च ५६ । शनिरसगुण ३६ संख्या वाक्पतिर्नागबाणे ५८ नयनयुगक ४२

राहुः सप्ततिः ७० शुक्रमख्य ॥ २९ ॥ अथ दशाफलम् । पन्था भोगोऽनुतापश्च सौख्यं पीडा धनं क्रमात् । नाशः शोकश्च सौख्यं च जन्मसूर्यदशाफलम् ॥ ३० ॥

(आवश्यक कार्यमें दुष्ट ताराका दान) लवण (निमक) की १ स्त्री बनावे और शूर्प(छाजला) में स्थापन करके दान करे तो ताराका दोष नहीं हो परन्तु जन्म, विपत्, प्रत्यरि, वध, इन चार ताराओंमें तो एक १ तीन ३ पांच ५ सात ७ पल निमक क्रमसे देवे (पल चार ४ तोलाका होता है) ॥२६॥ और वध तारामें सुवर्ण, तिल भी देवे तथा विपत् तारामें गुडका दान करे और तीसरी ३ पहली १ तारामें शाक देना भी लिखा है ॥ (गोचरदशाविचार) जन्मके १ सूर्यके बीस २० दिनतक सूर्यकी दशा और तीसरे सूर्यके १० दिनतक चंद्रमाकी दशा, चौथे सूर्यके ८ दिन तक मंगलकी दशा और छठे सूर्यके ४ दिनतक बुधकी दशा जाननी ॥ २७ ॥ सातवे सूर्यके १० दिनतक शनैश्चरकी दशा, नौवें सूर्यके ८ दिनतक गुरुकी दशा, दशवें सूर्यके २० दिनतक राहुकी दशा और बारहवें सूर्यके सम्पूर्ण दिनतक शुक्रदशा रहती है ॥ २८ ॥ (दशादिनसंख्या) रविकी दशा २० दिन, और चंद्रमाकी ५० दिन, मंगलकी २८ दिन, बुधकी ५६ दिन, शनिकी ३६ दिन, गुरुकी ५८ दिन, राहुकी ४२ दिन, तथा शुक्रकी ७० दिन दशा भोगती है ॥ २९ ॥ (दशा-फल) गमन, भोग, क्लेश, सुख, पीडा, धन, नाश, शोक, सुख क्रमसे जन्मके सूर्य आदि पूर्वोक्त दशामें फल जानना ॥ ३० ॥

अथ दिनदशाप्रकारः । तिथिर्वारं च नक्षत्रं नामाक्षरसमन्वितम् । नवभिश्च हरेद्भागं शेषं दिनदशोच्यते ॥ ३१ ॥ रविचन्द्रौ भौमराहू गुरुमन्दज्ञकेसिताः । क्रमेणैता दशा ज्ञेयाः फलं पूर्वोक्तमेव हि ॥ ३२ ॥ अथ शनैश्चरफले विशेषः । शनिचक्रं नराकारं लिखेयत्र शनिर्भवेत् । तन्नक्षत्रं मुखे दत्त्वा यावन्नाम नरस्य च ॥ ३३ ॥ तावद्विचारयेत्तत्र ज्ञेयं शुभमथाशुभम् । एकं १ मुखे च नक्षत्रं चत्वारि ४ दक्षिणे करे ॥ ३४ ॥ त्रयं ३ त्रयं ३ पादयोश्च वामहस्ते चतुष्टयम् ४ । हृदि पंच ५ त्रयं ३ मौलौ नेत्रे गुह्ये द्वयं द्वयम् २ ॥ ३५ ॥ हानिरास्ये करे दक्षे लाभो वामे च रोगिता । हृदि श्रीर्मस्तके राज्यं पादे पर्यटनं तथा ॥ ॥ ३६ ॥ नेत्रे सुखं गुदे मृत्युः शनिचक्रं विचारयेत् । जपपूजा-द्विजार्चाभिः कल्याणं जायते सदा ॥ ३७ ॥

(दिनदशाप्रकार) तिथि, वार, नक्षत्र और पूछनेवालेके नामके अक्षर मिलावे, फिर नौ ९ का भाग देवे शेष अंक बचे सो ही क्रमसे दिनदशा जानना अर्थात् १ बचे तो सूर्यकी, २ चन्द्र, ३ मंगल, ४ राहु, ५ गुरु, ६ शनि, ७ बुध, ८ केतु, ९ बचे तो शुक्रकी दशा जाननी और फल पूर्व कहे हुए माफिक जानना ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ (शनिका विशेष फल) मनुष्यके आकारका शनिचक्र लिखे और जिस नक्षत्रपर शनि हो उस नक्षत्रको मुखमें लिखे फिर पृच्छक मनुष्यका नक्षत्र पर्यन्त क्रमसे लिखता जावे और शुभाशुभका विचार करे अर्थात् एक १ नक्षत्र मुखमें देवे. चार ४ दाहिने हाथमें, तीन ३ तीन ३ दोनों पगोंमें, और चार ४ बायें हाथमें पांच ५ हृदयमें, फिर तीन ३ मस्तकमें, दो २ नेत्रोंमें, दो २ गुह्यमें (गुदामें) लिखके फल देखे ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ मुखमें नक्षत्र आवे तो हानि हो, दहिने हाथमें लाभ, बायें हाथमें रोग, हृदयमें श्री (लक्ष्मी), मस्तकमें राज्य, पगोंमें गमन, नेत्रमें सुख और गुदामें जन्मनक्षत्र हो तो मृत्यु होवे, इस तरह शनिचक्रका विचार है, यदि शनिका अशुभ फल हो तो जप, पूजा, ब्राह्मणभोजन, आदि करानेसे कल्याण और शांति होती है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ शनिगतिः ॥ मुखाच्चरति गुह्ये च गुह्यादायाति लोचनम् । लोचनान्मस्तकं याति मस्तकाद्वामहस्तकम् ॥ ३८ ॥ वामहस्ताच्च हृदयं हृदयाच्चरणद्वयम् ॥ पद्भ्यां दक्षिणहस्तं च शनिचक्रे विचारयेत् ॥ ३९ ॥ इति शनिचक्रम् ॥ अथ सार्द्धसप्तवर्षस्य शनेर्विचारः । रिःफ १२ रूप १ धन २ भेषु भास्करिः संस्थितो भवति यस्य जन्मभात् । लोचनोदरपदेषु संस्थितिः कथ्यते रविजलोकजैर्जनैः ॥ ४० ॥ अथ शनेश्चरणविचारः । जन्मांगरुद्रेषु १ । ६ । ११ सुवर्णपादं द्विपंच-नंदे २ । ५ । ९ रजतस्य पादम् । त्रिसप्तदिक् ३ । ७ । १० ताम्रपदं वदंति वेदाष्टसार्केष्विह । ४ । ८ । १२ लोहपादम् ॥ ४१ ॥ अथ पादफलम् । लोहे धनविनाशः स्यात्सर्वसौख्यं च कांचने । ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत् ॥ ४२ ॥

(शनिगति) मुखसे गुह्यमें, गुह्यसे नेत्रोंमें, नेत्रोंसे मस्तकमें, मस्तकसे बायें हाथमें ॥ ३८ ॥ बायें हाथसे हृदयमें, हृदयसे पैरोंमें, पैरोंसे दहिने हाथमें शनि आता है ॥ ३९ ॥ (साढे सात ७॥ वर्षके शनिका विचार) जिसकी जन्मराशिसे १२ । १ । २ शनि होता है उसको साढे साती कहते हैं और बारहवां १२ नेत्रोंमें, जन्मका पेटमें, दूसरा पैरोंमें शनि आया ऐसा लोग कहते हैं ॥ ४० ॥ (शनिके पायोंका

विचार) १ । ६ । ११ शनि सुवर्णके पाये, २ । ५ । ९ चांदीके तथा ३ । ७ । १० ताम्बेके और ४ । ८ । १२ लोहेके पाये शनि जानना ॥ ४१ ॥ लोहेके पाये शनि धननाश करे, सुवर्णका सुख देवे, तांबेका सम है और चांदीका सौभाग्य देवे ॥४२॥

अथ शनैश्चरवाहनम् ॥ मन्दर्क्षाच्छशि १ वेद ४ तर्क ६ विशिखा ५ ऽद्रय ७ ग्न्य ३ ष्ट ८ पक्ष २ क्रमाच्छागोऽश्वेभखरा गजो हि महिषो ह्यश्वो वृषो वायसः । हानिं वैरभये भ्रमौ धनचयो मानाल्पकं भूपतेः सौख्यं रोगभयं नरस्य ददतो मन्दस्य वाहा अमी ॥ ४३ ॥ अथ शनैश्चरशांतिप्रकारः । यस्य पीडाकरः सौरिस्तस्य शांतिं वदाम्यहम् । लिखित्वा कृष्णद्रव्येण तैलमध्ये क्षिपेत्ततः ॥ ४४ ॥ निक्षिप्य भूमिमध्यस्थं कृष्णपुष्पैः प्रपूजयेत् । तुष्टिं याति न सन्देहः पीडां त्यक्त्वा शनैश्चरः ॥ ४५ ॥ अथ जन्मराशेः सकाशाद्द्वादशभावस्थसूर्यादिग्रहाणां फलम् ॥ सूर्यः स्थानविनाशं १ भयं २ श्रियं ३ मानहानिं ४ मथ दैन्यम् ५। विजयं ६ मार्गं ७ पीडां ८ सुकृतं ९ हंति सिद्धिं १० माय ११ मथ हानिम् १२ ॥ ४६ ॥ चन्द्रोऽन्नं च १ धनं २ सौख्यं ३ रोगं ४ कार्यक्षतिं ५ श्रियम् ६ । श्रियं ७ मृत्युं ८ नृपभयं ९ सुख १० माय ११ व्ययं १२ क्रमात् ॥ ४७ ॥ भौमोऽरिभीतिं १ धननाश २ मथ ३ भयं ४ तथार्थक्षति ५ मर्थलाभम् ६ । धनात्ययं ७ शत्रुभयं च ८ पीडां ९ शोकं १० धनं ११ हानि १२ मनुक्रमेण ॥ ४८ ॥

(शनिके वाहनका विचार) जन्मका १ शनि हो तो छागक वाहन जानना, चौथा ४ हो तो अश्वके वाहन, छठा ६ हो तो खरके वाहन, और पांचवां ५ हो तो गजके वाहन, सातवां ७ हो तो महिषके वाहन, तीसरा ३ अश्वके वाहन, आठवां ८ वृषके वाहन, दूसरा, २ वायस (काग) के यह वाहन, शनिका जानना चाहिये और क्रम १ हानि, ४ वैर, ६ भय, ५ भ्रमण, ७ धनसंचय, ३ मान, ८ सौख्य, २ रोग, इस मुजब वाहनोंका फल जानना चाहिये ॥ ४३ ॥ (शनैश्चरशांतिप्रकार) जिसके शनैश्चर पीडाकारक हो उसकी शांति कहते हैं—प्रथम लोहेकी शनिकी मूर्ति बनाके तैलमें रख देवे, फिर भूमिमें रखके कृष्णपुष्प आदि करके पूजन करे तो

शनैश्चर प्रसन्न हो और पीडा नहीं करे ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ (जन्मराशिसे सूर्यादि ग्रहोंका फल) सूर्य जन्मका स्थाननाश करे १, दूसरा भय करे २, तीसरा श्री (लक्ष्मी) की प्राप्ति करे ३, चौथा मानहानि ४, पांचवाँ दीनता ५, छठा विजय ६, सातवां गमन ७, आठवां पीडा ८, नौवां सुकृतनाश ९, दशवां सिद्धि १०, ग्यारहवां लाभ ११ और बारहवा हानि करे १२ ॥ ४६ ॥ जन्मका चन्द्रमा-अन्न-लाभ १, दूसरा धन २, तीसरा सुख ३, चौथा रोग ४, पांचवां कार्यनाश ५ छठा श्रीप्राप्ति ६, सातवाँ धन ७, आठवां मृत्यु ८, नौवाँ राजभय ९, दशवां सुख १०, ग्यारहवाँ लाभ ११, बारहवाँ १२ खरच करे ॥ ४७ ॥ इसी तरह मंगल-१ शत्रुभय । २ धननाश । ३ अर्थप्राप्ति । ४ भय । ५ धननाश । ६ धनलाभ । ७ धननाश । ८ शत्रुभय । ९ पीडा । १० शोक । ११ धनलाभ । १२ हानि करे ॥ ४८ ॥

बुधस्तु बंधं १ धन २ मन्यभीतिं ३ धनं ४ रुजं ५ स्थान ६ मथो च पीडाम् ७ । अर्थं ८ रुजं ९ सौख्य १०मथात्मसौख्य ११ मर्थक्षतिं १२ जन्मगृहात्करोति ॥ ४९ ॥ गुरुर्भयं १ धनं २ क्लेशं ३ धननाशं ४ सुखं ५ शुचम् ६ । मानं ७ रोगं ८ सुखं ९ दैन्यं १० लाभं ११ पीडां च १२ जन्मभात् ॥ ५० ॥ कविः शत्रुनाशं १ धनं २ सौख्य ३ मर्थं ४ सुतार्तिं ५ रिपोः साध्वसं ६ शोक ७ मर्थम् ८ । बृहद्वस्त्रलाभं ९ विपत्तिं १० धनाप्तिं ११ तनोत्यात्मज १२ जन्मराशेः सकाशात् ॥५१॥ शनिः सर्वनाशं १ तथा वित्तनाशं २ विधत्ते धनं ३ शत्रुवृद्धिं ४ मवृद्धिम् ५ । श्रियं ६ दोष ७ संधिं रिपुं ८ ८ द्रव्यनाशं ९ तथा दौर्मनस्यं १० धनं ११ बह्वनर्थम् १२ ॥ ५२ ॥ राहुर्हानिं १ तथा नैःस्वं २ धनं ३ वैरं ४ शुचं ५ श्रियम् ६ । कलिं ७ वसुं ८ च दुरितं ९ वैरं १० सौख्यं ११ शुचं १२ क्रमात् ॥ ५३ ॥ केतुः क्रमाद्रुजं १ वैरं २ सुखं ३ भीतिं ४ शुचं ५ धनम् ६ । गतिं ७ गदं ८ दुष्कृतिं ९ च शोकं १० कीर्तिं च ११ शत्रुताम् १२ ॥ ५४ ॥

बुध-१ बंधन । २ धन । ३ भय । ४ धन । ५ रोग । ६ स्थान । ७ पीडा । ८ धन । ९ रोग । १० सुख । ११ सौख्य । १२ धननाश करे ॥ ४९ ॥ गुरु-१ भय । २

धन । ३ क्लेश । ४ धननाश । ५ सुख । ६ शोक । ७ मान । ८ रोग । ९ सुख । १० दीनता । ११ लाभ । १२ पीडा करे ॥ ५० ॥ शुक्र–१ शत्रुनाश । २ धन । ३ सुख । ४ धन । ५ पुत्र । ६ शत्रुभय । ७ शोक । ८ धन । ९ वस्त्रलाभ । १० विपत्ति ११ धन । १२ पुत्रलाभ करता है ॥ ५१ ॥ शनैश्चर–१ सर्वनाश । २ धननाश । ३ । धनलाभ । ४ शत्रुवृद्धि । ५ पुत्रवृद्धि ६ श्रीप्राप्ति । ७ दोषसंग्रह । ८ रिपु । ९ धननाश । १० दुर्मन । ११ धन । १२ अनर्थ करावे ॥ ५२ ॥ राहु–१ हानि । २ दारिद्र्य । ३ धन । ४ वैर । ५ शोक । ६ श्रीप्राप्ति । ७ कलह । ८ धन । ९ पाप । १० वैर । ११ सौख्य । १२ शोक करे ॥ ५३ ॥ केतु–जन्म १ का रोग । २ वैर । ३ सुख । ४ भय । ५ शोक । ६ धन । ७ गमन । ८ रोग । ९ पाप । १० शोक । ११ कीर्ति । १२ शत्रुवृद्धि करता है ॥ ५४ ॥

अथ दुष्टग्रहेषु यात्रादि वर्ज्यम् । अकालचर्यां मृगयां च साहसं सुदूरयानंगजवाजिवाहनम् । गृहे परेषां गमनं विवर्जयेद् ग्रहेषु राजा विषमस्थितेषु ॥ ५५ ॥ अथ विषमग्रहे शांतिप्रकारः । ग्रहेषु विषमस्थेषु शांतिं यत्नात्समाचरेत् । हानिवृद्धी ग्रहाधीने तस्मात्पूज्यतमा ग्रहाः ॥५६॥ ये खेचरा गोचरतोऽष्टवर्गाद्दशाक्रमाद्वाऽप्यशुभा भवंति । दानादिना ते सुतरां प्रसन्नास्तेनाधुना दानविधिं प्रवक्ष्ये ॥५७॥ तत्रादौ दानकालः । बुधस्य घटिकाः पंच सौरेर्मध्याह्नमेव च । राहुकेत्वोश्च रात्रौ च जीवे चन्द्रे च संध्ययोः ॥ ५८ ॥ उदये सूर्यशुक्रौ च भौमे च घटिकाद्वये । समे काले न कर्तव्यं दातॄणां प्राणघातकाः ॥५९॥ अथ सूर्यादिग्रहाणां दानानि। तत्रादौ सूर्यस्य । माणिक्यगोधूमसवत्सधेनुः कौसुंभवासोगुडहेमताम्रम् । आरक्तकं चन्दनमंबुजं च वदंति दानं हि विरोचनाय ॥ ६९ ॥

(अशुभ ग्रहोंमें यात्रा आदि करना निषेध) यदि जन्मराशिसे ग्रह दुष्टस्थानमें हो तो रात्रि आदिमें फिरना तथा शिकार खेलना, हठ करना, दूरदेशमें जाना, हाथी घोडे आदिपर चढना, दूसरेके घरमें जाना इत्यादि काम कदापि नहीं करना चाहिये ॥ ५५ ॥ (दुष्टग्रहोंकी शांतिका प्रकार) यदि अशुभ ग्रह हो तो शांति जरूर करना योग्य है, कारण, हानि और वृद्धि ग्रहोंके ही अधीन है, इस वास्ते अवश्य ग्रहोंका पूजनादि करे ॥ ५६ ॥ जो ग्रह गोचरसे, या अष्टवर्गसे, या दशासे अशुभ हैं वे दानोंके देनेसे शुभ होते हैं इस वास्ते दान लिखते हैं ॥ ५७ ॥

(दानका काल) बुधका दान पांच ५ घडी दिन चढ़े देना और शनैश्चरका मध्याह्नमें, राहु, केतुका रात्रिमें, और बृहस्पति, चंद्रमाका संध्याकालमें देना चाहिये ॥ ५८ ॥ सूर्य, शुक्रका सूर्योदयमें, मंगलका दो घड़ी दिन चढे दान करे परन्तु विषम कालमें नहीं करे क्योंकि देनेवालेका प्राण हरते हैं ॥ ५९ ॥ (सूर्यादि ग्रहोंका दान) माणिक्य, गोधूम. बछडेसहित धेनु कौसुंभ (रक्त) वस्त्र, गुड, सुवर्ण, ताम्र, रक्तचन्दन, कमल, यह सूर्यका दान है ॥ ६० ॥

चंद्रस्य । सद्वंशपात्रस्थिततण्डुलांश्च कर्पूरमुक्ताफलशुभ्रवस्त्रम् युगोपयुक्तं वृषभं च रौप्यं चन्द्राय दद्याद्घृतपूर्णकुम्भम् ॥६१॥ भौमस्य । प्रवाल-गोधूममसूरिकाश्च वृषोऽरुणश्चापि गुडः सुवर्णम् । आरक्तवस्त्रं करवीरपुष्पं ताम्रं च भौमाय वदंति दानम् ॥६२॥ बुधस्य । चैलं च नीलं कलधौत-कांस्यं मुद्गाज्यगारुत्मतसर्वपुष्पम् । दासी च दंतो द्विरदस्य नूनं वदंति दानं विधुनन्दनाय॥६३॥ बृहस्पतेः । शर्करा च रजनी तुरंगमः पीतधान्यमपि पीतमंबरम् । पुष्परागलवणं सकांचनं प्रीयते सुरगुरोः प्रदीयते ॥ ६४ ॥ शुक्रस्य । चित्रांबरं शुभ्रतुरंगमं च धेनुश्च वज्रं रजतं सुवर्णम् । सत्तंडु-लानुत्तमगंधयुक्तं वदंति दानं भृगुनंदनाय ॥६५॥ शनैश्चरस्य ! माषाश्च तैलं विमलेंद्रनीलं तिलाः कुलित्था महिषी च लोहम् । कृष्णा च धेनुः प्रवदन्ति नूनं दुष्टाय दानं रविनंदनाय ॥ ६६ ॥ राहोः । गोमेदरत्नं च तुरंगमश्च सुनीलचैलामलकंबलं च । तिलाश्च तैलं खलु लोहमिश्रं स्वर्भानवे दानमिदं वदंति । ६७॥ केतोः । वैडूर्यरत्नं सतिलं च तैलं सुकंबलाश्चापि मदो मृगस्य । शस्त्रं च केतोः परितोषहेतोश्छागस्य दानंकथितं मुनींद्रैः६८॥

उत्तम वंशके पात्रमें रखा हुआ चावल, कपूर, मोती, श्वेतवस्त्र, वृषभ, चांदी, घृतसे भरा हुआ कुम्भ यह चंद्रमाके दान हैं ॥ ६१ ॥ मूँगा, गोधूम, मसूर, लाल वृषभ, गुड, सुवर्ण, रक्तवस्त्र, कनेरके रक्त पुष्प, ताम्र यह मंगलका दान जानना ॥ ६२ ॥ नीलवस्त्र, सुवर्ण, कांसी, मूँग, घृत, गेरू, पुष्प, दासी, हाथी-दांत यह बुधके दान हैं ॥ ६३ ॥ शर्करा, हरिद्रा, घोडा, पीत धान्य, पीत वस्त्र, पुष्पराग, नोन, सुवर्ण, यह बृहस्पतिके दान हैं ॥ ६४ ॥ चित्रविचित्र वस्त्र, श्वेत घोडा. धेनु, हीरा, चांदी, सुवर्ण, चावल, चन्दन यह शुक्रके दान कहते हैं ॥ ६५ ॥ माष, तिलोंका तेल, नीलमणि, तिल, कुलथी, महिषी. लोह, कृष्णा धेनु, यह शनिके

दान हैं ॥ ६६ ॥ लहशनियाँ रत्न, घोडा, नीलवस्त्र, आंवला, कंबल, तिल, तेल लोह यह राहुके दान हैं ॥ ६७ ॥ वैदूर्यमणि, तिल, तेल कंबल, कस्तूरी, शस्त्र, छाग (बकरा) यह केतुके प्रसन्नता करनेवाले दान हैं ॥ ६८ ॥

अथ साधारणदानानि ॥ भानुस्तांबूलदानादपहरति नृणां वैकृतं वासरोत्थं सोमः श्रीखण्डदानादवनिवरसुवो भोजनात्पुण्यदानात् । सौम्यः शास्त्रस्य मन्त्राद् गुरुहरभजनाद्भार्गवः शुभ्रवस्त्रात्तैलस्नानात्प्रभाते दिनकरतनयो ब्रह्मनत्या परे च ॥ ६९ ॥ **अथ ग्रहशांत्यर्थं रत्नादिधारणम्** ॥ धार्यं तुष्टयै विद्रुमं भौमभान्वो रूप्यं शुक्रेंद्वोश्च हेमेंदुजस्य । मुक्ता सूरेर्लोहमर्कात्मजस्य लाजावर्तः कीर्त्तितः शेषयोश्च ॥ ७० ॥ **अथ ग्रहाणां जपसंख्या** । रवेः सप्त सहस्राणि चन्द्रस्यैकादशैव तु । भौमे दश सहस्राणि बुधे चाष्टसहस्रकम् ॥ ७१ ॥ एकोनविंशतिर्जीवे शुक्र एकादशैव तु । त्रयोविंशति मन्दे च राहोरष्टादशैव तु । केतोः सप्त सहस्राणि जपसंख्या प्रकीर्त्तिता ॥ ७२ ॥

(साधारण दान) सूर्य तांबूलके दानसे दिनभरकी पीडा दूर करता है, चंद्रमा चन्दनके दानसे और मंगल ब्राह्मण भोजनसे, बुध शास्त्र और मन्त्रोंसे, गुरु शिवपूजनसे, शुक्र श्वेतवस्त्रके दानसे और शनैश्चर तेलके मालिशसे तथा राहु, केतु ब्राह्मणको नमस्कार करनेसे शांत होते हैं ॥ ६९ ॥ (ग्रह शांतिकारक रत्न) मंगल सूर्यकी प्रीतिके अर्थ मूँगा धारण करना चाहिये और शुक्र चन्द्रमाके अर्थ चांदी और बुधके अर्थ सुवर्ण तथा गुरुके अर्थ मोती और शनिकी प्रीतिके अर्थ लोह तथा राहु, केतुके अर्थ लाजावर्त धारण करे ॥ ७० ॥ (ग्रहजपसंख्या) सूर्यके ७००० चन्द्रमाका ११०००. मंगलका १००००, बुधका ८०००, गुरुका १९०००, शुक्रका ११०००, शनैश्चरका २३०००, राहुका १८००० और केतुका ७००० जप करना चाहिये, परन्तु कलियुगमें चौगुणा जप करनेसे शांति होती है (कलौ संख्या चतुर्गुणा) इस वाक्यसे ॥ ७० ॥ ७१ ॥

अथ ग्रहपीडोपशमनोपायाः । देवब्राह्मणवंदनाद् गुरुवचः संपादनात्प्रत्यहं साधूनामपि भाषणाच्छ्रुतिरवश्रेयःकथाकारणात् । होमादध्वरदर्शनाच्छुचिमनोभावाज्जपाद्दानतो नो कुर्वंति कदाचिदेव पुरुषस्यैवं ग्रहः

पीडनम् ॥ ७३ ॥ अथ ग्रहणनक्षत्रफलम् । यस्यैवं जन्मनक्षत्रे ग्रस्येते शशिभास्करौ । तज्जातानां भवेत्पीडा ये नराः शांतिवर्जिताः॥७४॥ जन्मसप्ताष्टरिःफांकदशमस्थे निशाकरे । दृष्टोऽरिष्टप्रदो राहुर्जन्मर्क्षे निधनेऽपि च ॥ ७५ ॥ अथ जन्मराश्यादौ ग्रहणशांतिः । सुवर्णनिर्मितं नागं सतिलं कांस्यभाजनम् । सदक्षिण सवस्त्रं च ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ ७६ ॥ सौवर्ण राजतं वाऽपि बिंबं कृत्वा स्वशक्तितः । उपरागभवक्लेशच्छिदे विप्राय कल्पयेत् ॥ ७७ ॥

इति श्रीरत्नगढ़नगरनिवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशेऽद्भुतनिबन्धे तृतीयं गोचरप्रकरणम् ॥ ३ ॥

(ग्रहोंके शांतिका उपाय) देव और ब्राह्मणोंके वंदनासे तथा गुरुके वाक्य श्रवण करनेसे, नित्यप्रति साधुओंके संभाषणसे और वेदध्वनि सुननेसे, उत्तम कथा करनेसे होम यज्ञोंके दर्शनसे, शुद्ध मनसे तथा भावना जप दानोंसे ग्रहोंकी शांति होती है और ग्रह पीडा नहीं करते हैं ॥ ७३ ॥ (ग्रहणफल) जिनके जन्मनक्षत्रपर चन्द्रमा सूर्यका ग्रहण होता है उस नक्षत्रवालोंको पीडा होती है ॥ ७ ॥ और जन्मराशिको तथा सातवीं ७, आठवीं ८, बारहवीं १२ नौवीं ९, दशवीं १०, राशिको ग्रहण हो तो ग्रहण देखना नहीं चाहिये यदि देखे तो अरिष्ट होता है ॥ ७५ ॥ (ग्रहणशांति) सुवर्णका नाग (सर्प) बनाके तिलपूरित कांसीके पात्रमें स्थापन करे फिर दक्षिणा और वस्त्रसहित ब्राह्मणको दे देवे ॥ ७६ ॥ अथवा सूर्यग्रहणमें सुवर्णका सूर्य और चन्द्रग्रहणमें चान्दीका चन्द्रमा बनाके भक्तियुक्त शक्तिके अनुसार ब्राह्मणको देवे तो ग्रहणकी पीडा नहीं होवे ॥ ७७ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तप्रकाशे तृतीयं गोचरप्रकरणम् ॥ ३ ॥

नानामुहूर्त्तप्रकरणम् ४.

अथ नानामुहूर्त्तप्रकरणम् ॥ तत्रादौ नूतनांबरालंकारधारणम् । हस्तादिपंचके ५ पुष्ये धनिष्ठारेवतीद्वयोः । त्र्युत्तरे ३ च पुनर्वस्वौ रोहिण्यां च शुभे तिथौ ॥१॥ बुधे शुक्रे गुरौ वारे नूतनांबरधारणम् । सौवर्ण रूप्यरत्नादिभूषणानां धृतिः शुभा ॥ २ ॥ अथ स्त्रीणां रक्तवस्त्रसुवर्णचूडादिपरिधानम् ॥ हस्तादिपंचपूषाश्विधनिष्टासु च कांचनम् ।

रक्तं परिदधेद्वस्त्रं भौमार्कगुरुभार्गवे ॥३॥ अथ सौभाग्यवत्या निषेधः । रौहिण्यां त्र्युत्तरे पुष्ये पुनर्वस्वोः कदाचन । न दध्यात्सुभगा भूषावस्त्रा-ण्यन्ये कुजेऽपि न ॥ ४ ॥ अथ चूडीधारणे विशेषः । अस्तं गते भृगुसुते शयने च विष्णोर्जन्माद्यचाप ९ झष १२ गे दिनपे न दध्या-त् । रिक्तेंदुभानुजदिनेंऽशकवर्जिते च शंखं च रक्तपटकं युवतिः कथं चित् ॥५॥ अथ चूडाचक्रम् । यावद्भास्करभुक्तिभानि दिवसे धिष्ण्यानि संख्या ततो वह्नि ३ भूत ५ गुणा ३ ब्धि ४ सप्त ७ नयनं २ पृथ्वी १ करौ २ दुः १ क्रमात् । सूर्यारौ कविसौम्यराहुरविजा जीवः शशी केतवः क्रूरेऽशुच शुभे शुभं च कथित चक्रे च चूडाह्वये ॥ ६ ॥

अथ नानामुहूर्त्तप्रकरण चौथा लिखते हैं–(नवीनवस्त्रादिधारणमुहूर्त्त) ह. चि. स्वा. अनु. पुष्य. ध. रे. अश्वि. उत्तरा ३, पुनर्वसु, रो. यह नक्षत्र तथा शुभतिथि ॥ १ ॥ बुध, शुक्र, गुरु वार नवीन वस्त्र, सुवर्ण, चांदी, रत्नोंके आभूषण धारणमें श्रेष्ठ हैं ॥ २ ॥ (स्त्रियोंके रक्तवस्त्र चूडा आदिका मु०) ह, चि. स्वा. वि. अनु. रे. अ. ध. इन नक्षत्रोंमें और मंगल, आदित्य, गुरु, शुक्रवारमें स्त्रियोंको कांचन आदिका चूडा तथा रक्तवस्त्र धारण करना योग्य है ॥ ३ ॥) सौभाग्यवती स्त्रीको निषेध) रो, उत्तरा ३, पुष्य, पुनर्वसु, और मंगलवारमें सौभाग्यवती स्त्रियोंको आभूषण वस्त्र धारण नहीं करना चाहिये ॥ (चूडीधारणमें विशेष) शुक्रके अस्तमें और विष्णुके शयनकालमें अर्थात् चातुर्मास्यमें और जन्मके १ या धन ९, मीन १२ के सूर्यमें और रिक्ता। ४ । ९ १४ तिथि सोम शनिवारमें और शनिके नवांशमें (शंख) अर्थात् हस्तिदंत लाख आदिकी चूडी या नवीन रक्तवस्त्र स्त्रीको धारण करना योग्य नहीं है ॥ ५ ॥ (चूडाचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिने जिनमें प्रथमके तीन ३ नक्षत्र सूर्यके हैं सो अशुभ जानना फिर ५ मंगलके सो भी अशुभ हैं, अनंतर ३ शुक्रके शुभ हैं, ४ बुधके शुभ हैं, ७ राहुके अशुभ हैं, २ शनिके अशुभ, १ गुरुका श्रेष्ठ, २ चन्द्रमाके शुभ, और १ केतुका है सो अशुभ जानना ॥ ६ ॥

अथ स्त्रीणां वालबंधमुहूर्त्तः । पौष्णादिभद्वयदिवाकरशंकरेषु मूला निलश्रवणशीतकरोत्तरेषु । सौम्यामरेज्यभृगुभानुदिनेंऽगनानां मानार्थभोग-सुखदः खलु वालबंधः(१)अथ मुहूर्त्तं विनाऽपि कुत्रचिद्वस्त्रधारणम् । राज्ञा प्रीत्याऽर्पितं वस्त्रं विवाहे चोत्सवादिषु । तथा विप्राज्ञया धार्यं निषे

धिष्ण्येऽपि वासरे ॥७॥ अथ नवीनवस्त्रक्षालनम् ॥ पुनर्वसुद्वयेऽश्विन्यां धनिष्ठाहस्तपंचके । हित्वाऽर्कार्किबुधान् रिक्तां षष्ठीं श्राद्धदिनं तथा । व्रतं पर्व च वस्त्राणि क्षालयेद्रजकादिना ॥ ८ ॥ अथ सूचीकर्म । मृगाश्विन्याऽनुराधाऽश्विपुष्यांत्यं रोहिणी करः । ज्येष्ठा सद्वासराः सार्काः सूचीकर्मणि संमताः ॥ ९ ॥ अथ शय्यानिर्म्माणमुहूर्त्तः । रोहिणी चोत्तरा ज्ञेया हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः । अनुराधाऽश्विनी शस्ता खट्वानिर्माणकर्मणि ॥ १० ॥ शुभे योगे शुभे वारे विदध्यात्खट्विकां नरः । मृताशौचे पंचकेषु रिक्ताऽमाविष्टिवैधृतौ ॥ ११ ॥ पितृपक्षे श्रावणे च भाद्रे मास्यशुभे दिने । वर्जयेद्भौममंदे च खट्वानिर्माणकं सदा ॥ १२ ॥

(स्त्रियोंके बालबंधमु.) रे. अ. ह. आ. मू. कृ. श्र. मृ. उ. ३ इन नक्षत्रोंमें बुध गुरु शुक्र रवि इन वारोंमें स्त्रियोंके बालबंधनेसे [शिर गुंथानेसे] मान, धन, भोग, सुख, सौभाग्य प्राप्त होता है (कई जगह मुहूर्त्तविना भी वस्त्रधारण) राजाका दिया हुआ और विवाह आदि उत्सवमें तथा ब्राह्मणकी आज्ञा करके निषिद्ध दिनमें भी वस्त्रधारण कर लेना योग्य है ॥ ७ ॥ (वस्त्र क्षालन मु.) पु. पु. अ. ध. ह. इन ९ नक्षत्रोंमें और शनि रवि बुधवारके विना अन्य वारोंमें रिक्ता ४।९।१४ षष्ठी ६ के विना तिथियोंमें श्राद्धदिन, व्रत पर्व आदिके विना शुभ दिनमें धोबीके पाससे वस्त्र धुलाना चाहिये ॥ ८ ॥ (सूचीकर्ममु.) मृ. चि. अनु. अ. पुष्य, रे. रो. ह. ज्ये. यह नक्षत्र रवि, गुरु, शुक्र, बुध, सोम यह वार वस्त्र सिलानेमें योग्य हैं ॥ २९ ॥ (खाट बनानेका मु.) रो. उ. ३ ह. पु. पु. अ. इन नक्षत्रोंमें और शुभयोग शुभवारोंमें खाटबनाना शुभ है ॥ १० ॥ परन्तु मृत सुतकमें, या पंचकोंमें रिक्ता ४ । ९ । १४ अमावास्या तिथिमें और भद्रा, वैधृति, श्राद्धपक्षमें, श्रावण, भाद्रपद मासमें तथा मंगल, शनिवारमें खाट कदापि नहीं बनाना चाहिये ॥ ११ ॥ १२ ॥

अथ खट्वाचक्रम् ॥ सूर्य्यर्क्षात्तु चतुष्कं च ४ देयं धिष्ण्यं तु मस्तके। कोणयोरष्टनक्षत्रं ८ शाखायामष्ट ८ संख्यकम् ॥ १३ ॥ खट्वामध्ये त्रिकं ३ चैव वेद ४ संख्या च पादयोः । इत्थं खट्वाफलं चक्रे ज्ञेयं तत्र शुभाशुभम् ॥ १४ ॥ मस्तके च शुभं ज्ञेयं कोणयोरष्ट मृत्युदम् । शाखाष्ट ८ र्क्षे शुभं प्रोक्तं त्रिकं मध्ये सुखप्रदम् ॥ १५ ॥ पादेषु वेद ४ नक्षत्र हानिमृत्युभयप्रदम् । सूर्यभाद्दिनभं गण्यं खट्वाचक्रे सुशोभने ॥

॥ १६ ॥ अथ नवीनपात्रे भोजनमुहूर्त्तः । रोहिणीयुगले २ हस्त्वत्रितये३रेवतीद्वये २ । श्रवणत्रितये३पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥१७॥ त्र्युत्तरे बुधशुक्रेज्यवारे चामृतयोगके । सुवर्णरौप्यपात्रेषु भोजनादि शुभप्रदम् १८

(खाटचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे ४ नक्षत्र खाटके मस्तकके हैं, ८ नक्षत्र कोणके हैं, ८ नक्षत्र शाखाके हैं, ३ मध्यके हैं, ४ पगोंके हैं, इस प्रकार नक्षत्र देखके फल जानना चाहिये ॥ १३ ॥ १४ ॥ मस्तकके ४ नक्षत्र शुभ हैं, कोणके ८ मृत्युकारक हैं, शाखाके ८ शुभ हैं, मध्यके ३ सुख देते हैं, पगोंके ४ हानि, मृत्यु, भय करते हैं इस तरह सूर्यके नक्षत्रसे दिननक्षत्रतक गिनना ॥ १९ ॥ १६ ॥ (नवीन भोजन पात्रमु०) रो. मृ. ह. चि. स्वा. रे. अ. श्र. ध. श. पु. पु. अनु. उ. ३ इन नक्षत्रोंमें बुध, शुक्र, गुरु वारोंमें, अमृतयोगमें सुवर्ण, चांदी, कांसी, पीतल आदिकी थालीमें भोजन करना शुभ है ॥ १७ १८ ॥

अथ नवीनपात्रचक्रम् । सूर्यभाचंद्रपर्यंतं गणनीयं सदा बुधैः । दिक्षु द्वयं द्वयं न्यस्य मध्ये चैकादशं न्यसेत् ॥ १९ ॥ वर्तुलाकारचक्रस्य भोक्तृपात्रस्य निर्णयः । । बंधनं सौख्यहानी च लाभं सौख्यं मृतिस्तथा ॥ ॥ २० ॥ पुत्रमायुःशोकवृद्धी पूर्वादिक्रमतो भवेत् । रिक्तानष्टेंदुषष्ठीश्च विष्णोः सुप्तं विवर्जयेत् ॥ २१ ॥ अथ नित्यक्षौरमुहूर्त्तः । पुनर्वसुद्वयं २ क्षौरे श्रुतित्रयं करत्रयम् । रेवतीद्वितयं ज्येष्ठा मृगशीर्षं च गृह्यते ॥ ॥ २२ ॥ क्षौरे प्राणहरा त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी । उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥ २३ ॥ रिक्ता हेयाऽष्टमी ८ षष्ठी ६ क्षौरे चंद्रक्षयो निशा । संध्याविष्टचंत्रगंडांश्च भोजनांताश्च गोगृहम् ॥ २४ ॥

(नवीनपात्रचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिने और दो २ दो २ नक्षत्र पात्रके पूर्व आदि आठों दिशाओंमें स्थापन करे और बीचमें ११ नक्षत्र धरके फिर फल देखे ॥ १० ॥ २० ॥ पूर्व आदि दिशाओंके नक्षत्रोंका तथा बीचके नक्षत्रोंका क्रमसे बन्धन १, सौख्य २, हानि ३, लाभ ४, सुख ५, मृत्यु, ६, पुत्र ७, आयुर्वृद्धि ८, शोकवृद्धि ९ इस तरह फल जानना, और रिक्ता ४ । ९ । १४ क्षीण चन्द्रमा, छठ ६ विष्णुका शयनमास वर्जना चाहिये ॥ २१ ॥ (नित्यक्षौर हजामत मु०) पु. पु. श्र. ध. श. ह. चि. स्वा रे. अ. ज्ये. मृ. यह नक्षत्र और करानेमें श्रेष्ठ हैं ॥ २२ ॥ परन्तु मघा, अनु. रो. उ. ३ कृ. और रवि, मंगल, शनिवार और

रिक्ता ४।९।१४, अष्टमी ८, छठ ६, अमावस्या, रात्रि, संध्याकाल, भद्रा, गंडांत भोजनोत्तर, गौका घर यह हजामत करानेमें प्राणोंको हरनेवाले हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥

अथ वारेषु विशेषः । मासं १ हरेत्क्षौरमिहायुषोऽर्कः शनैश्वरः पंच ५ कुजस्तथाऽष्टौ ८ । आचार्यभृग्विद्बुधाः क्रमेण दद्युर्दशैकादश पंच सप्त ॥ २५ ॥ अथ क्षौरे निषिद्धकालापवादः । नृपाज्ञया ब्राह्मणसंमते च विवाहकाले मृतसूतके च । बद्धस्य मोक्षे क्रतुदीक्षणासु सर्वेषु शस्तं क्षुरकर्म भेषु ॥ २६ ॥ अथ क्षौरे निषिद्धकालः ॥ भुक्तो-ऽभ्यक्तो व्रती यात्रारणोद्योगी कृताह्निकः । उत्कटाभरणो रात्रौ सन्ध्य-योरुभयोरपि ॥ २७ ॥ श्राद्धाहे च व्यतीपाते व्रतेऽह्न्यपराह्णके । शुभे-प्सुर्नवमे चाह्नि क्षुरकर्म न कारयेत् ॥ २८ ॥ अथ राज्ञां श्मश्रुकर्म । महीभृतां पंचमपंचमेऽह्नि क्षौरं च कार्य्यं हितमुक्तभेषु । न लभ्यते चेच्च तदुक्तधिष्ण्यं तद्घोदये वा निखिलं विधेयम् ॥२९॥ राज्यकार्ये नियुक्तानां नराणां भूपसेविनाम् । श्मश्रुलोमनखच्छेदे नास्ति कालविशोधनम्॥३०॥

(वारोंमें विशेष) और रविवारको करानेसे मास १ की आयु क्षय होती है और शनि ५ मासकी, मंगल ८ मासकी आयु हरता है और गुरु शुक्र, चंद्रमा, बुधवारको क्षौर करानेने क्रमसे १०।११।५।७ मासकी आयुवृद्धि होती है ॥ २५ ॥ (क्षौरमें निषिद्धकालापवाद) राजाकी आज्ञामें, ब्राह्मणके कहनेसे, या विवाहमें, या मृत्युमें, बंदीके छूटनेमें, यज्ञकी दीक्षामें क्षौर सदैव ही शुभ है ॥ २६ ॥ (क्षौरमें निषेधकाल) भोजनके और तैलाभ्यंगके अनन्तर और व्रत (उपवास), यात्रा जानेवाला, नित्यकर्मके बाद, उत्तम आभूषण सहित तथा रात्रि, संध्याकालमें, श्राद्धके दिन, व्यतीपात, व्रतके दिन, तीसरे पहर और नौवें दिन शुभ चाहे तो क्षौर नहीं कराना चाहिये ॥ २७ ॥ २८ ॥ (राजाओंका श्मश्रुकर्म) राजालोगोंको पांचवें ५ दिन पूर्व कहे हुए नक्षत्रोंमें कराना योग्य है यदि ग्राह्य नक्षत्रादि नहीं मिलें तो उनकी दुघडियोंमें कराना श्रेष्ठ है ॥ २९ ॥ परंतु राजाके नौकरोंको अर्थात मंत्री मुसद्दी आदिकोंको क्षौर करानेमें शुभ दिनकी कोई जरूरत नहीं है ॥ ३० ॥

अथ नखदंतकृत्यम् । येषु येषु प्रशंसंति क्षुरकर्म महर्षयः । तेषु तेषु प्रशंसंति नखदन्तविलेखनम् ॥ ३१ ॥ अथ सर्वविद्यारंभमुहूर्त्तः । हस्तादित्रितये ३ तथा निर्ऋतिभे पूर्वात्रयभेष्वश्विनीमित्रर्क्षे च मृगादिपंचसु

शुभः प्रारंभ आद्यः स्मृतः । विद्यानां हरिभात्त्रये रविकवीज्यानां दिनेषु श्रियेऽनध्यायाख्यतदाद्यवर्जिततिथौ केन्द्रस्थितैः सद्ग्रहैः ॥ ३२ ॥ विद्यारम्भे गुरुः श्रेष्ठो मध्यमौ भृगुभास्करौ । मरणं शनिभौमाभ्यामविद्या बुधसोमयोः ॥ ३३ ॥ अथ राजदर्शनम् । चित्रामृगानुराधासु स्वात्यां च श्रवणद्वये २। हस्ते पुष्ये च रोहिण्यामश्विन्यामुत्तरात्रये॥ ३४॥ लग्ने स्थिरे राजयोगे लग्ने च बलसंयुते । शुभे योगे शुभे चन्द्रे राज्ञां दर्शनमुत्तमम् ॥ ३५ ॥ अथ राजसेवामुहूर्त्तः ॥ हस्तद्वयेऽनुराधायां रेवतीयुगले मृगे । पुष्ये बुधे गुरौ शुक्रे सत्तिथौ रविवासरे ॥ योनिराशिपयोर्मैत्र्यां स्वामी सेव्योऽनुजीविभिः ॥ ३६ ॥ अथ दासीदाससंग्रहे विशेषः । पूर्वोक्ते च तिथौ वारे योनिराशीशयोः शुभे । उत्तरासु च रोहिण्यां दासदास्यादिसंग्रहः ॥ ३७ ॥

(नखदन्तकृत्यमु०) जिन नक्षत्र वारोंमें क्षौर कराना लिखा है उन्हीं नक्षत्र वार आदिमें नख, दंत आदिका कार्य करना शुभ है ॥ ३१ ॥ (विद्यारंभमु०) ह. चि. स्वा. मू. पू. ३ रे. अ. अनु. मृ. आ. पु. पु. आश्ले. इन नक्षत्रोंमें और रवि, गुरु, शुक्र वारोंमें तथा अनध्याय और अनध्यायके पूर्व तिथियोंके विना अन्य- तिथियोंमें और केंद्र १।४।७।१० स्थानमें शुभ ग्रह होनेसे प्रथम विद्याका प्रारंभ करना श्रेष्ठ है ॥ ३२ ॥ परंतु विद्यारंभमें गुरुवार श्रेष्ठ है और शुक्र, रवि मध्यम हैं तथा शनि, मंगल मृत्युकारक हैं, बुध, सोमको विद्या नहीं आती है ॥ ३३ ॥ (राजदर्शनमु.) चि. मृ. अनु. स्वा. श्र. ध. ह. पु. रो. अ. उ. इन नक्षत्रोंमें तथा स्थिर लग्न राजयोगमें और शुभयोग शुभचंद्रमामें राजासे मिलना शुभ है ॥ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ (राजसेवामु.) ह. चि. अनु. रे. अ. मृ. पुष्य इन नक्षत्रोंमें, बुध, गुरु, शुक्र वारोंमें, श्रेष्ठ तिथियोंमें और योनि, राशिके स्वामीकी मित्रता होनेसे राजकि या मालिकके नौकर रहना श्रेष्ठ है. (दास दासी रखनेमें विशेष) इनही नक्षत्रादिकोंमें तथा उत्तरा ३ रो. में दास दासी रखना श्रेष्ठ है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥

अथ राज्याभिषेचनम् ॥ रेवतीद्वितये पुष्ये रोहिण्यां मृगमैत्रयोः । श्रवणोत्तरशक्रेषु राज्ञां स्यादभिषेचनम् ॥ ३८ ॥ सौम्यायने सिते जीवे नास्तगे नच वृद्धगे ।राज्याभिषेकः संपत्त्यै कथितश्च महर्षिभिः ॥ ३९ ॥ अथाभिषेकेनिषिद्धकालः । नाभिषेकः शुभोवाच्यश्चैत्रे चैवाधिमासके ।

न भुसुप्ते प्रसुप्ते च विष्णौ रिक्तासु रात्रिषु ॥ ४० ॥ अथ लग्नशुद्धिः । त्रिकोणकेंद्रत्रिधनेषु सौम्यैस्त्रिषष्ठलाभर्क्षगतैश्च पापैः। षष्ठाष्टलग्नव्ययवर्जितेन चन्द्रेण राज्ञां शुभदोऽभिषेकः ॥ ४१ ॥ त्रिलाभस्थः शनिः सूर्यश्चतुर्थो वाऽम्बरे १० गुरुः । यस्याभिषेकः क्रियते तत्र तस्य मही स्थिरा ॥ ४२ ॥

(राज्याभिषेकम्‌तु.) रे. अ. पुष्य. रो. मृ. अनु. श्र. उ. ३ ज्ये. नक्षत्रोंमें और उत्तरायणमें तथा शुक्र, बृहस्पति अस्त या वृद्ध नहीं होवें तब राज्याभिषेक श्रेष्ठ है ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ (अभिषेकमें निषिद्ध काल) चैत्र, अधिकमास, मंगलवार, विष्णुके शयनके मास, रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि तथा रात्रि त्याज्य हैं ॥ ४० ॥ (लग्नशुद्धि) त्रिकोण ९ । केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिधन । ३ । २ में शुभग्रह हो और ३ । ६ । ११ में पापग्रह हो और ६ । ८ । १ । १२ इन स्थानोंके विना चन्द्रमा हो ॥ ४१ ॥ और ३ । ११ शनैश्चर हो, ४ रवि हो, १० गुरु हो तो राज्याभिषेक अति श्रेष्ठ जानना ॥ ४२ ॥

अत्र विशेषः । मृते राज्ञि न कालस्य नियमोऽत्र विधीयते । नृपाभिषेकः कर्त्तव्यो दैवज्ञेन पुरोधसा ॥ ४३ ॥ अथाश्वकृत्यम् । पुष्यश्रविष्ठाश्विनिसौम्यभेषु पौष्णानिलादित्यकराह्वयेषु । सवासवर्क्षेषु बुधैः स्मृतानि सर्वाणि कार्याणि तुरंगमाणाम् ॥ ४४ ॥ अथाश्वचक्रम् । अश्वाकारं लिखेचक्रं साभिज्जिद्भानि विन्यसेत् । स्कंधे च सूर्यभात्पञ्च तत्पृष्ठे दश भानि च ॥ ४५ ॥ पुच्छे द्वे स्थापयेत्भाज्ञश्चतुष्पादे चतुष्टयम् । उदरे विन्यसेत्पंच मुखे द्वे तुरगस्य च ॥४६॥ अर्थलाभो मुखे सम्यग्वाजी नश्यति चोदरे । चरणस्थे रणे भंगः पुच्छे पत्नी विनश्यति । अर्थसिद्धिर्भवेत्पृष्ठे स्कंधे लक्ष्मीपतिर्भवेत् ॥ ४७ ॥ अथाश्वाद्यारोहणमुहूर्त्तः । पौष्णाश्विनीवरुणमारुतशीवरश्मिचित्रादितिश्रवणपाणिसुरेज्यवित्तैः । वारेषु जीवशशिसूर्यसितेंदुजानामारोहणं गजतुरंगरथेषु शस्तम् ॥ ४८ ॥

यहां विशेष लिखते हैं कि राजाके मरनेसे उसकी जगह दूसरा राजा करनेमें मुहूर्तकी कोई जरूरत नहीं है ॥ ४३ ॥ (अश्वकृत्य) पुष्य, श्र. अश्वि, मृ. रे. स्वा. पुन. ह. ध. इन नक्षत्रोंमें घोडा लेना तथा देना श्रेष्ठ है ॥ ४४ ॥ (अश्वचक्र) अश्वके आकारका चक्र लिखके अभिजित्सहित सम्पूर्ण नक्षत्र धरे जैसे सूर्यके नक्षत्रसे ९

नक्षत्र स्कंधमें और १० पीठपै, २ पुच्छपर, ४ पगों (पैरों) पर, ९ पेटपर, २ मुखपर नक्षत्र धरके फल देखे ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ मुखका २ नक्षत्र धनलाभ करे, पेटके ९ नक्षत्रोंमें घोडा मर जावे, पगोंके ४ नक्षत्रोंमें संग्राममें भगावे, पुच्छके २ नक्षत्रोंमें स्त्री पुत्र नाश होवे, पीठके १० नक्षत्रोंमें संग्राममें धनलाभ और स्कन्धके ६ नक्षत्रोंमें लक्ष्मीवान् होवे ॥ ४७ ॥ (अश्वआदिकोंपर चढनेका मु.) रे. अ. श. स्वा. मृ. चि. पुन. श्र. ह. पुष्य. ध. इन नक्षत्रोंमें तथा गुरु, चन्द्र, रवि, शुक्र, बुधवारोंमें हस्ती घोडा आदिपै चढना श्रेष्ठ है ॥ ४८ ॥

अथ गजकृत्यम् । श्रवणादित्रये हस्तत्रये वा रेवतीद्वये । मृगे पुष्येऽनुराधायां रोहिण्यां त्र्युत्तरे तथा ॥ पुनर्वसौ शुभे वारे गजकार्यं शनेर्दिने ॥ ४९ ॥ अथ रथकृत्यम् । पुष्ये पुनर्वसौ ज्येष्ठानुराधारेवतीद्वये ॥ ५० ॥ श्रवणादित्रिभे हस्तत्रितये रोहिणीमृगे ॥ सार्के सौम्यदिने सौम्यविलग्ने रथकर्मकृत् ॥५१॥ अथगजाश्वोष्ट्राणां पल्याणमुहूर्त्तः । श्रवणे शतभे हस्ते पुष्ये मूले मृगेऽश्विभे । पुनर्वसौ गजाश्वोष्ट्रपल्याणकरणं शुभम् ॥ ५२ ॥ अथ गवां क्रयविक्रयमुहूर्त्तः ॥ पूर्वा मैत्रद्वयं मूलं वासवो रेवती करः । पुनर्वसुद्वयं ग्राह्यं पशूनां क्रयविक्रये ॥ ५३ ॥ अथ पशुनिर्गममुहूर्त्तः ॥ अमावास्याऽष्टमी त्याज्या पूर्णिमा च चतुर्दशी । रविवारो वर्जनीयः पशूनां च विनिर्गमे ॥ ५४ ॥ चित्रोत्तरा रोहिणी च श्रवणोऽपि विवर्जितः । एतेषु पशुजातीनामशुभं निर्गमं भवेत् ॥ ५५ ॥

(गजकृत्य) श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. रे. अ. मृ. पुष्य. अनु. रो. उ. ३ पुन. इन नक्षत्रोंमें और शुभवार, शनिवारमें गज (हस्ती) का लेना देना श्रेष्ठ है ॥ (रथकृत्य) पु. पु. ज्ये. अनु. रे. अ. श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. रो. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा आदित्य, गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र वारोंमें और शुभलग्नमें रथका कार्य श्रेष्ठ है ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ और श्र. श. ह. पुष्य. मू. मृ. अ. पुन. इन नक्षत्रोंमें गज उष्ट्रका पल्याण शुभ है ॥ ५२ ॥ (गौका क्रयविक्रयमु.) पू. ३ अनु. ज्ये. मू. ध. रे, ह, पुन. पुष्य इन नक्षत्रोंमें गौ आदि पशुओंका क्रय विक्रय करना योग्य है ॥५३॥ (पशु निर्गम मुहूर्त्त) और अमावास्या ३० अष्टमी ८ पूर्णिमा १५ चतुर्दशी १४ आदित्यवार पशुओंके देनेमें अशुभ हैं ॥ ५४ ॥ और चि. उ. ३ रो. श्र. इन नक्षत्रोंमें पशुजातिका निर्गम अशुभ है ॥ ५५ ॥

अथ पशुगृहप्रवेशः । उत्तरासु विशाखायां रोहिण्यां च पुनर्वसौ । नवम्यां च चतुर्दश्यामष्टम्यां नानयेत् पशुम् ॥ ५६ ॥ अथोष्ट्रमहिष्याद्यानयने विशेषः । धनिष्ठाद्वितये पूर्वाषाढातिर्यङ्मुखोडुषु । अजाविमहिषोष्ट्राणां क्रयं चाश्वतरीशुनाम् ॥ ५७ ॥ अथ वल्लीवृक्षादिरोपणम् । रोहिण्युत्तरचित्रासु मैत्रे पुष्ये करे मृगे । रेवत्यां वारुणे चाश्वे द्विदैवे शुभवासरे ॥ स्थिरे लग्ने शुभं प्रोक्तं वल्लीवृक्षादिरोपणम् ॥ ५८ ॥ अथ सर्ववस्तुक्रयविक्रयमुहूर्त्तः । पुष्यो भाद्रपदायुग्मं स्वाती च श्रवणाऽश्विनी । हस्तोत्तरा मृगो मैत्रं तथाऽऽश्लेषा च रेवती ॥ ५९ ॥ ग्राह्याणि भानि चैतानि क्रयविक्रयणे बुधैः । चंद्रभार्गवजीवाश्च वाराः शकुनमुत्तमम् ॥ ६० ॥

(पशुगृहप्रवेशमु.) उ. ३ वि. रो. पुन. नवमी ९ चतुर्दशी १४ अष्टमीको ८ गौ आदि पशु नहीं ल्याना योग्य हे ॥ ५६ ॥ (ऊँट महिष आदि लानेमें विशेष) ध. श. पू. ज्ये. पुन. ह. अ. मृ. रे. अनु. स्वा. चि. इन नक्षत्रोंमें बकरा महिष उष्ट्र खच्चर श्वान इत्यादि पशुओंका लेना श्रेष्ठ है ॥ ५७ ॥ (बेल वृक्ष आदिके लगानेका मु.) रो. उ. ३ चि. अनु. पुष्य. ह. मृ. रे. श. अश्वि. वि. और शुभवारमें तथा स्थिर लग्नमें बेल दरखत आदि लगाना शुभ है ॥ ५८ ॥ (वस्तुक्रयविक्रयमु.) पु. भाद्रपदा २, स्वा. श्र. अश्वि. ह. उ. ३ मृ. अनु. आश्ले. रे. इन नक्षत्रोंमें और सोम शुक्र गुरु वारोंमें तथा शुभ शकुनमें क्रयविक्रय करना श्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥ ६० ॥

अथ विपणिवाणिज्यमुहूर्त्तः । अनुराधोत्तरापुष्ये रेवतीरोहिणीमृगे । हस्ताचित्राश्विभे कुर्याद्वाणिज्यं दिवसे शुभे ॥६१॥ कुंभराशिमपहाय साधुषु द्रव्यकर्मभवमूर्त्तिवर्त्तिषु । अव्ययेष्वशुभदायिषूक्षभे भार्गवे विपणिरिंदुसंयुते ॥ ६२ । अथ निधिद्रव्यादिवृद्धिसंग्रहमुहूर्त्तः । पुष्ये मृगेऽनुराधायां श्रवणत्रितयेऽश्विभे । पुनर्भेऽत्ये विशाखायां निधेर्वृद्धिश्च संग्रहः ॥ ६३ ॥ अथ ऋणादानमुहूर्त्तः । संक्रांतौ वृद्धियोगे च हस्तर्क्षे रविभौमयोः । नच ग्राह्यमृणं यस्मात्तद्वंशे तत्स्थिरं भवेत् ॥ ६४ ॥ ऋणं भौमे न गृह्णीयान्न देयं बुधवासरे । ऋणच्छेदं कुजे कुर्यात्संचयं सोमनंदने ॥ ६५ ॥ अथ कोष्ठादौ धान्यस्थितिः ।

पुनर्भे मृगशीर्षेऽन्त्येऽनराधाश्रवणत्रये । हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये रोहिण्या मुत्तरात्रये । गुरौ शुक्रे रवींद्वोः सत्कोष्ठादौ धान्यरक्षणम् ॥ ६६ ॥

(दुकान खोलनेका मु.) अनु. उ. ३ पुष्य. रे. रो. मृ. ह. चि. अश्वि. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभ वारोंमें और कुम्भ राशिके विना शुक्र चन्द्रमासहित लग्नमें तथा दूसरे दशवें ग्यारहवें लग्नमें शुभ ग्रह होनेसे दुकान खोलना श्रेष्ठ है परंतु बारहवें अशुभ ग्रह नहीं होना चाहिये ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ (खजानेमें धनसंग्रह करनेका मु.) पुष्य. मृ. अनु. श्र. श. आश्वि. पुन. रे. वि. इन नक्षत्रोंमें खजानेमें धन रखना चाहिये ॥ ६३ ॥ (ऋणादानमु०) संक्रांति वृद्धियोगमें तथा हस्तनक्षत्र रवि भौमवारमें किसीका करजा नहीं करना कारण कि उसका ऋण (करजा) वंशमें स्थिर हो जाता है ॥ ६४ ॥ और मंगलको किसीका द्रव्य उधार नहीं लेना तथा बुधवारको किसीका पीछा नहीं देना चाहिये अर्थात् मंगलवारको करजा उतारना और बुधवारको धनसंचय करना श्रेष्ठ है ॥ ६५ ॥ (कोठी आदिमें धान्य रखनेका मु०) पुन. मृ. रे. अनु. श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. आश्वि. पुष्य. रो. उ. ३ यह नक्षत्र तथा गुरु शुक्र चंद्र रविवारको कोठे आदिमें धान्य रखना शुभ है ॥ ६६ ॥

अथ हलप्रवाहः । अनुराधाचतुष्के तु मघादितियुगे करे । स्वाति श्रुतिविधिद्वंद्वे रेवत्यामुत्तरासु च ॥ ६७ ॥ गोद्वये २ स्त्री ६ झषे १२ हालःकार्यो हेयः शनिः कुजः । षष्ठी ६ रिक्ता ४ । ९ । १४ द्वादशी च १२ द्वितीया २ द्वय २ पर्व च १५ ॥ ६८ । अथ हलचक्रम् । त्रिभि३ स्त्रिभिः३ स्त्रिभिः३ पंच ५ त्रिभिः ३ पंच ५ त्रिभि३ र्द्वयम् २। सूर्यभाद्दिनभं यावद्धानिवृद्धी हले क्रमात् ॥ ६९ ॥ अथ काष्ठगोमयपिंडसंचयादिकम् । सूर्यर्क्षाद्रसभ ६ रघः स्थलगतैः पाको रसैः संयुवः शीर्षे युग्म २ मितैः शवस्य दहनं मध्ये युगैःसर्पभीः । प्रागाशादिषु वेदभैः स्वसुहृदां स्यात्सङ्ग.मो रोगभीः काष्ठादेः करणं सुखं च गदितं वष्ठ्यादिसंस्थापने ॥ ७० ॥ सूर्यभाद्रस ६ तर्का ६ ब्धि ४ नाग ८ वेदा ४ भिजित्सह । शुभाशुभं क्रमाज्ज्ञेयं करीषादिषु संग्रहे ॥ ॥ ७१ ॥ अथ तृणकाष्ठसंग्रहादौ निषिद्धकालः । वासवोत्तरदलादिपंचके याम्यदिग्गमनगेहगोपनम् । प्रेतदाहतृणकाष्ठसंग्रहः शय्यकाविरचणं च वर्जयेत् ॥ ७२ ॥

(हल जोतनेका मु०) अनु. ज्ये. मू. पू. म. पुन. पुष्य, ह. स्वा. श्र. रो. मृ. रे. उ ३: इन नक्षत्रोंमें तथा वृष २, मिथुन ३, कन्या ६, मीन १२ लग्नमें और शनि, मंगल, षष्ठी ६, रिक्ता ४ । ९ । १४, द्वादशी १२ द्वितीया २ और दोनों पर्व (अमावस्या, पूर्णिमा) को छोडके शुभ दिनमें हल जोतना चाहिये ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ (हलचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे ३ नक्षत्र हानि करते हैं । फिर ३ वृद्धि । ३ हानि । ९ वृद्धि । ३ हानि । ९ वृद्धि । ३ हानि । और २ वृद्धि हल जोतनेमें करते हैं ॥ ६९ ॥ (काष्ठ गोमय संचय करनेका चक्र) सूर्यके नक्षत्रसे छः ६ नक्षत्रोंमें रसयुत पाक होता है । फिर २ नक्षत्रोंमें मुर्देको दाह । ४ नक्षत्रोंमें सर्पभय । ४ नक्षत्रोंमें सुहृत्समागम । ४ नक्षत्रोंमें रोग । ४ नक्षत्रोंमें भय । फिर ४ नक्षत्रोंमें काष्ठसंचय करे तो सुख होता है ॥ ७० ॥ और सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र शुभ हैं फिर ६ अशुभ हैं और ४ शुभ । ८ अशुभ । ४ शुभ गोमयके संचय करनेमें जानना चाहिये ॥ ७१ ॥ (तृणकाष्ठादिसंग्रहमें निषिद्ध काल) धनिष्ठाका उत्तरार्द्ध श. पू. भा. रे. यह पांच नक्षत्र दक्षिण दिशाके गमनमें और घरके आच्छादनमें प्रेतदाहमें तथा काष्ठके संग्रहमें और शय्याके बिणनें (बनाने) में जरूर बर्जने योग्य हैं ॥ ७२ ॥

अथ गृहाच्छादनमुहूर्तः । हस्तत्रये ३ धातृयुगे सराधावस्वादियोगे गृहगोपनं च । नंदां परित्यज्य कुहूं च रिक्तां भौमार्कजादित्यदिनांश्च निंद्यान् ॥ ७३ ॥ अथ धर्मक्रियामुहूर्त्तः । रेवतीद्वितये हस्तत्रितये रोहिणीद्वये । श्रवणयोत्तरापुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः ॥७४॥ ज्ञेज्यशुक्रेंदुवर्गेषु ज्ञेज्यषड्वर्गशालिनि । लग्ने जीवयुते जीवे बलिष्ठे धर्ममाचरेत् ॥ ७५ ॥ अथ शांतिकपौष्टिककर्म । पुनर्वसुद्वये स्वातौ त्र्युत्तरे श्रवणत्रये रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये । शांतिकं पौष्टिकं कर्म पुण्याहे कीर्त्तितं बुधैः ॥७६॥ अथ मन्त्रदीक्षा । रोहिण्यां त्र्युत्तरे मौंजीबन्धनोदितभादिषु । मंत्रदीक्षा शुभे चाह्नि ग्रहणेऽप्यागमोदिता ॥७७॥ अथ मंत्रयंत्रव्रतोपवासादिमुहूर्त्तः । उफाहस्ताश्विनीकर्णविशाखामृगभेऽहनि । शुभे सूर्ययुते शस्तं मंत्रयंत्रव्रतादिकम् ॥ ७८ ॥

(गृहाच्छादनमु०) ह. चि. स्वा. रो. मृ. अनु. इन नक्षत्रोंमें और नंदा १ । ६ । ११ अमावास्या ३० रिक्ता ४ । ९ । १४ इनके विना तिथियोंमें मंगल शनि रविके विना वारोंमें घरका छाना शुभ है ॥ ७३ ॥ (धर्मक्रियारंभमु०) रे. अ. ह. चि.

स्वा. रो. मृ, श्र. ध. श. उ. ३ पुष्य पुन. अनु. इन नक्षत्रोंमें और बुध गुरु शुक्र सोम रविवारमें और बुध गुरुके शुद्ध षड्वर्गमें और गुरुयुक्त लग्नमे ... कार्य करे ॥ ७४ ॥ (शांतिक पौष्टिक कर्ममु० (पुन. पु. स्वा. उ ३. श्र. ध. ... . अश्वि. ह. अनु. रो. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा पुष्य दिनम शांति पुष्टि कार्य करना ॥ ७६ ॥ (मन्त्रदीक्षामु.) रो. उत्तरा ३ में तथा यज्ञोपवीतके नक्षत्रोंमें और शुभ दिनमें तथा ग्रहणम दीक्षा करनी चाहिये ॥ ७७ ॥ (मन्त्रयन्त्रव्रतोपवासादिमु) उ-फा, ह. अ. श्र. वि. मृ. इन नक्षत्रोंमें शुभवार तथा रविवारमें मंत्र यंत्र व्रत आदि काय करना ॥ ७८ ॥

अथ होमादौ वह्निवासफलम् । सैका १ तिथिर्वारयुता कृता ४ प्ता शेषे गुणे ३ऽग्रे० भुवि वह्निवासः । सौख्याय होमे शशि १ युग्म २ शेषे प्राणार्थनाशो दिवि भूतले च ॥७९॥ अग्नेः स्थापनवेलायां पूर्णाहुत्यामथा, पिवा । आहुतिर्वह्निवासश्च विलोक्यौ शांतिकर्मणि । सस्कारेषु विचारो-ऽस्य न कार्यो नापि वैष्णवे । नित्ये नैमित्तिके कार्ये न चाब्दे मुनिभिःस्मृतः ॥ ८० ॥ **अथ होमे खेटाहुतिफलम्** । सूर्यभात्त्रि ३ त्रिभे चांद्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः । चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले ॥८१॥ **अथ दैवात् कृतस्य पापग्रहमुखे हवनस्य शांतिः** । क्रूरग्रहमुखे चैव संजाते हवने शुभे । शांतिं विधाय गां दद्याद् ब्राह्मणाय कुटुंबिने ॥ ८२ ॥ आयसीं प्रतिमां कृत्वा निक्षिपेत्तामधोमुखीम् । गोमूत्रमधुगंधाद्यैरार्चितां प्रतिमां ततः । कुंडे निधाय संपूज्य तत्र होमो विधीयते ॥८३॥ **अथ दत्तकपुत्रपरिग्रहमुहूर्त्तः** । हस्तादिपंचक ५ भिषग्वसुपुष्यभेषु सूर्यक्षमाजगरुभार्गववासरेषु । रिक्ता ४ । ९ । १४ विवर्जिततिथिष्वलि ८ कुंभ ११ लग्ने १ सिंहे ५ वृषे २ भवति दत्तपरिग्रहोऽयम् ॥ ८४ ॥

(होमे अग्निवासफ.) शुक्लपक्षकी प्रतिपदासे लेके दिनकी तिथितक गिने फिर १ मिलावे और (वारकी) संख्या मिलावे और ४ का भाग देवे यदि ३ या शून्य बचेतो पृथ्वीमें अग्निका वास जानना सो यह अग्निकावास होममें सुख करता है और यदि १ । २ बचें तो अग्नीका वास स्वर्ग पातालमें क्रमसे जानना यह अग्निवास होमेंम प्राण और धनका नाश करता है ॥ ७९ ॥ परन्तु यह अग्निवास विवाह आदि संस्कारोंमें तथा विष्णुके यज्ञमें और नित्यके अग्निहोत्रादिकर्मे, तथा मूलशांत्यादिक नैमित्तिक कर्ममें और जन्मदिन निमित्तक कार्यमें नहीं देखना

चाहिये ॥ ८० ॥ (ग्रहोंके मुखमें आहुतिका फल) सूर्यके नक्षत्रसे दिनके नक्षत्र-तक गिने और तीन तीन नक्षत्र क्रमसे सूर्य बुध शुक्र राहु चन्द्र मंगल गुरु शनि केतुके मुखके हैं सो अशुभ ग्रहोंके मुखमें नक्षत्रोंमें आहुति अशुभ हैं ॥ ८१ ॥ (पाप-मुखकृत हवनशान्ति) यदि क्रूर ग्रहके मुखमें आहुति दी जावे तो शांति करके ब्राह्मणोंके अर्थ गौ देनी चाहिये ॥ ८२ ॥ अथवा लोहेकी मूर्ति बनाके अधोमुखी कुण्डमें रखे फिर गोमूत्रसहित गन्धादिकोंसे पूजा करे फिर उसके ऊपर हवन करे तो दोष नहीं है ॥ ८३ ॥ (पुत्र खोले) (दत्तक) (लेनेका मु.) ह. चि. स्वा. वि. अनु. अवि. ध. पुष्य इन नक्षत्रोंमें और रवि मंगल गुरु शुक्र वारोंमें रिक्ता ४ । ९ । १४ विना अन्य तिथियोंमें और वृश्चिक ८, कुंभ ११, सिंह ५, वृष २ लग्नमें पुत्र खोले लेना चाहिये ॥ ८४ ॥

अथौषधकरणं तत्सेवनं च । हस्तत्रयेऽनुराधायां मूले पुष्ये श्रवस्त्रये । मृगभे रेवतीयुग्मे पुनर्वस्वोर्विजन्मभे । ज्ञेंदुशुक्रेज्यसूर्याणां वासरे सत्तिथा-वपि । ८५ ॥ द्विस्वभावे शुभे लग्ने शुद्धे द्यून ७ मृति ८ व्यये १२ । भैषज्यं शुभदं प्रोक्तं दृष्ट्वा शकुनमुत्तमम् ॥ ८६ ॥ अथ रसोत्पादनं रससेवनं च । विशाखाकृत्तिकामूले धनिष्ठायां करे मृगे । ज्येष्ठायामा-र्द्रभे सौम्यवासरेषु रसक्रिया ॥ ८७ ॥ हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्येऽनुराधांत्ये श्रवस्त्रये । पुनर्भे मृगशीर्षेऽर्के भौमेज्ये रसभक्षणम् ॥ ८८ ॥ अथ वातरोगादौ तैलोपसेवनम् । हित्वाऽऽश्लेषामघामूलं द्वीशार्द्रा भरणी-द्वयम् । मन्देऽऽज्ये ज्ञे स्थितिस्तैले तृतीयादित्रिके तिथौ ॥ ८९ ॥ अथ रक्तविमोक्षणं विरेकवमनं च । हस्तत्रयेऽश्विनीपुष्ये शतभे रोहिणी-द्वये । श्रवणे चानुराधायां ज्येष्ठायां रक्तमोक्षणम् ॥ ९० ॥ गुरुभौमा-र्कवारेषु कार्यं शुभतिथौ तथा । विरेको वमनं शुक्रे चन्द्रे चैवोक्त-भादिषु ॥ ९१ ॥

(औषध लेनेका मु०) ह. चि. स्वा. अनु. मू. पुष्य. श्र. ध. श. मृ. रे आश्वि. पुन. जन्मनक्षत्र विना इन नक्षत्रोंमें, बुध, सोम, शुक्र, गुरु, रविवारोंमें तथा शुभ तिथि-योंमें और सप्तम, अष्टम ८, द्वादश १२ स्थानोंमें ग्रहरहित द्विस्वभाव लग्नमें औषधी लेना श्रेष्ठ है परंतु शकुन उत्तम देखना चाहिये ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ (रस बनाना, रससेवनमु.) वि. कृ. मू. ध. ह. मृ. ज्ये. आ. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभ वारोंमें रस बनाना शुभ है ॥ ८७ ॥ और ह. चि. स्वा. अश्वि. पुष्य. अनु. रे. श्र

ध. श. पुन. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा मंगल गुरुवारोंमें रस भक्षण करना शुभ है ॥ ॥ ८८ ॥ (वातरोगादिमें तैलसेवन मु.) आश्लेषा, मघा, विशाखा, आर्द्रा, भरणी, कृतिका इन नक्षत्रोंके विना अन्य नक्षत्रोंमें और शनि, (सोम,) बुधवारमें तृतीया, चतुर्थी, पंचमी तिथियोंमें तेल सेवन श्रेष्ठ है ॥ ८९ ॥ (रक्तविमोक्षणमु.) ह. चि. स्वा अश्वि. पुष्य. श. रो. मृ. श्र. अनु. ज्ये. इन नक्षत्रोंमें और गुरु, भौम रविवारमें तथा शुभतिथियोंमें रक्तमोचन (खून काढ़ना) और पूर्वोक्त नक्षत्रोंमें शुक्र सोमवारमें जुलाब, वमन करना श्रेष्ठ है ॥ ९० ॥ ९१ ॥

अथ तप्तलोहदाहः । शतचित्राश्विनीमूले विशाखाकृत्तिकाद्रभे । ज्येष्ठाऽऽश्लेषे कुजेऽर्केऽगं क्रूरलोहाग्निभेषजम् ॥ ९२ ॥ अथ रोगोत्पत्तौ नक्षत्रवशात्पीडादिनसंख्या । अश्विनीकृत्तिकामूले ज्वरार्त्तो नव वासराः । रोहिण्यामुत्तराभाद्रे पुनर्वसौ च पुष्यभे ॥ ९३ ॥ उफायां वासराः सप्त मघायां विंशतिस्तथा । शतभे भरणी चित्राश्रवे चैकादश स्मृताः ॥ ९४ ॥ धनिष्ठायां विशाखायां हस्तभे पक्ष एव च । मासं मृगोत्तराषाढे कृच्छ्राद्दंत्यानुराधयोः ॥९५॥ पूर्वात्रये तथाऽऽश्लेषाज्येष्ठार्द्रा-स्वातिभेष्वपि । रोगोत्पत्तिर्भवेद्यस्य मरणं तस्य निश्चितम् ॥ ९६ ॥

(तप्तलोहदाहमु.) श. चि. अश्वि. मू. वि. कृ. आ. ज्ये. आश्ले. इन नक्षत्रोंमें मंगल सूर्य और शनि वारोंमें लोहका दाग लगाना शुभ है ॥ ९२ ॥ रोगकी उत्पत्तिमें नक्षत्रोंके पीडाके दिन, अश्विनी, कृत्तिका, मूलमें ज्वर चढे तो नौ ९ दिन रहे और रो. उ. भा. पुन. पुष्य. उ. फा. इनमें सात दिन ७, मघामें २० दिन, शत. भ. चि. श्र. में. ११ दिन. ध. वि. ह. में १५ दिन, मृ. उ. षा. में १ मास तक और रे. अनु. में बहुत दुःखसे ज्वर दूर हो जाता है ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ पू. ३ आश्ले. ज्ये. आ. स्वा. इन नक्षत्रोंमें ज्वर चढा हो तो मृत्युकारक है ॥ ९६ ॥

अथ ज्वरोत्पत्तावनिष्टयोगः । आश्लेषाभरणीमूलेस्वातीपूर्वाद्रभे तथा शतभे पापवारे च प्रतिपद्द्वादशीदिने ॥ ९७ ॥ चतुर्दश्यां तथाऽष्टम्यां पूर्णिमायां ज्वरोदयः । स नरो मृत्युमाप्नोति स्ववैद्येनापि रक्षितः ॥९८॥ अथ रोगशांतिप्रकारः । रोगशांतिं प्रवक्ष्यामि रोगार्त्तानां शरीरिणाम् । बलिपूजांगहोमैश्च जपब्राह्मणभोजनैः ॥९९॥ यस्मिन् धिष्ण्ये यदा नृणां रोगः संजायते तदा । तद्धिष्ण्यपूजा कर्त्तव्या तदीश्वरसुतुष्टये ॥ १०० ॥

अथ रोगनिर्मुक्तस्नानम् । मघापुनर्वसुस्वातीरोहिणीषूत्तरात्रये । आश्लेषायां च रेवत्यां भार्गवे चन्द्रवासरे ॥ १०१ ॥ न स्नायाद्रोगनिर्मुक्तः शुभे चन्द्रे तथैव च । रिक्तायां निशि भौमार्कवासरे चरलग्नके ॥१०२॥ दुष्टचन्द्रे तथा विष्ट्यां पाताद्यैर्दूषितेऽहनि । रोगमुक्तो नरः स्नायाद्दानं कुर्यादनन्तरम् ॥ १०३ ॥

(ज्वरमें अनिष्टयोग) आश्ले. भ. मू. स्वा. पू. ३ आ. श. इन नक्षत्रोंमें तथा पापवारमें और १ । १२ । १४ । ८ । १५ इन तिथियोंमें ज्वर चढे तो रोगीकी मृत्यु होनी चाहिये यदि अश्विनीकुमार भी रक्षा करे तो भी ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ (रोगशांति) रोगियोंके रोगोंकी शांति लिखते हैं—बलि, पूजा, होम, जप, ब्राह्मण-भोजन इत्यादि कर्मोंके करनेसे रोग दूर होता है ॥ ९९ ॥ और जिस नक्षत्रमें ज्वर हो उसी नक्षत्रके स्वामीकी पूजा करे तो रोगशांति होवे ॥ १०० ॥ (रोगविमुक्त-स्नानमु.) म. पुन. स्वा. रो. उ. ३ आश्ले. रे. इन नक्षत्रोंमें और शुक्र सोम वारोंमें तथा श्रेष्ठचंद्रमामें स्नान नहीं करे अर्थात् रिक्ता ४ । ९ । १४ तिथि, रात्रि, मंगल आदित्यवार, चर लग्न, अशुभ चन्द्रमा, भद्रा, व्यतीपात आदि निषिद्ध दिनमें रोगीको स्नान करना योग्य है ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

अथ सर्पदंशेऽनिष्टम् । विशाखाकृत्तिकामूले रेवत्यार्द्रामघासु च । ऋक्षेऽश्लेषाभिधाने च सर्पदष्टो न जीवति॥१०४॥ अथ सेतुबंधनम् । त्र्युत्तरे रोहिणीस्वातीमृगेऽर्के मंगले गुरौ । सेतूनां बंधनं शस्तं शुभे लग्ने शुभेक्षिते १०५अथ वत्सवासचक्रम्।अमत्यैंद्रीदिशंवत्सो मासानां च त्रिकं त्रिकम्। आदौ भाद्रपदं कृत्वा सव्यतो दिक्चतुष्टयम् ॥१०६॥ यात्रां विवाहं संबधं द्वारं च गृहहर्म्ययोः । भूपतेर्मिलनं युद्धं वत्सस्याभिमुखं त्यजेत् ॥१०७॥ अथ ग्रामवासफलम् । ग्रामो यत्र भवेदृक्षे तदाद्याः सप्त ७ मस्तके । पृष्ठे सप्त ७ हृदि सप्त ७ पादे सप्त ७ च तारकाः ॥१०८॥ मस्तके च धनी मान्यः पृष्ठे हीनश्च निर्धनः। हृदये सुखसंपत्तिः पादे पर्यटनं फलम् ॥१०९॥

(सर्पदंशमें अनिष्ट) वि. कृ. मू. रे. आ. म. आश्ले. इन नक्षत्रोंमें जिसको सर्प खावे (काटे) सो मृत्युको प्राप्त होता है ॥ १०४ ॥ (सेतुबन्धमु.) उ. ३ रो. स्वा. मृ. इन नक्षत्रोंमें मंगल, गुरुवारोंमें शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसहित शुभ लग्नमें पुल

बांधना शुभ है ॥ १०५ ॥ (वत्सवासचक्र) पूर्व आदि चारों दिशाओंमें क्रमसे वाम मार्गसे भाद्रपद आदि तीन तीन मासोंमें चौथी चौथी दिशामें वत्सरूप देव भ्रमता है अर्थात् भाद्रपद आश्विन कार्तिकको पूर्वमें और मार्ग, पौष, माघको दक्षिणमें, फा, चै. वै. को पश्चिममें तथा ज्ये. आ. श्रा. मासको उत्तरमें भ्रमता है। सो इनके सामने यात्रा, विवाह, संबंध, गृह आदिके द्वार, नृपतिदर्शन, युद्ध नहीं करना चाहिये ॥ १०६ ॥ १०७ ॥ (ग्रामवासफल) गांवके नक्षत्रसे अपने नक्षत्र-तक गिने जिसमें प्रथम ७ नक्षत्र मस्तकके हैं सो धनवान् तथा मानयुक्त करें फिर पीठके ७ नक्षत्र सो दरिद्री मानहीन करें हृदयके ७ सुखसंपत्ति करें और पगके नक्षत्र हैं सो फिरावें ॥ १०८ ॥ १०९ ॥

अथ सेवाचक्रम्। सेवाचक्रे सप्त मौलौ पृष्ठे सप्त च तारकाः। कुक्षौ सप्त पदे सप्त लिखेदभिजिता सह ॥ ११० ॥ स्वामिभाद् भृत्यभं गण्यं भृत्यभात्स्वामिभं तथा। सत्फलं मस्तके कुक्षौ निष्फलं पादपृष्ठयोः ॥ १११ ॥ वर्गमेलनम्। स्ववर्गं द्विगुणीकृत्य परवर्गेण योजयेत्। अष्टभिश्च हरेद्भागं योऽधिकः स ऋणी भवेत् ॥ ११२ ॥

इति श्रीरत्नगढनगरनिवासिना पंडितगौड़श्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशे अद्भुतनिबन्धे चतुर्थं नानामुहूर्तप्रकरणम् ॥४॥

(सेवाचक्र) स्वामिके नक्षत्रसे नौकरके नक्षत्रतक गिने और नौकरके नक्षत्रसे स्वामीके नक्षत्रतक गिने, जिनमें प्रथम ७ नक्षत्र मस्तकके हैं सो शुभ हैं और ७ नक्षत्र पृष्ठके निष्फल हैं, फिर ७ कुक्षिके शुभ हैं और ७ पगोंके निष्फल जानने ॥ ११० ॥ १११ ॥ (वर्गमेलन) प्रथम वर्ग अर्थात् गरुडके वर्गसे अपने वर्गतक गिनके दुगुना करे, फिर पशु, गाम या मनुष्य आदि दूसरेके वर्गकी संख्या मिलावे और आठका भाग देवे जो अंक बचे सो अलग रखदेवे इसी-तरह दूसरेके वर्गको दुगुना करके अपने वर्गको मिलावे, अनंतर आठका भाग देके शेष अंकको जुदा रखे जिसका अंक जादा हो सो ही ऋणी (करजेको देनेवाला) होता है अर्थात् दुसरेका विशेष अंक बचे तो शुभ है और अपना अंक कमती शुभ जानना ॥ ११२ ॥

इति मुहूर्त्तप्रकाशे चतुर्थं नानामुहूर्त्तप्रकरणम् ॥ ४ ॥

संस्कारप्रकरणम् ९.

तत्रादौ गर्भाधानम् । ऋतौ तु प्रथमे कार्यं पुन्नक्षत्र शुभे दिने । मघामूलांत्यपक्षांतं मुक्त्वा चंद्रे बले सति ॥ १ ॥ ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोडश स्मृताः । तासामाद्याश्चतस्रस्तु निंदितैकादशा च या ॥ २ ॥ त्रयोदशी च शेषाः स्युः प्रशस्ता दश वासराः । युग्मासु पुत्रा जायंते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु ॥ ३ ॥ **अथ वर्ज्यकालः ।** उपप्लवे वैधृतिपातयोश्च विष्टयां दिवा पारिघपूर्वभागे । संध्यासु पर्वस्वपि मातृपित्रोर्मृतेऽह्नि पत्नीगमनं विवर्ज्यम् ॥ ४ ॥ षष्ठयष्टमीपंचदशीचतुर्थीचतुर्दशीमप्युभयत्र हित्वा । शेषाः शुभाः स्युस्तिथयो निषेके वाराः शशांकार्यसितेंदुजाश्च ॥ ५ ॥ **अथ नक्षत्राणि ।** विष्णुप्रजेशरविमित्रसमीरपौष्णमूलोत्तरावरुणभानि निषेककार्ये । पूज्यानि पुष्यवसुशीतकराश्विचित्रादित्याश्च मध्यमफला विफलाः स्युरन्ये ॥ ६ ॥

अथ संस्कारप्रकरणं प्रारभ्यते ॥) प्रथम गर्भाधानका मुहूर्त्त लिखते हैं) प्रथम ऋतुकालमें, पुरुषसंज्ञावाले शुभ नक्षत्रोंमें मघा, मूल, पक्षांतको त्यागके बलयुक्त चन्द्रमामें गर्भाधान संस्कार करना योग्य है ॥ १ ॥ स्त्रियोंके स्वभावसे ही ऋतुकालकी १६ रात्रि हैं, उनमें आद्यकी चार ४ रात्रि और ग्यारहवीं ११ रात्रि तथा तेरहवीं १३ रात्रि अशुभ हैं और बाकीकी १० रात्रि शुभ जाननी और उनमें युग्म रात्रियोंमें स्त्रीके गर्भ रहनेसे पुत्र होता है तथा विषम रात्रियोंमें पुत्री होती है ॥ ॥ २ ॥ ३ ॥ (स्त्रीसंगमें वर्ज्यकाल) ग्रहण, वैधृति, व्यतिपात, भद्रादिन, परिघयोगका पूर्वार्द्ध, संध्याकाल, पर्व, मातापिताके श्राद्धका दिन स्त्री संगमें त्याग देवे ॥ ॥ ४ ॥ तथा षष्ठी ६ अष्टमी ८ पूर्णिमा १५ चौथ ४ चौदश १४ तिथियोंके विना अन्य तिथि और सोम, गुरु, शुक्र, बुध, यह वार गर्भाधानमें श्रेष्ठ हैं ॥ ५ ॥ (श्रेष्ठ, मध्यम, निषिद्ध नक्षत्र) और श्र. रो. ह. अनु. स्वा. रे. मू. उ. ३ श. यह नक्षत्र श्रेष्ठ हैं तथा पुष्य. ध. मृ. अश्वि. चि. पुन. यह नक्षत्र गर्भाधानमें मध्यम हैं, बाकीके नक्षत्र निषिद्ध जानने ॥ ६ ॥

अथ पुंसवनं सीमंतोन्नयनं च । आर्द्रात्रयं ३ भाद्रयुग्मं २ मृगः पूषा श्रुतिः करः । मूलत्रयं ३ गुरुः सूर्यो भौमो रिक्तां ४ । ९ । १४ विना तिथिषु । ७॥ आद्ये १ द्वये २ त्रये ३ मासे लग्ने कन्या ६ झषे

१२ स्थिरे २ । ५ । ८ । ११ । चापे ९ पुंसवनं कुर्यात्सीमंतं चाष्टमे तथा ॥८॥ पुंसवनं प्रथमगर्भ एव कार्यम् । सकृच्च कृतसंस्काराः सीमंतेन द्विजातयः । यं यं गर्भं प्रसूयंते स सर्वः संस्कृतो भवेत् ॥ ९ ॥ अथ जातकर्म । जातकर्म शिशौ जाते पिता तत्कालमाचरेत् । एकादशेऽह्नि वा कुर्याद्द्वादशे वा यथाविधि ॥ १० ॥ अथ जननसमये दुष्टकालविचारः । तत्र तावत्तिथिगंडांतम् । पूर्णा ५ । १० । १५ नंदा १ । ६ । ११ त्ययोस्तिथ्योः संधिनाडीद्वयं तथा । गंडांतं मृत्युदं जन्मयात्रोद्वाहव्रतादिषु ॥ ११ ॥ अथ लग्नगंडांतम् । कुलीर ४ सिंहयोः ५ कीट चापयो ९ मीन १२ मेषयोः १ । गडांतमंतरालं स्याद्घटिकार्धं मृतिप्रदम् ॥ १२ ॥

(पुंसवनसीमंतोन्नयनमु.) आ.पु. पु. पूर्वाभा. उ. भा. मृ. रे. श्र. मू. पूर्वाषा. उत्तराषा. यह नक्षत्र तथा गुरु, आदित्य वार रिक्ता ४ । ९ । १४ के विना तिथि और पहला १ दूसरा २ तीसरा ३ मास तथा कन्या ६, मीन १२, स्थिर २ । ५ । ८ । ११ लग्न पुंसवन करनेमें श्रेष्ठ हैं और सीमंतोन्नयन आठवें ८ मासमें श्रेष्ठ हैं ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ और सीमंतोन्नयन संस्कार प्रथम गर्भमें ही करना चाहिये, कारण, प्रथम गर्भमें करनेसे फिर जो जो गर्भ रहेगा, उन सर्व गर्भोंका संस्कार हो गया है ॥ ९ ॥ (जातकर्ममु.) जातकर्म बालकके जन्मनेके अनंतर पिताको करना योग्य है अथवा जन्मसे ग्यारहवें ११ या बारहवें १२ दिन यथाविधि करना चाहिये ॥ १० ॥ (जन्मकालमें दुष्ट काल हो सो लिखते हैं) (तिथिगडांत) पूर्णा ५ । १० । १५ और नंदा १ । ६ । ११ तिथिके अन्तकी २ घडी गडांतकी हैं सो जन्ममें और यात्रा, विवाह, यज्ञोपवीतमें मृत्युकारक हैं ॥ ११ ॥ (लग्नगण्डान्त) कर्क ४ सिंह ५ लग्नकी वृश्चिक ८ धन ९ की मीन १२ मेषके १ अन्तकी आधी घडी गंडांतकी हैं ॥ १२ ॥

अथ नक्षत्रगंडांतम् । पौष्णाश्विन्योः सर्पपित्र्यक्षयोश्च यच्च ज्येष्ठामूलयोरंतरालम् । तद्गंडांतं स्याच्चतुर्नाडिकं हि यात्राजन्मोद्वाहकालेष्वनिष्टम् ॥ १३ ॥ क्षेपक-[अथ गंडांतफलम् । वत्सरात्पितरं हंति मातरं तु त्रिवर्षतः । धनं वर्षद्वयेनैव श्वशुरं नववर्षतः ॥ १ ॥ जातं बालं वत्सरेण वर्षैः पञ्चभिरग्रजम् । श्यालकं चाष्टभिर्वर्षैरनुक्तान्हंति सप्तभिः ॥२॥

तस्माच्छांतिं प्रकुर्वीत प्रयत्नाद्विधिपूर्वकम् । अरिष्टं शतधा याति सुकृते शांतिकर्मणि ॥ ३ ॥] अथ मूलजनने पादफलम् । मूलाद्यचरणे तातो द्वितीये जननी तथा।तृतीये तु धनं नश्येच्चतुर्थोऽपि शुभावहः ॥१४॥ अथ ज्येष्ठायाश्चरणफलम् । आद्ये पादेऽग्रजं हंति ज्येष्ठायां द्वितयेऽनुजम् । तृतीये जननीं जातः स्वात्मानं च तुरीयके ॥१५॥अथाश्लेष-जातफलम् सर्पांशे प्रथमे राज्यं द्वितीये तु धनक्षयः । तृतीये जननीनाशश्चतुर्थे मरणं पितुः ॥ १६ ॥

(नक्षत्रगण्डान्त) रेवती अश्विनी नक्षत्रके आदिकी तथा आश्लेषा मघाके और ज्येष्ठा मूलके आदिकी ४ घडी गंडांत संज्ञाकी हैं सो यात्रा जन्म विवाहमें अशुभ हैं ॥ ॥ १३ ॥ (क्षेपक)–[गण्डान्तमें जन्मनेवाला वर्षके भीतर पिताको और तीनवर्षके भीतर माताको मारता है । दो वर्षमें धनका नाश करता है, नौ वर्षमें श्वशुरको एक वर्षमें अपनेसे पीछे उत्पन्न होनेवालेको, पाँच वर्षमें ज्येष्ठ भाईको, आठ वर्षमें शालाको मारता है । और जिन सम्बन्धियोंका नाम नहीं लिखा है उन्होंको सात वर्षमें मारता है । इसलिये यत्नसे विधिपूर्वक शान्ति करनी चाहिये । उत्तमरीतिसे शान्ति करनेसे अरिष्ट सौ टुकडा होता है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥] (मूलमें जन्मका चरणफल) मूलके पहले पायेमें जन्मे तो पिताका नाश और दूसरेमें माताका तीसरेमें धनका नाश होता है और चौथा पाया शुभ है ॥ १४ ॥ (ज्येष्ठाका चरणफल) ज्येष्ठाका प्रथम चरण ज्येष्ठ भाईको मारता है १, तथा दूसरा छोटे भाइको २, तीसरा माताको ३, चौथा ४ चरण बालकको नष्ट करता है ॥ १५ ॥ (आश्लेषाके जन्मका फल) आश्लेषाका प्रथम चरण राज्य प्राप्ति करे, दूसरा धननाश करे, तीसरा माताको मारे चौथा पाया पिताको नष्ट करता है ॥ १६ ॥

अथ पूर्वार्द्धपरार्द्धेन फलम् । अश्विनीमघमूलानां पूर्वार्द्धे बाध्यते पिता । पूषा हि शक्रपश्चार्द्धे जननी बाध्यते शिशोः ॥ १७ ॥ अथाऽन्येऽपि जनने दुष्टकालाः । दिनक्षये व्यतीपाते व्याघाते विष्टिवैधृतौ । शूले गंडे च परिघे वज्रे च यमघंटके ॥ १८ ॥ कालगंडे मृत्युयोगे दग्धयोगे सुदारुणे । दर्शे कृष्णचतुर्दश्यां तातसोदरजन्मभे ॥ ॥ १९ ॥ तस्मिन् गंडदिने प्राप्ते प्रसूतिर्यदि जायते । तद्दोषपरिहाराय शांतिं कुर्याद्यथाविधि ॥ २० ॥ सर्वेषां गंडजातानां परित्यागो विधीयते ।

वर्जयेद्दर्शनं यावत्तस्य षाण्मासिकं भवेत् ॥ २१ ॥ शांतिं वा तस्य कुर्वीत प्रयत्नाद्विधिपूर्वकम् । सूतकान्ते तदृक्षे वा तद्दोषस्यापनुत्तये ॥ २२ ॥

(पूर्वार्द्ध-परार्द्धमें फल) अश्विनी मघा मूल इनका पूर्वार्द्ध पिताको बाधा करता है तथा रेवती ज्येष्ठाका उत्तरार्द्ध माताको नष्ट करता है ॥ १७ ॥ जन्ममें और दुष्टकाल और तिथिक्षय, व्यतिपात. व्याघात, भद्रा, वैधृति, शूल, गंड, परिघ, वज्र, यमघंट, काल, मृत्युयोग, दग्धयोग, कृष्णचतुर्दशी, अमावस्या पिताके तथा भाईके जन्मका नक्षत्र इत्यादिक दुष्टकालोंकी भी गंडसंज्ञा है, सो इनमें जन्म हो जावे तो भी दोषशांतिके अर्थ यथाविधि शांति करनी चाहिये ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ और सपूर्ण गंडोंमें जन्मे हुए बालकका त्याग करना योग्य है और छः ६ मासतक बालक देखना भी निषिद्ध है ॥ २१ ॥ यदि त्यागे भी नहीं तथा देखे विना भी नहीं रहा जावे तो विधिपूर्वक सूतकके अंतमें अथवा जन्मके नक्षत्रमें या बारहवें १२ दिन शांति करनी चाहिये ॥ २२ ॥

अथ सूतिकास्नानम् हस्ते मृगेऽनुराधायां रोहिण्यां रेववीद्वये । उत्तरात्रितये स्वातौ जीवार्ककुजवासरे ॥ २३ ॥ सतीस्नानं प्रशस्तं स्याद्विहायार्द्रात्रयं श्रवम् । विशाखाभरणीमूलं चित्राख्यं कृत्तिकां मघाम्॥ ॥२४॥ रिक्तां ४।९।१४बुधशनी षष्ठीं ६ द्वादशीं १२ चाष्टमीं ८ तथा । एषु स्नानं यदा कुर्यात्पुनः सूती न जायते ॥ २५ ॥ अथ वारेषु विशेषः । स्नाता प्रसूताऽप्यसुता बुधे च स्नाता च वंध्या भृगुनंदने च । सौरे मृतिः क्षीरहतिश्च सोमे पुत्रार्थलाभो रविजीवभौमे ॥ २६ ॥ अथ शतभिषास्नाने विशेषः । स्नानं कुर्यात्तु या नारी चंद्रे शतभिषां गते । सप्तजन्म भवेद्वंध्या विधवा दुर्भगा ध्रुवम् ॥ २७ ॥ अथ नामकर्म् । पुनर्वसुद्वये २ हस्तत्रये ३ मैत्रद्वये २मृगे । मूलोत्तरधनिष्ठासु द्वादशै १२ कादशे ११ दिने ॥ २८ ॥ अन्यत्रापि शुभे योगे वारे बुधशशांकयोः । भानोर्गुरोः स्थिरे लग्ने बालनामकृतिः शुभा ॥ २९ ॥

(सूतिकास्नानम्.) ह. मृ. अनु. रो. रे. अश्वि. उ. ३ स्वा. इन नक्षत्रोंमें तथा गुरु रवि मंगल वारोंमें सूतिकास्नान करना श्रेष्ठ है और आ. पुन. पुष्य. श्र. वि. भ. मू. चि. कृ. मघा. यह नक्षत्र तथा रिक्ता ४।९।१४ तिथि और ६।१२।८ यह तिथि सूतिकास्नानमें निषिद्ध हैं ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ (वारोंमें विशेष) और यदि बुधको प्रसूतिस्नान करे तो पुत्ररहित हो तथा शुक्रको वंध्या हो और शनिको मृत्यु हो ।

सोमवारको दूधनाश हो और रवि, गुरु, मंगलवारको सूतिका स्नान करे तो पुत्र धन लाभ हो ॥ २६ ॥ (शतभिषास्नानमें विशेष) यदि शतभिषामें स्नान कर ले तो सात जन्मतक विधवा तथा दुर्भगा होवे ॥ २७ ॥ (नामकर्ममु.) पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये मृ. मू. उ. ३ ध. इन नक्षत्रोंमें और बारहवें १२ ग्यारहवें ११ दिनमें और शुभयोग बुध, सोम, रवि, गुरु वारोंमें तथा स्थिर लग्नमें नामकर्म करना शुभ है ॥ २८ ॥ २९ ॥

अथ नामकर्मणि विवर्ज्याः । पक्षच्छिद्रां च नवमीं हित्वा पंचदशीं तथा । शेषाः स्युस्तिथयः सर्वा नामकर्मणि पूजिताः ॥ ३० ॥ अथ पक्षच्छिद्रास्तिथयः । चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा । षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षच्छिद्राह्वयाः स्मृताः ॥ ३१ ॥ क्रमादेतासु तिथिषु वर्जनीयाश्च नाडिकाः ॥ भूता ५ष्ट ८ मनु १४ तत्त्वां २५ क ९ दश१० शेषास्तु शोभनाः ॥ ३२ ॥ पूर्वाह्णः श्रेष्ठ इत्युक्तो मध्याह्नो मध्यमः स्मृतः । अपराह्णं च रात्रिं च वर्जयेन्नामकर्मणि ॥ ३३ ॥ चन्द्रताराव-लोपेते नैधनोदयवर्जिते । पूर्वाह्ण एव कुर्वीत नामकर्म शुभे दिने ॥ ३४ ॥ अथ जलपूजा । पुनर्वसुद्वये हस्ते मृगे मूलानुराधयोः ॥ श्रवे गुरौ बुधे चन्द्रे सत्तिथौ जलपूजनम् ॥ अथ निष्क्रमणम् । मैत्रे पुष्यपुनर्वसुप्रथ-मभे पौष्णेऽनुकूले विधौ हस्ते चैव सुरेश्वरे च मृगभे तारासु शस्तासु च । कुर्यान्निष्क्रमणं शिशोर्बुधगुरौ शुक्रे विरिक्ते तिथौ कन्याकुम्भतुला-मृगारि ५ भवने सौम्यग्रहालोकिते ॥ ३५ ॥

(नामकर्ममें वर्जनीय तिथि) परंतु पक्षच्छिद्रातिथि नवमी पंचदशी १९ यह तिथि वर्जनी चाहिये ॥ ३० ॥ (पक्षच्छिद्रातिथि) १४।४।८।९।६।१२ इन तिथियों की संज्ञा है सो अति जरूरत हो तो क्रमसे इन तिथियोंकी ५।८।१४।२५।९। १०। घडी त्याग देनी चाहिये ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ और नामकर्ममें पूर्वाह्ण श्रेष्ठ है और मध्याह्न मध्यम है तथा अपराह्ण रात्रि सर्वथा वर्जनीय हैं ॥ ३३ ॥ परंतु नाम-कर्म शुभ चन्द्रमामें और आठवीं ८ रात्रिके विना लग्नमें तथा पूर्वाह्णमें ही श्रेष्ठ है ॥ ३४ ॥ (जलपूजामु.) पुन. पु. ह. मृ. मू. अनु. श्र. इन नक्षत्रोंमें तथा गुरु, बुध, सोम वारोंमें और शुभ तिथियोंमें जलका पूजन श्रेष्ठ है (निष्क्रमणमु.) अनु. पु. पु. अश्वि. रे. ह. ज्ये. मृ. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभ चन्द्र तारामें और बुध, गुरु, शुक्रवारोंमें तथा रिक्ता ४।९ १४ तिथिके विना शुभ तिथियोंमें और शुभ

ग्रहोंकी दृष्टिसहित कन्या ६, कुंभ ११, तुला ७, सिंह ९ लग्नोंमें बालकको बाहर निकालना श्रेष्ठ है ॥ ३९ ॥

अथान्नप्राशनम् । आद्यान्नप्राशने पूर्वा ३ सार्पार्द्रा वारुणं यमः । नक्षत्रेषु परित्याज्या वारौ भौमार्कनन्दनौ ॥ ३६ ॥ द्वादशी १२ सप्तमी ७ रिक्ता ४ । ९ । १४ पर्व १५ । ३० नन्दा १ । ६ । ११ स्तु वर्जिताः । लग्नेषु च झषो १२ ग्राह्यो वृषः २ कन्या च ६ मन्मथः ३ ॥ ३७ ॥ शुक्लपक्षः शुभो योगः संग्राह्यः शुभचन्द्रमाः । मासौ षष्ठाष्टमौ ६ । ८ पुंसां स्त्रीणां मासश्च पंचमः ॥ ३८ ॥ अथ कर्णवेधः । रेवती-द्वितये पुष्ये पुनर्वस्वनुराधयोः । श्रवणद्वितये चित्रामृगे हस्ते शुभे तिथौ ॥ ३९ ॥ शुभे वारे हि जन्माहाद्द्वादशे षोडशे दिने । कर्णवेधोऽथवा मासे षष्ठे सप्ताष्टमेऽपि वा ॥ ४० ॥ न जन्ममासे नच चैत्रपौषे न जन्मतारासु हरौ प्रसुप्ते । तिथावरिक्ते नच विष्टिदुष्टे कर्णस्य वेधो न समानवर्षे ॥४१॥ अथ चोल (चूडा) कर्म । पुनर्वसुद्वये ज्येष्ठामृगे च श्रवणद्वये। हस्त-त्रये च रेवत्यां शुक्लपक्षोत्तरायणे ॥ ४२ ॥ लग्ने गो २ स्त्री ६ धनुः ९ कुम्भ ११ मकरे १० मन्मथे ३ तथा । सौम्ये वारे शुभे योगे चूडाकर्म स्मृतं बुधैः ॥ ४३ ॥

(अन्नप्राशनमु.) प्रथम अन्नप्राशनमें पू. ३ आश्ले. आं. श. भ. यह नक्षत्र तथा मंगल शनैश्चरवार और १२।७ रिक्ता ४।९।१४। पर्व १५।३० नंदा १।६।११ यह तिथि वर्जनी चाहिये और मीन १२, वृष २, कन्या ६. मिथुन ३ लग्न १ तथा शुक्ल पक्ष शुभ चन्द्रमामें और पुरुषोंको ६ । ८ मासमें तथा कन्याको ९ मासमें अन्नप्राशन श्रेष्ठ है ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ (कर्णवेधमु.) रे. अश्वि. पु. पु. अनु. श्र. ध. चि. मृ. ह. इन नक्षत्रोंमें तथा शुभवारतिथियोंमें और जन्मसे १२।१६ दिनमें अथवा ६।७।८ मासमें कर्णवेध शुभ है ॥ ३९ ॥ ४० ॥ परंतु जन्ममास चैत्र पौष जन्म-नक्षत्र चातुर्मास्य रिक्ता तिथि भद्रा और समवर्षमें कर्णवेध निषिद्ध है ॥ ४१ ॥ (चौलकर्ममु.) पुन. पु. ज्ये. मृ. श्र. ध. ह. चि. स्वा. रे. इन नक्षत्रोंमें शुक्लपक्ष उत्तरायणमें और वृष २, कन्या ६, धन ९. कुंभ ११, मकर १०, मिथुन ३ लग्नमें तथा शुभयोग वारोंमें चूडाकर्म करना शुभ है ॥ ४२ ॥ ४३ ॥

चूडाकर्मणि हेयास्तु जन्ममासश्च जन्मभम् । रिक्ता ४ ।९।१४ षष्ठी च पर्वाणि १५।३० प्रतिपच्च तिथिश्चापि ॥ ४४ ॥ गुरुभार्गवयोरस्ते बा-

ल्यवार्द्धकयोरपि । केतूदयेऽपि नैव स्यान्मार्गे ज्येष्ठे तथा क्षुरम् ॥ ४५ ॥ क्षेपक–[सूनोर्मातरि गर्भिण्यां चूडाकर्म न कारयेत् । पंचमाब्दात्प्रागथोर्ध्वं गर्भिण्यामपि कारयेत् ॥] अथाक्षरारंभः । हस्तत्रये३हरिद्वंद्वे २ पूर्वा ३श्वे मृगपंचके ५ । मूले पूष्णि च नक्षत्रे बुधेऽर्के गुरुशुक्रयोः ॥४६। देवोत्थाने मीनचापे१२।९ लग्ने १ वर्षे च पंचमे ५।विद्यारंभोऽत्र वर्ज्याश्च षष्ठच६ नध्यायारिक्तकाः ॥ ४७ ॥ सौम्यायने शुभे मासि स्वाध्यायदिवसे शुभे । स्वे स्वे जीवबुधे शुक्रे लग्ने खेटबलान्विते । हेरंबं विष्णुं वाग्देवीं तथाऽभ्यर्च्येष्टदेवताः । शुभेऽह्नि तु नरः कुर्याल्लिप्यारंभं सदा बुधैः ॥ ४८ ॥

परंतु जन्ममास जन्मनक्षत्र रिक्ता ४ । ९ । १४ षष्ठी ६ पर्व १५ । ३० प्रतिपदा १ तिथि और शुक्रगुरुका अस्त तथा बाल्यवृद्ध अवस्था, केतुका उदय, मार्गशिर ज्येष्ठ यह मास प्रथम क्षौर करानेमें त्यागने चाहिये ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ क्षेपक–(यदि पुत्रकी माता गर्भिणी हो तो चौलकर्म नहीं करे, परंतु पांच ५ वर्षके उपरांत दोष नहीं है ।) (अक्षरारंभमु.) ह. चि. स्वा. श्र. ध. पू. ३ अश्वि. मृ. आ. पु. पु. आश्ले. मू. रे. इन नक्षत्रोंमें तथा बुध, रवि, शुक्र, गुरु वारोंमें बालकको अक्षरारंभ करावे ॥ ४६ ॥ और देवोंके उठनेमें तथा मीन १२ धन ९ लग्नमें और पांचवें बरसमें विद्यारंभ करे परंतु षष्ठी ६ अनध्याय रिक्ता ४ । ९ । १४ त्याग देवे ॥ ४७ ॥ और उत्तरायण शुभमास स्वाध्याय दिनमें तथा ब्राह्मण आदि वर्ण शुक्र, गुरु, बुधके बलसहित शुभ लग्नमें गणेश, विष्णु, सरस्वती इष्टदेवताओंको पूजके श्रेष्ठ दिनमें बालकको प्रथम अक्षरोंका आरंभ करावे तो शुभ है ॥ ४८ ॥

अथोपनयनम् । तत्र मुख्यकालः।व्रतबंधस्तु विप्राणां गर्भाद्वा जन्मतोऽष्टमे । षष्ठेऽब्दे सप्तमे मध्यो विद्याकामस्य पंचमे ॥ ४९ ॥ षष्ठे चैकादशेऽब्दे वा क्षत्रियाणामुदीरितः । वैश्यानां द्वादशेऽब्दे स्यादष्टमे गर्भतोऽपि वा। ५०॥ अथ गौणकालः । विप्रस्याषोडशाद्वर्षादाद्वाविंशात्तु भूभुजाम् । वैश्यानामाचतुर्विंशाद्गौणः काल उदाहृतः ॥५१॥ अथ वर्णेशादिशुद्धिः । निजवर्णेशशाखेशभास्वद्वागीश्वरेंदुषु । वीर्यवत्सु द्विजातीनां व्रतबंधः शुभप्रदः ॥५२॥ अथ वर्णेशाः । जीवशुक्रौ तु विप्रेशौ भूभुजां रविमंगलौ । विशोऽब्जो ज्ञश्च शूद्राणामंत्यजानां पतिः शनिः ॥ ५३ ॥

अथ शाखेशाः । ऋग्वेदेशो गुरुः प्रोक्तो यजुषां भार्गवः पतिः । सामवेदेश्वरो भौमः पतिश्चाथर्वणो बुधः ॥ ५४ ॥

(यज्ञोपवीतमु.) ब्राह्मणोंको गर्भसे अथवा जन्मसे आठवें ८ बरसमें जनेऊ (यज्ञोपवीत) लेना श्रेष्ठ है और छठे ६ या सातवेंमें ७ लेना मध्यम है, यदि विद्या पढ़नेका इच्छा हो तो पांचवें ५ बरसमेंही लेलेवे ॥ ४९ ॥ और क्षत्रियोंको छठे ६ या ग्यारहवें ११ बरस और वैश्योंको बारहवें १२ या गर्भसे आठवें ८ वर्षमें लेना शुभ है ॥ ५० ॥ (गौणकाल) यदि ब्राह्मण आठवें वर्ष नहीं ले सके तो सोलह १६ वर्षतक अधिकार है और क्षत्रियोंको बाईस २२ बरसतक तथा वैश्योंको चौबीस २४ बरसतक लेनेका अधिकार है ॥ ५१ ॥ (वर्णेशादिशुद्धि) परंतु अपने अपने वर्णका स्वामी और शाखाका पति तथा सूर्य, गुरु, चंद्रमा बलवान् होनेसे उपनयन लेना शुभ है ॥ ५२ ॥ (वर्णोंके स्वामी) गुरु, शुक्र, ब्राह्मण वर्णके स्वामी हैं, रवि, मंगल, क्षत्रियोंके, चंद्रमा वैश्योंका, बुध शूद्रोंका और शनैश्चर अंत्यजोंका स्वामी है ॥५३॥ ऋग्वेदका पति गुरु है, यजुर्वेदका शुक्र है. सामवेदका मंगल है और अथर्ववेदका पति बुध है ॥ ५४ ॥

अथ गुर्वादिशुद्धिः । व्रते गुरोर्बलं ज्ञेयं विवाहे यद्विवक्ष्यते । चंद्रताराबलं पूर्वमुक्तं ग्राह्यं बटोः शुभम् ॥५५॥ जन्म १ त्रिदशमारिस्थः ३ । १० । ६ पूजया शुभदो गुरुः । व्रतोद्वाहे चतुर्थाष्टद्वादशस्थो ४ । ८ ।१२ मृतिप्रदः ॥ ५६ ॥ अथाष्टमस्थादिगुरुपरिहारः । झष १२ चाप ९ कुलीर ४ स्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥५७॥ व्रते जन्म १ त्रिखारिस्थो ३।१०।६ जीवोऽपीष्टोऽर्चनात्सकृत् । शुभोऽतिकाले तुर्याष्टव्ययस्थो ४ । ८ । १२ द्विगुणार्चनात् ॥ ५८ ॥ सिद्धिर्नैव गुरोर्यस्य वर्षे प्राप्तेऽष्टमे यदि । चैत्रे मीनगते भानौ तस्योपनयनं शुभम् ॥५९॥ जन्मभादष्टमे सिंहे नीचे वा १० शत्रुगे ३।६।२।७ गुरौ । मौंजीबधः शुभः प्रोक्तश्चैत्रमीनगते रवौ ॥ ६० ॥

(गुरुआदि शुद्धि) यज्ञोपवीतमें गुरुका बल देखना और विवाहमें सूर्यका बल और चन्द्रताराका भी उपनयनमें बल देखनेसे बटु (ब्राह्मण) को शुभ होता है ॥५५॥ जन्मका १, तीसरा ३, दशवां १०, छटा ६ गुरु पूजा करके शुभ होता है और चौथा ४आठवां८बारहवां१२गुरु हो तो मृत्युकारक हैं ॥५६॥ (अष्टमस्थादि गुरुपरिहार) यदि

मीन १२, धन ९, कर्क ४ का गुरु होवे तो विवाह यज्ञोपवीत आदिमें अशुभ भी जानना ॥ ५७ ॥ और जन्मका १, तीसरा ३, दशवां १०, छठा ६, बृहस्पति एक १ पूजा करके श्रेष्ठ है और बालक बडा हो जावे तो चौथा ४, आठवां ८, बारहवां १२ दुगुनी पूजासे शुभ होता है ॥ ५८ ॥ और यदि बालक आठ ८ बरस-का हो तब गुरु अशुभ स्थानमें हो तो चैत्रके मीनके सूर्यमें उसका यज्ञोपवीत श्रेष्ठ है ॥ ५९ ॥ और जन्मराशिसे गुरु आठवां हो या गुरु सिंह ५ मकर १० का हो या शत्रुके घरमें हो तो चैत्रमें मीनक सूर्यमें उपनयन श्रेष्ठ कहा है ॥ ६० ॥

बालस्य बलहीनोऽपि शांत्या जीवो बलप्रदः । यथोक्तवत्सरे कार्यमनुक्ते चोपनायनम् ॥ ६१ ॥ अथ कालशुद्धिः । विप्रं वसंते क्षितिप निदाघे वैश्यं घनान्ते व्रतिनं विदध्यात् । माघादिशुक्लांतिकपंचमासाः साधारणा वा सकलद्विजानाम् ॥ ६२ ॥ अथ सर्वेषां ग्राह्यनक्षत्राणि । हस्त-त्रये च श्रवणत्रये च धातृद्वयेऽप्युत्तरमैत्रभे च । पौष्णद्वये चादितिभद्वये च शस्तो द्विजानां खलु मौंजिबंधः ॥ ६३ ॥ अथ वर्ज्यनक्षत्राणि । कृत्तिकाभरणीमूलज्येष्ठार्द्रासु विशाखयोः । पूर्वात्रये च सार्प्यर्क्षे न कुर्या-च्चोपनायनम् ॥ ६४ ॥ अथ यजुर्वेदातिरिक्तविप्राणां पुनर्वसौ विशेषः । चन्द्रतारानुकूलेषु ग्रहाब्देषु शुभेष्वपि । पुनर्वसौ कृते विप्रः पुनः संस्कारमर्हति ॥ ६५ ॥ अथ प्रतिवेदनक्षत्राणि पूर्वाहस्तत्रये सार्पश्रु-तिमूलेषु बह्वृचाम् । यजुषां पौष्णमैत्रार्कादित्यपुष्यमृदुध्रुवैः ॥ ६६ ॥

बालकका गुरु बलहीन भी हो तो शांति करके शुभ हो जाता है, इसवास्ते शांति करके यथोक्त वर्षमें यज्ञोपवीत करना चाहिये ॥ ६१ ॥ (कालशुद्धि) ब्राह्मणोंको वसंत ऋतुमें अर्थात् चैत्र, वैशाखमें, और क्षत्रियोंको (ग्रीष्म) ज्येष्ठ आषाढमें और वैश्योंको (घनांत) आश्विन कार्तिकमें यज्ञोपवीत लेना श्रेष्ठ है, अथवा सम्पू-र्णोंको माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठमें लेलेना चाहिये ॥ ६२ ॥ नक्षत्र) ह. चि. स्वा. श्र. ध. श. रो. मृ. उत्तरा ३ अनु. रे. अश्वि. पुन. पुष्य. इन नक्षत्रोंमें सम्पूर्णोंको यज्ञोपवीत लेना श्रेष्ठ है ॥ ६३ ॥ (वर्जित नक्षत्र) कृ. भ. मू. ज्ये. आ. वि. पू. ३ आश्ले. इन नक्षत्रोंमें यज्ञोपवीत नहीं लेना चाहिये ॥ ॥ ६४ ॥ (यजुर्वेदातिरिक्त ब्राह्मणोंका पुनर्वसुमें विशेष) और यदि चन्द्र, तारा, ग्रह वर्ष शुभ ही हो परन्तु पुनर्वसुमें यज्ञोपवीत लेलेवे तो यजुर्वेदी ब्राह्मणके विना फिर संस्कार करने योग्य होता है ॥ ६५ ॥ (जुदे जुदे वेदोंके नक्षत्र) पूर्वा ३ ह. चि.

स्वा. आश्ले. श्र. मू. यह नक्षत्र तो ऋग्वेदियोंके हैं. और रे. अनु. ह. पुन. पुष्य. मृ. चि. रो. उ. ३ यह यजुर्वेदियोंके हैं ॥ ६६ ॥

सामगानां हरीशार्कवसुपुष्योत्तराश्विभैः । धनिष्ठादितिमैत्रार्केन्दुपौष्णेष्वथर्वणाम् ॥ ६७ ॥ अथ ग्राह्यास्तिथयः । शुक्लपक्षे द्वितीया च तृतीया पंचमी तथा । त्रयोदशी च दशमी सप्तमी व्रतबंधने ॥६८॥ श्रेष्ठास्त्वेकादशी षष्ठी द्वादश्येतास्तु मध्यमाः । एकां चतुर्थीं संत्यज्य कृष्णपक्षेऽपि मध्यमाः ॥ ६९ ॥ अथ वाराः । आचार्यकाव्यसौम्यानां वाराः शस्ता शशीनयोः॥ वारौ तौ मध्यफलदौ निंदितावितरौ व्रते ॥ ७० ॥ अथ लग्नानि । लग्ने वृषे २ धनुः ९ सिंहे ५ कन्या ६ मिथुन ३ योरपि । व्रतबंधः शुभे योगे ब्रह्मक्षत्रविशां भवेत ॥ ७१ ॥ शाखाधिपतिवारश्च शाखाधिपबलं तथा । शाखाधिपतिलग्नं च दुर्लभं त्रितयं व्रते ॥ ७२ ॥

और श्र. आ. ह. ध. पु. उत्तरा ३ अश्वि. यह सामवेदियोंके हैं और ध. पुन. अनु. ह. मृ. रे. यह नक्षत्र अथर्ववेदियोंके यज्ञोपवीत लेनेके जानने ॥ ६७ ॥ (तिथि) शुक्लपक्षमें २ । ३ । ५ । १३ । १० । ७ यह तिथि श्रेष्ठ हैं और ११ । ६ । १२ यह मध्यम है और कृष्णपक्षमें चतुर्थीके विना पूर्वोक्त तिथि मध्यम जाननी ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ और गुरु. शुक्र, बुध, यह वार श्रेष्ठ हैं तथा सोम सूर्य मध्यम हैं और मंगल शनिवार निषिद्ध हैं ॥ ७० ॥ और वृष २, धन ९. सिंह ५, कन्या ६, मिथुन ३ यह लग्न संपूर्णके उपनयनमें श्रेष्ठ हैं ॥ ७१ ॥ परन्तु शाखाके पतिका वार और बल और लग्न यह तीनों दुर्लभ हैं यदि मिले तो बहुत श्रेष्ठ जानना ॥ ७२ ॥

अथ निषिद्धानि । कृष्णपक्षे शनौ रात्रौ प्रदोषे वा गलग्रहे । अनध्यायेऽपराह्ने च न कुर्याद्व्रतबन्धनम् ॥ ७३ ॥ विनर्तुना वसंतेन कृष्णपक्षे गलग्रहे । अपराह्ने चोपनीतः पुनः संस्कारमर्हति । अथ गलग्रहा कृष्णपक्षे चतुर्थी च सप्तम्यादिदिनत्रयम् । त्रयोदशीचतुष्कं च अष्टावेते गलग्रहाः ॥ ७४ ॥ अथात्र लग्नबलम् । त्रिषष्ठाय ३ । । ११ गतः पापैः षडष्टांत्य ६ । ८ । १२ विवर्जितैः । शुभैः षष्ठाष्टलग्नांत्य ६ । ८ । । १ । १२ वर्जितेन हिमांशुना ॥ ७५ ॥ लग्नस्थिते च रंध्रे च ८ पापे

च मरणं बटोः। सौख्यं स्यात्त्रिषडायेषु ३।६।११ जडत्वमितरेषु च॥७६॥ चंद्रः क्रूरास्तनौ नेष्टाः सर्वे रन्ध्रे व्यये कविः।सितेंदुलग्नपाः षष्ठे मौंजीविद्यादिकर्मसु ॥ ७७ ॥ अथ केंद्रस्थानां सूर्यादीनां फलम् । राजसेवा वैश्यवृत्तिः शस्त्रवृत्तिश्च पाठकः । प्राज्ञोऽर्थवान् म्लेच्छसेवी केंद्रे सूर्यादिखेचरैः ॥ ७८ ॥ इत्युपनयनकालः समाप्तः ॥

(निषिद्धकाल) कृष्णपक्षमें, शनिवारमें, रात्रि, प्रदोषकाल, गलग्रह, अनध्याय तिथि और अपराह्णकालमें यज्ञोपवीत अशुभ है ॥ ७३ ॥ परंतु वसंत ऋतुके विना अन्य ऋतुओंमें कृष्णपक्ष, गलग्रह, अपराह्णमें यज्ञोपवीत लेलेवे तो फेर संस्कारसे शुद्ध होता है और वसंतमें दोष नहीं है (गलग्रह) कृष्णपक्षमें चौथ ४, सप्तमी ७, अष्टमी ८, नौमी ९ त्रयोदशी १३, चतुर्दशी १४, अमावास्या ३०, प्रतिपदा १ यह आठ ८, तिथि गलग्रह संज्ञाकी कही हैं सो निषिद्ध जानना ॥७४॥ (यज्ञोपवीतमें लग्नबल) तीसरे ३, छठे ६, ग्यारहवें ११ पापग्रह हों और छठे ६, आठवें ८, बारहवें १२ स्थानके विना शुभ ग्रह और चंद्रमा हो तो शुभ हैं ॥ ७५ ॥ यदि लग्नमें १ या आठवें ८ पापग्रह हो तो बटुकी मृत्यु हो तीसरे ३, छठे ६, ग्यारहवें ११ पापग्रह हों तो सुख हो तथा अन्य स्थानोंमें हो तो मूर्ख रहे ॥ ७६ ॥ और चन्द्रमा पापग्रह लग्नमें अशुभ है और आठवें ८ संपूर्ण ग्रह तथा बारहवें १२ छठे ६ शुक्र चन्द्रमा लग्नका स्वामी यज्ञोपवीत विद्यारंभ आदि कर्ममें अशुभ हैं ॥ ७७ ॥ और सूर्य केन्द्रमें १ । ४ । ७ । १० हो तो राजाके काम करनेवाला और चन्द्रमा हो तो वैश्योंकी वृत्ति तथा मंगल हो तो शस्त्रवृत्ति, बुध हो तो पढ़ने पढ़ानेकी वृत्ति, गुरु हो तो पंडित और शुक्र हो तो धनवान् और शनि हो तो म्लेच्छोंका नौकर होवे ॥ ७८ ॥

अथ विवाहार्थं कन्यावरयोर्गुणमेलनम् । तत्र तावद् विवाहोपयोगिकन्यालक्षणानि । मृद्वंगी गूढगुल्फा समकुचनयना वृत्तनाभोरुवक्त्रा कृष्णभ्रूनेत्रकेशा स्थिरतरसुनखा दीर्घनेत्रा विलोमा । चारूक्तिः स्वल्पभाला लघुललितगमा पाणिपादौष्ठरक्ता सा कन्योद्वाहिता चेत्सुतधनविपुलान्नाऽऽयुरारोग्यदा स्यात् ॥ ७९ ॥ अथ कन्यादोषाः । निर्गुणा शुल्कसंभाषी क्रोधयुक्ता सरोगिणी । विषयोगा वंध्ययोगा कुलविध्वसयोगिका ॥ ८० ॥ दारिद्र्यजारयोगा च हीनाचरणसंयुता । एभिर्दोषैश्च या युक्ता तां कन्यां न प्रतिग्रहेत ॥ ८१ ॥ अथ वरगुणाः ।

विद्यावंतं सुरूपं उभयकुलशुचिं ज्ञातशीलं दृढांगं निर्व्याधिं शांतियुक्तं द्विजसुरप्रणतावाल्पदार्ढ्यप्रयुक्तम् । सम्यक्पुष्ठोच्चपृच्छं प्रचुरतरधियं मूत्रधारं सुलिंगमेतद्रूपं वरिष्ठं वरमिह वरयेत्कन्यकायाः सुवेशम् ॥ ८२ ॥ कुलं च शीलं च वयश्च रूपं विद्यां च वित्तं च सनाथतां च । एतान् गुणान्सप्त परीक्ष्य देया कन्या बुधैः शेषमचिन्तनीयम् ॥ ८३ ॥ अथ वरदोषाः । मूकोऽन्धो बधिरः कुब्जः स्तब्धः पंगुर्नपुंसकः । कुष्ठी रोगी ह्यपस्मारो दश दोषाः प्रकीर्तिताः ॥ ८४ ॥ आचारहीनो मूर्खश्च कुरूपश्चौरजारकः । पाखण्डी च तथोन्मत्तो गूहकः कुलदूषकः ॥ ८५ ॥ द्यूतकर्मरतश्चैव दश दोषाः प्रकीर्त्तिताः । एतद्दोषप्रयुक्ता ये तेषु कन्या न दीयते ॥ ८६ ॥

(अथ विवाहके योग्य कन्या वरके गुण लिखते हैं) कन्या कोमल अंगवाली, गडे हुए (गुल्फ) टकणेवाली हो और समान कुच नेत्र, गोल नाभि पिंडी मुख होवें और भ्रूकुटी, नेत्र, केश काले होवें, मजबूत सुन्दर नख होवें, बडे नेत्र हो शरीरपर वाल होवें, नही, कोमल वाणी हो और ललाट छोटा हो, गति सुन्दर, मंद हो, बाहुतल, हाथ, तलुआ और ओठ लाल हो, तो ऐसी स्त्री विवाह होनेसे पुत्र धन, अन्न, आयु आरोग्यताके देनेवाली होती है ॥ ७९ ॥ (कन्याके दोष) और गुणरहितवाली, मोल लेनेवाली, क्रोधिनी, रोगिणी, विषयोगवाली, वन्ध्यायोगकी, कुलनाशयोगकी, दरिद्र तथा जारयोगकी, नीच आचरण करनेवाली इन दोषोंसे युक्त कन्याको कदापि नहीं विवाहनी चाहिये ॥ ८० ॥ ८१ ॥ (वरके गुण) विद्यावान् हो, सुरूप हो, पिताका तथा नानेका कुल शुद्ध हो, शीलस्वभाव हो, दृढ अंग हो रोगरहित हो, शांतियुक्त हो, ब्राह्मणोंको तथा देवताओंको प्रणाम करनेवाला हो अर्थात् नास्तिक नहीं हो अच्छी वार्त्ता करनेवाला हो, बुद्धिमान् हो मूत्रकी धार पूर्ण हो, सुन्दर ध्वजवाला हो, रूपवान् हो, गुणी हो तथा श्रेष्ठ वस्त्र धारे हुए हो तो ऐसा वर कन्याके योग्य कहना चाहिये ॥ ८२ ॥ और कुल, स्वभाव, अवस्था, रूप, विद्या धन, पिता, माता यह सात गुण देखके कन्या देनी चाहिये ॥ ८३ ॥ (वरके दोष) परन्तु गूङ्गा, अन्धा, बहिरा, कूबडा, अभिमानी पंगुला, नपुंसक, कुष्ठी, रोगी, मृगीरोगवाला यह दश दोष हैं ॥ ८४ ॥ आचाररहित, मूर्ख, कुरूप, चोर, रंडीबाज, बावला (दिवाना), कपटी, नीचकुलका ॥ ८५ ॥ जुवारी, यह दश दोष होवें उसको कन्या नहीं देनी चाहिये ॥ ८६ ॥

अथ जन्मलग्नतो भौमफलम् ॥ लग्ने १ व्यये च १२ पाताले ४ जामित्रे ७ चाष्टमे ८ कुजे । कन्या भर्तुर्विनाशाय भर्त्ता कन्याविनाशदः ॥ ८७ ॥ एवंविधे कुजेसंस्थे विवाहो न कदाचन । कार्यो वा गुणबाहुल्ये कुजे वा तादृशे द्वयोः ॥ ८८ ॥ अथ भौमपरिहारः । जामित्रे ७ च यदा सौरिर्लग्ने १ वा हिबुके ४ ऽथवा । अष्टमे ८ द्वादशे १२ चैव भौमदोषो न विद्यते ॥ ८९ ॥ अथ वन्ध्यादियोगः । त्यक्ता भवेनोष्णकरेऽस्त ७ संस्थे बाल्येऽपि भौमे विधवा प्रदिष्टा । पापग्रहालोकनवर्गयाते कन्यैव वन्ध्या भवतीत्यवश्यम् ॥ ९० ॥

(चूनडी मोलीये मंगलका विचार) लग्नमें १, बारहवें १२, चौथे ४, सातवें ७ आठवें, ८ जन्मलग्नसे मंगल हो तो कन्या भर्त्ताका नाश करनेवाली और भर्त्ता कन्याको मारता है ॥ ८७ ॥ इस तरह मंगल हो तो विवाह नहीं करना चाहिये; परंतु गुण अधिक मिलते होवें या मंगल कन्यावरके एकसा हो तो विवाह करना श्रेष्ठ है ॥ ८८ ॥ (मंगलपरिहार) यदि शनैश्चर जन्मलग्नसे ७।१।४।१२ इन स्थानोंमें हो तो मंगलका दोष नहीं है ॥८९॥ (वंध्यादियोग) जन्मलग्नसे कन्याके सातवें सूर्य हो तो पति करके त्यागी जावे और मंगल हो तो बालविधवा हो या सातवें घरमें पापग्रहकी दृष्टि हो तो वंध्या हो ॥ ९० ॥

अथ विषकन्यालक्षणम् । सूर्यभौमार्किवारेषु तिथिभद्रा २ । ७ । १२ शताभिधम् । आश्लेषा कृत्तिका चेत्स्यात्तत्र जाता विषांगना ॥ ॥ ९१ ॥ अथ विषकन्यादोषपरिहारः । सावित्र्यादिव्रतं कृत्वा वैधव्यविनिवृत्तये । अश्वत्थादिभिरुद्वाह्य दद्यात्तां चिरजीविने ॥ ९२ ॥ अथ जन्मकालिकदुष्टनक्षत्रफलम् । मूलजा श्वशुरं हंति व्यालजा कुलटांगना । विशाखजा देवरघ्नी ज्येष्ठजा ज्येष्ठनाशिका॥ ९३ ॥ अथास्यापवादः । आश्लेषाप्रथमः पादः पादो मूलांतिमस्तथा । विशाखाज्येष्ठयोराद्यास्त्रयः पादाः शुभावहाः ॥ ९४ ॥ अथ वधूवरयोर्मेलनम् । वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् । गणकूट भकूटं च नाडी चैते गुणाधिकाः ॥ ९५ ॥ अथोत्तरबलाश्चेति विज्ञेयास्तु परस्परम् । गुणाधिके वरे कार्यो विवाहो वरकन्ययोः ॥ ९६ ॥

(विषकन्याका लक्षण) सूर्य, मंगल, शनिवारको भद्रा तिथि २ । ७ । १२ हो और आश्लेषा कृत्तिका नक्षत्र हो तब जन्मी हुई कन्या विषकन्या कहाती है ॥ ॥ ९१ ॥ (विषकन्याके दोषका उपाय) ज्येष्ठ शुदी चौदश १४ को सावित्रीका व्रत करे और पीपलके साथ कन्याका विवाह करके बहुत आयुवाले वरको विवाह दे तो दोष नहीं है ॥ ९२ ॥ (जन्मकालिक दुष्ट नक्षत्रफल) मूल नक्षत्रमें जन्मने वाली कन्या ससुरेको मारती है और आश्लेषाकी वेश्या हो जाती है तथा विशाखाकी देवरको और ज्येष्ठामें जन्मनेवाली जेठको मारती है ॥ ९३ ॥ (इसका अपवाद) आश्लेषाका प्रथम चरण, मूलके अन्तका चरण और विशाखा ज्येष्ठाके तीन चरण शुभ हैं ॥ ९४ ॥ (कन्यावरके मिलानेका विचार) वर्ण १, वश्य २ तारा ३, योनि ४, ग्रहमैत्री ५, गणकूट ६, राशिकूट ७, नाडी ८ यह गुण हैं सो उत्तरोत्तर गुणी समझना चाहिये और वरका अधिक गुण मिलनेसे विवाह करना श्रेष्ठ है ॥ ९५ ॥ ९६ ॥

अथ वर्णप्रीतिः । मीनालिकर्कटा १२ । ८ । ४ विप्राः क्षत्त्रिर्मेषो हरिर्धनुः १ । ५ । ९ । शूद्रो युग्मं तुला कुम्भो ३ । ७ । ११ वैश्यः कन्या वृषो मृगः । ६ । २ । १० ॥ ९७ ॥ अथ वर्णगुणः । एको गुणः सदृग्वर्णे तथा वर्णोत्तमे वरे । हीनवर्णे वरे शून्यं केऽप्याहुः सदृशेऽर्द्धकम् ॥ ९८ ॥ नोत्तमामुद्वहेत्कन्यां ब्राह्मणीं च विशेषतः ॥ म्रियते हीनवर्णोऽयं ब्रह्मणा सदृशो यदि । यदि जीवति भर्त्ता तु ज्येष्ठपुत्रो विनश्यति ॥ ९९ ॥ अथ वश्यप्रीतिः । युग्मं ३ कुम्भस्तुलाकन्याप्राग्दलं धनुषो द्विपाद् ॥ १७० ॥ परार्द्धं धनुषश्चैव पूर्वार्द्धं मकरस्य च । केसरी वृषभा २ च्यश्च मेषश्चैते चतुष्पदाः ॥ १०१ ॥ नक्रो १० त्तरदलं मीनो जलचारी प्रकीर्त्तितः । कर्कः कीटकसंज्ञश्च वृश्चिकस्तु सरीसृपः ॥१०२॥ सिंहं विना वशाः सर्वे द्विपदानां चतुष्पदाः ॥ भक्ष्या जलचरास्तेषां भयस्थाने सरीसृपाः ॥ १०३ ॥

(वर्णप्रीति) मीन १२, वृश्चिक ८, कर्क ४ यह राशि ब्राह्मणसंज्ञाकी हैं और मेष १, सिंह ५, धन ९ क्षत्रियसंज्ञाकी हैं, मिथुन ३, तुला ७, कुंभ ११ शूद्रसंज्ञक हैं और कन्या ६, वृष २, मकर १० वैश्यसंज्ञाकी हैं ॥ ९७ ॥ (वर्णके गुण) दोनोंका एक वर्ण हो अथवा वर उत्तम वर्णका हो तो १ गुण होता है और हीन वर्णका वर हो तो ० शून्य जानना, कोई आचार्य एकसे वर्णमें आधा गुण मानते हैं,

परन्तु उत्तम वर्णकी या ब्राह्मण वर्णकी कन्या नहीं विवाहनी चाहिये, यदि हीन वर्ण विवाह ले तो ब्रह्माके सदृश हो तो भी मरजावे अथवा वर जीवे तो ज्येष्ठ पुत्र मरता है ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ (वश्यके गुण) मिथुन ३, कुंभ ११, तुला ७, कन्या ६, धनका पूर्वभाग यह राशि द्विपादसंज्ञक हैं, धनका उत्तरार्द्ध तथा मकरका पूर्वार्द्ध, सिंह ५, वृष २, मेष १ यह चतुष्पद राशि हैं ॥ १०० ॥ १०१ ॥ और मकरका उत्तरार्द्ध मीन १२ यह जलचर है और कर्क ४ कीटसंज्ञक है, वृश्चिक ८ सरीसृपसंज्ञक है ॥ ॥ १०२ ॥ परन्तु सिंहके विना संपूर्ण चतुष्पद द्विपद मनुष्यके वश हैं और उन्हींके जलचर भक्ष्य हैं तथा सरीसृप भयका देनेवाला है ॥ १०३ ॥

अथ वश्ये गुणसंख्या । सख्यं वैरं च भक्ष्यं च वश्यमाहुस्त्रिधा बुधाः । वैरे भक्ष्ये गुणाभावो द्वयोः सख्ये गुणद्वयम् ॥ १०४ ॥ **अथ तारामैत्री** । कन्याभं वरभाद्गण्यं वधूभाद्वरभं तथा । नवहृच्छेषभे नेष्टे सप्त ७ पंच ५ त्रि ३ संख्यके ॥ १०५ ॥ एकतो लभ्यते तारा शुभा चैवाशुभाऽन्यतः । तदा सार्द्धो गुणश्चैव ताराशुद्ध्या मिथस्त्रयः ॥ १०६ ॥ उभयोर्न शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत् । **अथ योनिमैत्री** अश्विनीवासवश्चाश्वो रेवती भरणी गजः ॥ १०७ ॥ पुष्यश्च कृत्तिका छागो नागश्च रोहिणी मृगः। आर्द्रा मूलमपि श्वानौ मूषकः फाल्गुनी मघा ॥ १०८ ॥ मार्जारोऽदितिराश्लेषा गोजातिरतूत्तरात्रयम् । महिषौ स्वातिहस्तौ च मृगो ज्येष्ठानुराधिके ॥१०९॥ व्याघ्रश्चित्रा विशाखा च श्रुत्याषाढे च मर्कटौ । शतं भाद्रपदा सिंहौ नकुलश्चाभिजितस्मृतः ॥ योनयः कथिता भानां वैरं मैत्री विचार्यताम् ॥ ११० ॥

यह वश्य तीन प्रकारका है—सख्य १, वैर २, भक्ष्य ३ सो वैरमें तथा भक्ष्यमें गुण नहीं है और सख्यमें दो २ गुण जानना ॥ १०४ ॥ (तारामैत्री) वरके नक्षत्रसे कन्याके नक्षत्रतक गिने और कन्याके नक्षत्रसे वरके नक्षत्रतक गिने, फिर दोनों जगह नौ ९ का भाग दे यदि ७ । ५ । ३ बचे तो अशुभ जानना ॥ १०५ ॥ यदि एक तरफ तारा शुभ हो और दूसरी तरफ अशुभ हो तो डेढ १॥ गुण होता है, और दोनों तरफ तारा शुद्ध हो तो तीन ३ गुण हो ॥ १०६ ॥ यदि दोनों तरफ अशुभ तारा हो तो गुणका अभाव जानना (योनि) अश्विनी धनिष्ठाकी अश्व योनि है, रेवती भरणीकी गज है, पुष्य कृत्तिकाकी छाग है, रोहिणी मृगशिरकी नाग (सर्प) है, आर्द्रा मूलकी श्वान है, और पूर्वाफाल्गुनी मघाकी मूषा योनि है ॥

॥ १०७ ॥ १०८ ॥ पुनर्वसु आश्लेषाकी मार्जार है, तीनों उत्तराओंकी गौ योनि है, स्वाती हस्तकी महिष है, ज्येष्ठा अनुराधाकी मृग योनि है ॥ १०९ ॥ चित्रा विशाखाकी व्याघ्र है, श्रवण पूर्वाषाढाकी वानर है, शतभिषापूर्वाभाद्रपदाकी सिंह है, अभिजित्‌की नकुल योनि है इस प्रकार नक्षत्रोंकी योनि जानके वैर मैत्रीका विचार करना चाहिये ॥ ११० ॥

अथ योनिवैरम् । गोव्याघ्रं गजसिंहमश्वमहिषं श्वैणं च बभ्रूरगं वैरं वानरमेषकं च सुमहत्तद्वद्बिडालोंदुरम् । लोकानां व्यवहारतस्त्वदपि च ज्ञात्वा प्रयत्नादिदं दंपत्योर्नृपभृत्ययोरपि सदा वर्ज्यंशुभस्यार्थिभिः ॥१११॥ **अथ योनिगुणाः** । अष्टाविंशतितारणां योनयस्तु चतुर्दश । मैत्रं चैवातिमैत्रं च विवाहे नरयोषितोः ॥ ११२ ॥ महद्वैरे च वैरे च स्वभावे च यथाक्रमम् । मैत्रे चैवातिमैत्रे च खेंदुद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥ ० । १ । २ । ३ । ४ ॥ ११३ ॥ **अथ ग्रहमैत्री** । शत्रू मंदसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवेस्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाःशीतगोः । जीवेंदूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोरिः सितार्की समौ मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥११४॥ सूरे सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी । शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौम्यस्य त्वन्येऽरयो ये प्रोक्ताः सुहृदस्त्रिकोणभवनात्तेऽमी मया कीर्तिताः ॥ ११५ ॥

गौका व्याघ्रका वैर है, गजका सिंहका वैर है, अश्व महिषका वैर है, श्वान मृगका वैर है, नकुल सर्पका, वानर मेषका, तथा बिलाव मूषेका वैर जानना चाहिये । यह वैर लोकोंके व्यवहारसे कन्यावरके और राजा नौकरके जरूर वर्जने योग्य हैं ॥१११॥ (योनिके गुण) इसप्रकार अठ्ठाईस २८ नक्षत्रोंके योनिकी चौदा १४ प्रकारकी संज्ञा है जैसा कन्या वरके, मैत्र १ अतिमैत्र २ महान् वैर ३ वैर ५ स्वाभाविक ४ इसी क्रमसे जानना और मैत्रमें ३ तीन गुण अतिमैत्रमें ४ गुण महान् वैरमें शून्य० वैरमें १ गुण, स्वभावमें २ हैं ॥ ११२ ॥ ११३ ॥ (ग्रहमैत्री) सूर्यके शनि शुक्र शत्रु हैं, बुध सम है और गुरु मंगल चन्द्रमा मित्र हैं और चन्द्रमाके सूर्य बुध मित्र हैं, बाकीके सम जानने और मंगलके गुरु सूर्य चन्द्रमा मित्र हैं और बुध वैरी १ है, शुक्र शनि सम हैं और बुधके सूर्य शुक्र मित्र हैं, चंद्रमा शत्रु है, बाकीके सम हैं ॥ ११४ ॥ गुरुके बुध शुक्र वैरी, शनि सम है, बाकीके मित्र हैं और शुक्रके बुध शनि

मित्र हैं, मंगल गुरु सम हैं, बाकीके शत्रु हैं और शनैश्चरके शत्रु बुध मित्र हैं, गुरु सम है, बाकीके वैरी हैं इस प्रकार यह ग्रहके त्रिकोण भवनसे हमने मित्र वर्णन किया है ॥ ११५ ॥

अथ ग्रहमैत्रीफलम् । दंपत्योो राशिपोर्मैत्री मिथः स्याच्छोभनं तदा । अहिते त्वहितं विंद्यात्समे वै मध्यमं स्मृतम् ॥ ११६॥ अथ ग्रहमैत्रीगुणाः। तन्नैकाधिपतित्वे तु प्रोक्तं तु गुणपंचकम् । चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोः साम्ये त्रयो गुणाः ॥ ११७ ॥ मित्रवैरे गुणश्चैकः समवैरे गुणार्द्धकम् । परस्परं खेटवैरे गुणशून्यं विनिर्दिशेत् ॥११८॥ अथगणकूटः। अश्विनी-मृगरेवत्याहस्तः पुष्यः पुनर्वसुः। अनुराधाश्रुतिस्वात्यः कथितो देवतागणः ॥११९॥ तिस्रः पूर्वा ३ उत्तराश्च तिस्रोऽप्यार्द्रा च रोहिणी । भरणी च मनुष्याख्यो गणोऽसौ कथितो बुधैः ॥ १२० ॥ कृत्तिका च मघाश्लेषा विशाखा शततारका चित्रा ज्येष्ठा धनिष्ठा च मूलं रक्षोगणः स्मृतः॥१२१॥

(ग्रहमैत्रीफल) स्त्रीपुरुषके राशिस्वामीकी मित्रता हो तो दोनोंको शुभ होता है और शत्रु हो तो अशुभ फल, सम हो तो मध्यम फल ॥ ११६ ॥ (ग्रहमैत्रीके गुण) यदि दोनोंकी राशिका एक ही पति हो तो पांच ५ गुण, तथा मित्र सम हो तो चार ४ गुण, दोनों सम हों तो तीन गुण जानने ॥ ११७ ॥ और मित्र वैरी हो तो एक गुण और सम वैरीमें अर्ध (आधा) गुण जानना और कन्या वरके राशिके स्वामीका वैर हो तो गुण नहीं होता है ॥ ११८ ॥ (गणविचार) अश्वि. मृग. रे. ह. पुष्य. पुन. अनु. श्र. स्वा. यह नक्षत्र देवतागणके हैं ॥ ११९ ॥ पूर्वा ३ उत्त॰ ३ आ. रो. भ. यह मनुष्यगणके नक्षत्र हैं ॥ १२० ॥ कृ. म. आश्ले. विशा. शत. चि. ज्ये. ध. मू. यह नक्षत्र राक्षसगणके हैं ॥ १२१ ॥

अथ गणफलम् । स्वगणे परमा प्रीतिर्मध्यमा देवमर्त्ययोः । मर्त्यराक्ष-सयोर्मृत्युः कलहो देवरक्षसोः ॥ १२२ ॥ अथ गणकूटे गुणाः । षड्गु-णा गणसादृश्ये पंच स्युः सुरमानुषे । नार्या देवो नरः पुंसश्चत्वारो वा गुणास्त्रयः ॥ देवराक्षसयोः शून्यं तथैव नररक्षसोः ॥ १२३ ॥ अथ गणदोषापवादः । मैत्र्यां राशीशयोरंशस्वामिनोर्वरकन्ययोः । न तत्र गणदोषः स्याद्विवाहः शुभदो मतः ॥ १२४ ॥ यदि रक्षोगणे कन्या

वरश्चेन्नृगणो भवेत् । तदोद्वाहो गुणाधिक्ये कार्यस्त्वावश्यके सति ॥१२५॥

अथ राशिकूटकम् । मृत्युः षट्काऽष्टके ६ । ८ ज्ञेयोऽपत्यहानिर्नवा-९ त्मजे ५ । द्विर्द्वादशे २ । १२ निर्धनत्वं द्वयोरन्यत्र १ । ३ । ४ । ७ । १० । ११ सौख्यकृत् ॥ १२६ ॥

(गणफल) कन्यावरका एक गण हो तो परम प्रीति हो और देवमनुष्यगण हो तो मध्यम प्रीति हो और मनुष्यराक्षस हो तो मृत्यु हो और देवराक्षस गण हो तो कलह हो ॥ १२२ ॥ दोनोंका एक गण हो तो गुण ६ होवें और देवमनुष्यका ५ गुण और स्त्री देवता हो पुरुष मनुष्य हो तो तीन ३ गुण और देव राक्षस तथा मनुष्य राक्षस गणका गुण नहीं है ॥ १२३ ॥ परन्तु कन्यावरके राशिके तथा नवांशकके स्वामी की मित्रता हो तो गणका दोष नहीं है ॥ १२४ ॥ और यदि कन्या राक्षस-गणकी हो और वर मनुष्यगणका हो तो गुण अधिक मिलनेसे तथा अति आवश्य-कतामें दोष नहीं है ॥ १२५ ॥ (राशिकूट कन्याकी राशिसे वरकी राशि छठी ६ आठवीं ८ हो तो मृत्यु होवे और नवमी ९ पांचवीं ५ हो तो संतानरहित हो और दूसरी २ बारहवीं १२ होवे तो दरिद्री हो और १ । ३ । ४ । ७ । १० । ११ हो तो शुभ जानना ॥ १२६ ॥

अथ दुष्टराशिकूटापवादः । भवेत्त्रिकोणे बहुपुत्रवित्ता द्विर्द्वादशे चार्थमुपैति कन्या । षडष्टके सौख्यफलं विधत्ते स्त्रीणां विवाहो ग्रहमैत्रभावे ॥ १२७ ॥ द्विर्द्वादशे वा नवपंचमे वा षट्काष्टके राक्षसयोषितो वा । ऐकाधिपत्ये भवनेशमैत्रे शुभाय पाणिग्रहणं विधेयम् ॥ १२८ ॥ अथ नाडीदोषः । ज्येष्ठा मूलाश्विनार्द्राख्यद्वयं शतभिषग्द्वयम् । उत्तराफाल्गु-नीयुग्ममाद्यनाडीयमीरिता ॥ १२९ ॥ चित्रा पुष्योऽनुराधा च धनिष्ठा भरणी मृगः ॥ पूर्वाषाढोत्तराभाद्रं पूर्वैषा मध्यनाडिका ॥ १३० ॥ रोहिणी कृत्तिकाऽश्लेषा मघा स्वातीद्वयं तथा । रेवती चोत्तराषाढा श्रवणश्चांत्यना-डिका ॥ १३१ ॥ अथ नाडीफलम् । एकनाडीस्थनक्षत्रे दंपत्योर्मरणं ध्रुवम् । सेवायां च भवेद्धानिर्विवाहे त्वशुभं भवेत् । १३२ ॥ आदिनाडी पतिं हंति मध्यनाडी च कन्यकाम् । अंत्यनाडी द्वयं हंति नाडीवेधं विवर्जयेत् ॥ १३३ ॥

(दुष्टराशिकूटका अपवाद) परंतु दोनोंके राशिस्वामीकी मित्रता हो और वरकी राशिसे कन्याकी नौवीं ९ पांचवीं ५ राशि बहुत पुत्र धनके देनेवाली है और दूसरी २, बारहवीं १२ हो तो धनवती हो तथा छठी ६, आठवीं ८ हो तो सुख होवे ॥१२७॥ और दूसरी २ बारहवीं १२, नौवीं ९, पांचवीं ५, छठी ६, आठवीं ८ राशि हो तथा स्त्रीका राक्षस गण हो तो भी राशिके स्वामी एक होनेसे और राशिके स्वामीकी मित्रता होनेसे विवाह शुभ होता है ॥ १२८ ॥ (नाडीदोष) ज्ये. मू. अश्वि. आ. पुन. श. पू. भा. उ. फा. ह. यह नक्षत्र आद्यनाडीके हैं ॥ १२९ ॥ चि. पु. अनु. ध. भ. मृ. पूर्वा षा. उ. भा. पू. भा. यह मध्यनाडीके हैं ॥ १३० ॥ रो. कृ. आश्ले. म. स्वा. वि. रे. उत्तराषा. श्र. यह अंत्य नाडीके नक्षत्र हैं ॥ १३१ ॥ (नाडीफल) एक नाडीमें स्त्रीपुरुषके नक्षत्र होवें तो मृत्यु हो और नौकर मालकके हानि हो तथा विवाहमें अशुभ हो ॥ १३२ ॥ प्रथम नाडी पतिको मारे, मध्य नाडी कन्याको और अंतकी नाडी दोनोंको मारे इस वास्ते निषिद्ध है परन्तु एक नक्षत्रमें जन्मने- वालोंको दोष नहीं है (उक्तं च–एकनक्षत्रजातानां नाडीदोषो न विद्यते । अन्यर्क्षना- डीवेधेषु विवाहो वर्जितः सदा) ॥ १३३ ॥

अथ नाडीप्राशस्त्यम् । नाडीकूटं तु संग्राह्यं कूटानां तु शिरोम- णिम् । ब्रह्मणा कन्यकाकण्ठे सूत्रत्वेन विनिर्मितम् ॥ १३४ ॥ अथा- वश्यके नाड्यादिदोषदानानि । हेमाज्यरत्नगोदानं मृत्युंजयजपं तथा । कुर्यादावश्यकोद्वाहे नाडीदोषापनुत्तये ॥ १३५ ॥ ताम्रं द्विर्द्वादशे दद्यात्सुवर्णं च षडष्टके । गोयुगं नवपंचाख्ये स्वर्णं वर्णादिदूषणे ॥ हेमान्नं वसनं धेनुं सर्वदोषोपशांतये ॥ १३६ ॥ अथ वर्गप्रीतिः । अवर्गो गरुडो ज्ञेयो बिडालः स्यात्कवर्गकः । चवर्गः सिंहनामा स्याट्टवर्गः कुक्कुरः स्मृतः ॥ १३७ ॥ सर्पाख्यः स्यात्तवर्गोऽपि पवर्गो मूषको मतः । यवर्गो मृगनामा स्यात्तथा मेषः शवर्गकः ॥ १३८ ॥

यह नाडीविचार सम्पूर्ण गुणोंमें श्रेष्ठ है और ब्रह्माजीने कन्याके कंठमें सौभा- ग्यका यह सूत्र रचा है परन्तु विशेषकरके ब्राह्मणोंके अति ही शुभ है (उक्तं च– नाडीदोषस्तु विप्राणां वर्णदोषश्च क्षत्रिये । गणदोषश्च वैश्येषु योनिदोषस्तु पादजे) ॥ ॥ १३४ ॥ (आवश्यक काममें नाडी आदि दोषोंका दान) यदि नाडीका दोष हो तो सुवर्ण, घृत, रत्न, गौ इनका दान और महामृत्युंजयका जप करनेसे विवाहमें दोष नहीं है ॥ १३५ ॥ दूसरी २ बारहवीं १२ राशिमें तांबेका दान और छठी ६ आठवीं ८ में सुवर्ण, नौवीं ९ पांचवीं ५ में गोदान और वर्ण आदि अशुभ हो तो

सुवर्णदान तथा सम्पूर्ण दोषनिवारणके अर्थ सुवर्ण अन्न धेनु वस्त्र दान करे तो शुभ है ॥ १३६ ॥ (वर्गप्रीति) अइउए गरुड, कखगघङ बिलाव, चछजझञ सिंह, टठडढण श्वान, तथदधन सर्प, पफबभम मूषा, यरलव मृग, शषसह मेष ॥ १३७ ॥ १३८ ॥

अथ वर्गवैरम् । वैरी गरुडसर्पौ च वैरं तु श्वानमेषयोः । वैरी मूषक मार्जारौ वैरं च मृगसिंहयोः ॥ १३९ ॥ अथ द्वितीयः प्रकारः । स्ववर्गात्पञ्चमः शत्रुश्चतुर्थो मित्रसंज्ञकः । उदासीनस्तृतीयस्तु वर्गभेदस्त्रिधोच्यते ॥ १४० ॥ अथ वर्गफलम् । स्ववर्गे परमा प्रीतिर्मित्रे प्रीतिश्च कथ्यते उदासीने प्रीतिरल्पा शत्रुवर्गे मृतिर्भवेत् ॥१४१॥ अथ युंजी (नक्षत्र) प्रीतिः । पौष्णादिकं षट्कमुशंति पूर्वमार्द्रादिकं द्वादश १२ मध्यभागम् । पौरंदराद्यं नवकं ९ भचक्रं परं च भागं गणका विदग्धाः ॥ १४२ ॥ अथ फलम् । पूर्वभागे पतिः श्रेष्ठो मध्यभागे च कन्यका । परभागे च नक्षत्रं द्वयोः प्रीतिर्महीयसी । १४३ ॥ इति वधूवरयोर्मेलापनम् । अथ वाग्दानं वरवरणं च । पूर्वात्रितयमाग्नेयमुत्तरात्रितयं तथा । रोहिणी तत्र वरणे भगणः शस्यते सदा ॥ १४४ ॥ उपवीतं फलं पुष्पं वासांसि विविधानि च । देयं वराय वरणे कन्याभ्रात्रा द्विजेन वा ॥ १४५ ॥

गरुडसर्पका वैर है श्वानमेषका वैर है, मूसेबिलावका वैर है, मृगसिंहका वैर जानना ॥ १३९ ॥ अथवा अपने वर्गसे पांचवां वर्ग वैरी है, और चौथा मित्रसंज्ञक है, तीसरा सम है इस प्रकार तीन भेद जानने ॥ १४० ॥ स्त्रीपुरुषका एक वर्ग होवे तो पूर्णप्रीति होवे, मित्रसंज्ञके वर्गमें भी प्रीति होवे और उदासीनमें साधारण प्रीति तथा शत्रुवर्ग हो तो मृत्यु होवे ॥ १४१ ॥ (युंजीप्रीति) रे. अ. भ. कृ रो. मृ. यह ६ नक्षत्र पूर्वभागके हैं आ. पु. पु. आश्ले. म. पू. उ. ह. चि. स्वा वि. अनु. यह १२ मध्यभागके हैं और ज्ये. मू. पू. उ. श्र. ध. पू. उ. यह ९ परभागके जानने ॥ १४२ ॥ (अथ फल) पूर्वभागमें पति श्रेष्ठ होता है, मध्यभागमें कन्या श्रेष्ठ होती है और परभागमें दोनों स्त्रीपुरुष शुभ हैं ॥ १४३ ॥ (सगाईका मुहूर्त्त.) पू. ३, कृ. उ. ३ रो यह नक्षत्र वरके वरनेमें श्रेष्ठ हैं ॥ १४४ ॥ यज्ञोपवीत, फल, पुष्प, वस्त्र वरणके अर्थ कन्याके भ्राता या ब्राह्मणद्वारा वरको देना चाहिये ॥ १४५ ॥

अथ कुमारीवरणम् । जन्मतो गर्भाधानाद्वा पंचमाब्दात्परं शुभम् । कुमारीवरणं दानं मेखलाबन्धनं तथा ॥ १४६ ॥ पचाङ्गशुद्धदिवसे

चन्द्रताराबलान्विते । विवाहोक्तेषु ऋक्षेषु कुजवर्जितवासरे ॥ १४७ ॥ पक्षाद्यदिवसं १ रिक्ता ४ । १४ मष्टमीं ८ नवमीं ९ तिथिम् । त्यक्त्वा-न्यदिवसे गन्धस्रक्तांबूलफलान्वितैः ॥ १४८ ॥ सहवृद्धद्विजगणैर्वरयेत्क-न्यकां सतीम् । अरोगिणीं भ्रातृमतीमसमानार्षगोत्रजाम् ॥ १४९ ॥

अथ कार्यविशेषे जन्मर्क्षनामर्क्षयोः प्राधान्यम् । देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशेः प्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत् ॥१५०॥ काकिण्यां वर्गशुद्धौ च दाने द्यूते ज्वरोदये । मंत्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता ॥ १५१ ॥ विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रादौ ग्रहगोचरे । जन्मराशेः प्रधानत्वं नामराशिं न चिंतयेत् ॥ १५२ ॥

(कुमारीका वरण) जन्मसे या गर्भसे पांच ५ वरसके उपरांत कन्याकी सगाई तथा मेखलाबंधन करना योग्य है ॥ १४६ ॥ परंतु पंचांगशुद्धि हो और चंद्र तारा बलवान् हों तथा विवाहके नक्षत्रोंमें मंगलके विना वारोंमें और शुक्लपक्षकी प्रतिपदा १ रिक्ता ४ । १४ । ८ । ९ इन तिथियोंको त्यागके शुभ दिनमें गंध माला तांबूल फलसहित वृद्धब्राह्मणोंकरके श्रेष्ठ कन्याका वरण अर्थात् सगाई करे, परंतु कन्या रोगरहित हो, बहुतसे भाइयोंकी बहिन हो अपने गोत्रमें तथा अपने सासन (जात) की नहीं हो तब सगाई करना श्रेष्ठ है ॥ १४७–१४९ ॥ (जन्मराशि तथा नाम-राशिका विचार) देशके तथा ग्रामके घरके बसनेमें, युद्धमें, नौकरी करनेमें, व्यव-हारमें इतनी जगह नामकी राशि देखना और जन्मकी राशिको नहीं देखना ॥१५०॥ और परस्परकाकिणीके मिलानेमें या वर्गके मिलानेमें, दान देनेमें, जूवेमें ज्वरके चढनेमें, मंत्रमें, नातेमें भी नामराशि प्रधान है ॥ १५१ ॥ और विवाहमें तथा संपूर्ण मांगलिक कार्योंमें, यात्रा, गृहप्रवेश आदि कामोंमें और ग्रहगोचर (ग्रहोंके फल) देखनेमें जन्मराशिकी प्रधानता है सो नामराशिसे नहीं देखना ॥ १५२ ॥

अथ जन्मराशेरभावे नामराशिरपि ग्राह्यः विवाहघटनं चैव लग्नजं ग्रहज बलम् । नामभाच्चिंतयेत्सर्वं जन्म न ज्ञायते यदा ॥ १५३ ॥ जन्म न ज्ञायते येषां तेषां नाम गवेष्यते । चक्रेऽवकहडे भांशो तत्राडी कैश्चिदग्निभात् ॥ १५४ ॥ जायापत्योर्भकूटाय गोचरायखिलं तथा । अज्ञाते जनिधिष्ण्ये तु नामभादेव चिंतयेत ॥ १५५ ॥ एकस्यापि च दंपत्योरज्ञाते जन्मभेवथा । जन्मभाद्गुरुशुक्राद्यादिमेलनं नामभात्तयोः १५६

(जन्मराशि न मालूम हो तो नाम राशि लेना) यदि जन्मराशि याद नहीं हो तो विवाह, लग्न और ग्रहोंका फल नामराशिसे ही देखना योग्य है ॥ १९३ ॥ परंतु जन्मराशिका अभाव हो तब नामराशिसे होडाचक्रके अनुसार लेना चाहिये और कई आचार्य कृत्तिका नक्षत्रसे भी राशि मानते हैं ॥ १९४ ॥ स्त्रीपुरुषके राशि आदिका मिलाना और गोचर ग्रह आदिका फल जन्मराशि नहीं होनेसे नामराशिसे देखना चाहिये ॥ १९५ और यदि दोनोंमेंसे एककी जन्मराशि याद नहीं हो तो भी गुरुशुद्धि आदिका जन्मराशिसे ही देखे और मिलान तो नामराशिसे करे ॥ १९६ ॥

अथ अनेकनामसु विचारः । बहूनि यस्य नामानि नरस्य स्युः कथंचन । तस्य पश्चाद्भवं नाम ग्राह्यं स्वरविशारदैः ॥ १९७ ॥ **अथ स्त्रीणां राशिशुद्धौ विशेषः ।** स्त्रीणां सर्वक्रियाः कार्या विशुद्ध्या स्वामिनः सदा । स्वशुद्ध्या स्वामिशुद्ध्या च गर्भाधानादिकाः क्रियाः ॥ १९८ ॥ विवाहकार्यं कुसुमप्रतिष्ठा गर्भप्रतिष्ठा वनिताविशुद्धौ । अन्यानि कार्य्याणि धवस्य शुद्धौ पत्यौ विहीने प्रमदात्मशुद्ध्या ॥१९९॥

इति श्रीरत्नगढ़नगरनिवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशे अद्भुतनिबन्धे पंचमं संस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥

(अनेक नाम होनेपर विचार) यदि एक मनुष्यके बहुतसे नाम होवें तो पछाड़ी (पीछे) का लेना योग्य है ॥ १९७ ॥ (स्त्रियोंके राशिशुद्धिका विशेष विचार) स्त्रियोंका सर्व कार्य पतिकी राशिकी शुद्धिसे करना और गर्भाधान आदि जातक-संस्कारतक दोनोंकी राशिशुद्धिसे करना श्रेष्ठ है ॥ १९८ ॥ और विवाह, द्विरागमन, रजोदर्शनशांति, गर्भाधान इत्यादि कार्योंमें स्त्रीकी भी राशिकी अन्य कामोंमें पतिकी राशिसे चन्द्र आदिकी शुद्धि जरूर देखनी योग्य है और पतिके मरनेके अनंतर स्त्रीकी ही राशिसे चंद्रमा आदि देखना चाहिये ॥ १९९ ॥

इति श्रीमुहूर्त्तप्रकाशे पंचमं संस्कारप्रकरणम् ॥ ५ ॥

विवाहप्रकरणम् ६.

तत्र तावत्कन्यावरयोर्विवाहकालः । युग्मेऽब्दे जन्मतः स्त्रीणां प्रीतिदं पाणिपीडनम् । एतत्पुंसामयुग्मेऽब्दे व्यत्यये नाशनं तयोः ॥ १ ॥ **अत्र कन्याविवाहे विशेषः ।** अयुग्मे दुर्भगा नारी युग्मे तु विधवा भवेत् ।

तस्माद्गर्भान्विते युग्मे विवाहे सा पतिव्रता ॥ २ ॥ मासत्रयादूर्ध्वमयुग्मवर्षे युग्मेऽपि मासत्रयमेव यावत् । विवाहशुद्धिं प्रवदंति सर्वे व्यासादयो ज्योतिषि जन्ममासात् ॥ ३ ॥ **अथ कन्याविवाहे निषेधकालः** । षडब्दमध्ये नोद्वाह्या कन्या वर्षद्वयं यतः ।सोमो भुंक्तेऽथ गंधर्वस्ततः पश्चाद्धुताशनः ॥ ४ ॥ अतो गर्भान्विते युग्मे सप्तसंवत्सरात्परम् । आदशाब्दं तु कन्याया विवाहः सार्ववर्णिकः ॥५॥ **अथ कन्यायाः संज्ञा वर्षफलं च** । अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी । दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ ६ ॥ गौरीं ददद् ब्रह्मलोक सावित्रं रोहिणीं ददत् । कन्यां ददत्स्वर्गलोकं रौरवं च रजस्वलाम् ॥ ७ ॥

अथ विवाहप्रकरणं लिख्यते-(कन्यावरके विवाहका समय) कन्याका विवाह जन्मसे युग्म ८।१० वर्षोंमें और पुरुषोंका अयुग्म वरसमें करना शुभ है और विपरीत करनेसे दोनोंका नाश होता है ॥ १ ॥ (कन्याके विवाहका विशेष विचार) कन्याका विवाह अयुग्म नाम एकीके फलावके बरसोंमें करे तो मन्दभागिनी हो और युग्म नाम दोकीके फलावसे करे तो विधवा हो, इसवास्ते गर्भमें युग्म ८ । १० बरसमें विवाह करे सो कन्या पतिव्रता सुभागिनी होती ॥ २ ॥ (उदाहरण) अर्थात् कन्याके जन्ममासमें अयुग्म ७ । ९ । ११ बरसके तीन ३ मास जानेसे विवाह शुभ है और युग्म ८ । १० । १२ बरसके तीन मासके भीतर विवाह श्रेष्ठ है, इसप्रकार व्यास, वाल्मीकि, गर्ग आदि ऋषि कहते हैं ॥ ३ ॥ (निषेध काल) कन्याका विवाह छः बरस ६ के भीतर नहीं करना चाहिये कारण कि दो २ दो २ बरस चन्द्रमा, गन्धर्व, अग्नि कन्याको भोगते हैं सो छः ६ बरससे पहले सगाई करना भी निषिद्ध है ॥ ४ ॥ इसवास्ते गर्भसे लेके सात ७ बरसके उपरांत और दश १० बरसके भीतर कन्याका विवाह सम्पूर्ण वर्णोंको करना शुभ है ॥ ५ ॥ (कन्याके विवाहमें संज्ञा और बरसोंका फल) आठ ८ बरसकी कन्याकी गौरी संज्ञा है, और ९ बरसकी रोहिणी संज्ञा है, दश बरसकी कन्या संज्ञा कही है, और दशसे उपरांत रजस्वला संज्ञा हो जाती है ॥ ६ ॥ गौरीसंज्ञका कन्याका विवाह करनेसे पिता ब्रह्मलोकको जाता है और रोहिणीका विवाह करनेसे सूर्यके लोकको और कन्यासंज्ञकाके दानसे स्वर्गलोकमें जाता है और रजस्वलाका विवाह करनेसे रौरव नाम नरकमें पडता है ॥ ७ ॥

अथ रजस्वलाकन्याया विशेषनिंदा । प्राप्ते तु द्वादशे वर्षे यः कन्यां न प्रयच्छति । मासि मासि रजस्तस्याः पिता पिबति शोणि-

तम् ॥ ८ ॥ माता चैव पिता चैव ज्येष्ठभ्राता तथैव च । त्रयस्ते नरकं यांति दृष्ट्वा कन्यां रजस्वलाम् ॥ ९ ॥ तस्माद्विवाहयेत्कन्यां यावन्नर्तुमती भवेत् । विवाहोऽष्टमवर्षायाः कन्यायास्तु प्रशस्यते ॥ १० ॥ अथ विवाहे रविगुरुचंद्रबलम् ॥ वरस्य भास्करबलं कन्यकाया गुरोर्बलम् । द्वयोश्चंद्रबलं ग्राह्यमिति गर्गेण भाषितम् ॥ ११ ॥ तत्रादौ वरस्य रविबलम् । एकादशे ११ तृतीये ३ वा षष्ठे ६ वा दशमेऽपि १० वा । वरस्य शुभदो नित्यं विवाहे दिननायकः ॥१२॥ जन्मन्यथ १ द्वितीये च २ पंचमे ५ सप्तमे ७ऽपि वा । नवमे ९ च दिवानाथे पूजया पाणिपीडनम् ॥ १३ ॥ अष्टमे ८ च चतुर्थे ४ च द्वादशे १२ च दिवाकरे । विवाहितो वरो मृत्युं प्राप्नोत्यत्र न संशयः ॥ १४ ॥

(रजस्वलाकन्याकी विशेष निंदा) बारह १२ बरसके बाद जो कन्या नहीं विवाहता है तो उसका पिता मासमासमें कन्याका शोणित (खून) पीता है ॥ ८ ॥ माता, पिता, ज्येष्ठ भ्राता यह तीनों रजस्वला होनेतक कन्याको नहीं विवाहैं तो नरकको जाते हैं ॥ ९ ॥ इसवास्ते जबतक कन्या रजस्वला नहीं हो तबतक आठ ८ बरस आदिकी कन्याका विवाह श्रेष्ठ है ॥ १० ॥ (विवाहमें सूर्य गुरु चन्द्रमाके बलका विचार) वरको सूर्यबल देखना, कन्याको बृहस्पतिका बल और दोनोंको चन्द्रमाका बल देखके विवाह करना श्रेष्ठ है ॥ ११ ॥ (वरका रविबल) वरकी जन्मराशिसे ११।३।६ इन स्थानोंमें सूर्य हो तो विवाहमें शुभ है ॥ १२ ॥ और १।२।५।७।९ इन स्थानोंमें सूर्य होवे तो पूजा करके विवाह करे तो शुभ है ॥ १३ ॥ और आठवें ८ चौथे ४ बारहवें १२ सूर्यमें विवाह करे तो वरकी मृत्यु होवै इसमें सन्देह नहीं ॥ १४ ॥

अथात्यावश्यके चतुर्थादिस्थरविशुद्धिप्रकारः ॥ द्विरर्च्योद्वादशस्तुर्योऽथाष्टमस्त्रिगुणार्चनात् । अथावश्यके विवाहे पूजाद्वयप्राप्ते तस्य परिहारः । यत्रार्कगुर्वोरपि नैधनं ८ व्यये १२ जन्मादिदुःस्थानगयोर्द्वयोर्वा । एकस्य पूजामपि तत्र कृत्वा पाणिग्रहं कार्यमतः कदाचित् ॥ १५ ॥ अथ रविपूजाशांतिश्च । भास्करं शुद्धसौवर्णं कृत्वा यत्नेन मानवः ।

ताम्रपात्रे स्थापयित्वा रक्तपुष्पैः प्रपूजयेत् । रक्तवस्त्रयुगच्छन्नं छत्रोपानद्युगान्वितम् ॥ १६ ॥ घृतेन स्नापयित्वा च लड्डुकान्विनिवेद्य च । होमं तिलघृतैः कुर्याद्रविनाम्ना च मंत्रवित् ॥ १७ ॥ समिधोऽष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेव च । होतव्या मधुसर्पिर्भ्यां दध्ना चैव घृतेन च ॥ १८ ॥ मंत्रेणानेन विदुषे ब्राह्मणाय प्रदापयेत् । आदिदेव नमस्तुभ्यं सप्तसप्ते दिवाकर ॥ १९ ॥ त्वं रवे तारयस्वास्मानस्मात्संसारसागरात् । सूर्यपीडासु घोरासु कृता शांतिः शुभप्रदा ॥ २० ॥

(अत्यावश्यक चतुर्थादिस्थ रविकी शुद्धि) यदि वर बहुत वरसोंका हो गया हो और अति आवश्यकता हो तो बारहवें १२, चौथे ४ सूर्यकी दो वार २ पूजा करनेसे और आठवें ८ सूर्यकी तीन ३ वार पूजा करनेसे विवाह श्रेष्ठ होता है, (विवाहमें अत्यावश्यक दो पूजा प्राप्त होनेपर परिहार) अथवा गुरु सूर्य आठवें ८ बारहवें १२ या जन्म आदि पूज्यस्थानोंमें हो या दो पूजा लगती हो तो दोनोंमेंसे एककी यथार्थ पूजा करनेसे भी अति आवश्यकमें विवाह करना शुभ है ॥ १९ ॥ (सूर्यकी पूजाका विधान) अच्छे सुवर्णकी सूर्यकी मूर्ति बनाके लाल वस्त्रसे लपेटके तांबेके पात्रमें स्थापन करे और रक्तचन्दन, पुष्प आदिकोंकरके पूजा करे, छाता तथा जूता पास रक्खे ॥ १६ ॥ और घृतसे स्नान करावे, लड्डूका नैवेद्य अर्पण करे, फिर घृत तिलकी और शहद घृत दहीसे तर अर्थात् खूब चोपडके आककी समिधोंकी सूर्यके वैदिक या नाममंत्र करके १०८ या २८ आहुति अग्निमें देवे ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ फिर (आदिदेव) इस मन्त्रको पढ़के संकल्परीतिसे ब्राह्मणको मूर्तिका दान करे तो सूर्यकी घोर पीडा भी शांत हो और विवाहमें शुभ हो ॥ १९ ॥ २० ॥

अथ रविदानम् । कौसुंभवस्त्रं गुडहेमताम्रं माणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मम् । सवत्सगोदानमिति प्रणीत दुष्टाय सूर्याय मसूरिकाश्च ॥ २१ ॥ अथ कन्याया गुरोर्बलम् । एकादशे ११ द्वितीये २ वा पंचमे ५ सप्तमे ७ऽपि वा । नवमे ९ च सुराचार्यः कन्यायाः कथितः शुभः ॥ ॥ २२ ॥ षष्ठे ६ जन्मनि १ देवेज्ये तृतीये ३ दशमे १०ऽपि वा ॥ भूरिपूजापूजितः स्यात्कन्यायाः शुभकारकः ॥२३॥ अष्टमे ८ द्वादशे १२ वापि चतुर्थे ४ वा बृहस्पतौ । पूजा तत्र न कर्त्तव्या विवाहे प्राणनाशकः ॥२४॥

(सूर्यका दान) पूजा करनेके अनन्तर कुसुम्भेके लाल वस्त्र, गुड, सुवर्ण, ताम्र लाल मणि, गोधूम, कमल, बछडे सहित धेनु, मसूर यह दान यथाशक्ति दुष्ट सूर्यके अर्थ करे, तो शुभ कल्याण होवे ॥ २१ ॥ (कन्याको गुरुकी शुद्धि) कन्याकी जन्मराशिसे ११।२।५।७।९ इन स्थानोंमें गुरु हो तो विवाहमें शुभ है ॥ २२ ॥ और ६।१।३।१० गुरु हो तो पूजा करनेने शुभ होता है ॥ २३ ॥ और ८। १२। ४। इन स्थानोंमें गुरु हो तो प्राणका नाश करता है ॥ २४ ॥

अथावश्यके दोषापवादः । गुरुः स्वोच्चे स्वमैत्रे वा स्वांशे वर्गोत्तमेऽपि वा । शुभस्तुर्योऽष्टमोऽन्त्योऽपि नीचारिस्थः शुभोऽप्यसत् ॥ २५ । झष १२ चाप ९ कुलीर ४ स्थो जीवोऽप्यशुभगोचरः । अतिशोभनतां दद्याद्विवाहोपनयादिषु ॥ २६ ॥ सप्तमात्पंचवर्षेषु स्वोच्चस्वर्क्षगतो यदि । अशुभोऽपि शुभं दद्याच्छुभर्क्षेषु किं पुनः ॥ २७ ॥ अथ कालातिक्रमे विशेषः । अर्कगुर्वोर्बलं गौर्या रोहिण्यर्कबला स्मृता । कन्या चन्द्रबला प्रोक्ता वृषली लग्नतो बला ॥ २८ ॥ अष्टवर्षा भवेद्गौरी नववर्षा च रोहिणी । दशवर्षा भवेत्कन्या अत ऊर्ध्वं रजस्वला ॥ २९ ॥ दशवर्षव्यतिक्रांता कन्या शुद्धिविवर्जिता । तस्यास्तारेंदुलग्नानां शुद्धौ पाणिग्रहो मतः ॥ ३० ॥ द्वादशैकादशे वर्षे यस्याः शुद्धिर्न जायते । पूजाभिः शकुनैर्वाऽपि तस्या लग्नं प्रदापयेत् ॥ ३१ ॥ रजस्वला यदा कन्या गुरुशुद्धिं न चिंतयेत् । अष्टमेऽपि प्रकर्त्तव्यो विवाहस्त्रिगुणार्चनात् ॥ ३२ ॥

(आवश्यकमें दोष परिहार) यदि कन्या बडी हो तथा विवाहकी अति जरूरत हो और गुरु कर्क ४ राशिपर हो अथ अपने मित्रकी राशि १। ९। ८ पर हो या अपने नवांशकपर या अपने वर्गपर हो तो चतुर्थाष्टम ४। ८ का दोष नहीं, शुभ जानना, नीचराशि १० या शत्रुराशि २।७ ३। ६ गुरु शुभ हो तो अशुभ जानना ॥ २५ ॥ और मीन १२ धन ९ कक ४ का गुरु हो तो अशुभ ४।८।१२ भी हो परंतु विवाह यज्ञोपवीत आदि कार्योंमें श्रेष्ठ ही जानना ॥ २६ ॥ और सात ७ वर्षसे लेके ग्यारह ११ वर्षतककी कन्याको यदि गुरु अशुभ राशिका ४।८।१२ भी है परंतु अपनी उच्च ४ राशि या स्वगृह ९। १२ राशिपर हो तो शुभ जानना और यदि शुभ राशिका हो तो फिर कहना ही क्या है ॥ २७ ॥

(कालातिक्रमण होनेपर विशेष) गौरी (आठ ८ बरसकी) कन्याको सूर्य गुरुका बल देखना और रोहिणी (नौ ९ बरसकी) कन्याको केवल सूर्यका ही बल देखना और कन्या (दश १० बरसकी) कन्याको चंद्रमाका बल देखना और दश बरससे उपरांत रजस्वलाको लग्नका ही बल देखना चाहिये ॥ २८ ॥ २९ ॥ दश बरसके अनंतर कन्या संज्ञा नहीं रहती है, इसवास्ते उसके विवाहमें तारा चंद्रमा लग्नका बल देखके विवाह करना श्रेष्ठ है ॥ ३० ॥ बारह १२ ग्यारह ११ बरसकी कन्या रजस्वला संज्ञाकी होती है, इसलिये उसके विवाहमें पूजा करके, या शुभ शकुन करके लग्न देना शुभ है ॥ ३१ ॥ और रजस्वला कन्याको गुरुकी शुद्धि नहीं देखना चाहिये और उसका विवाह तीनगुणी (तिगुनी) पूजासे आठवें ८ बृहस्पतिमें भी कर लेना चाहिये ॥ ३२ ॥

अथ गुरुपूजा । कन्यकोद्वाहकाले तु आनुकूल्य न विद्यते । ब्राह्मणस्योपनयने गुरोर्विधिरुदाहृतः ॥ ३३ ॥ सुवर्णेन गुरुं कृत्वा पीतवस्त्रेण वेष्टयेत् । ऐशान्यां धवलं कुंभं धान्योपरि निधाय च ॥ ३४ ॥ मदनं मधुपुष्पं च पलाशं चैव सर्षपान् । मांसीगुडूच्यपामार्गो विडंगं शिखिनी वचा ॥ ३५ ॥ सहदेवी हरिक्रांता सर्वौषधिशतावरी । तथैवाश्वत्थभंगांश्च पंचगव्यं जलं तथा ॥ ३६ ॥ या ओषधीति मंत्रेण सर्वास्त्वस्मिन्विनिक्षिपेत् । कुंभस्योपरिभागे तु स्थापयित्वा बृहस्पतिम् ॥ ॥ ३७ ॥ कृत्वाऽऽज्यभागपर्यंतं स्वशाखोक्तविधानतः । पूजयेत्पीतपुष्पाद्यैस्ततो होमं समाचरेत् ॥ ३८ ॥ अश्वत्थसमिधश्चाज्यं पायसं सर्पिषा युतम् । यवव्रीहितिलाः साज्या मंत्रेणैव बृहस्पतेः ॥ ३९ ॥ अष्टोत्तरशतं सर्वहोमशेषं समापयेत् । ततो होमावसाने तु पूजयेच्च बृहस्पतिम् ॥ ॥ ४० ॥ पीतगंधैस्तथा पुष्पैर्धूपैर्दीपैश्च भक्तितः । दध्योदनं च नैवेद्यं फलतांबूलसंयुतम् ॥ ४१ ॥ अर्घ्यं दत्त्वा सुरेशाय जपहोम समर्पयेत् । पुत्रदारसमेतस्य अभिषेकं समाचरेत् ॥ ४२ ॥ प्रतिमां कुंभवस्त्रं च आचार्याय निवेदयेत् ॥ ब्राह्मणान् भोजयेत्पश्चाच्छुभदः स्यान्न संशयः । ॥ ४३ ॥ इति बृहस्पतिपूजा ॥

(गुरुपूजाप्रकार) कन्याके विवाहकालमें और ब्राह्मणके यज्ञोपवीतमें यदि बृहस्पति अशुभ स्थानमें हो तो उसकी विधि लिखते हैं ॥ ३३ ॥ सुवर्णकी गुरुकी

मूर्ति बनाके पीतवस्त्रसे वेष्टन करे और धानके ऊपर सफेद कलश स्थापन करके मदन (महुवे) का पुष्प, पलाशपत्र, सरसों, जटामांसी, गिलोय, अपामार्ग (ओंगा), वायविडंग, शिखिनी, वच, सहदेई, कोयल, सर्वौषधी, शतावरी, पीपलका पत्र, पंचगव्य, जल यह द्रव्य (या ओषधिः) इस मंत्र करके कलशमें डाले फिर कलशके ऊपर बृहस्पतिको स्थापन करके पूजा करे ॥ ३४-३७ ॥ और अग्निस्थापनके अनंतर अपनी शाखा सूत्रके अनुसार आज्यभागपर्यंत घृतका होम करके फिर पीतपुष्प गंधादिकोंसे बृहस्पतिकी पूजा करे, तदनंतर पीपलकी समिध घृत पायस शाकल्यकी गुरुके मंत्र करके १०८ आहुति देवे और होमके अंतमें पीत गंध, पुष्प, धूप, दीप, दध्योदन, तांबूल, ऋतुफल आदिकोंकरके पूजा करे, फिर अर्घ्य देके जप होम अर्पण करे और पुत्र स्त्रीसहित यजमानका अभिषेक करे, और मूर्त्ति, कुंभ, वस्त्र आचार्यको देके ब्राह्मणभोजन करावे तो गुरु शुभफलका देनेवाला होता है ॥ ३८–४३॥

अथ गुरोर्दानम् । अश्वं सुवर्णं मधु पीतवस्त्रं सपीतधान्यं लवणं सपुष्पम् । सशर्करं तद्रजनीप्रयुक्तं दुष्टाय शांत्यै गुरवे प्रणीतम् ॥ ४४ ॥

अथोभयोश्चंद्रबलम् । आद्यश्चंद्रः श्रियं कुर्यान्मनस्तोषं द्वितीयके । तृतीये धनसंपत्तिश्चतुर्थे कलहागमः ॥ ४५ ॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिः स्यात् षष्ठे संपत्तिरुत्तमा । सप्तमे राजसंमानो मरणं चाष्टमे तथा ॥ ४६ ॥ नवमे धर्मलाभश्च दशमे मनसेप्सितम् ॥ एकादशे सर्वलाभो द्वादशे हानिरेव च ॥ ४७ ॥ अथावश्यकेऽनिष्टचंद्रशांतिः । कांस्यपात्रेऽथ संस्थाप्य सोमं रजतसंभवम् । श्वेतवस्त्रयुगच्छन्नं श्वेतपुष्पैः प्रपूजितम् । ४८ ॥ पादुकोपानहच्छत्र भोजनासनसंयुतम् । होमं घृततिलैः कुर्यात्सोमनाम्नाऽथ मंत्रवित् ॥ ४९ ॥ समिधोऽष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरेव वा । होतव्या मधुसर्पिर्भ्यां दध्ना चैव घृतेन च ॥ ५० ॥ दध्यन्नशिखरे कृत्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ मन्त्रेणानेन राजेंद्र सम्यग्भक्त्या समन्वितः ॥५१॥ महादेव जातिवल्लीपुष्पगोक्षीरपांडुर । सोम सौम्यो भवास्माकं सर्वदा ते नमो नमः ॥ ५२ ॥ एवं कृते महासौम्यः सोमस्तुष्टिकरो भवेत् । इति चंद्रशांतिः । अथ चंद्रदानम् । घृतकलशं सितवस्त्रं दधि शंखं मौक्तिकं सुवर्णं च । रजतं च प्रदद्याच्चन्द्रारिष्टोपशांतये त्वरितम् ॥ ५३ ॥ इति रव्यादिशुद्धिप्रकारः ।

(गुरुदान) अश्व, सुवर्ण, शहद, पीतवस्त्र, पीतधान्य, लवण, पीतपुष्प, मिश्री, हल्दी यह गुरुकी शांतिके अर्थ दान देना योग्य है ॥ ४४ ॥ (चन्द्रबल) जन्मका चन्द्रमा श्रीप्राप्ति करे १, दूसरा मन प्रसन्न करे २, तीसरा धनकी संपत्ति करे ३, चौथा कलह करे ४ ॥ ४५ ॥ पांचवां ज्ञानकी वृद्धि ५, छठा, उत्तम संपत् ६, सातवां राजमें संमान ७, आठवां मृत्यु ८ ॥ ४६ ॥ नौवां धर्मलाभ ९, दशवां मनके कार्य सिद्ध करे १०, ग्यारहवां सर्वलाभ ११ और बारहवां हानि करे १२ ॥ ४७ ॥ (चन्द्रपूजा)यदि चन्द्रमा अशुभ ४।८।१२ स्थानोंमें हो तो कांसीके पात्रमें चन्द्रमाकी मूर्ति स्थापन करके सफेद वस्त्रसे वेष्टन करे और श्वेतचंदन, पुष्प आदि करके पूजे ॥ ४८ ॥ और पावडी, उपानह, छत्र, भोजन, आसन पास रक्खे फिर पलाशकी समिध, शहद, घृत, दहीसे आर्द्र (भिगो) करके तिल घृतके सहित चन्द्रमाके मंत्र करके १०८ आहुति देवे ॥ ४९ ॥ ५० ॥ और दही चावलके पुंजसहित मूर्तिका दान भक्ति करके (महादेव) इस मंत्रसे करे तो चन्द्रमा प्रसन्न होके शांति करे ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ (चंद्रमाका दान) घृतपूर्ण कलश, सफेद वस्त्र, दधि, शंख, मोती, सुवर्ण, चांदी यह दान देनेसे चंद्रमाका अरिष्टदोष शीघ्र ही दूर होता है ॥ ५३ ॥

अथ विवाहमासाः । माघफाल्गुनवैशाखे यपूढा मार्गशीर्षके । ज्येष्ठे वाऽऽषाढमासे च सुभगा वित्तसंयुता ॥ ५४ ॥

(विवाहके मास) माघ, फाल्गुन, वैशाख, मार्गशिर, ज्येष्ठ, आषाढ, इन महीनोंमें विवाही हुई कन्या श्रेष्ठ भाग्य और धनको भोगनेवाली होती है ॥ ५४ ॥

अथ निषिद्धमासाः । श्रावणे वाऽपि पौषे च कन्या भाद्रपदे तथा ॥ चैत्राश्वयुक्कार्त्तिकेषु याति वैधव्यतां लघु ॥ ५५ ॥ **अथ पौषादिषु विशेषः ॥** पौषेऽपि कुर्यान्मकरस्थितेऽर्के चैत्रे भवेन्मेषगतो यदा स्यात् । प्रशस्तमाषाढकृतं विवाहं वदंति गर्गा मिथुनस्थितेऽर्के ॥ ५६ ॥ **अथ विवाहे जन्ममासादिवर्जनम् ।** जन्ममासे जन्मभे च नच जन्मदिने बुधः । ज्येष्ठमासे न ज्येष्ठस्य विवाहं कारयेत्कचित् ॥ ५७ ॥ न कन्यावरयोर्ज्येष्ठे न ज्येष्ठो दोषमावहेत् ॥ ५८ ॥ **अथ मार्गे विशेषः ।** मार्गे मासि तथा ज्येष्ठे क्षौरं परिणयं व्रतम् । ज्येष्ठपुत्रदुहित्रोश्च यत्नेन परिवर्जयेत् ॥ ५९ ॥ सिंहे गुरौ गते कार्यो न विवाहः कदाचन । मेषस्थे च दिवानाथे सिंहस्थोऽपि शुभप्रदः ॥ ६० ॥

(निषिद्ध मास) श्रावण, पौष, आश्विन, भाद्रपद, चैत्र, कार्त्तिक इन महीनोंमें विवाह करनेसे विधवा, मंदभागिनी होती है ॥ ५५ ॥ (पौषादिमें विशेष) पौषमें मकरका सूर्य हो और चैत्रमें मेषका सूर्य हो और आषाढमें मिथुनका सूर्य हो तो गर्गऋषि विवाहको श्रेष्ठ कहते हैं ॥ ५६ ॥ (विवाहमें जन्ममासादिका प्रतिषेध) जन्मका मास, जन्मनक्षत्र, जन्मदिन और ज्येष्ठ पुत्र कन्याके विवाहमें ज्येष्ठ मास वर्जने योग्य है ॥५७॥ परंच दोनों ज्येष्ठ वरकन्याओंका विवाह ज्येष्ठमें नहीं करे और यदि वरकन्याओंमें एक ज्येष्ठ हो तथा दूसरा कनिष्ठ हो तो ज्येष्ठ मासका दोष नहीं है ॥ ५८ ॥ (मार्गमें विशेष) मार्गशिरमें तथा ज्येष्ठमें ज्येष्ठ पुत्र या कन्याका चौल(बाल उतराना)विवाह यज्ञोपवीत कदापि नहीं करना चाहिये ॥ ५९ ॥ सिंहराशिपर बृहस्पति हो तो विवाह नहीं करे और मेषपर सूर्य आनेसे करे तो विवाह शुभ है ॥ ६० ॥

अथ विवाहनक्षत्राणि । रोहिण्युत्तररेवत्यो मूलं स्वातिर्मृगो मघा । अनुराधा च हस्तश्च विवाहे मंगलप्रदाः ॥ ६१ ॥ **अथ विवाहे वर्ज्यतिथ्यादि** । षष्ठी ६ दर्शो ३० ऽष्टमी ८ रिक्ताः ४।९।१४ कृष्णपक्षांत्यपंचके ११ । १२ । १३ । १४ ।३०। शुक्ला च प्रतिपन्नेष्टा १ स्तिथयोऽन्यास्तु शोभनाः ॥ ६२ ॥ **अथ रिक्तासु विशेषः** । रिक्तासु विधवा कन्या दर्शेऽपि स्याद्विवाहिता । शनैश्चरदिने चैव यदा रिक्ता तिथिर्भवेत् । तस्मिन् विवाहिता कन्या पतिसंतानवर्द्धिता । सौम्यवाराः शुभा मध्यौ सूर्यमन्दौ कुजोऽधमः । वर्जयेद्वारवेलां च गण्डांतं जन्मभं तथा ॥ ६३ ॥ भद्रां क्रकचयोगं च तिथ्यंतं यमघंटकम् । दग्धां तिथिं च भांत च कुलिकं च विवर्जयेत् ॥ ६४ ॥ **अथ वारवेला** । तुर्यो ४ ऽर्के सप्तम ७ श्चन्द्रे द्वितीयो २ भूमिनन्दने । चन्द्रपुत्रे पंचमश्च ५ देवाचार्ये तथाऽष्टमः ८ ॥ ६५ ॥ दैत्यपूज्ये तृतीय ३ श्च शनौ षष्ठ श्च निंदितः । प्रहरार्द्धः शुभे कार्ये वारवेला च कथ्यते ॥ ६६ ॥

(विवाहके नक्षत्र) रोहिणी, उत्तरा ३, मूल, स्वाति, मृगशिर, मघा, अनुराधा, हस्त यह नक्षत्र विवाहमें शुभ हैं ॥ ६१ ॥ (वर्जनीय तिथि आदि) ६।३०।८।४।९। १४ कृष्णपक्षमें ११।१२।१३।१४।३० शुक्लपक्षकी प्रतिपदा १ यह तिथि विवाहमें त्याज्य हैं, बाकीकी श्रेष्ठ जानना ॥६२॥ (रिक्तामें विशेष) रिक्ता ४।९।१४ तिथि अमावस्यामें विवाह करे तो विधवा हो और यदि रिक्ता तिथिके दिन शनैश्चरवार हो

तो विवाही हुई कन्या पतिसंतानकी वृद्धि करनेवाली होती है। विवाहमें शुभवार शुभ हैं और सूर्य शनि मध्यम हैं, मंगलवार निषिद्ध है, और वारवेला, गंडांत, जन्मनक्षत्र, भद्रा, क्रकच योग, तिथिका अंत, यमघंट योग, दग्धा तिथि, नक्षत्रका अंत और कुलिक योग विवाहमें वर्जने चाहिये ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ (वारवेला) आदित्यवारको चौथे ४ पहरकी चार घड़ी वारवेलाकी हैं, सोमवारको सातवें ७ पहरकी ४ घड़ी, मंगलको दूसरे पहरकी ४ घड़ी, बुधको पांचवें पहरकी ४ घड़ी, गुरुवारको आठवें पहरकी ४ घड़ी, शुक्रवारको तीसरे पहरकी ४ घड़ी और शनिवारको छठें पहरकी ४ घड़ी वारवेलाकी हैं सो विवाह आदि शुभकार्योंमें निषिद्ध हैं ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

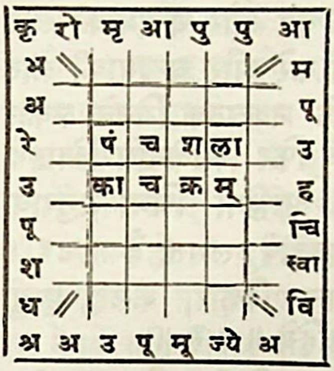
अथ गंडांतम् ॥ मासांते दिनमेकं तु तिथ्यंते घटिकाद्वयम् । घटिका त्रतयं भान्ते विवाहे परिवर्जयेत् ॥ ६७ ॥ अथ गंडांतफलम् ॥ मासांते म्रियते कन्या तिथ्यंते स्यादपुत्रिणी । नक्षत्रान्ते च वैधव्य विष्टौ मृत्युर्द्वयोर्भवेत् ॥ ६८ ॥ अथ कुलिकयोगः ॥ सूर्ये च सप्तमी ७ सोमे षष्ठी ६ भौमे च पंचमी ५ । बुधे चतुर्थी ४ देवेज्ये तृतीया भृगुनंदने ॥ ६९ ॥ द्वितीया वर्जनीया च प्रतिपच्च शनैश्चरे । कुलिकाख्यो हि योगोऽयं विवाहादौ न शस्यते ॥ ७० ॥ अथ कुलिकादिफलम् ॥ निधनं प्रहरार्द्धे तु निःस्वत्वं यमघंटके । कुलिके सर्वनाशः स्याद्रात्रावेते न दोषदाः ॥ ७१ ॥ अथ परिहारः । मत्स्यागमगधांध्रेषु यमघटस्तु दोषकृत् । काश्मीरे कुलिक दुष्टमर्धयामस्तु सर्वतः ॥ ७२ ॥

(गंडांत) संक्रांतिके अंतका १ दिन, तिथिके अंतकी २ घड़ी और नक्षत्रके अंतकी ३ घड़ी गंडांत संज्ञाकी हैं सो विहाहमें अशुभ हैं ॥ ६७ ॥ (गण्डान्तफल) मासांतमें कन्याका नाश हो, तिथिके अंतमें पुत्ररहित हो और नक्षत्रके अंतमें विवाह करे तो विधवा हो और भद्रामें करे तो दोनोंकी मृत्यु होवे ॥ ६८ ॥ (कुलिक योग) आदित्यवारको सप्तमी ७ तिथि, सोमवारको षष्ठी ६ तिथि, मंगलको पंचमी ५, बुधको चतुर्थी ४, बृहस्पतिको तृतीया ३, शुक्रको द्वितीया २, शनिको प्रतिपदा १ हो तो कुलिक योग होता है सो यह कुलिक योग विवाहमें त्याज्य है ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ (कुलिकादिफल) वारवेलामें विवाह करे तो मृत्यु हो, यमघंटमें दरिद्र और कुलिकमें सर्वनाश हो परंतु इनका दोष रात्रिमें नहीं है ॥ ७१ ॥ (परिहार) यमघंटयोग मत्स्य, अंग, मगध, आंध्र इन देशोंमें और कुलिक काश्मीरमें त्याज्य है, परन्तु वारवेला संपूर्ण देशोंमें त्यागनी चाहिये ॥ ७२ ॥

अथ दग्धास्तिथयः ॥ मीने १२ चापे ९ द्वितीया च २ चतुर्थी ४ वृष २ कुंभयोः ११ । मेष १ कर्कटयोः ४ षष्ठी ६ कन्यायां ६ मिथुने ३ ऽष्टमी ८ ॥ ७३ ॥ दशमी १० वृश्चिके ८ सिंहे ५ द्वादशी १२ मकरे १० तुले ७ । एताश्च तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ ७४ ॥ अथ दग्धतिथिफलम् ॥ विवाहे विधवा नारी यात्रायां मरणं ध्रुवम् । निष्फलं कृषिवाणिज्यं विद्यारंभे च मूर्खता ॥ ७५ ॥ गृहप्रवेशे भंगः स्याच्चूडायां मरणं भवेत् । ऋणदाने फलं नास्ति व्रतदाने च निष्फले ॥ ७६ ॥ अथ होलाष्टकम् ॥ शुक्लाष्टमीं ८ समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम् । पूर्णिमाऽवधिकं त्याज्यं होलाष्टकमिदं शुभे ॥७७॥ अथ परिहारः । शुतुद्यां च विपाशायामैरावत्यां त्रिपुष्करे । होलाष्टकं विवाहादौ त्याज्यमन्यत्र शोभनम् ॥ ७८ ॥ अथ विवाहे दश दोषाः॥ लत्ता १ पातो २ युति ३ र्वेधो ४ जामित्रं ५ बुधपंचकम् ६ । एकार्गलो ७ पग्रहौ च ८ क्रांतिसाम्यं ९ तथापरम्॥७९॥ दग्धातिथि १० श्च विज्ञेया दश दोषा महाबलाः । एतान् दोषान् परित्यज्य लग्नं संशोधयेद् बुधः॥८०॥

(दग्धा तिथि) मीन धनके सूर्यमें द्वितीया २ दग्धा तिथि है, वृष कुंभके सूर्यमें चतुर्थी ४, मेष कर्कमें षष्ठी ६, कन्या मिथुनमें अष्टमी ८, वृश्चिक सिंहमें दशमी १० और मकर तुलाके सूर्यमें द्वादशी १२ तिथि दग्धा है, सो यह दग्धा तिथि शुभकार्यमें त्याज्य है ॥ ७३॥७४ ॥ (दग्धातिथि फल) दग्धा तिथिमें विवाह करे तो कन्या विधवा हो, यात्रा करे तो मृत्यु हो, खेती वाणिज्य करे तो निष्फल हो जावे, विद्यारंभ करे तो मूर्ख रहे ॥ ७५ ॥ गृहप्रवेश करे तो नाश होवे, चूडाकर्म (चौल) करे तो मृत्यु हो, धन देवे तो निष्फल होजावे और व्रत दान करे तो फल नहीं होवे ॥ ७६ ॥ (होलाष्टक) फाल्गुन सुदी अष्टमीसे पूर्णिमातक आठ दिन ८ होलाष्टकके हैं सो विवाह आदि शुभ कार्योंमें त्यागने चाहिये ॥ ७७ ॥ (परिहार) शतद्रु नदीके या विपाशाके उज्जयिनी पुष्करराजके समीप देशोंमें त्याज्य हैं और अन्य देशोंमें शुभ हैं ॥ ७८ ॥ (दश दोष) लत्ता १, पात २, युति ३, वेध ४, जामित्र ५, बुधपंचक (बाण) ६, एकार्गल ७, उपग्रह ८, क्रांतिसाम्य ९, दग्धा तिथि १० यह दश दोष महाबलवान् हैं सो इनको त्यागके विवाह करना श्रेष्ठ है ॥ ७९ ॥ ८० ॥

तत्रादौ वेधज्ञानार्थं पञ्चशलाकाचक्रम् ॥ पञ्चोर्ध्वाः स्थापयेद्रेखाः पंच तिर्यङ्मुखास्तथा । द्वयोश्च कोणयोर्द्वे द्वे चक्रं पंचशलाककम् ॥ ८१ ॥ ईशाने कृत्तिका देया क्रमादन्यानि भानि च । ग्रहास्तेषु प्रदातव्या ये च यत्र प्रतिष्ठिताः ॥ ८२ ॥ लग्नस्य निकटे या च गता भवति पूर्णिमा ॥ तन्नक्षत्रे स्थितश्चन्द्रो दातव्यो गणकोत्तमः ॥ ८३ ॥ पौर्णमास्यां यदृक्षं च फलं तस्यैकमासकम् । यावन्नान्या भवेत्पूर्णा तमेवाब्जं विचारयेत् ॥ ८४ ॥



(पंचशलाकाचक्र) पांच रेखा ऊपरको काढ़े (खैंचे) और पांच रेखा टेढ़ी निकाले, फिर दो दो रेखा कोणोंमें लिखे तो पंचशलाका चक्र होता है ॥ ८१ ॥ इस चक्रके ईशान कोणमें कृत्तिका लिखे, फिर क्रमसे प्रदक्षिण मार्गसे बाकीके २७ नक्षत्र लिख देवे और जिस जिस नक्षत्र पर जो जो ग्रह होवे सो भी लिख देना चाहिये ॥ ८२ ॥ और लग्नके नजदीक गई हुई पूर्णिमाको सूर्योदयमें जो नक्षत्र हो उसी नक्षत्रके ऊपर चंद्रमा लिखना योग्य है ॥ ८३ ॥ और पूर्णिमाका जो नक्षत्र है उसका फल एक १ मासतक जानना, जबतक दूसरी पूर्णिमा नहीं आवे तबतक पूर्णिमाका ही चंद्रमा विवाहमें योग्य जानना ॥ ८४ ॥

अथ लत्तादोषः । नक्षत्रं द्वादशं भानुस्त्रितयं ३ लत्तया कुजः । पृष्ठं ६ जीवोऽष्टमं ८ मन्दो हंत दक्षिणतः सदा ॥ ८५ ॥ वामेन सप्तमं ७ चान्द्रिर्नवमं ९ सिंहिकासुतः । हंति भं पंचमं ५ शुक्रो द्वाविंशं २२ पूर्णचन्द्रमाः ॥ ८६ ॥ अथ लत्ताफलम् । रवेर्लत्ता हरेद्वित्तं कुजस्य कुरुते मृतिम् । बृहस्पतेर्बंधुनाशं शनेः कुर्यात्कुलक्षयम् ॥ ८७ ॥ बुधस्य कुरुते त्रासं लत्ता राहोर्विनाशनम् । शुक्रस्य दुःखदा नित्यं त्रासदा च कलानिधेः ॥ ८८ ॥ अथ पातदोषः । सूर्ययुक्ताच्च नक्षत्रादेषु पातोऽभिजायते । मघा १ ऽऽश्लेषा २ च चित्रा ३ च सानुराधा ४ च रेवती ५ ॥ ८९ ॥ श्रवणोऽपि च षष्ठोऽयं ६ पातदुष्टो निगद्यते । अश्विनीमवधिं कृत्वा गणयेल्लग्नभावधिम् ॥ ९० ॥ पावकः

पवमानश्च विकारः कलहोऽपरः । मृत्युः क्षयश्च विज्ञेयाः पातषट्कस्य लक्षणम् ॥ ९१ ॥

(लत्तादोषविचार) सूर्य अपने नक्षत्रसे बारहवें नक्षत्रके लात मारता है, मंगल तीसरे ३ के, गुरु छठे ६ के, शनैश्चर आठवें ८ के, प्रदक्षिणाके मार्गसे लात मारता है ॥ ८५ ॥ और बुध सात ७ वें नक्षत्रके, राहु नौंवें ९ नक्षत्रके, शुक्र पांचवें ५ के और पूर्ण चन्द्रमा बाइसवें २२ नक्षत्रके वाम मार्गसे लात मारता है ॥ ॥ ८६ ॥ (लत्ताफल) सूर्यकी लात धन हरे, मंगलकी लात मृत्यु करे, बृहस्पतिकी लात बांधवोंका नाश करे, शनिकी लात कुलका क्षय करे ॥ ८७ ॥ बुधकी लात त्रास देवे, राहुकी लात विनाश करे, शुक्रकी लात दुःख करे और चन्द्रमाकी लात त्रास देवे, राहुकी लात विनाश करे, शुक्रकी लात दुःख करे और चन्द्रमाकी लात त्रास देवे, ॥ ८८ ॥ (पातदोष) सूर्यके नक्षत्रसे विवाहके नक्षत्रतक गिनके लकीर काढ़े और मघा आदि पातके नक्षत्रोंपर चिह्न करता जावे फिर अश्विनीसे विवाहके नक्षत्रतक गिने यदि विवाहके नक्षत्रकी संख्यापर मघा आश्लेषा चित्रा अनुराधा रेवती श्रवण इन नक्षत्रोंमेंसे कोई नक्षत्र आ जावे तो पातदोष लगता है ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ यह पातदोष पूर्वोक्त नक्षत्रोंका पावक, पवमान, विकार, कलह, मृत्यु, क्षय इन छः नामोंसे है सो नाम जैसा ही फल जानना चाहिये ॥ ९१ ॥

अथ पातफलम् । पातेन पतितो ब्रह्मा पातेन पतितो हरिः । पातेन पतितः शम्भुस्तस्मात्पातं विवर्जयेत् ॥ ९२ ॥ **अथ युतिदोषः** । गृहे यत्र भवेच्चन्द्रो ग्रहस्तत्र यदा भवेत् । युतिदोषस्तदा ज्ञेयो विना शुक्रं शुभाशुभम् ॥ ९३ ॥ **अथ युतिफलम्** । दारिद्र्यं रविणा कुजेन मरणं सौम्येन न स्युः प्रजा दौभाग्यं गुरुणा सितेन सहिते चन्द्रे च सापत्नकम् । प्रव्रज्याऽर्कसुतेन सेंदुजगुरौ वांछंति केचिच्छुभं द्व्या २ द्यैर्मृत्युरग्सद्ग्रहैः शशियुतैर्दीर्घमवासः शुभैः ॥ ९४ ॥ **अथ युतिदोषापवादः** । स्वक्षेत्रगः स्वोच्चगो वा मित्रक्षेत्रगतो विधुः । युतिदोषाय न भवेद्दम्पत्योः श्रेयसे तदा ॥ ९५ ॥ **अथ वेधदोषः** । एकरेखास्थितैर्वेधो दिननाथादिभिर्ग्रहैः ॥ विवाहे तत्र मासं तु न जीवति कदाचन ॥ ९६ ॥ अश्विनी पूर्वफाल्गुन्या भरणी चानुराधया । अभिजिच्चापि रोहिण्या कृत्तिका च विशाखया ॥ ९७ ॥ मृगश्चोत्तरषाढेन पूर्वाषाढा तथाऽर्द्रया । पुनर्वसुश्च मूलेन तथा पुष्यश्च ज्येष्ठया ॥ ९८ ॥ धनिष्ठया तथाऽऽश्लेषा

मघाऽपि श्रवणेन च । रेवत्युत्तरफाल्गुन्या हस्तेनोत्तरभाद्रपात् ॥ ९९ ॥ स्वात्या शतभिषा विद्धा चित्रया पूर्वभाद्रपात् । विद्धान्येतानि वर्ज्यानि विवाहे भानि कोविदैः ॥ १०० ॥

(पातफल) पातदोष करके ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी पतित हो गये इस वास्ते,पातदोष वर्जना योग्य है ॥९२॥ (युतिदोष) जिस राशिपर चंद्रमा हो और उसी राशिपर जो ग्रह हो तो उसीका शुक्रके विना शुभ अशुभ युतिदोष होता है ॥ ९३ ॥ (युतिफल) रविके चन्द्रमा हो तो दरिद्र हो और मंगलके साथ हो तो मृत्यु हो, बुधके साथ हो तो सन्तान नष्ट हो, गुरुके साथ हो तो दौर्भाग्य हो और शुक्रके साथ हो तो सपत्नी (सौत) का दुःख हो, शनिके साथ चन्द्रमा हो तो संन्यासिनी हो जावे और कई आचार्य बुध गुरुके साथ चन्द्रमाको शुभ कहते हैं और दो २ या तीन ३ पापग्रह चन्द्रमाके साथ होवें तो मृत्यु करे और शुभ ग्रह होवें तो परदेशका वास करें ॥ ९४ ॥ (युतिदोषापवाद) यदि चंद्रमा कर्कका हो या वृषका हो या अपने मित्रकी राशि ५।३।६ पर हो तो युतिदोष नहीं है, कन्यावरको शुभ करता है ॥ ९५ ॥ (वेधदोष) विवाहनक्षत्रके सम्मुख एक रेखापर सूर्य आदि जो ग्रह हों तो उसीका वेध जानना इस वेधमें यदि विवाह करे तो एक मास भी वर या कन्या नहीं जीवे ॥ ९६ ॥ यह वेध अश्विनी पूर्वाफाल्गुनीका होता है और भरणी अनुराधाका, रोहिणी अभिजित्का, कृत्तिका विशाखाका ॥ ९७ ॥ मृगशिर उत्तराषाढाका, आर्द्रा पूर्वाषाढाका, मूल पुनर्वसुका, ज्येष्ठा पुष्यका ॥ ९८ ॥ आश्लेषा धनिष्ठाका, श्रवण मघाका, रेवती उत्तराफाल्गुनीका, हस्त उत्तराभाद्रपदका, स्वाती शतभिषाका, चित्रा पूर्वाभाद्रपदका होता है सो वेधयुक्त नक्षत्र विवाहमें वर्जना चाहिये ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अथ वेधफलम् । रविवेधे च वैधव्यं कुजवेधे कुलक्षयः । बुधवेधे भवेद्वन्ध्या प्रव्रज्या गुरुवेधतः ॥ १०१ ॥ अपुत्रा शुक्रवेधे च सौरे चंद्रे च दुःखिता । परपुंसि रता राहौ केतौ स्वच्छन्दचारिणी ॥ १०२ ॥

(वेधफल) रविका वेध हो तो कन्या विधवा हो, मंगलका होवे तो कुलनाश हो,बुधका हो तो वंध्या हो, गुरुका हो तो स्यामण (साधुनि) हो ॥ १०१ ॥ और शुक्रका वेध हो तो पुत्ररहित हो, चंद्रमा या शनिका वेध हो तो दुःखी हो, राहुका वेध हो तो परपुरुषोंमें रत हो और केतुका वेध हो तो कन्या अपने मनमत्ते चले ॥ १०२ ॥

अथावश्यके वेधापवादः । लग्ने शुभग्रहो वाऽथ लग्नेशो लाभगोऽथवा । सौम्यैर्दृष्टो युतो वाऽपि कालहोरा शुभस्य वा ॥ १०३ ॥ वेधदो-

षस्तदा न स्याद्विवाहादौ सतां मतम् ॥ अथजामित्रम् । चतुर्दशं च १४ नक्षत्रं जामित्रं लग्नभात्स्मृतम् ॥ १०४ ॥ शुभयुक्तं तदिच्छंति पापयुक्तं विवर्जयेत् । चन्द्रज्ञांङ्गिशुक्रजीवा जामित्रे शुभकारकाः ॥ १०५ ॥स्वर्भानुभानुमन्दारा जामित्रे न शुभप्रदाः । चंद्राद्वा लग्नतो वाऽपि ग्रहा वर्ज्याश्च सप्तमे । तत्र स्थिता ग्रहा नून व्याधिवैधव्यकारकाः ॥ १०६ ॥ अथ बुधपंचकम् ॥ धार्यास्तिथि १५ मास १२ दशा १० ष्ट ८ वेदाः ४ संक्रांतितो यातदिनैश्च योज्याः ग्रहै ९ र्विभागो यदि पंच ५शेषं रोग १ स्तथाऽग्नि २ नृप ३ चौर ४ मृत्युः ५ ॥ १०७ ॥ अथ बाणानां सशल्यता॥ यद्यर्कवारे किल रोगपंचकं सोमे च राज्यं क्षितिजे च वह्निः । शनौ च मृत्युः सुरमंत्रिचौर्य्यं विवाहकाले परिवर्जनीयम् ॥ १०८ ॥

(आवश्यकमें वेधापवाद) यदि लग्नमें शुभ ग्रह हो या लग्नका पति ग्यारहवें ११ हो या शुभ ग्रह लग्नपतिको देखता हो या शुभ ग्रहकी होरा हो तो अतिजरूरतमें वेधका दोष नहीं है यह श्रेष्ठ पुरुषोंका मत है ॥ १०३ ॥ (जामित्रदोष) विवाहके नक्षत्रसे चौदहवां १४ नक्षत्र जामित्रसंज्ञक है सो शुभ ग्रहोंकरके सहित हो तो शुभ जानना और पापग्रहोंकरके युक्त हो तो अशुभ होता है अर्थात् चंद्र, बुध, शुक्र, बृहस्पति यह जामित्रमें शुभकारक हैं ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ और राहु, सूर्य, शनि, मंगल यह अशुभ हैं और चन्द्रमासे या लग्नसे सातवें ७ स्थानमें ग्रह वर्जना चाहियें, यदि ग्रह हो तो रोग वैधव्यकारक होता है ॥ १०६ ॥ (बुधपंचक बाणका विचार) १५ । १२ । १० । ८ । ४ इन अंकोंमें संक्रांतिके गये हुए दिन क्रमसे जुदे जुदे मिलावे और सम्पूर्ण जगह नौका भाग देवे, जहां पांच ५ बचे सो ही क्रमसे, रोग १, अग्नि २, नृप ३, चौर ४, मृत्यु ५ बाण जानना अर्थात् १५ अंकमें ८ । १७ । २६ सूर्यके अंश मिलनेसे रोगबाण होता है, और १२ में २ । ११ । २० । २९ अंश मिलनेसे अग्निबाण, और १० में ४ । १३ । २२ मिलनेसे नृपबाण, तथा ८ में ६।१५।२४ मिलनेसे चौर और ४ अंकमें १।१०।१९।२८ गत सूर्यके अंश मिलनेसे मृत्युबाण होता है ॥ १०७ ॥ (बाणोंके भरे रीते (खाली) का विचार) यदि आदित्यवारको रोगबाण लगे तो भरा जानना और सोमवारको राजबाण, मंगलवारको अग्निबाण, शनिवारको मृत्युबाण और गुरुवारको चौरबाण भरा होता है सो विवाहमें अशुभ है ॥ १०८ ॥

अथ बाणानां कालभेदेन परिहारः । रोगं चौरं त्यजेद्रात्रौ दिवा राजाग्निपंचकम् । उभयोः सन्ध्ययोर्मृत्युमन्यकाले न निंदितः ॥ १०९ ॥ अथ कर्मविशेषे वर्ज्यम् । नृपाख्यं नृपसेवायां गृहगोपेऽग्निपंचकम् । याने चौरं व्रते रोगं त्यजेन्मृत्युं करग्रहे ॥ ११० ॥ अथैकार्गलदोषः । योगांके विषमे चैको १ ज्ञेयोऽष्टाविंशतिः २८ समे । अर्द्धं कृत्वाऽश्विनी-पूर्वमंकभं मूर्ध्नि दीयते ॥ १११ ॥ विष्कम्भे चाश्विनी देया प्रीतौ स्वा-तिर्निगद्यते । सौभाग्ये च विशाखा स्यादायुष्मान् भरणीयुतः ॥ ११२ ॥ शोभने कृत्तिका देया त्वनुराधाऽतिगण्डके । रोहिणी च सुकर्माख्ये धृतौ ज्येष्ठा प्रकीर्त्तिता ॥ ११३ ॥ गंडे मूलं मृगः शूले वृद्धौ चार्द्रा निगद्यते । पूर्वाषाढा ध्रुवे प्रोक्ता व्याघाते च पुनर्वसुः ॥ ११४ ॥ हर्षणे चोत्तरा-षाढा वज्रे पुष्यः प्रकीर्त्तितः । अभिजिच्च तथा सिद्ध आश्लेषा व्यति-पातके ॥ ११५ ॥ वरीयसि श्रुतिर्देया परिघे च मघा तथा । शिवे धनिष्ठा दातव्या सिद्धौ पूर्वा च फाल्गुनी ॥११६॥ साध्ये शतभिषा देया शुभे चोत्तरफाल्गुनी । पूर्वाभाद्रपदा शुक्ले हस्ते ब्रह्मा प्रकीर्त्तितः ॥११७॥

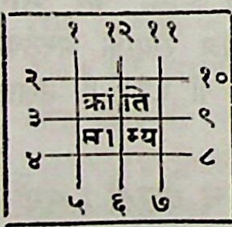
(बाणोंका कालभेदसे परिहार) रोगबाण चौरबाण रात्रिमें निषिद्ध हैं और राजबाण अग्निबाण दिनमें त्याज्य हैं, दोनों संध्याकालोंमें मृत्युबाण निषिद्ध है, अन्यकालमें निषिद्ध नहीं है ॥ १०९ ॥ (कर्मविशेषमें वर्ज्य) राजबाण तो राजाके नौकर रहनेमें अशुभ है और अग्निबाण घरके छानेमें, चौरबाण यात्रामें, रोगबाण यज्ञोपवीतमें और मृत्युबाण विवाहमें निषिद्ध है और अन्यकार्योंमें निषिद्ध नहीं है ॥ ११० ॥ (एकार्गलदोष) विवाहके दिन जो योग हो उसकी यदि विषम संख्या हो तो १ फिर मिलावे और सम संख्या हो तो २८ मिलावे फिर आधा करे और अश्विनीसे गिनके जितनी संख्याके अंकका नक्षत्र हो सो ही नक्षत्र रेखाके मस्तक ऊपर लिखे फिर बाकीके नक्षत्र और योगक्रमसे लिखने चाहिये ॥ १११ ॥ नक्षत्र योगोंका लिखना ऊपर स्पष्ट ही है ॥ ११२-११७ ॥

अथैकार्गललक्षणम् । उत्तराभाद्रपञ्चैंद्रे चित्रा देया च वैधृतौ । सूर्या-चंद्रमसोर्योगे भवेदेकार्गलं तथा ॥ ११८ ॥ अथैकार्गलचक्रम् । त्रयो-दश १३ तिरो रेखा एकोर्ध्वा मूर्ध्नि विस्तृता । योगांके प्राप्तनक्षत्रे ज्ञेय-

मेकार्गलं बुधैः ॥ ११९ ॥ अथैकार्गलफलम् । यात्रायां मरण विधा-
दारंभे कार्यनाशनम् । वैधव्यं स्याद्विवाहे च दाहश्च वसतां गृहे ॥
॥१२०॥ अथोपग्रहदोषः । अष्टमं ८ पंचमं ५ चाष्टादश १८ वाऽथ
चतुर्दशम् १४ द्वाविंशे २२ कोनविंशे १९ च त्रयोविंशं २३ तथैव च
॥ १२१ ॥ चतुर्विंशं २४ तथैतानि नक्षत्राण्यष्ट सूर्यभात् । उक्तान्युप-
ग्रहाख्यानि त्याज्यान्युद्वहनादिषु ॥ १२२ ॥ अथोपग्रहफलम् । गृह-
प्रवेशे दारिद्र्य विवाहे मरणं भवेत् । प्रस्थाने विपदः प्रोक्ता उपग्रहदिन
यदि ॥ १२३ ॥ बाल्हीके कुरुदेशे च वर्जयेद्भमुपग्रहम् । यत्संख्यचरणे
खेटस्तत्पंख्यं चरणं त्यजेत ॥ १२४ ॥

(एकार्गललक्षण) यदि विवाहके नक्षत्रके सम्मुख रेखापर सूर्य आ जावे तो दोष होता है ॥ ११८ ॥ और तेरह १३ लकीर आडी निकाले और एक लकीर ऊभी निकाले, तब एकार्गलचक्र होता है, सो इस चक्रकी एक लकीरपर योगके अंकमें विवाहके नक्षत्रके सम्मुख सूर्य आ जावे तो एकार्गल होता है ॥ ११९ ॥ (एकार्गल-फल) इस एकार्गल दोषमें यात्रा करे तो मृत्यु हो, गृहारंभ करे तो कार्यका नाश हो और विवाह करे तो विधवा हो गृहप्रवेश करे तो अग्निसे घर दग्ध हो जावे ॥ ॥ १२० ॥ (उपग्रह दोष) सूर्यके नक्षत्रसे ८ । ५ । १८ । १४ । २२ । १९ । २३ । २४ यह आठ नक्षत्र उपग्रहसंज्ञक हैं सो विवाह आदि कार्योंमें त्याज्य हैं ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ (उपग्रह फल) इन नक्षत्रोंमें गृहप्रवेश करे तो दारिद्रय हो, विवाह करे तो मृत्यु हो, यात्रा करे तो विपदा हो, ॥ १२३ ॥ परंच यह उपग्रह दोष बाह्लीकदेशमें और कुरुक्षेत्रमें त्याज्य हैं अथवा नक्षत्रके जिस चरणपर ग्रह हो उसी संख्याके चरणको देवे ॥ १२४ ॥

अथक्रांतिसाम्यदोषः ऊर्ध्वास्तिस्रस्तिरस्तिस्रो मध्ये मीन१२ लिखेद्



बुधः । सूर्याचंद्रमसो दृष्टौ क्रांतिसाम्यं निगद्यते ॥
॥ १२५ ॥ मीनः १२ कन्यकया ६ युक्तो मेषः १
सिंहेन ५ संगतः । मकरेण १० वृषः क्रांतश्चापो ९ ऽपि
मिथुनेन ३ च ॥ १२६ ॥ कर्केण ४ वृश्चिको ८ विद्धो
वेधश्च तुल ७ कुंभयोः ११ । क्रांतिसाम्यकृतोद्वाहो नजीवतिकदाचन ॥ १२७ ॥
अथ फलम् । क्रांतिसाम्यं यदा कुंभे ११ तदा तद्दहते वनुम् । पितुर्विनाशं

मीने च मेषे च पतिनाशनम् ॥१२८॥ वृषे २ कुक्षिभवां पीडां मिथुने ३ कामचारिणीम् । वंध्यां स्त्रीं च तथा कर्के ४ करोति कुरुते गृहम् ॥ ॥ १२९ ॥ इति क्रांतिसाम्यम् ॥ अथैकार्गलादिदोषपरिहारः । एकार्गलोपग्रहपातलत्ताजामित्रकर्त्तर्युदयास्तदोषाः । नश्यंति चंद्रार्कबलोपपन्ने लग्ने यथाऽर्काभ्युदये तमिस्रा ॥ १३० ॥

(क्रांतिसाम्य) तीन ३ लकीर ऊभी निकाले, और तीन ३ आडी निकाले, फिर बीचकी रेखाके ऊपर मीन १२ लिखे और क्रमसे मेषादिराशि वाममार्गसे लिख देवे । यदि एक रेखापर सूर्य चंद्रमा आवें तो क्रांतिसाम्य दोष लगता है ॥ ॥ १२५ ॥ सो यह क्रांतिसाम्य मीन १२ कन्या ६ का, मेष १ सिंह ५ का, मकर १० वृष २ का, मिथुन ३ धन ९ का, कर्क ४ वृश्चिक ८ का, तुला ७ कुंभ ११ का, जानना सो इनमें विवाह करनेसे मृत्यु होती है ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ (क्रांतिसाम्यफल) यदि कुंभका क्रांतिसाम्य हो तो शरीरको दग्ध करे, मीनका पिताका नाश करे, मेषका पतिको मारे, वृषका कुक्षिपीडा करे, मिथुनका स्त्रीको बदचलन करे, कर्कका वंध्या करे ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ (एकार्गलादि दोषोंका परिहार) एकार्गलदोष, उपग्रह, पातदोष, लत्तादोष, यामित्रदोष, कर्तरीदोष, लग्नका तथा सप्तम स्थानका दोष यदि चंद्रमा सूर्य बलवान् हो तो संपूर्ण दोष दूर हो जावें, जिस तरह सूर्यका उदय होनेसे रात्रि (अंधकार) दूर हो जावे ॥ १३० ॥

अथ देशभेदेन दोषपरिहारः । उपग्रहर्क्षं कुरुबाह्लिकेषु कलिंगवंगेषु च पातितं भम् । सौराष्ट्रशाल्वेषु च लत्तितं भं त्यजेत्तु विद्धं किल सर्वदेशे ॥ १३१ ॥ मतांतरम् । लत्ता मालवके देशे पातश्च कुरुजांगले । एकार्गलं च काश्मीरे वेधं सर्वत्र वर्जयेत्॥१३२॥ युतिदोषो भवेद्गौडे यामित्रस्य च यामुने । वेधदोषस्तु विंध्याख्ये देशे नान्येषु केषु च॥ १३३ ॥ तिथयो मासदग्धाख्या दग्धलग्नानि तान्यपि । मध्यदेशे विवर्ज्यानि न दूष्याणी तरेषु च ॥ १३४ ॥ अथ मध्यसंज्ञकदेशाः । मद्रारिमेदमांडव्यसाल्वनीपाज्जिहानसंख्यावाः । मरुवत्सघोषयामुनसारस्वतमत्स्यमाध्यमिकाः ॥ ॥१३५॥ माथुरकोपज्योतिषधर्मारण्यानि शूरसेनाश्च । गौरग्रीवो देहिकपांडुगुडाश्वत्थपांचालाः ॥ १३३ ॥ साकेतकंककुरुकालकोटिकुकुराश्च पारियात्रनगः । औदुंबरकापिष्ठलगजाह्वयाश्चेति मध्यमिदम् ॥ १३७ ॥

(देशभेदसे दोषपरिहार) उपग्रहदोष कुरुक्षेत्र बाह्लिकदेशमें अशुभ है, और पातदोष कलिंग वंग देशोंमें, लत्ता दोष सौराष्ट्र शाल्व देशोंमें वर्जनीय है तथा वेधदोष संपूर्ण देशोंमें त्याज्य है ॥ १३१ ॥ (दूसरा मत) लत्तादोष मालवमें अशुभ है और पातदोष कुरुक्षेत्र, जांगलदेशोंमें त्याज्य है, एकार्गल दोष काश्मीरमें और वेधदोष संपूर्ण देशोंमें वर्जना चाहिये ॥ १३२ ॥ युतिदोष गौडदेशमें, यामित्र यमुनाके नजदीकके देशोंमें, वेधदोष विंध्याचलके समीप निषिद्ध है अन्य देशोंमें निषिद्ध नहीं है ॥ १३३ ॥ और दग्धा तिथि, दग्ध लग्न, मध्यदेशमें अर्थात् आर्यावर्त्तक्षेत्रभरमें निषिद्ध हैं अन्यजगहमें नहीं हैं ॥ १३४ ॥ (मध्यदेशका लक्षण) मद्र, अरि, मेद, मांडव्य, साल्व, नीप, उज्जिहान, मरुदेश (मारवाड), वत्सघोष, यामुन, सारस्वत, मत्स्य, मथुरा, उपज्योतिष, धर्मारण्य, शूरसेन, गौरग्रीव, देहिक, पांडु, गुड, अश्वत्य, पांचाल, साकेत, कंक, कुरुक्षेत्र, कालकोटि, कुकुर पारियात्रनग, औदुंबर, कापिष्ठल, हस्तिनापुर इतने देशोंकी मध्यदेश संज्ञा है अर्थात् हिमाचल, विंध्याचलके बीचमें द्वारिकासे लेके प्रयागतक मध्य[1] देश है ॥ १२५-१३७ ॥

अथ कर्त्तरीदोष । । लग्नात्पापावृज्वनृजू व्यया १२ र्थ २ स्थौ यदा तदा । कर्त्तरी नाम सा ज्ञेया मृत्युदारिद्र्यशोकदा ॥ १३८ ॥ **अथ कर्त्तरीदोषापवादः** । पापयोः कर्त्तरीकर्त्रोः शत्रुनीचगृहस्थयोः । यदा त्वस्तगयोर्वाऽपि कर्त्तरी नैव दोषदा ॥ १३९ ॥ **अथ मर्मवेधादिचतुष्कदोषः** मर्मवेधः १ कंटकश्च २ शल्यं ३ छिद्रं ४ चतुर्थकम् । एतद्दोषचतुष्कं च परित्याज्यं प्रयत्नतः ॥ १४० ॥ लग्ने पापे मर्मवेधः कंटको नवपंचमे । चतुर्थे दशमे शल्यं छिद्रं भवति सप्तमे ॥ १४१ ॥ मरणं मर्मवेधे स्यात्कंटके च कुलक्षयः । शल्ये च नृपतेर्भीतिः पुत्रनाशश्च छिद्रके ॥ १४२ ॥ **अथ विवाहलग्नानि** । तुला ७ च मिथुनं ३ कन्या ६ पूर्वार्द्धो धनुषो ९ वृषः २ । एते लग्नाः शुभा नित्यं मध्यमाश्चापरे १।४।५।८।१०।११।१२। स्मृताः ॥ १४३ ॥

(कर्तरीदोष) विवाहलग्नके बारहवें १२ दूसरे २ स्थानमें पापग्रह मार्गी वक्री हों तो कर्त्तरी नाम दोष होता है सो यह कर्तरी मृत्यु दारिद्र्य शोकका करने-

---

१ मनुः-हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यं यत्प्राग्विनशनादपि। प्रत्यगेव प्रयागाच्च मध्यदेशः प्रकीर्त्तितः। इति। विनशनं नाम प्रभासक्षेत्रद्वारकासमीपे सरस्वतीतीर्थं ज्ञेयम्। तदुक्तं महाभारते वनपर्वणि १३० अध्याये। एतद्विनशनं नाम सरस्वत्या विशांपते। एतत्प्रकाशते तीर्थं प्रभासे भास्करद्युते।

वाला होता है ॥ १३८ ॥ (कर्तरीदोषापवाद) यदि कर्त्तरीदोष करनेवाला पापग्रह शत्रुकी राशिपर या नीच राशिपर हो या अस्तका हो तो कर्त्तरी दोष नहीं है ॥ १३९ ॥ (मर्मवेधादि चतुष्क दोष) लग्नमें पापग्रह हो तो मर्मवेध दोष होता है और नौवें ९ पांचवें ५ हो तो कंटक दोष, चौथे ४ दशवें १० शल्यदोष तथा सातवें ७ स्थानपर पापग्रह हो तो छिद्र दोष होता है ॥ १४० ॥ १४१ ॥ मर्मवेधमें विवाह हो तो मृत्यु हो, कंकटमें कुलका क्षय, शल्यमें राजाका भय और छिद्र दोषमें करे तो पुत्रका नाश हो ॥ १४२ ॥(विवाहलग्न) तुला ७, मिथुन ३, कन्या ६, धन ९, का पूर्वार्द्ध वृष २ यह लग्न विवाहमें श्रेष्ठ हैं और बाकीके लग्न मध्यम जानने ॥ १४३ ॥

अथ पंग्वंधादित्याज्यलग्नानि । दिने सदांऽधा वृष२ मेष१ सिंहा ५ रात्रौ च कन्या ६ मिथुनं ३ कुलीराः ४ । मृगस्तुलाऽलि १०।७।८ र्बधिरोऽपराह्णे संध्यासु कुब्जा घट ११ धन्वि ९ मीनाः १२ ॥१४४॥ **अथ फलम्** । दिवांधो वरहंता च रात्र्यंधो धननाशकः । दुःखदो बधिरो लग्नः कुब्जो वंशविनाशकः ॥ १४५ ॥ **अथैषां परिहारः** । लग्नायगेहे यदि वा रवौ वा दिवांधलग्नं नहि तत्र दोषः । रात्र्यंधलग्ने यदि चेंदुकेंद्रे संध्याकविः केंद्र १।४।७।१० शुभं विवाहे ॥ १४६ ॥ पंग्वंधकादिलग्नानि मासशून्याश्च राशयः । गौडमालवयोस्त्याज्या अन्यदेशे न गर्हिताः ॥ १४७ ॥ **अथ विवाहे शुभनवांशाः** । गो २ तुला ७ युग्म ३ कन्यानां ६ नवांशाः शुभदाः स्मृताः । धनुषः ९ प्रथमो भागो विवाहेऽन्ये च निंदिताः ॥ १४८ ॥ **अथ त्याज्यनवांशपरिहारः** । अंशस्य पतिरंशे च तन्मित्रं वा शुभोऽपि वा । पश्येत्तदा शुभो ज्ञेयः सर्वे दोषाश्च निष्फलाः ॥ १४९ लग्ने ॥ वर्गोत्तमे वेंदौ सुनाथे लाभगेऽथवा । केंद्रकोणे गुरौ दोषा नश्यंति सकला अपि ॥ १५० ॥

वृष २, मेष १, सिंह ५ यह लग्न दिनमें अंधे हैं. और कन्या ६, मिथुन ३, कर्क ४ यह लग्न रात्रिमें अंधे हैं मकर १०, तुला ७, वृश्चिक ८ यह अपराह्णमें बहिरे हैं, कुंभ ११, धन ९, मीन १२, यह संध्यासमयमें कूबडे हैं ॥ १४४ ॥ (अथ फल) दिनके अंधलग्नमें विवाह करे तो वर मरे, और रात्रिके अंध लग्नमें करे तो धननाश होवे, बहरे लग्नमें अपराह्णमें विवाह करे तो दुःख होवे, संध्याकालमें कूबडे लग्नमें विवाह करे तो वंशका नाश होवे ॥ १४५ ॥ (इनका परिहार) लग्नसे ग्यारहवें ११ स्थानमें यदि सूर्य हो तो दिवांधलग्नका दिनमें दोष नहीं और चन्द्रमा केंद्रमें हो तो

रात्रिके अंधलग्नका दोष नहीं है, यदि शुक्र केंद्रमें हो तो संध्याके कूवडे लग्नका विवाहमें दोष नहीं है ॥ १४६ ॥ पंगला, अंधा लग्न और मासशून्य राशि गौड मालव देशमें निषिद्ध हैं अन्य देशोंमें निषिद्ध नहीं हैं ॥ १४७ ॥ (विवाहमें शुभनवांशक) वृष, तुला, मिथुन, कन्या, धनके पूर्वभागका नवांशक विवाहमें शुभ हैं, और वाकीके अशुभ जानने ॥ १४८ ॥ नवांशका पति नवांशकमें हो या उसका मित्र या शुभ ग्रह हो या शुभ ग्रह नवांशकको देखता हो तो नवांशक शुभ जानना और संपूर्ण दोष निष्फल हो जाते हैं ॥ १४९ ॥ लग्नमें वर्गोत्तम राशिपर चंद्रमा हो अथवा सूर्य ग्यारहवें ११ हो या केंद्रमें गुरु हो तो संपूर्ण दोष दूर होते हैं ॥ १५० ॥

अथ विवाहलग्ने विश्वाप्रदा ग्रहाः केंद्रे सप्तमहीने च १।४। १० द्वित्रिकोणे २।३।९।५ शुभाः शुभाः । धने ९ शुभः सदा चंद्रः पापाः षष्ठे च शोभनाः ॥ १५१ ॥ तृतीयैकादशे ३।११ सर्वे सौम्याः पापाः शुभप्रदाः । ते च सर्वे सप्तमस्था ७ मृत्युदा वरकन्ययोः ॥१५२॥ पाताल ४ बरयो १० द्विपंच २।५ नवमे ९ लग्नेषु १ सौम्या ग्रहाः क्रूराः षष्ठ ६ गताः शशी धन २ युतः सर्वे त्रये ३ कादशे ११ । यात्रारंभविवाहकार्यसमये राज्याभिषेके नृणां जामित्रं ७ ग्रहवर्जितं यदि भवेत्सर्वेऽपि ते शोभनाः ॥ १५३ ॥ अथ ग्रहाणां विश्वाः ।रवौ सार्द्धत्रयो भागा ३ श्चंद्रे पंच ५ गुरौ त्रयम् ३ । द्वे २ शुक्रे द्वे २ बुधे चैव भागा विश्वप्रदा अमी । प्रत्येकं सार्द्धभागाश्च मंदमंगलराहुषु । ग्रहा बलयुता विश्वान् प्रयच्छंति न दुर्बलाः । १५४ ॥ अथ रेखाप्रदा ग्रहाः । लग्नादेकादशे सर्वे लग्नपुष्टिकरा ग्रहाः । तृतीये ३ चाष्टमे ८ सूर्यः सूर्यपुत्रश्च शोभनः ॥ १५५ ॥ चंद्रो धने २ तृतीये ३ च कुजः षष्ठे ६ तृतीयके ३ । बुधेज्यौ नव ९ षड् ६ द्वि २ त्रि ३ चतुः ४ पंच ५ दश १० स्थितौ ॥ १५६ ॥ शुक्रो द्वि २ त्रि ३ चतुः ४ पंच ५ धर्म ९ कर्म १० तनु १ स्थितः । राहुर्दशा १० ऽष्ट ८ षट् ६ पच ५ त्रि ३ नव ९ द्वादशे १२ शुभः ॥१५७॥

(विश्वादेनेवाले ग्रह) सातवें ७ स्थानके विना केंद्र १।४।१० स्थानोंमें और दूसरे २, और तीसरे ३, नौवें ९, पांचवें ५ स्थानोंमें शुभ ग्रह शुभ हैं, और दूसरे स्थानोंमें २ चंद्रमा सदैव श्रेष्ठ है, पापग्रह छठे ६ स्थानमें शुभ हैं ॥ १५१ ॥ तीसरे ३ ग्यारहवें ११

स्थानोंमें संपूर्ण ग्रह शुभ हैं और सातवें ७ स्थानमें संपूर्ण ही ग्रह वरकन्याको मृत्यु-कारक होते हैं ॥ १९२ ॥ ४।१०।२।५।९।१ इन स्थानोंमें शुभ ग्रह विश्वा देते हैं, पापग्रह छठे स्थानमें और चन्द्रमा दूसरे २ स्थानमें, संपूर्ण ग्रह तीसरे ३ ग्यारहवें ११ स्थानोंमें विश्वा देते हैं। इन ग्रहोंके सातवें ७ स्थानके विना लिखित रीतिसे यात्रा, गृहारंभ, विवाह, राज्याभिषेक आदि कार्योंमें विश्वा देवे तो शुभ होते हैं ॥ १९३ ॥ (ग्रहोंके विश्वोंकी संख्या) सूर्यके ३॥ विश्वा, चन्द्रमाके ९, गुरुके ३, शुक्र, बुधके २, मङ्गल, शनि, राहुका १॥ विश्वा जानना परंच बलवान् ग्रह विश्वा दे सकते हैं और दुर्बल ग्रह विश्वा नहीं दे सकते ॥ १९४ ॥ (रेखाके देनेवाले ग्रह) लग्नसे ग्यारहवें ११ संपूर्ण ग्रह शुभ हैं और तीसरे ३ आठवें ८ सूर्य शनैश्चर शुभ होते हैं ॥ १९५ ॥ चंद्रमा दूसरे २ तीसरे ३ शुभ, है मंगल छठे ६ तीसरे ३, बुध गुरु, नौवें, ९ छठे ६ दूसरे २ तीसरे ३ चौथे ४ पांचवें ५ दशवें १० शुभ हैं ॥ १९६ ॥ शुक्र २। ३।४।५।९।१०।१ इन स्थानोंमें शुभ होता है और राहु १०।८।६।५।३।९।१२ शुभ जानना और रेखा देता है ॥ १९७ ॥

अथ विवाहलग्ने भंगदा ग्रहाः । लग्ने शनैश्चरः सूर्यो लग्नारिनिधने १ । ६ । ८ शशी । लग्ने १ ऽष्टमे ८ महीसूनुरष्टमे ८ बुधवाक्पती ॥ १५८ ॥ राहुस्तुर्ये ४ विलग्ने १ च निधनारि ८ । ६ गतो भृगुः । द्यूने ७ तु खेचराः सर्वे विवाहे भंगदाः स्मृताः ॥ १५९ ॥ कुजे खे १० द्वादशे १२ मन्दो लग्नेशो निधनारिगः ८ । ६ । तृतीये ३ भार्गवश्चन्द्रो व्यये १२ ते नैव शोभनाः ॥ १६० ॥ अथ भंगदग्रहापवादः । नीचराशि ६ गते शुक्रे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा । भृगुषट्कोत्थितो दोषो नास्ति तत्र न संशयः ॥ १६१ ॥ अस्तगे नीचगे ४ भौमे शत्रुक्षेत्रगतेऽपि वा । कुजाष्टमोद्भवो दोषो न किंचिदपि विद्यते ॥ १६२ ॥ नीचराशिगते ८ चन्द्रे नीचांशकगतेऽपि वा । चन्द्रे षष्ठाष्ट ६ । ८ ।रिष्फ-१२ स्थे दोषो नास्ति न संशयः ॥ १६३ ॥ काव्ये गुरौ वा सौम्ये वा यदा केन्द्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ गे । नाशयंत्यखिलान्दोषान्पापानीव हरिस्मृतिः ॥ १६४ ॥ किं कुर्वंति ग्रहाः सर्वे यस्य केन्द्रे बृहस्पतिः । मत्तमातंगयूथानां शतं हंति च केसरी ॥ १६५ ॥

शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च । लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति ॥ १६६ ॥

(विवाहके लग्नमें भंग देनेवाला ग्रह) लग्नमें शनैश्चर सूर्य अशुभ हैं, लग्नमें १ छठे ६, आठवें ८ चंद्रमा अशुभ है, लग्नमें १, आठवें ८, मंगल और आटवें ८ बुध, बृहस्पति भंग देते हैं ॥ १५८ ॥ राहु चौथे ४ लग्नमें १ और आठवें ८, छठे, ६ शुक्र अशुभ हैं । सातवें ७ संपूर्ण ग्रह विवाहमें भंग देते हैं ॥ १५९ ॥ मंगल दशवें १०, शनि बारहवें १२, लग्नका स्वामी ८ । ६, शुक्र, ३. चन्द्रमा १२, श्रेष्ठ नहीं हैं ॥ १६० ॥ (भंग देनेवाले ग्रहोंका परिहार) शुक्र कन्याका हो या शत्रुकी राशि ९।४ पर हो तो आठवें छठे शुक्रका दोष नहीं है ॥ १६१ ॥ मंगल अस्तका हो अथवा कर्कका हो या शत्रुकी राशि ३।६ पर हो तो आठवें ८ छठे ६ मंगलका दोष नहीं है ॥ १६२ ॥ चंद्रमा वृश्चिक ८ का हो अथवा वृश्चिक नवांशकमें हो तो छठे ६ आठवें ८ चन्द्रमाका दोष नहीं है ॥ १६३ ॥ और शुक्र या गुरु, बुध, केन्द्र १। ४।७।१० स्थानमें या त्रिकोण ९।५। में हों तो संपूर्ण दोषोंको ऐसे दूर करते हैं जैसे हरिका नाम पापोंको दूर करता है ॥ १६४ ॥ जिसके लग्नसे बृहस्पति केंद्र १।४ ७।१० स्थानमें है तो फिर अन्य ग्रह क्या कर सकते हैं जैसे सैकडों ही हस्तियोंको एक ही सिंह मार डालता है ॥ १६५ ॥ यदि विवाहके लग्नमें शुक्र हो तो १०,००० दोष दूर करता है तो बुध १००० दोष दूर करता है, यदि बृहस्पति लग्नमें हो तो लक्ष दोष दूर करता है ॥ १६६ ॥

अथ विवाहलग्ने क्रमेण ग्रहफलम् । वाराहीसंहितायाम्–मूर्तौ करोति विधवां दिनकृत् कुजश्च राहुर्विनष्टतनयां रविजो दरिद्राम् । शुक्रः शशांकतनयश्च गुरुश्च साध्वीमायुःक्षयं च कुरुतेऽत्र च शर्वरीशः ॥ १६७ ॥ कुर्वंति भास्करशनैश्वरराहुभौमा दारिद्र्यदुःखमतुलं नियतं द्वितीये । वित्तेश्वरीमविधवां गुरुशुक्रसौम्या नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः ॥ १६८ ॥ सूर्येन्दुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीये कुर्युः स्त्रियं बहुसुतां धनभागिनीं च । व्यंगं दिवाकरसुतः कुरुते धनाढ्यां लक्ष्मीं ददाति नियतं किल सैंहिकेयः ॥ १६९ ॥ स्वल्पं पयो भवति सूर्यसुते चतुर्थे दौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुते शशी च । राहुर्विनष्टतनयां क्षितिजोऽल्पवीर्यां सौख्यान्वितां भृगुसुरेज्यबुधाश्च कुर्युः ॥ १७० ॥ नष्टात्मजां रविकुजौ खलु पंचमस्थौ चन्द्रात्मजो बहुसुतां गुरुभार्गवौ च ।

राहुर्ददाति मरणं रविजस्तु रोगं कन्याप्रसूतिनिरतां कुरुते शशांकः ॥ ॥ १७१ ॥ षष्ठस्थिताः शनिदिवाकरराहुभौमा जीवस्तथा बहुसुतां धनभागिनीं च । चंद्रः करोति विधवामुशना दरिद्रां वेश्यां शशांकतनयः कलहप्रियां च ॥१७२॥ सौरारजीवबुधराहुरवींदुशुक्रा दद्युः प्रसह्य मरणं खलु सप्तमस्थाः । वैधव्यबंधनभयं क्षयवित्तनाशं व्याधिप्रवासमरणं नियतं क्रमेण ॥ १७३ ॥ स्थानेऽष्टमे गुरुबुधौ नियतं वियोगं मृत्युं शशी भृगुसुतश्च तथैव राहुः । सूर्यः करोति विधवामधनीं कुजश्च सूर्यात्मजो बहुरुजां पतिवल्लभां च ॥ १७४ ॥ धर्मस्थिता भृगुदिवाकरभूमिपुत्रजीवाः सुधर्मनिरतां शशिजः सुभोगाम् । राहुश्च सूर्यतनयश्च करोति वंध्यां नारीं प्रभूततनयां कुरुते शशांकः ॥ १७५ ॥ राहुर्नभस्थल १० गतो विधवां करोति पापे परां दिनकरश्च शनैश्चरश्च । मृत्युं कुजोऽर्थरहितां कुटिलां च चंद्रः शेषा ग्रहा धनवतीं बहुवल्लभां च ॥ १७६ ॥ आये ११ रविर्बहुसुतां धनिनीं शशांकः पुत्रान्वितां क्षितिसुतो रविजो धनाढ्याम् । आयुष्मतीं सुरुगुरुर्भृगुजः सुपुत्रीं राहुः करोति सुभगां सुखिनीं बुधश्च ॥ १७७ ॥ अंत्ये १२ धनव्ययवतीं दिनकृद्दरिद्रां वंध्यां कुजः पररतां कुटिलां च राहुः । साध्वीं सितेज्यशशिजा बहुपुत्रपौत्रयुक्तां विधुः प्रकुरुते व्ययगो दिनांधाम् ॥ १७८ ॥

(बारह भावोंका फल) लग्नमें सूर्य मंगल हों तो विधवा करें, राहु हो तो संतानको मारे, शनि हो तो दरिद्रा करे, और शुक्र, बुध, गुरु हों तो पतिव्रता करें, यदि चंद्रमा लग्नमें हो तो आयुःक्षय करे ॥ १६७ ॥ दूसरे सूर्य, शनि, राहु, मंगल हों तो दारिद्र्य दुःख करें, गुरु, शुक्र, बुध हों तो धनवती सौभाग्यवती करें, चन्द्रमा दूसरे हो तो बहुतसे पुत्र देवे ॥ १६८ ॥ तीसरे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, गुरु, शुक्र, बुध शनि, राहु हों तो बहु पुत्र और धन करें ॥ १६९ ॥ चौथे शनि हो तो कन्याके दुग्धको नाश करे, सूर्य, चन्द्रमा मंदभाग्य करें, राहु संतान नष्ट करे, मंगल निर्वीर्य करे और शुक्र, गुरु, बुध, हों तो सुख देवें ॥ १७० ॥ पांचवें सूर्य मंगल हों, तो संतानको नष्ट करें, बुध, गुरु, शुक्र बहुत पुत्र देवें, राहु मृत्यु करे शनि रोग करे, चन्द्रमा हो तो बहुतसी कन्या देवे ॥ १७१ ॥ छठे शनि, सूर्य राहु, मंगल, गुरु हों तो बहुतसे पुत्र, धन देवें, चन्द्रमा विधवा करे, शुक्र

दरिद्रा करे, बुध वेश्या या कलह करनेवाली करता है ॥ १७२ ॥ सातवें श. मं. शु. बु. रा. सू. चं. गु. यह संपूर्ण ग्रह मृत्यु, वैधव्य, बंधन, भय, नाश, धननाश, रोग, परदेशमें मृत्यु क्रमसे करते हैं ॥ १७३ ॥ आठवें गुरु, बुध पतिका वियोग करें, चन्द्रमा, शुक्र, राहु, मृत्यु, करें, सूर्य विधवा करे, मंगल दरिद्री करे, शनैश्चर रोगिणी और पतिको प्यारी करे ॥ १७४ ॥ नौवें शुक्र, रवि, मंगल, गुरु, बुध हों तो उत्तम धर्म करनेवाली और भोग भोगनेवाली करते हैं, राहु, शनि वंध्या करें, चंद्रमा बहुत पुत्र देवे ॥ १७५ ॥ दशवें राहु हो तो विधवा करे, सूर्य, शनि पापिनी करें, मंगल मृत्यु करे, चन्द्रमा दरिद्रा और कुटिला करे, और गुरु, शुक्र बुध धनवती पतिवल्लभा करें ॥ १७६ ॥ ग्यारहवें सूर्य हो तो बहुत पुत्र देवे, चन्द्रमा धनवती करे, मंगल पुत्रवती करे, शनि धनवती करे, गुरु आयु देवे, शुक्र उत्तम पुत्र करे, राहु सौभाग्य करे, बुध सुख देवे ॥ १७७ ॥ बारहवें सूर्य हो तो बहुत खरच करनेवाली दरिद्रा करे, मंगल वंध्या करे, राहु परपुरुषोंमें रत, कुटिला करे, शुक्र, गुरु, बुध बहुतसे पुत्र पौत्र देवें और चन्द्रमा दिनांध रोग करे ॥ १७८ ॥

अथ गोधूलिकलग्नम् । तत्र तावद्गोधूलिसमयः । यदा नास्तं गतो भानुर्गोधूल्या पूरितं नभः । सर्वमंगलकार्येषु गोधूलिश्च प्रशस्यते ॥ ॥ १७९ ॥ अर्धास्तात्पूर्वमप्यूर्ध्वं घटिकार्द्धं तु गोरजः । स कालो मंगले श्रेयान् विवाहादौ शुभप्रदः ॥ १८० ॥ निदाघे त्वर्द्धबिंबेऽर्के पिंडीभूते हिमागमे । मेघकाले तु पूर्णेऽस्ते प्रोक्तं गोधूलिकं शुभम् ॥ १८१ ॥

(गोधूलिलग्नका विचार) सूर्य अस्त नहीं हुआ हो और जंगलसे आती हुई गौओंके पावोंकी रेतीसे आकाश भर जावे तब गोधूलिक समय होता है सो संपूर्ण मांगलिक कार्योंमें श्रेष्ठ है ॥ १७९ ॥ सूर्य आधा अस्त हो जावे तबसे पहलेकी आधी घडी और अस्त होनेके बाद आधी घडी गोधूलिक लग्नकी है, सो यह लग्न विवाहादिकोंमें श्रेष्ठ है ॥ १८० ॥ ग्रीष्म ऋतुमें सूर्य आधा अस्त होनेसे और शरद ऋतुमें सूर्य चक्रके आकार हो जानेसे और वर्षा ऋतुमें सूर्य अस्त होनेसे श्रेष्ठ गोधूलिक होता है ॥ १८१ ॥

अथ देशभेदादिना गोधूलिमुख्यता । प्राच्यानां च कलिङ्गानां मुख्यं गोधूलिकं स्मृतम् । गांधर्वादिविवाहेषु वैश्योद्वाहे च योजयेत् ॥ ॥ १८२ ॥ रात्रौ लग्नं यदा नास्ति तदा गोधूलिकं शुभम् ॥ शूद्रादीनां बुधाः प्राहुर्न द्विजानां कदाचन ॥ १८३ ॥ लग्नशुद्धिर्यदा नास्ति कन्या

यौवनशालिनी । तदा वै सर्ववर्णानां लग्नं गोधूलिकं शुभम् ॥ १८४ ॥ अथ गोधूलिकलग्ने ग्रहबलम् । यत्र चैकादशश्चंद्रो ११ द्वितीयो २ वा तृतीयकः ३ । गोधूलिकः स विज्ञेयः शेषा धूलिमुखाः स्मृताः ॥१८५॥

यह गोधूलिकलग्न पूर्वके देशोंमें तथा कलिंग देशमें और गांधर्व आदि विवाहोंमें और वैश्योंके विवाहोंमें अति श्रेष्ठ है ॥ १८२ ॥ ब्राह्मणोंके तो रात्रिमें शुद्ध लग्न नहीं हो तब लेना चाहिये और शूद्रोंके तो गोधूलिक लग्नमें ही विवाह करना शुभ है ॥ १८३ ॥ यदि लग्न शुद्ध नहीं मिले और कन्या समर्थ हो जावे तो ब्राह्मण आदि संपूर्ण वर्णोंके लिये भी गोधूलिक लग्न शुभ है ॥ १८४ ॥ गोधूलिक लग्नसे चन्द्रमा ११ । २ । ३ स्थानोंमें हो तब श्रेष्ठ गोधूलिक होता है नहीं तो अन्य धूलिमुख जानना ॥ १८५ ॥

अथ गोधूल्यां भंगदा ग्रहास्त्याज्याः दोषाश्च ॥ अष्टमे ८ जीवभौमौ च बुधश्च भार्गवाऽष्टमे । लग्ने षष्ठ ६ ष्टग ८ श्चंद्रो गोधूलेर्नाशकस्तदा ॥ १८६ ॥ षष्ठे ६ ऽष्टमे ८ मूर्त्तिगते १ शशांके गोधूलिके मृत्युमुपैति कन्या । कुजेऽष्टमे ८ मूर्त्तिगते १ ऽथवाऽस्ते ७ वरस्य नाशं प्रवदंति गर्गाः ॥ १८७ ॥ षष्ठाष्टमे ६ । ८ चंद्रजचंद्रजीवे क्षोणीसुत वा भृगुनंदने वा । मूर्त्ते १ च चंद्रे नियमेन मृत्युर्गोधूलिकं स्यादिह वर्ज्जनीयम् ॥ १८८ ॥ कुलिकं क्रांतिसाम्यं च लग्ने १ षष्ठाऽष्टमे ६ । ८ शशी । तदा गोधूलिकस्त्याज्यः पंचदोषैश्च दूषितः ॥ १८९ ॥ अथ विवाहांगकार्यमुहूर्तः । कार्यं विवाहकार्यांगं विवाहोदितभे जनैः । विबलं च विधुं हित्वा त्रि ३ षष्ठ ६ नवमं ९ दिनम् ॥ १९० ॥ विशाखां भरणीं चित्रां ज्येष्ठाख्यामश्विनीं शतम् । आर्द्राचतुष्टयं ४ हित्वा कुर्याद्वैवाहिकं विधिम् ॥ १९१ ॥

(गोधूलिकालमें त्याज्य ग्रह और दोष) गोधूलिक लग्नसे आठवें ८ गुरु, मंगल बुध, शुक्र हो और १ । ६ । ८ चन्द्रमा हो तो गोधूलिक अशुभ होता है ॥ १८६ ॥ ६।८।१ इन स्थानोंमें चन्द्रमा हो तो कन्या मरजावे और ८।१।७ मंगल हो तो वरकी मृत्यु हो यह गर्गका वाक्य है ॥ ८७ ॥ चन्द्रमा, बुध, गुरु, मंगल, शुक्र ६ । ८ हो और लग्नमें चंद्रमा हो तो निश्चय मृत्यु होवे ॥८१८॥ कुलिकयोग, क्रांतिसाम्य दोष तथा १ । ६ । ८ चन्द्रमा हो तो पंच दोषोंकरके दूषित गोधूलिक लग्न अशुभ है और

त्यागने योग्य है ॥ १८९ ॥ (विवाहके पहले होनेवाला कर्म) विवाहसे पहले होनेवाला कर्म विवाह आरंभ [बान बैठाना, हलदी हाथ करना साहा पूजना, आदि कर्म] विवाहके नक्षत्रोंमें और श्रेष्ठ चन्द्रमामें तथा विवाहसे पहले ३।६।९ दिन त्यागके शुभ दिनमें करने चाहिये ॥ १९० ॥ परंतु विशाखा. भ. चि. ज्ये. अश्वि. श. आ. पु. पु. आश्ले. इन नक्षत्रोंको त्यागके विवाहकार्य करना शुभ है ॥ १९१ ॥

अथ शुभदिने कर्तव्यकार्यम् । हेरंबपूजनं तैलं सकलं चांकुरार्पणम् । भूषणं कंकणाद्यं च वेदिकामडपादिकम् ॥ १९२ ॥ अथ तैलाभ्यंगे विशेषः । तैलाभ्यंगे रवौ तापः सोमे शोभा कुजे मृतिः । बुधे धनं गुरौ हानिः शुक्रे दुःखं शनौ सुखम् ॥ १९३ ॥ अथ वारदोषपरिहारः । रवौ पुष्पं गुरौ दूर्वा भौमवारे च मृत्तिका । शुक्रे तु गोमयं दद्यात्तैलाभ्यंगे न दोषभाक् ॥ १९४ ॥ अथ तैलादिलापने दिनसंख्या । मेषादिराशिजातानां कुर्यात्तैलादिलापनम् । शैल ७ दिक १० बाण ५ सप्तां ७ ग ६ इषु ५ पंचे ५ षवः ५ शराः ५ । बाण ५ शैला ७ द्वय २ श्चैव क्रमात्कैश्चिदितीरितम् ॥ १९५ ॥ अथ विवाहवेदिका मंडपस्तंभनिवेशनं च । चतुरस्रां करोच्छ्रां च चतुर्हस्तां सुवेदिकाम् । वेश्मनो वामभागे च कुर्यात्स्तंभोपशोभिताम् । १९६॥ सूर्येऽङ्गना ६ सिंह ५ घटेषु ७ शैवे स्तंभोऽलि ८ कोदंड ९ मृगेषु १० वायौ । मीना ११ ज १ कुंभे ११ निर्ऋतौ विवाहे स्थाप्योऽग्निकोणे वृष २ युग्म ३ कर्के ४ ॥ १९७ ॥

(शुभदिनमें करनेयोग्य काम) गणेशपूजन, तैलाभ्यंग, अंकुरार्पण, भूषण, कंकण आदिका धारण, विवाहवेदी मंडप आदि संपूर्ण कार्य शुभ दिनमें करे ॥ १९२ ॥ आदित्यवारको तेल लगावे तो ज्वर आवे, सोमवारको शोभा, मंगलको मृत्यु, बुधको धनप्राप्ति, गुरुको हानि, शुक्रको दुःख और शनिवारको तेल लगावे तो सुख होवे ॥ १९३ ॥ आदित्यवारको तेलमें पुष्प डालके तेल लगानेमें दोष नहीं, गुरुवारको दूर्वा, मंगलको मृत्तिका, शुक्रको गोमय डालके लगावे तो दोष नहीं है ॥ ॥ १९४ ॥ मेष आदि राशिवालोंको क्रमसे ७।१०।५।७।६।५।५।५।५।५।७।२ इतने दिन पहले तैलाभ्यंग करना शुभ है ॥ १९५ ॥ विवाहके अर्थ चतुरस्र (चार कोणवाली) एक हाथ ऊँची चार ४ हाथ लम्बी घरके वामभागमें स्तंभोंकरके शोभित वेदी बनानी चाहिये ॥१९६॥ विवाहके मंडपका स्तंभ, सूर्य कन्या ६, सिंह ५, तुलाका ७

हो तो ईशान कोणमें स्थापन करे और ८ । ९ । १० का हो तो वायुकोणमें धरे, १२ । १ । ११ हो तो निर्ऋति कोणमें, और २ । ३ । ४ का सूर्य हो तो अग्निकोणमें स्तंभ धरना शुभ है ॥ १९७ ॥

अथ विवाहानंतरं मंडपोद्वासनम् । मंडपोद्वासनं षष्ठं हित्वा कुर्यात्समेऽहनि । पंचमे सप्तमे वाऽपि शुभर्क्षे शुभवासरे ॥ १९८ ॥ अथ विवाहानंतरं वधूप्रवेशः । लग्नादह्नि समे पंचसप्तकेऽप्यथ षोडशात् । ततस्त्वापंचमाद्वर्षादोजाहे मासि वत्सरे ॥ १९९ ॥ यथेच्छं तु ततो वध्वाः प्रवेशः शुभदः स्मृतः । श्रवणद्वितये २ मूलेऽनुराधारोहिणीमृगे ॥२००॥ हस्तत्रये ३ मघापुष्ये त्र्युत्तरे ३ रेवतीद्वये २ । प्रवेशः शुभदो वध्वाः सोमे शुक्रे गुरौ शनौ ॥ २०१ ॥ अथ प्रथमाब्दे मासविशेषेण वध्वा निवासदोषः । उद्वाहात्प्रथमे ज्येष्ठे यदि पत्युगृहे वसेत् । पत्युर्ज्येष्ठं तदा हंति पौषे तु श्वशुरं तथा ॥ २०२ ॥ श्वश्रूं साऽऽषाढमासे तु चाधिमासे स्वकं पतिम् । आत्मानं तु क्षये मासि तातं तातगृहे मधौ ॥ २०३ ॥

(विवाहके बाद मण्डपोद्वासन) विवाहके अनंतर छठा ६ दिन त्यागके सम दिनमें अथवा पांचवें ५ सातवें ७ दिनमें शुभ नक्षत्र वारको मंडप उठाना श्रेष्ठ है ॥ १९८ ॥ (वधूप्रवेश) विवाहके अनंतर विवाहसे सम दिनमें अथवा पांचवें ५ या सातवें ७ दिनमें सोलह १६ दिनके भीतर अथवा पांच बरसतक विषम १।३।५ संख्याके बरस मास दिनोंमें वधूप्रवेश करे तो शुभ है ॥ १९९ पांच बरसके उपरांत अपनी इच्छासे कोईसे बरसमें कर लेना शुभ है, परंतु श्र. ध. मू. अनु. रो. मृ. ह. चि. स्वा. म. पुष्य उत्तरा ३, रे. अश्वि. इन नक्षत्रोंमें सोम, शुक्र, गुरु, शनि वारोंमें वधूप्रवेश करना चाहिये ॥ २०० ॥ २०१ ॥ (प्रथमवर्षमें मासविशेषसे वधूके निवासमें दोष) यदि विवाहसे प्रथम ज्येष्ठमें स्त्री पतिके घरमें रहें तो अपने ज्येष्ठको मारती है, और पौषमें रहे तो ससुरेको, आषाढमें रहे तो सासूको, अधिक मासमें रहे तो अपने पतिको मारती है, और क्षयमासमें रहे तो अपने आत्माका नाश करती है, यदि चैत्रमें अपने पिताके घरमें रहजावे तो पिताको मारती है ॥ २०२ ॥ २०३ ॥

अथ द्विरागमनम् । विवाहाद्विषमे वर्षे कुंभमेषालिगे रवौ । बलिन्यर्के विधौ जीवे शुभाहे चाश्विनीमृगे ॥ २०४ ॥ रेवतीरोहिणीपुष्ये त्र्युत्तरे श्रवणत्रये । हस्तत्रये पुनर्वस्वोस्तथा मूलानुराधयोः ॥ २०५ ॥ कन्या ६

मीन १२ तुले ७ युग्मे ३ वृषे २ प्रोक्तबलान्विते। लग्ने पद्मदलाक्षीणां द्विरागमनमिष्यते ॥ २०६ ॥ भौमार्किवर्जिता वारा गृह्यन्ते च द्विरागमे। षष्ठी ६ रिक्ता ४।९।१४ द्वादशी च १२ साऽमावास्या च वर्जिता ॥२०७॥ अथ मासेषु विशेषः। मार्गफाल्गुनवैशाखे शुक्लपक्षे शुभे दिने। गुर्वादित्यविशुद्धौ स्यान्नित्यं पत्नीद्विरागमे ॥ २०८ ॥ चैत्रे पौषे हरिस्वप्ने गुरोरस्ते मलिम्लुचे। नवोढागमनं नैव कृते पंचत्वमाप्नुयात ॥ २०९ ॥ अथ संमुखशुक्रादौ निषिद्धम्। अस्तं गते भृगोः पुत्रे तथा संमुखमागते। नष्टे जीवे निरंशे वा नैव सचालयेद्वधूम् ॥ २१० ॥ गर्भिण्या बालकेनापि नवबध्वा द्विरागमे। पदमेकं न गतव्यं शुक्रे समुखदक्षिणे ॥ २११ ॥ गुर्विणी स्रवते गर्भ बालोऽपि मरण व्रजेत्। नवा वधूर्भवेद्वंध्याशुके संमुखदक्षिणे ॥ २१२ ॥

(द्विरागमनमु.) विवाहसे विषम १।३।५ बरसमें और कुंभ ११ मेष १ के सूर्यमें और वरकन्याको सूर्य, चंद्रमा, गुरु बलवान् होनेसे शुभ दिनमें द्विरागमन (मुकलावा) श्रेष्ठ है ॥ २०४ ॥ अश्वि. मृ. रे. रो. पुष्य. उ. ३, श्र. ध. श. ह. चि. स्वा. पून. मू. अनु. यह नक्षत्र शुभ हैं ॥ २०५ ॥ कन्या ६, मीन १२, तुला ७ मिथुन ३, वृष २ इन बलयुक्त लग्नोंमें स्त्रियोंका द्विरागमन करना ॥ २०६ ॥ मंगल, शनिके विना संपूर्ण वार शुभ हैं, ६।४।९।१४।१२।३० यह तिथि निषिद्ध हैं, ॥ २०७ ॥ (मासोंमें विशेष) मार्ग, फाल्गुन, वैशाख शुक्लपक्ष शुभदिन श्रेष्ठ हैं, गुरु आदित्यकी शुद्धि देखना चाहिये ॥ २०८ ॥ चैत्र, पौष, देवशयनके मास, गुरुका अस्त, अधिकमासमें यदि स्त्री पतिके घर जावे तो मृत्यु हो ॥ २०९ ॥ (संमुख शुक्रादिमें निषिद्धकाल) शुक्र अस्त हो अथवा सम्मुख हो या गुरुका अस्त होवे या गुरु अंशहीन हो तो द्विरागमन नहीं करना ॥ २१० ॥ यदि शुक्र सम्मुख होवे तो गर्भिणी स्त्री या बालकसहित स्त्री और नवीन (मुकलावावाली) स्त्री चलनेके लिये एक पैंड भी नहीं रक्खे और शुक्र यदि दक्षिणभागमें होवे तो भी नहीं जाना चाहिये ॥ २११ ॥ यदि शुक्रके सम्मुख या दहनेमें गर्भिणी जावे तो गर्भ गिरजावे, बालकको लेकर जावे तो बालक मरे, द्विरागमनमें नवीन स्त्री जावे तो वंध्या होवे ॥ २१२ ॥

अथ प्रतिशुक्रदोषापवादः। एकग्रामे पुरेवाऽपि दुर्भिक्षे राष्ट्रविप्लवे। विवाहे तीर्थयात्रायां प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ २१३ ॥ पौष्णादावश्विपा-

दांतं यावत्तिष्ठति चन्द्रमाः ॥ तावच्छुक्रो भवेदंधः सम्मुखं गमन शुभम् ॥२१४॥ पित्रागारे यदि स्त्रीणां स्वनपुष्पोद्गमो भवेत् ॥ गमनं प्रति शुक्रेऽपि प्रशस्तं पतिवेश्मनि ॥ २१५ ॥

(प्रतिशुक्र दोषापवाद) परंतु एक ग्राममें या नगरमें या राजके बिगड़नेमें और दुर्भिक्षमें, विवाहमें, तीर्थयात्रामें सम्मुख शुक्रका दोष नहीं है ॥ २१३ ॥ रेवतीसे कृत्तिकाके प्रथम चरणतक मेषके चंद्रमामें शुक्र अंधा रहता है सो सम्मुख गमन करनेमें दोष नहीं है ॥२१४॥ पिताके घरमें यदि कन्या रजस्वला हो जावे तो पतिके घर जाती हुईको शुक्रका दोष नहीं है ॥ २१५ ॥

अथ त्रिरागमनम् । आदित्यहस्तेऽन्त्यमृगाश्विमैत्रे तथा श्रविष्ठास्वपि वातपित्रे । बध्वास्तृतीये गमने प्रशस्तं स्याद्योगिनीशूलतमोविशुद्धौ ॥ ॥ २१६ ॥ विवाहे गुरुशुद्धिश्च भृगुशुद्धिर्द्विरागमे । त्रिर्गमे राहुशुद्धिश्च चन्द्रशुद्धिश्चतुर्गमे ॥ २१७ ॥

इति श्रीरत्नगढ़नगरनिवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशे अद्भुतनिबन्धे षष्ठं विवाहप्रकरणम् ॥ ६

(त्रिरागमनम्.) स्त्रियोंको तीसरीवार जानेमें आदित्यवार ह. रे. मृ. अश्वि. अनु. श्र. स्वा. म. यह नक्षत्र श्रेष्ठ हैं. परन्तु गमनकालमें योगिनी दिशाशूल देखने चाहिये ॥ २१६ ॥ विवाहमें कन्याको गुरुकी शुद्धि और द्विरागमनमें शुक्रका बल, त्रिरागमनमें राहुकी शुद्धि और चतुर्थागमनमें केवल चंद्रमाकी शुद्धि देखनी चाहिये ॥ २१७ ॥

इति मुहूर्त्तप्रकाशे षष्ठं विवाहप्रकरणम् ॥ ६ ॥

यात्राप्रकरणम् ७ ।

अथ यात्रां प्रवक्ष्यामि वशिष्ठाद्यनुसंमताम् । यात्रा तु द्विविधा ज्ञेया सौम्या क्रूरा तथैव च ॥ १ ॥ धनाद्यर्थे भवेत्सौम्या क्रूरा युद्धे प्रकीर्तिता । प्रोच्यतेऽत्र मया सौम्या क्रूरा ज्ञेयाऽन्यशास्त्रवः ॥ २ ॥ तत्र तावद्यात्राकालस्तत्फलं च ॥ मेष १ सिंह ५ धनुः ९ संस्थे यात्रा शस्तांऽशुमालिनि । कुंभे ११ नक्रां १० गना ६ युग्म ३ शुक्रभ २ । ७ स्था तु

मध्यमा ॥ ३ ॥ कर्का ४ लि ८ मीनगे १२ ऽर्के तु यात्रा निंद्यतरा स्मृता ।) ज्योतिस्वत्त्वे विशेषः ।) सिंहे ५ धनुषि ९ मीने १२ च स्थिते सप्ततुरंगमे । यात्रोद्वाहगृहारंभक्षौरकर्माणि वर्जयेत् ॥ ४ ॥ अथ निषिद्धतिथयः । षष्ठचष्टमीद्वादशिकारिक्तामावर्जितासु च ॥ या शुक्लप्रतिपदि निधनाय भवेदिति ॥ ५ ॥ अथ यात्रायां शुभाऽशुभ-वासराः । अर्के क्लेशमनर्थकं च गमने सोमे च बंधुप्रियं चांगारेऽग्नि-लतस्करज्वरभयं प्राप्नोति चार्थं बुधे । क्षेमारोग्यसुख करोति च गुरौ लाभश्च शुक्रे शुभो मंदे बंधनहानिरोगमरणान्युक्तानि गर्गादिभिः ॥ ६ ॥ बुधवारे तु प्रस्थानं दूरतः परिवर्जयेत् ॥ ७ ॥

अथ यात्राप्रकरणं प्रारभ्यते ॥ इसके अनंतर वसिष्ठ, नारद, गर्ग आदि महर्षि-योंके मतानुसार यात्रा वर्णन करते हैं । यात्रा दो प्रकारकी है सौम्या तथा क्रूरा ॥ ॥ १ ॥ धन व्यापार तीर्थ आदिके अर्थ हो सो सौम्या और युद्ध राजकार्य आदिके अर्थ हो सो क्रूरा जाननी, परंतु हमने तो इस ग्रथमें सौम्या अर्थात् धनाद्यर्थ यात्रा ही लिखा है, क्रूर यात्रा तो मुहूर्त्तचिंतामणि–मुहूर्त्तमार्तंड–मुहूर्त्तगणपति आदि ग्रंन्थोंसे जानलेनी ॥ २ ॥ (अब यात्राका समय लिखते हैं) मेष, सिंह, धन इन राशियों-पर सूर्य हो तो श्रेष्ठ यात्रा और कुंभ, मकर, कन्या, मिथुन, वृष,, तुला इनपर हो तो मध्यमा ॥ ३ ॥ तथा कर्क, वृश्चिक, मीन इनपर सूर्य हो तो निंदित यात्रा जाननी (ज्येतिस्तत्त्वमें विशेष लिखा है) सिंह, धन, मीन इनपर सूर्य हो तो यात्रा विवाह गृहारंभ चौलकर्म नहीं करन चाहिये ॥ ४ ॥ (यात्रामें त्याज्य तिथि) षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता (चौथ नवमी चतुर्दशी), अमावस्या, शुक्लपक्षकी प्रतिपदा इन तिथियोंमें यात्रा करे तो मृत्यु होवे ॥ ५ ॥ (अथ यात्राके शुभ अशुभ वार) आदित्यवारको गमन करे तो क्लेश और अनर्थ हो, सोमवारको बंधु तथा प्रिय वस्तुका लाभ हो, मंगलवारको अग्नि, चौर, रोग, ज्वरका भय हो, बुधवारको अर्थ-लाभ हो और शनिवारको गमन करे तो बंधन, हानि, रोग, मृत्यु हो ऐसा गर्गादि मुनियोंने कथन किया है ॥ ६ ॥ यहां जो बुधवार श्रेष्ठ माना गया है सो सौम्यवार होनेसे शुभ माना गया परंतु यात्रामें तो विलकुल निंदित है क्योंकि बुधके दिन तो प्रस्थान भी नहीं लिखा है ॥ ७ ॥

अथ यात्रायामुत्तममध्यमनेष्टनक्षत्राणि । धनिष्ठा श्रवणो हस्तोऽनुराधा रेवतीद्वयम् । मृगः पुनर्वसुः पुष्यः श्रेष्ठान्येतानि भानि च ॥ ॥ ८ ॥ मूल पूर्वात्रयं ज्येष्ठारोहिणीशततारकाः ॥ उत्तराणां त्रयं याने मध्यान्येतानि भानि च ॥ ९ ॥ चित्रात्रय मघाऽऽश्लेषा कृत्तिकाऽऽर्द्रा भरण्यपि । वर्ज्यान्येतानि धिष्ण्यानि यात्रायां जन्मभं तथा ॥ १० ॥ अथात्यावश्यके वर्ज्यनक्षत्राणां त्याज्यघटिकाः । कृत्तिकाभरणीपूर्वामघानां घटिकाः क्रमात । एकविंशति २१ सप्त ७ थ षोडशै-१६ कादश ११ त्यजेत् ॥ ११ ॥ ज्येष्ठाऽऽश्लेषाविशाखासु स्वात्यां चापि चतुर्दश १४ । भृगोर्मते संकटेऽपि सर्वां स्वातीं मघां त्यजेत् ॥ ॥ १२ ॥ अथ दिक्शूलम् । शनौ चंद्रे त्यजेत्पूर्वां दक्षिणा च दिशं गुरौ । सूर्ये शुक्रे पश्चिमां च बुधे भौमे तथोत्तराम् ॥ १३ ॥

(अब यात्राके शुभाशुभ) नक्षत्र लिखते हैं) धनिष्ठा. ह. अनुराधा, रे. अ. मृ. पुनर्वसु, पुष्य यह नक्षत्र श्रेष्ठ हैं ॥ ८ ॥ मूल, पूर्वा तीनों, ज्येष्ठा, रो. शतभिषा, उत्तरा यह तीनों मध्यम हैं ॥ ९ ॥ चित्रा. स्वा. वि. मघा, आश्लेषा, कृ. आर्द्रा. भरणी. जन्मनक्षत्र यह नक्षत्र यात्रामें वर्जनीय हैं ॥ १० ॥ (यदि अति जरूरत हो तो निषिद्ध नक्षत्रोंकी घडी त्यागदेनी सो लिखते हैं) कृत्तिकाकी २१ घडी, भरणीकी ७ घडी. तीनों पूर्वाओंकी १६ घडी, मघाकी ११ त्याग देनी चाहिये ११ ॥ ज्ये आश्ले. विशा. स्वा. इन नक्षत्रोंकी १४ घडी त्याज्य हैं परन्तु भृगुजीके मतमें तो स्वाती, मघा यह दो नक्षत्र सर्वथा ही त्याज्य हैं ॥ १२ ॥ (दिक्शूल) शनि, और सोमवारको पूर्वदिशामें गमन नहीं करना और गुरुवारको दक्षिणमें, सूर्य शुक्रवारको पश्चिममें तथा. बुध, भौमवारको उत्तरदिशामें गमन नहीं करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ विदिक्शूलम् । आग्नेय्यां च गुरौ चंद्रे नैर्ऋत्यां रविशुक्रयोः । ऐशान्यां चंद्रजे वायौ मंगले गमनं त्यजेत् ॥ १४ ॥ अथ नक्षत्रशूलम् । दिक्शूलं पूर्वदिग्भागे जेष्ठायां शनिसोमयोः । पूर्वाभाद्रपदे याम्या तथैव गुरुवासरे ॥ १५ ॥ रवौ शुक्रे च रोहिण्यां पश्चिमायां त्यजेद् बुधः । उदीच्यामुत्तराफाल्गुन्यभिधे मंगले बुधे ॥ १६ ॥ अथ शूलफलम् । शूलसंज्ञानि धिष्ण्यानि शूलसंज्ञाश्च वासराः । यायिनां मृत्युदाः शीघ्रमथवा चार्थहानिदाः॥ १७॥ अथात्यावश्यके शूलपरिहारः।

सूर्यवारे घृतं प्राश्य सोमवारे पयस्तथा । गुडमंगारके वारे बुधवारे तिलानपि ॥ १८ ॥ गुरुवारे दधि प्राश्य शुक्रवारे यवानपि । माषान् भुक्त्वा शनेर्वारे गच्छञ्छूले न दोषभाक् ॥ १९ ॥ अन्य उपायः तांबूलं चन्दनं मृच्च पुष्पं दधि घृतं तिलाः । वारशूलहराण्यर्कादिदानाद्धारणतोऽदनात् ॥ २० ॥

(विदिक्शूल) गुरुवार चन्द्रवारको अग्निकोनमें नहीं जावे, और आदित्य, शुक्रवारको नैर्ऋत्यकोणमें तथा बुधवारको ईशानमें और मंगलवारको वायु कोणमें गमन नहीं करे ॥ १४ ॥ (नक्षत्रशूल) ज्येष्ठा नक्षत्र तथा शनि, सोमवारको पूर्वमें दिशाशूल है, पूर्वाभाद्रपद गुरुवारको दक्षिणमें ॥ १५ ॥ रोहिणी, सूर्य, शुक्रवारको पश्चिममें, उत्तराफाल्गुनी तथा मंगल, बुधवारको उत्तरदिशामें दिशाशूल जानना ॥ १६ ॥ (शूलफल) शूल संज्ञावाले नक्षत्र तथा शूलसंज्ञक वार संमुख जानेवालोंको मृत्युदायक हैं और धनका नाश करते हैं ॥ १७ ॥ (अति जरूरतमें सम्मुख दिशाशूलका उपाय) आदित्यवारको गमनसमयमें घृत चाटे, सोमवारको दुग्धपान करे, भौमवारको गुड खावे या दान देवे, बुधवारको तिलदान या भक्षण करे ॥ १८ ॥ गुरुवारके दिन दही खावे, शुक्रवारको यव (जौ) भक्षण करे और शनिवारको माष (उडद) का दान देकर गमन करे तो शूलका दोष नहीं है, यह दिशाशूलका दोष तथा परिहार सम्मुख शूलका ही है कारण कि ज्योतिष शास्त्रमें सम्मुख ही वर्जित है, दक्षिण (दहिना) शूलका कहीं भी निषिद्धका लेख नहीं परंतु लोकाचारको भी धारण करना चाहिये ॥ १९ ॥ (दूसरा उपाय) आदित्यवारको तांबूल, सोमको चंदन, मंगलको मृत्तिका (मिट्टी), बुधको पुष्प, गुरुको दही, शुक्रको घृत, शनिवारको तिल इनका दान तथा धारण या भक्षण करके गमन करे तो शूलका दोष नहीं ॥ २० ॥

अथ कालपाशः । रवावुदीच्यां मरुतीन्दुवारे भौमे प्रतीच्यां निर्ऋतौ बुधे च । याम्ये गुरौ वह्निदिशीह शुक्रे मंदे च पूर्वे प्रवदंति कालम् ॥ २१ ॥ कालस्याभिमुखः पाशो वैपरीत्यं तयोर्निशि । तावुभौ संमुखौ त्याज्यौ वामदक्षिणगौ शुभौ ॥ २२ ॥ अथ यामार्द्धात्मको राहुः । अष्टसु प्रहरार्द्धेषु ८ प्रथमाद्येष्वहर्निशम् । पूर्वस्यां वामतो राहुस्तुर्यांतुर्यां ४ दिशं व्रजेत् ॥ २३ ॥ राहुः प्राच्यां ततो वायुर्दक्षिणेशानपश्चिमे । अग्नावुत्तरनैर्ऋत्यां प्रहरार्द्धे च तिष्ठति ॥ २४ ॥ अथ राहुफलम् ।

ईशान ४	पू र्व १	अग्निय ६
उत्तर ७	राहुचक्रम्.	दक्षिण ३
वायव्य २	पश्चिम	नैर्ऋत्य ८

द्यूते युद्धे विवादे च यात्रायां संमुखस्थितम् राहुं विवर्जयेद्यत्नाद्यदीच्छेत्कर्मणः फलम् ॥ २५ ॥ अन्यच्च । यात्रायां दक्षिणे राहुर्योगिनी वामतः शुभा ॥ २६ ॥

(कालपाश) आदित्यवारको उत्तरदिशामें काल दिनमें रहता है, सोमको वायुकोणमें, मंगलको पश्चिममें, बुधको नैर्ऋत्यकोणमें, गुरुको दक्षिणमें, शुक्रको अग्निकोणमें और शनिवारको पूर्वदिशामें काल रहता है ॥ २१ ॥ और कालके संमुख दिशामें पाश (फांसी) जानना और रात्रिमें दिनसे दोनों विपरीत रहते हैं अर्थात् कालकी दिशामें पाश और पाशकी दिशामें काल हो जाता है सो यह दोनों ही काल तथा पाश संमुख निषिद्ध हैं और वाम भागमें तथा दक्षिणभागमें श्रेष्ठ हैं ॥ २२ ॥ (प्रहरार्द्धसंज्ञक राहु) प्रथम प्रहरसे लेकर आठवें प्रहरतक पूर्व आदि अष्टदिशाओंमें वाम मार्गसे चार चार घडी राहु रहता है अर्थात् प्रथम प्रहरकी पहली चार घडियोंमें तो पूर्वदिशामें रहता है, फिर दूसरे प्रहरकी चार घडियोंमें वायुकोणमें चला जाता है और तीसरे प्रहरमें, दक्षिणमें, चौथे प्रहरमें ईशानमें, पांचवें प्रहरमें पश्चिममें, छठे प्रहरमें अग्निकोणमें, सातवें प्रहरमें उत्तरमें, आठवे प्रहरकी चार घडियोंमें नैर्ऋत्यकोणमें राहु रहता है ॥ २३ ॥ अर्थात् पूर्वसे वायुकोणमें फिर दक्षिणमें, दक्षिणसे ईशानमें फिर पश्चिममें, पश्चात् अग्निकोणमें फिर उत्तरमें, उत्तरसे नैर्ऋत्यकोणमें चार घडी रहता है ॥ २४ ॥ (राहुफल) जूवा, युद्ध, विवाद, यात्रा इत्यादिकार्योंमें यत्नसे संमुख राहु वर्जना चाहिये यदि शुभ फल कार्यकी सिद्धि चाहे तो ॥ २५ ॥ धनाद्यर्थ यात्रामें दक्षिण (दहना) राहु और वामभागमें योगिनी श्रेष्ठ हैं ॥ २६ ॥

अथ योगिनी । प्रतिपन्नवमी १।९ पूर्वे ईशान्यां दर्शका ३० ष्टमी ८ । तृतीयैकादशी ३ । ११ वह्नौ याम्यां पंच ५ त्रयोदशी १३ ॥ २७ ॥ द्वादशी १२ च चतुर्थी ४ च नैर्ऋत्ये योगिनी सदा । षष्ठी ६ चतुर्दशी १४ चैव पश्चिमायां वसेत्सदा ॥ २८ ॥ सप्तमी ७ पूर्णिमा १५ चैव वायव्ये योगिनी वसेत् । द्वितीया २ दशमी १० युक्ता शिवा वसति उत्तरे ॥ २९ ॥ अथ योगिनीफलम् । योगिनी सुखदा वामे पृष्ठे वांछितदायिनी । दक्षिणे धनहन्त्री च संमुखे मरणप्रदा ॥ ३० ॥ [ज्योतिःसारेऽपि] पृष्ठे च शुभदा प्रोक्ता वामे चैव विशेषतः । योगिनी सा भवेन्नित्यं प्रयाणे शुभदा नृणाम् ॥ ३१ ॥ [ज्योतिस्तत्त्वेऽपि]

वामे शुभकरा देवी पृष्ठे सर्वार्थसाधिनी । वधबन्धकरी चाग्रे दक्षिणे मृत्युदायिनी ॥ ३२ ॥ [ज्योतिर्निबन्धेऽपि] दक्षसंमुखयोगिन्यां गमनं नैव कारयेत् । कृते व्याधिमवाप्नोति ह्यर्थहानिं पदेपदे ॥ ३३ ॥ रिपोर्जयार्थिनां याने योगिनी दक्षिणे शुभा । व्यवहारार्थिनां याने वामे शस्ता समीरिता ॥ ३४ ॥

(योगिनी) प्रतिपदा, नवमी को पूर्वदिशामें योगिनी रहती है, अमावास्या, अष्टमीको ईशानकोणमें, तृतीया, एकादशीको अग्निकोणमें, पंचमी, त्रयोदशीको दक्षिणमें रहती है ॥ २७ ॥ द्वादशी. चतुर्थीको नैर्ऋत्यकोणमें, षष्ठी, चतुर्दशीको पश्चिममें और सप्तमी, पूर्णिमाको वायुकोणमें, द्वितीया, दशमीको शिवानाम योगिनी उत्तरदिशामें रहती है ॥ २८ ॥ २९ ॥ (योगिनीफल) वामभागमें योगिनी सुख देती है, पृष्ठ (पिछाडीमें) अर्थात् पीठकी योगिनी मनवांछित कार्य करती है और दहिनी योगिनी चौर, राजा, शत्रु, आदिद्वारा धननाश करती है तथा संमुख योगिनी मृत्युकारक है ॥ ३० ॥ (ज्योतिःसारमें) पिछाडीकी योगिनी शुभकारक और बांई योगिनी अति ही शुभफलके देनेवाली होती है ॥ ३१ ॥ (ज्योतिस्तत्त्वमें भी लिखा है) वामभागमें देवी योगिनी शुभ करनेवाली है, पिछाडीकी संपूर्ण प्रयोजन सिद्ध करती है और संमुख योगिनी वध बंधन करती है तथा दहनी योगिनी मृत्युके देनेवाली है ॥ ३२ ॥ (ज्योतिर्निबंधमें) दहनी और सम्मुख योगिनीमें गमन कदापि नहीं करना चाहिये, यदि करे तो व्याधि (रोग), धननाश हो जावे जहांही होवेगा ॥ ३३ ॥ शत्रुको जीतनेवालोंको दहनी योगिनी श्रेष्ठ है और धन तीर्थ व्यवहार करनेवालोंको यात्रामें बांई योगिनी श्रेष्ठ कही है, परन्तु आजकल भूदेव लोभके तथा ईर्षाके वश होके दहनी योगिनीमें धनाद्यर्थ यात्रा मुहूर्त्त देते हैं सो शास्त्रविरुद्ध है और अशुभ फल ही जहां तहां देखते हैं सो विचार करना चाहिये, दहनी योगिनी देनेमें मुहूर्तचिन्तामणि, मुहूर्त्तमार्तण्ड, मुहूर्त्तगणपति, नृपतिजयचर्या इत्यादि ग्रन्थोंका प्रमाण देते हैं, परन्तु यह नहीं विचारते हैं कि इन ग्रन्थोंमें क्रूरयात्रा राजाको शत्रु जीतनेकी है या धनाद्यर्थके निमित्त सौम्य यात्रामें लेनी लिखी है ॥ ३४ ॥

अथ दिशापरत्वे सम्मुखचन्द्रः । मेषे च सिंहे धनुषीन्द्रभागे वृषे च कन्या मकरे च याम्याम् । तुले च कुम्भे मिथुने प्रतीच्यां कर्कालिमीने दिशि चोत्तरस्याम् ॥ ३५ ॥ **अथ चन्द्रफलम्** सम्मुखे ह्यर्थलाभाय दक्षिणे सुखसम्पदे । पृष्ठतो मरणं दद्याद्वामे चंद्रे धनक्षयः ॥ ३६ ॥ अथ

सम्मुखचंद्रे विशेषफलम् । करणभगणदोषं वारसंक्रांतिदोषं कुतिथिकुलिकदोषं यामयामार्द्धदोषम् । कुजशनिरविदोषं राहुकेत्वादिदोषं हरति सकलदोषं चन्द्रमा सम्मुखस्थः ॥ ३७ ॥ अथ कुंभमीनचंद्रे वर्जित कर्म । शय्यावितान प्रेताग्निक्रिया काष्ठतृणार्जनम् । याम्यदिग्गमनं कुर्यान्न चंद्रे कुंभमीनगे ॥ ३८ ॥

(दिक्चन्द्रमा) मेष १, सिंह ५, धन ९ का चन्द्रमा पूर्वमें रहता है, वृष २, कन्या ६, मकर १० का दक्षिणमें, तुला ७, कुम्भ ११, मिथुन ३ का पश्चिममें और कर्क ४, वृश्चिक ८, मीन १२ का चन्द्रमा उत्तर दिशामें रहता है ॥ ३९ ॥ (चन्द्रफल) संमुख चन्द्रमा धनका लाभ करे, दक्षिण भागमें सुख संपति करे पिछाडी मृत्यु करे और बांयां चन्द्रमा धनका नाश करे ॥ ३६ ॥ (सम्मुख चन्द्रमाका विशेष फल) करणदोष, नक्षत्रदोष, वारदोष, संक्रांतिदोष, दुष्टतिथिदोष, कुलिकदोष, प्रहरार्द्ध वारवेलादोष, मंगल, शनि, रवि, राहु, केतुके दोष सम्मुख चन्द्रमा दूर करता है ॥ ३७ ॥ (पंचकवर्जितकर्म) कुम्भ ११, मीन १२ के चन्द्रमामें खाट बनाना, प्रेतका दाह, प्रेतक्रिया, काष्ठ, घास आदिका लेना, दक्षिणदिशामें गमन इत्यादि कार्य नहीं करने चाहियें ॥ ३८ ॥

अथ घातचन्द्रः । चंद्र १ भूत ५ ग्रहा ९ नेत्र २ रस ६ दिग् १० वह्नि ३ सागराः ७ । वेदा ४ ष्टक ८ शिवा ११ दित्या १२ घातचंद्राः प्रकीर्त्तिताः ॥ ३९ ॥ प्रयाणकाले युद्धे च कृषौ वाणिज्यसंग्रहे । वादे चैव गृहारंभे घातचंद्रं तु वर्जयेत् ॥ ४० ॥ अथ घाततिथ्यादि । घाततिथिं घातवारं घातनक्षत्रमेव च । यात्रायां वर्जयेत्प्राज्ञैरन्यकर्मसु शोभनम् ॥ ४१ ॥ मेषे रविर्मघा प्रोक्ता षष्ठी प्रथमचंद्रमाः । वृषभे पंचमो हस्तश्चतुर्थी शनिरेव च ॥ ४२ ॥ मिथुने नवमः स्वाती अष्टमी चंद्रवासरः । कर्के द्विरनुराधा च बुधः षष्ठी प्रकीर्त्तिता ॥ ४३ ॥ सिंहे षष्ठश्चंद्रमाश्च दशमी शनिमूलके । कन्यायां दशमश्चंद्रः श्रवणः शनिरष्टमी ॥४४॥ तुले गुरुर्द्वादशी स्याच्छतं तृतीयचन्द्रमाः । वृश्चिके रेवती सप्त ७ दशमी भार्गवस्तथा ॥४५॥ चापे चतुर्थो भरणी द्वितीया भार्गवस्तथा । मकरेऽष्टमी रोहिणी द्वादशी भौमवासरः ॥ ४६ ॥ कुंभ एकादशश्चार्द्रा चतुर्थी गुरुवासरः । मीने च द्वादशः सार्ध द्वितीया भार्गवस्तथा ॥ ४७

(घातचंद्रविचार-इसमें यह वचन है) मेषराशिको जन्म १ का चन्द्रमा घातक है, वृषको पांचवां, मिथुनको नौवां, कर्कको दूसरा, सिंहको छठा, कन्याको दशवां, तुलाको तीसरा, वृश्चिकको सातवां, धनको चौथा, मकरको आठवां, कुंभको ग्यारहवां, मीनको बारहवां चन्द्रमा घातक है ॥ ३९ ॥ धनाद्यर्थ यात्रामें, युद्धमें, खेती करनेमें, वाणिज्य संग्रहमें और विवादमें तथा गृहारंभमें घातक चन्द्रमा वर्जना चाहिये ॥ ४० ॥ (घाततिथ्यादि) घाततिथि, घातवार, घातनक्षत्र संपूर्ण यात्रामें ही वर्जित हैं परंतु अन्यकार्योंमें तो श्रेष्ठ जानने ॥ ४१ ॥ मेषराशिको आदित्यवार, मघानक्षत्र, षष्ठीतिथि, जन्मका चन्द्रमा घातक जानना, वृषराशिको पांचवां चन्द्रमा, हस्त, चतुर्थी, शनिवार घातक हैं ॥ ४२ ॥ मिथुनको नौवां चन्द्रमा, स्वाती, अष्टमी, सोमवार घातक हैं । कर्कको दूसरा चन्द्रमा, अनुराधा, बुध, षष्ठी तिथि घातक हैं ॥ ४३ ॥ सिंहको छठा चन्द्रमा, दशमी, शनि, मूल नक्षत्र और कन्याको दशवां चन्द्रमा, श्रवण, शनिवार, अष्टमी घातक हैं ॥ ४४ ॥ और तुलाको गुरुवार, द्वादशी, तीसरा चंद्रमा, शतभिषा नक्षत्र घातक है, वृश्चिकको रेवती, दशमी, सातवां चन्द्रमा, शुक्रवार घातक हैं ॥४५॥ धनको चौथा चन्द्रमा, भरणी, द्वितीया, शुक्रवार घातक हैं और मकर राशिको आठवां चन्द्रमा, रोहिणी, द्वादशी, मंगलवार घातक हैं ॥ ४६ ॥ कुंभको ग्यारहवां चन्द्रमा, आर्द्रानक्षत्र, चतुर्थी, गुरुवार घातक हैं और मीन राशिको बारहवां चन्द्रमा, आश्लेषानक्षत्र, द्वितीया, शुक्रवार घातक हैं ॥ ४७ ॥

रा.	मे.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
चंद्र.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
वार	रवि	श.	सो.	बु.	शनि	श.	गु.	शु.	शु.	मं.	गु.	श.
नक्ष.	मघा	ह.	स्वा.	अनु.	म.	श्र.	शत.	रे.	भ.	रो.	आ.	आ.
तिथि.	५	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

अथ दिगीशा ग्रहाः । रविः शुक्रो महीसुनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः बुधो बृहस्पतिश्चेति दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ दिगीशाहे शुभा यात्रा पृष्ठाहे मरणं ध्रुवम् ॥ ४८ ॥ अथ दिग्द्वारराशयः । पूर्वादिदिक्षु मेषाद्याः क्रमाद्दिग्द्वारराशयः । न तच्छुद्धिवशात्सर्वे तद्दिग्यातुः शुभप्रदाः । तद्वर्गाश्च तदंशाश्च ज्ञातव्या वै तथाविधाः ॥ ४९ ॥

---

१ नारदः-यात्रायां युद्धकार्येषु घातचंद्रं विवर्जयेत् । विवाहे सर्वमांगल्ये चौलादौ व्रतबंधने । घातचंद्रो नैव चिंत्य इति पाराशरोऽब्रवीत् ॥

(दिगीश ग्रह) रवि पूर्वका अधिपति १, शुक्र अग्नि कोणका २, मंगल दक्षिणका ३, राहु नैर्ऋत्यकोणका ४, शनि पश्चिमका ५, चन्द्रमा वायव्य कोणका ६, बुध उत्तरका ७, बृहस्पति ईशान कोणका ८ अधिपति है। दिशाके मालिकके वारको यात्रा करे तो शुभ है, और पीठके वारकी यात्रामें मरण होता है ॥ ४८ ॥ (दिग्द्वाराशि) मेष १, सिंह ५, धन ९ पूर्वकी दिग्द्वार राशि हैं, वृष २, कन्या ६, मकर १० दक्षिणकी दिग्द्वार राशि जाननी, मिथुन ३, तुला ७, कुंभ ११ पश्चिमकी दिग्द्वार राशि हैं और कर्क ४, वृश्चिक ८, मीन १२ उत्तरकी दिग्द्वार राशि जाननी। दिग्द्वारकी शुद्धिके विना और दिग्द्वार राशिके तथा इनके नवांशक बलके विना यात्रा शुभफलदायक नहीं होती है ॥ ४९ ॥

अथ लग्नविचारः । चरलग्ने प्रयातव्यं द्विस्वभावे तथा नरैः । लग्ने स्थिरे न गतव्यं यात्रायां क्षेममीप्सुभिः ॥ ५० ॥ द्वितीयः प्रकारः । लग्ने कार्मुक ९ मेष १ तौलिनि ७ गमे कार्यं विलंबान्नृणां पंचत्वं मकरे तथैव च घटे ११ तद्वत्फलं वृश्चिके । सिंहे कर्कटके वृषे परिगतः सर्वार्थसिद्धिं लभेत्कन्यामीनगतस्तथैव मिथुने सौख्यं शुभान्नं बहु ॥ ५१ ॥ अथ स्थिरलग्नपरिहारः । दिग्द्वारभे लग्नगते यात्राऽर्थविजयप्रदा । लग्ने दिक्प्रतिलोमे सा हानिदा शत्रुभीतिदा ॥ ५२ ॥ जन्मराशौ लग्नगते तदीशे वा विलग्नगे। अभीष्टफलदा यात्रा राशीशश्चेच्छुभो ग्रहः ॥ ५३ ॥ अथ त्याज्यलग्नौ । कुंभः कुंभनवांशश्च लग्ने त्याज्यः प्रयत्नतः । मीनलग्ने तदंशे वा यातुर्मार्गोऽतिदुःखदः ॥ ५४ ॥ अथ समयबलयात्रा । पूर्वाह्णेऽप्युत्तरां गच्छेत्प्राचीं मध्यंदिने तथा । दक्षिणां चापराह्णे तु पश्चिमामर्द्धरात्रिके ॥ ५५ ॥ न तत्रांगारकौ विष्टिर्व्यतीपातो न वैधृतिः । सिद्ध्यंति सर्वकार्याणि यात्रायां दक्षिणे रवौ ॥ ५६ ॥

(लग्नविचार) चरलग्नमें अर्थात् मेष १, कर्क ४, तुला ७, मकर १० लग्नोंमें और द्विस्वभाव अर्थात् मिथुन ३, कन्या ६, धन ९, मीन १२ लग्नोंमें यात्रा करनी चाहिये. परंतु स्थिरलग्नोंमें अर्थात् वृष २, सिंह ५, वृश्चिक ८, कुंभ ११ इन लग्नोंमें कदापि कल्याणकी कामनावाला गमन नहीं करे ॥५०॥ (दूसरा प्रकार) धन ९, मेष १, तुला ७ इन लग्नोंमें गमन करनेसे कार्य विलंबसे सिद्ध होता है और मकर १०, कुम्भ ११, वृश्चिक ८ यह लग्न मृत्युकारक हैं, सिंह ५, कर्क ४, वृष २ इनमें गमन कर-

नेसे संपूर्ण प्रयोजन सिद्ध होते हैं, और कन्या ६, मीन १२, मिथुन ३ लग्नोंमें जानेसे सुख, अन्न, धनप्राप्ति होवे ॥ ५१ ॥ (स्थिरलग्न परिहार) यद्यपि लग्न स्थिर हो परंतु दिग्द्वारलग्न हो तो विजय, लाभकी देनेवाली यात्रा होती है और लग्न यदि चर भी है परंतु दिक्प्रतिलोम अर्थात् पीठ पीछेके लग्नमें गमन करनेसे हानि और शत्रुभय होता है ॥ ५२ ॥ यदि जन्मकी राशि यात्राके लग्नमें हो अथवा राशिका पति लग्नमें हो तो जानेवालेके मनोरथकी सिद्धि देनेवाली यात्रा होती है, परंतु राशिका पति शुभग्रह होना चाहिये ॥ ५३ ॥ (त्याज्यलग्न) कुम्भलग्न और कुम्भका नवांशक यात्राके लग्नमें सर्वथा त्याग देना चाहिये और मीन लग्न अथवा मीनका नवांशक भी जानेवालेको मार्गमें दुःख देता है इसलिये त्याज्य है ॥ ५४ ॥ (समयबल यात्रा) उत्तर दिशामें प्रातःकाल गमन करे. पूर्वको मध्याह्नमें और दक्षिणको अपराह्णमें अर्थात् तीसरे प्रहर और पश्चिमको अर्द्धरात्रिमें गमन करना चाहिये ॥ ५५ ॥ इस प्रकार समय बलको देखके गमन करनेसे मंगलका दोष, भद्रा, व्यतीपात, वैधृतिका दोष भी नहीं लगता है और संपूर्ण कार्य सिद्ध होते हैं, क्योंकि उसवक्त रवि दक्षिण (दहना) रहता है ॥ ५६ ॥

अथाभिजिन्मुहूर्त्तप्रशंसा । सर्वेषां वर्णानामभिजित्संज्ञको मुहूर्त्तः स्यात् । अष्टमो दिवसस्यार्द्धे त्वभिजित्संज्ञकः क्षणः ॥ ५७ ॥ स ब्रह्मणो वरान्नित्यं सर्वकामफलप्रदः । चक्रमादाय गोविन्दः सर्वान् दोषान्निकृन्तति ॥ ५८ ॥ अभिजिन्न बुधे शस्तं याम्यां तु गमने तथा । अन्यदिग्गमने शस्तं सर्वसिद्धिः प्रजायते ॥ ५९ ॥ तिथ्यादिषु निषिद्धेषु चंद्रताराविलोमतः । उषां गोधूलियोगं वा स्वीकृत्य गमनं भवेत् ॥ ६० ॥ प्राच्यामुषां प्रतीच्यां च गोधूलिं वर्जयेन्नरः । दक्षिणे चाभिजिच्चैवमुत्तरे च निशां तथा ॥ ६१ ॥

(अभिजित् मुहूर्त्त) संपूर्ण वर्णोंको अभिजित् मुहूर्त गमन करनेमें श्रेष्ठ है और अभिजित् मध्याह्नमें आठवां मुहूर्त्त होता है ॥ ५७ ॥ यह अभिजित् मुहूर्त्त ब्रह्माके वरदानसे सर्व काम फलका देनेवाला है और भगवान् गोविंद चक्र लेके संपूर्ण दोषोंको दूर करते हैं ॥ ५८ ॥ परंतु यह अभिजित् मुहूर्त्त बुधवारको तथा दक्षिणकी यात्राको वर्जनीय है और अन्य दिशाओंमें गमन करनेसे सर्व सिद्धि देता है ॥ ५८ ॥ यदि तिथि, वार, नक्षत्र, आदि निषिद्ध हों और चंद्र, तारा विलोम अर्थात् वामभाग अथवा पृष्ठभागमें हों और जानेकी जरूरत हो तो उषाकालमें अर्थात् सूर्योदयसे पहले या गोधू-

लिक लग्नमें जाना श्रेष्ठ है ॥ ६० ॥ परंतु पूर्वदिशामें उषाकाल वर्जनीय है और पश्चिमदिशामें गमन करते समय गोधूलिक निषिद्ध है और दक्षिण जानेवालेको अभिजित् और उत्तर यात्रामें अर्द्धरात्रि त्याज्य हैं ॥ ६१ ॥

अथ यात्रायां जन्मराशितश्चन्द्रविचारः । चतुर्थे द्वादशे चन्द्रे वारे भौमशनैश्चरे । प्रस्थितेऽपि न गन्तव्यमत्यन्तंगर्हिते दिने ॥ ६२ ॥ जन्मभे जन्ममासे वा यो गच्छेदष्टमे विधौ । आयुःक्षयमवाप्नोति व्याधिं च बधबन्धने ॥ ६३ ॥ अथ चन्द्रताराबलप्रशंसा । न विष्कंभो न वा गंडो न व्यतीपातवैधृती । चन्द्रताराबले प्राप्ते दोषा गच्छन्त्यसं-मुखाः ॥ ६४ ॥ अथ यात्रायां शुक्रास्तादिदोषः । शुक्रे वाऽस्तं गते जीवे चन्द्रे वाऽस्तमुपागते । वयोर्बाल्ये वार्द्धके च सा यात्रा भयरोगदा ॥ ६५ ॥ वक्रे नीचगते खेटैर्जिते चाऽस्तं गते भृगौ । यात्रां नैव प्रकुर्वीत लक्ष्म्यायुर्बलहानिदा ॥ ६६ ॥ अथ प्रतिशुक्रम् । दिशि यत्रोदेति शुक्र-स्तां दिश न व्रजेन्नरः ॥ न व्रजेत्संमुखे ज्ञेऽपि शुभः पृष्ठेऽपि वामतः ॥ ६७ ॥ प्रतिशुक्रकृतं दोषं हंति शुक्रो ग्रहा नहि । भृग्वादिगोत्रजातानां न दोषः प्रतिशुक्रजः ॥ ६८ ॥

(चंद्रविचार) चौथे तथा बारहवें चन्द्रमामें और मंगल शनिवारको तथा निंदित (खराब) दिनमें प्रस्थान रखदिया हो तो भी गमन नहीं करे ॥ ६२ ॥ जन्मनक्षत्र, जन्ममास, अष्टम चंद्रमें गमन करे तो आयुःक्षय व्याधि (रोग) वध, बंधनको प्राप्त होता है ॥ ६३ ॥ (चंद्रताराबल-प्रशंसा) यदि तारा तथा चंद्रमा बलवान् हो तो विष्कंभ, गंड, व्यतीपात, वैधृति आदि बहुतसे दोष नष्ट होजाते हैं ॥ ६४ ॥ (शुक्रका अस्तादिदोष विचार) शुक्रका अस्त हो या जीव (बृहस्पति) अस्त हो या चंद्र अस्त हो अथवा शुक्र बृहस्पति बालक या वृद्धि हों तो यात्रा भय, रोगकी देने-वाली होती है ॥ ६५ ॥ और शुक्र वक्री हो या नीचका अर्थात् कन्याका हो या अन्य ग्रहों करके जीता हुआ हो या अस्तका हो तो यात्रा नहीं करनी चाहिये, क्योंकि लक्ष्मी, आयु, बलहानिके देनेवाली होती है ॥ ६६ ॥ (सम्मुखशुक्रविचार) जिस दिशामें शुक्र उदय होता हो या बुध उदय होता हो उस दिशामें गमन नहीं करे यदि पृष्ठभागमें, या वामभागमें, हो तो शुभ है ॥ ६७ ॥ संमुख शुक्रका दोष शुक्र ही दूर कर सकता है अन्य सूर्यादि ग्रह नहीं करसकते हैं परंतु भृगुगोत्रमें जन्मनेवालोंको संमुख शुक्रका दोष नहीं है ॥ ६८ ॥

अथ प्रतिशुक्रदोषापवादः । रेवत्यां मेषगे चन्द्रे भवत्यंधो भृगोः सुतः।यात्रादौ नैव दोषाय संमुखे दक्षिणेऽपि वा ॥ ६९ ॥ वसिष्ठः काश्यपेयोऽत्रिर्भरद्वाजः सगौतमः । एतेषां पंचगोत्राणां प्रतिशुक्रो न विद्यते ७०॥ अथ सामान्ययात्रायां प्रतिशुक्रादिदोषाभावः । नृणां प्रथमयात्रायां प्रतिशुक्रादिदूषणम् । जयार्थिनो नृपस्यापि नान्येषां तु कदाचन ॥ ७१ ॥ अर्द्धोदयोपरागादौ पुण्ययोगे सुदुर्लभे । तीर्थार्थी तु सुखं यायात्कालेष्वस्तादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥ एकग्रामे विवाहे च दुर्भिक्षे राजविप्लवे । द्विजक्षोभे नृपक्षोभे प्रतिशुक्रो न विद्यते ॥ ७३ ॥ अथ प्रथमयात्रायामावश्ये प्रतिशुक्रे दानम् । सितमश्वं सितं छत्रं हेम मौक्तिकसंयुतम् । ततो द्विजातये दद्यात्प्रतिशुक्रप्रशांतये ॥ ७४ ॥

(संमुख शुक्रके दोषका परिहार) रेवती नक्षत्रमें और मेषराशिमें चंद्रमा रहे तबतक शुक्र अंधा रहता है, सो यात्रामें और स्त्रियोंके आनेजानेमें सन्मुख या दक्षिण शुक्रका दोष नहीं है ॥ ६९ ॥ और वसिष्ठ, काश्यप, अत्रि, भारद्वाज और गौतम इन पांच गोत्रोंमें जन्मनेवालोंको संमुख शुक्रका दोष नहीं है ॥ ७० ॥ (दूसरी रीतिसे संमुख शुक्रका परिहार) मनुष्योंको प्रथम (नवीन) यात्रामें और जयकी कामनावाले, राजाके गमनमें संमुख शुक्रका दोष है और सदैव जाने आने वालोंको दोष नहीं है ॥ ७१ ॥ और अर्द्धोदय योगमें या सूर्य चंद्रमाके ग्रहणमें और अन्य कोई दुर्लभ पुण्य योगमें तीर्थयात्रा जानेवालेको शुक्रके अस्तका या सन्मुखका दोष नहीं ॥ ७२ ॥ और एकग्राम या नगरके जाने आनेमें और विवाहमें, दुर्भिक्षमें, राजनाश होनेमें, ब्राह्मणोंके क्रोधमें और राजके भयमें संमुख शुक्रका दोष नहीं है ॥ ७३ ॥ (प्रथम यात्राकी जरूरतमें शुक्रदान) श्वेत घोडा १, श्वेत छत्र १, सुवर्ण, मोती सच्चा ब्राह्मणको दान देकर गमन करे तो प्रतिशुक्रका दोष नहीं है ॥ ७४ ॥

अथ लग्नशुद्धिः । हित्वा सप्तमगं शुक्रं केंद्रे १।४।७।१० कोणे ९।५ शुभाः शुभाः । पापाश्चोपचये ३।१०।११।६ शस्ता याने नो दशमः १० शनिः ॥ ७५ ॥ चन्द्रस्तु गमने नेष्टो लग्न १ रि ६ व्यय १२ रंध्रगः ८ । द्यूने७षष्ठा ६ष्ट ८ रिःफ १२ स्थो लग्नेशोऽपि न शोभनः ॥ ॥ ७६ ॥ बुधेज्यभृगुपुत्राणामेकश्चेत्केंद्र १।४।७।१० कोणगः ९ । ५ ।

तथा योगोऽत्र गमने क्षेमो भवति यायिनाम् ॥ ७७ ॥ लग्नदोषाश्च ये केचिद् ग्रहदोषास्तथाऽपरे । ते सर्वे विलयं यांति लग्ने गुरुभृगू यदा ॥७८॥ **अथाऽवश्यके होराप्रकारः** । वारात्षष्ठस्य षष्ठस्य होरा सार्द्धत्रिनाडिका । अर्कशुक्रौ बुधश्चंद्रो मंदो जीवधरासुतौ ॥ ७९ ॥ गुरुर्विवाहे गमने च शुक्रो बुधश्च बोधे सकलेषु चन्द्रः । कुजे च युद्धं रविराजसेवा मन्दे च वित्तं त्विति होरयोगाः ॥ ८० ॥ यस्य ग्रहस्य वारेऽपि कर्म किंचित्प्रकीर्त्तितम् । तस्य ग्रहस्य होरायां सर्वं कर्म विधीयते ॥ ८१ ॥

(लग्नशुद्धि) एक सप्तम स्थानमें शुक्रके विना केन्द्र अर्थात् लग्न १, चतुर्थ, सप्तम, दशम स्थानोंमें और त्रिकोण नवम, पंचम स्थानोंमें शुभग्रह शुभ जानना और उपचय अर्थात् तीसरे, छठे, दशवें, ग्यारहवें, पापग्रह श्रेष्ठ हैं परन्तु शनैश्चर दशवें स्थानमें श्रेष्ठ नहीं है ॥ ७५ ॥ और यात्रामें लग्न १, छठे, बारहवें, आठवें चन्द्रमा निषिद्ध है और सातवें, छठे, आठवें, बारहवें लग्नका स्वामी भी नेष्ट है ॥ ७६ ॥ यदि बुध, बृहस्पति, शुक्रमेंसे एक भी ग्रह केन्द्रमें १ । ४ । ७ । १० अथवा त्रिकोणमें ९ । ५ हो तो जानेवालोंको कल्याण करनेवाला योग है ॥ ७७ ॥ और यदि लग्नमें बृहस्पति या शुक्र हो तो लग्नदोष ग्रहदोष सम्पूर्ण विलय होजाते हैं ॥ ७८ ॥ (अब आवश्यक यात्राके लिये होरा अर्थात् दुघडिया मुहूर्त लिखते हैं) जो वार हो उसी वारकी होरा (चौघडिया) प्रथम प्रातःकाल ३॥ घडीकी होती है, फिर उसी वारसे छठे छठे वारकी होरा जाननी, जैसे आदित्यवारको प्रथम आदित्यकी, फिर दूसरी शुक्रकी, तीसरी बुधकी, चौथी चन्द्रमाकी, पांचवी शनिकी, छठी बृहस्पतिकी, सातवीं मंगलकी जाननी इसीतरह सोमवार आदि वारोंमें जाननी चाहिये ॥ ७९ ॥ गुरुकी होरामें विवाह करना, शुक्रकीमें यात्रा, बुधकीमें विद्यारंभ और संपूर्ण कार्योंमें चन्द्रमाकी होरा श्रेष्ठ है और मंगलकी होरामें युद्ध, रविकी होरामें राजसेवा, शनिकी होरामें धनस्थापन करना श्रेष्ठ है ॥ ८० ॥ और जिस वारमें जो कर्म करना लिखा है सो उस ग्रहकी होरामें कार्य कर, लेना चाहिये ॥ ८१ ॥

अथ यात्रायां निषिद्धानि । प्रतिष्ठोद्वाहमुत्साहं व्रतं चौलं चसूतकम् । अस्तमाप्य न गंतव्यमार्त्तवं योषितामपि ॥ ८२ ॥ **अथाऽकालवृष्टिः** । पौषादिचतुरो मासान्प्राप्ता वृष्टिरकालजा । व्रतयात्रादिकं तत्र वर्जयेत्सप्त वासरान् ॥ ८३ ॥ **मतांतरम्** । मार्गान्मासात्प्रभृति मुनयो व्यासवाल्मी-

किगर्गाश्चैत्रं यावत्सलिलपतने नेति कालं वदंति । नाडीजंघः सुरगुरुमुनिर्वक्ति वृष्टेरकालौ मासावेतौ न शुभफलदौ पौषमाघौ न शेषाः ॥ ८४ ॥ [यस्मिन् देशे यो वर्षाकालस्ततोऽन्यत्राकालवृष्टिरिति सिद्धांतः] भूयान् दोषो महोवृष्टावल्पदोषोऽल्पवर्षणे । न दोषो वृष्टिजस्तावद्यावद्भूर्न पदांऽकिता ॥ ८५ ॥ त्र्यहे पौषे द्व्यहं माघे दिनमेकं तु फाल्गुने । चैत्रे घटीद्वय दोषो नायं गर्भसमुद्भवे ॥ ८६ ॥

(यात्रामें निषिद्धकर्म) प्रतिष्ठा, विवाह, उत्साह, यज्ञोपवीत, चौलकर्म, सूतक, स्त्रीके रजोदर्शनकी शुद्धि इत्यादि कार्य हों तो समाप्ति होजानेके पहले गमन नहीं करना चाहिये ॥ ८२ ॥ (अकालवृष्टि विचार) पौष, माघ, फाल्गुन, चैत्र इन चार मासमें वृष्टि हो तो अकालवृष्टि (वर्षा) जाननी, सो यह अकाल वृष्टि होनेसे सात रोजतक यज्ञोपवीत, यात्रा आदि शुभ कार्य नहीं करने योग्य हैं, यह नारदका मत है ॥ ८३ ॥ (दूसरा मत कहते हैं) मृगशिरको आदिलेके चैत्रतक व्यास, वाल्मिकि, गर्ग आदि महर्षि अकालवर्षा मानते हैं और नाडीजंघ ऋषि तथा बृहस्पति अकालवृष्टिके पौष, माघ यह दो मास ही कहते हैं अन्य नहीं ॥ ८४ ॥ [अब यहां निर्णय होना चाहिये कारण कि यहां जो तीन पक्ष वर्णन किये सो तीनों ही मान्य हैं, परन्तु जिस देशमें जो वर्षाका काल है जिस वर्षासे अन्न पैदा होता है उसीको वर्षाकाल समझना चाहिये और उससे अन्यकालको अकालवृष्टिका काल जानना यह सिद्धांत है, और मारवाडदेशमें तो ज्येष्ठ, आषाढ, श्रावण, भाद्रपद, आश्विनके विना संपूर्ण ही मास अकालवृष्टिके हैं] इस अकालवृष्टि समयमें ज्यादा वर्षा हो तो बहुत दोष जानना, यदि कम् वर्षा हो तो थोडा दोष जानना, यदि बिलकुल ही थोडी वर्षा हो तो जबतक पृथिवीपर मनुष्य आदिके पदचिह्न न हों या सूखी हुई रेती न निकले तब तक दोष नहीं जानना चाहिये ॥ ८५ ॥ पौषमें वर्षा हो तो तीन दिन, माघमें दो दिन, फाल्गुनमें एक दिन, चैत्रमें दो घडी शुभकार्योंमें त्याज्य हैं यदि बादल ही हुआ हो तो दोष नहीं है ॥ ८६ ॥

अथावश्यकेऽकालवृष्टिदोषपरिहारः । सूर्याचंद्रमसोर्बिंबे कृत्वा हेममये तदा । दत्त्वा नत्वा नरो यायात्कार्येऽत्यावश्यके सति ॥ ८७ ॥ अथैकस्मिन्दिने यात्राप्रवेशयोर्विचारः । एकस्मिन्नपि दिवसे यदि चेद्गमनं प्रवेशश्च । प्रतिशुक्रवारशूलं न चिंतयेद्योगिनीपूर्वम् ॥ ८८ ॥

प्रवेशनिर्गमौ स्यातामेकस्मिन्नपि वासरे । तदा प्रावेशिकं चिंत्यं बुधैर्नैव तु यात्रिकम् ॥ ८९ ॥ प्रवेशान्निर्गमश्चैव निर्गमाच्च प्रवेशनम् । नवमे जातु नो कुर्य्याद्दिने वारे तिथावपि ॥ ९० ॥ अथ यात्रादिनकृत्यम् । हुताशनं तिलैर्हुत्वा पूजयेत्तु दिगीश्वरम् । तथा प्रणम्य भूदेवानाशीर्वादैर्नरो व्रजेत् ॥ ९१ ॥ अथ त्याज्यकर्माणि । क्रोधक्षौररतिश्रमामिषगुडद्यूताश्रुदुग्धासवः क्षाराभ्यंगभयार्ऽसितांबरवमीस्तैलं कटूज्झेदिमे । क्षीरक्षौररतीः क्रमात्त्रि ३ शर ५ सप्त ७ हं परं तद्दिने रोगं स्यार्तवकं सितान्यतिलकं प्रस्थानकेऽपीति च ॥ ९२ ॥ यात्राकाले तु संप्राप्ते मैथुनं यो निषेवते । रोगार्त्तः क्षीणकोशश्च स निवर्त्तेत वा नवा ॥ ९३ ॥ अवमान्य स्त्रियं विप्रान् विरुद्धच स्वजनैः सह । ऋतुमत्यां च भार्यायां गच्छन्मृत्युमवाप्नुयात् । ९४ ॥ ऋतुस्नानोत्तरं नार्या यात्रा त्वावश्यकी यदि । कृतभोगो नरो यायाद्दानं शांतिं विधाय च ॥ ९५ ॥

अकाल वर्षाके परिहार) यदि अकाल वर्षा होगयी हो और यात्रा जानेकी जरूरत हो तो सुवर्णका सूर्य और चन्द्रमा बनाके ब्राह्मणको दान करे और नमस्कार करके गमन करे ॥ ८७ ॥ (गमन प्रवेशका विचार) यदि एक ही दिनमें गमन और प्रवेश हो तो संमुख शुक्र, वारशूल, योगिनी आदि नहीं देखने चाहियें ॥ ८८ ॥ और एक दिनके गमन प्रवेशमें प्रवेशका ही मुहूर्त्त लेना योग्य है और गमनके मुहूर्त्तकी कोई जरूरत नहीं है ॥ ८९ ॥ और प्रवेशसे पहले दिनमें गमन और गमनसे नौवें दिनक वार तिथियोंमें प्रवेश कदापि नहीं करना ॥ ९० ॥ (यात्रादिनकर्म) अग्निमें तिलोंका होम करके तथा दिशाके पतिको और ब्राह्मणोंको पूजके प्रणाम करे फिर आशीर्वाद लेकर गमन कर ॥ ९१ ॥ (त्याज्यकर्म) क्रोध, क्षौर (हजामत), स्त्रीसंग, खेचल, मांस, गुडभक्षण, जूवा, अश्रुपात (रोना) दुग्ध, मद्यपान, खारभक्षण, तैलाभ्यंग, भय, कालावस्त्र, वमन, तैल अथवा कडवा पदार्थ भक्षण नहीं करे, परंतु दुग्धपान तीन दिन पहले, और क्षौर (हजामत) पांच दिन पहले, स्त्रीसंग सात दिन पहले, और यदि स्त्री रजस्वला हो जावे या रोग हो जावे तो यात्राका दिन अर्थात् मुहूर्त्त ही त्याग देना चाहिये और श्वेतचंदनके विना तिलक नहीं करना योग्य है ॥ ९२ ॥ यात्राके समय जो पुरुष स्त्रीसंग करता है सो रोगयुक्त और धनरहित होकर पीछा आता है अथवा नहीं भी आता है ॥ ९३ ॥ जो कोई पुरुष अपनी स्त्रीका, ब्राह्मणोंका या माता, पिता भाई,

बांधवोंका तिरस्कार करके अथवा उनके साथ वैर करके तथा रजस्वला स्त्रीको ऋतुदान दिये विना गमन करता है सो मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ९४ ॥ यदि रजस्वला स्त्रीने शुद्धिस्नान करलिया हो और जानेकी अत्यंत ही जरूरत हो तो ऋतुदान देकर तथा शांति करके स्त्रीका संग करे तदनंतर गमनके करनेमें दोप नहीं है ॥९५॥

अथ गमनसमयकृत्यम् । स्वस्य देवस्य वा गेहाद्गुरोर्वा मुख्ययोषितः । हविष्यं प्राश्य मतिमान् ब्राह्मणैरनुमोदितः ॥ ९६ ॥ एवं सन्मंगलान्येव संयायाद्विजयी नरः । गम्यदिक्संमुखं दत्त्वा वहन्नाडीपदं पुरः ॥ ९७ ॥ व्रजेद्दिगीशं हृदये निधाय यथेंद्रमैंद्र्यामपराश्च तद्वत् । सुशुक्लमाल्यांबरभृन्नरेंद्रो विसर्जयेद्दक्षिणपादमादौ ॥ ९८ ॥ स्नातः सितांबरधरः सुमनाः सुवेशः सपूजिताऽमरगुरुद्विजगोदिगीशः । कृत्वा प्रदक्षिणशिखं त्रिशिखं कृताशीर्गच्छेन्नरः शकुनसूचितकार्यसिद्धिः ॥ ९९ ॥ निमित्तशकुनादिभ्यः प्रधानो हि मनोजयः । तस्माद्यियासतां नृणां फलसिद्धिर्मनोजयात् ॥ १०० ॥

(गमनसमयकृत्य) निज (अपने) घरमें या देवालयमें गुरुके घरमें या अपनी मुख्य प्यारी स्त्रीके स्थानमें उत्तम पदार्थ भक्षण करके और ब्राह्मणोंके हुकुम लेके ॥ ९६ ॥ श्रेष्ठ मांगलिक शब्द सुनता हुआ लाभकी कामनावाला मनुष्य गमन करे, परंतु जिस दिशामें जाना हो उसी दिशाके संमुख खडा होके तथा जो स्वर चलता हो उसी पाँवको अगाड़ी रखके गमन करना चाहिये ॥ ९७ ॥ प्रथम तो दिशाके अधिपतिका हृदयमें ध्यान करे, जैसे पूर्वको जानेवाला इंद्रका, और दक्षिणको जानेवाला धर्मराजका, पश्चिमको वरुणका, उत्तरको कुबेरका ध्यान करके शुद्ध श्वेतवस्त्र धारण करे अगाड़ी दक्षिण (दहना) पैर रखके गमन करे ॥ ९८ ॥ परन्तु स्नान और श्वेतवस्त्र धारण करके प्रसन्नचित्तसे देवता, गुरु, ब्राह्मण, गौ, दिशाधिपतिका पूजन करे और उनकी आशिष लेकर अग्निको परिक्रमा देवे फिर उत्तम शकुन देखता हुआ कार्यकी सिद्धिके अर्थ गमन करे ॥ ९९ ॥ शकुन, मुहूर्त्त आदिसे प्रधान चित्तकी प्रसन्नता है इस वास्ते जब चित्त प्रसन्न हो तब जानेवालोंके कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १०० ॥

अथ स्वरविचारः । शशिप्रवाहे गमनादि शस्तं सूर्यप्रवाहे नहि किंचनापि । प्रष्टुर्जयः स्याद्वहमानभागे रिक्ते च भागे विफलं समस्तम् ॥१०१॥अस्मिन्विशेषः । अथ चंद्रस्वरकृत्यम् । प्रवेशोद्वाहयात्राश्च

वस्त्रालंकारधारणम् । संधिः शुभानि कर्माणि कर्याणींदुस्वरोदये ॥१०२॥ अथ सूर्यस्वरकृत्यम् कुर्यात्सूर्यस्वरे युद्धं व्यवहारं च भोजनम् । मैथुनं विग्रहं द्यूतं स्नानं भंगं भयं तथा ॥ १०३ ॥ अथ नाडीलक्षणम् । नाडीडा वामगा चांद्री पिंगला दक्षिणा रवेः । सुषुम्ना शांभवी मिश्रा सा तु योगींद्रगोचरा ॥१०४॥ अथ सुमुहूर्त्ते स्वगमनविलंबे प्रतिनिधित्वेन प्रस्थानम् । तस्मिन्मुहूर्त्ते स्वयमप्रयाणे प्रयोजनापेक्षतया च दैवात् । गंतव्यदेशाभिमुखप्रदेशे प्रस्थानमाहुः शुभदं नराणाम् ॥ १०५ ॥ अथ प्रस्थानद्रव्याणि । यज्ञोपवीतकं शस्त्रं मधु च स्थापयेत्फलम् । विप्रादिक्रमतः सर्वे स्वर्णधान्यांबरादिकम् ॥ १०६ ॥ छत्राद्यं ध्वजमक्षसूत्रमथवा यज्ञोपवीतं द्विजैर्वैश्यस्य स्वकदेहवस्त्रतुरगौ क्षत्रस्य खड्गो धनुः । ग्रामोपांतनदीद्विजामरगृहोद्याने च वापीतटे स्थाने चापि मनोरमे प्रकथिता प्रस्थानयात्रा शुभा ॥ १०७ ॥

(स्वरविचार) चन्द्रमाके स्वरमें अर्थात् बाएँ स्वरमें गमन प्रवेश आदि करना श्रेष्ठ है, और सूर्यके स्वरमें अर्थात् दहने स्वरमें युद्ध, व्यवहार आदि करना शुभ होता है और प्रश्न करनेवालेका जिधरका स्वर हो उधर बैठके प्रश्न करे तो सर्व कार्य सिद्ध हों और विपरीत हों तो अशुभ है ॥ १०१–१०४ ॥ (प्रस्थान) यदि यात्राके मुहूर्त्तमें किसी कार्यवशसे जाना नहीं हो तो उसी मुहूर्त्तमें जानेवाली दिशाके संमुख प्रस्थान रखना श्रेष्ठ है ॥ १०५ ॥ (प्रस्थानद्रव्य) ब्राह्मण प्रस्थानमें यज्ञोपवीत रक्खे, क्षत्री खड्ग आदि शस्त्र रक्खे और वैश्य शहद रख देवे । अथवा तीनों ही सुवर्ण, धान्य अर्थात् चावल और वस्त्र रख देवें ॥ १०६ ॥ अथवा ब्राह्मणको छत्र, ध्वजा, माला, यज्ञोपवीत आदि रखना योग्य है और वैश्यको अपना शुद्ध वस्त्र, अश्व और क्षत्रियको खड्ग (तलवार) धनुष (कमाण) रखना चाहिये परन्तु ग्रामके समीप नदी या ब्राह्मणके घर या देवमंदिर, बगीचा, बावडी आदि रमणीयक शुद्ध स्थानमें रक्खे तो शुभ यात्रा होती है ॥ १०७ ॥

अथ प्रस्थानदेशाः । गेहाद्गेहान्तरं गर्गः सीम्नः सीमांतरं भृगुः बाणक्षेपं भरद्वाजो वसिष्ठो नगराद्बहिः । प्रस्थानेऽपि कृते नोऽयान्महादोषान्विते दिने ॥ १०८ ॥ अथ दिङ्नियमेन प्रस्थानस्थितिः

सप्ताहान्येव पूर्वस्यां प्रस्थानं पंच दक्षिणे । पश्चिमे त्रीणि शस्तानि सौम्यायां तु दिनद्वयम् ॥ १०९ ॥ धृतप्रस्थानको वाऽपि स्वयं संप्रस्थितोऽपि वा । ततोऽपि गमने चिंत्यं सचंद्रशकुनादिकम् ॥ ११० ॥ अथ प्रस्थानकर्तुर्नियमाः । त्रिरात्रं वर्जयेत्क्षीरं पंचाहं क्षौरकर्म च । तदहश्चावशेषाणि सप्ताहं मैथुनं त्यजेत् ॥ १११ ॥ अथ वर्षादिषुछत्रादिधारणम् । वर्षातपादिके छत्री दंडी रात्र्यटवीषु च । शरीरत्राणकामो वै सोपानत्कः सदा व्रजेत् ॥ ११२ ॥ नोर्द्ध्वं न तिर्य्यग् दूरं वा निरीक्षन् पर्य्यटेद् बुधः । युगमात्रं महीपृष्ठं नरो गच्छेद्विलोकयन् ॥ ११३ ॥ चतुष्पथान्नमस्कुर्याच्चैत्यवृक्षं तथैव च । देवालयं गुरून्वृद्धान् स्वपूज्यान् वृषभं च गाम् ॥ ११४ ॥

प्रस्थानमें गर्ग ऋषिका मत छोटे ग्राममें अपने घरसे दूसरे घरमें प्रस्थान रखने का है और भृगुजीका मत बडे ग्राममें ग्रामकी सीमासे बाहरका है, भरद्वाजका मत शहरमें बाणप्रक्षेप हो उतनी दूरका है और वसिष्ठजीका मत नगरका नगरसे बाहर रखनेका जानना चाहिये । प्रस्थान रखनेके अनन्तर भी यदि निषिद्ध दिन अर्थात अकाल वृष्टि या धूर पडी हो तो नहीं जाना योग्य है ॥ १०८ ॥ (प्रस्थान स्थिति) पूर्वयात्रामें सात रोजतक प्रस्थानकी अवधि है, दक्षिणमें पांच दिनकी, पश्चिममें तीन दिनकी और उत्तरमें दो दिनकी अवधि जानना ॥ १०९ ॥ प्रस्थान लेकर जानेमें और प्रस्थान रखते समयमें भी चन्द्रमाका बल तथा श्रेष्ठ शकुन तो देखने ही चाहिये ॥ ११० ॥ (प्रस्थान रखनेके अनन्तर नियम) प्रस्थान रखनेके पहले ही तीन रोजतक दुग्ध नहीं पीवे और पांचरोज पहले क्षौर (हजामत) त्याग देवे और सातरोज पहले स्त्रीसंग त्याग देना चाहिये ॥ १११ ॥ वर्षा या घाम हो तो छत्र धारण करे और रात्रिमें या जंगलमें जाना हो तो दंड (छडी) धारण करे और शरीररक्षाके अर्थ जूता सदैव धारके गमन करे ॥ ११२ ॥ गमन करते हुएको ऊपरको या टेढा नहीं देखना चाहिये, दूरसे चार हाथ जमीनतक देखता हुआ गमन करे ॥ ११३ ॥ यदि रास्तेमें (चौघट), यज्ञ स्थानका वृक्ष, देवालय, गुरु, वृद्ध, माता-पिता आदि पूज्य, वृषभ, गौ आदि मिलें तो नमस्कार करे और दक्षिण भागमें लेवे ॥ ११४ ॥

अथ यात्रायां शकुनाः । तत्र तावच्छुभाः ॥ दधि दूर्वाऽक्षता रौप्यं पूर्णकुंभोऽथ सर्षपाः । दीपो गोरोचनादर्शप्रज्वलद्धव्यवाहनाः ॥

॥ ११५ ॥ वेदघोषः शुभा वाचो जयमङ्गलसंयुताः । शंखदुंदुभिवीणादिमृदुमर्दलनिःस्वनाः ॥ ११६ ॥ सिद्धमन्नं च तांबूलं मीनो दुग्धं घृतं मधु । मदिरा रुधिरं मांसं भक्ष्यं नानाविधं फलम् ॥ ११७ ॥ इक्षवः सितपुष्पाणि पद्ममुद्धृतगोमयम् । ध्वजः सिंहासनं छत्रं कृपाणांकुशमायुधम् ॥ ११८ ॥ दोलावितानसद्वस्त्रं रत्नालंकारदीपिकाः । विप्रो भूपो गुरुर्वृद्धः पुत्रपौत्रादिभिर्वृतः ॥ ११९ ॥ दैवज्ञः कन्यका योषा सुभगा पुत्रसंयुता । वारांगना तपस्वी च वदान्योऽथ नरः शुचिः ॥१२०॥ रजको धौतवस्त्रं च शवं रोदनवर्जितम् । तोयार्थी पूर्णकुम्भश्चानुगः पृष्ठे मृदोऽजनम् ॥ १२१ ॥ गजो वाजी रथो धेनुः सवत्सा तु विशेषतः । श्वेतो वृषोऽन्यवर्णोऽपि बद्ध एकस्तदा शुभः ॥ १२२ ॥ वर्णी स्वमित्रमुष्णीषं दर्भो हंसो मयूरकः । नकुलश्च भरद्वाजश्चाषश्छागस्तथैव च ॥ १२३ ॥ चित्तोत्साहकरं वस्तु शुभान्येतानि दर्शनात् ॥ कीर्त्तनाच्छ्रवणं श्रेष्ठं श्रवणात्तु विलोकनम् ॥ १२४ ॥ दर्शनात्स्पर्शनं चैषां दध्यादीनां गमादिषु । शुभदं दर्शनं येषामभिवाद्यैव तान्नरः ॥ १२५ ॥ कृत्वा दक्षिणतः सर्वान् गच्छन् सिद्धिमवाप्नुयात् । पुरतः शब्द एहीति शस्यते नतु पृष्ठतः ॥ १२६ ॥ गच्छेति पश्चाच्छुभदः पुरस्ताच्च विगर्हितः । रिक्तः कुम्भोऽनुकूलस्थः शस्तोऽम्भोऽर्थी यियासतः ॥ १२७ ॥ चौर्य्यविद्यावणिज्यार्थमुद्यतानां विशेषतः ॥ १२८ ॥ शुभाशुभानि कर्माणि निमित्तानि स्युरेकतः ॥ एकवस्तु मनो यातुरत्वद्धि शुद्धं जयावहम् ॥ १२९ ॥

(यात्राके श्रेष्ठ शकुन) दही, दूर्वा, चावल, चांदी, जलपूर्ण कुंभ, सरसों, दीपक, गोरोचन, दर्पण, जलती हुई अग्नि ॥ ११५ ॥ वेदका शब्द, श्रेष्ठ वचन, जयमंगलशब्द, शंख, दुंदुभी, बंसरी, ढोल आदिका शब्द ॥ ११६ ॥ पक्वान्न, तांबूल, मच्छी, दुग्ध, घृत, शहद, मदिरा, रुधिर, मांस, भक्ष्य पदार्थ, नानातरहके फल ॥ ११७ ॥ ईख, श्वेतपुष्प, कमल, उठाया हुआ गोमय, ध्वजा, सिंहासन, छत्र, खड्ग, अंकुश, आयुध ॥११८॥ पालखी, चांदनी, श्रेष्ठ वस्त्र, रत्न, आभूषण, दीवट या लालटेन

ब्राह्मण, राजा, गुरु, वृद्ध, पुत्रपौत्रसहित मनुष्य ॥ ११९ ॥ ज्योतिषी, कन्या, पुत्रसहित सुहागिन, स्त्री, वेश्या, तपस्वी, दानी, शुद्ध पुरुष ॥१२०॥ धोबी, धोया वस्त्र, रोदनरहित मुर्दा, पृष्ठ भागमें जलकी कामनावाला, जलपूर्ण कुंभ, मिट्टी, अंजन ॥ ॥१२१॥ हस्ती, घोडा, रथ, बछडासहित धेनु, श्वेतवृषभ, रस्सीसे बंधा हुआ वृषभ इत्यादि सन्मुख मिलें तो श्रेष्ठ ॥१२२॥ ब्रह्मचारी, विप्र, मित्र, पगडी, दर्भ, हंस, मयूर, नकुल, भारद्वाजपक्षी, पपैह्या, बकरा ॥ १२३ ॥ चित्तकी प्रसन्नता करनेवाली वस्तु इत्यादि सम्मुख देखनेमें शुभदायक हैं । कहनेसे सुनना श्रेष्ठ जानना और सुननेसे देखा हुआ शकुन श्रेष्ठ होता है ॥१२४॥ देखनेसे यात्रामें दही आदिको स्पर्श करना श्रेष्ठ है और जिनको देखना ही शुभ माना गया है जैसे मारवाड देशमें सोनचिडी, श्वेताचिडी जंगलकी देखनेमें ही श्रेष्ठ हैं सो उनको नमस्कार करलेना चाहिये ॥१२५॥ यह संपूर्ण वस्तु कही हुई सम्मुख मिलें तो गमन समयमें दक्षिण भागमें लेनेसे सिद्धि होती है, अगाडीको आओ ऐसा शब्द कोई संमुख कहे तो श्रेष्ठ है और पीछेसे आओ ऐसा शब्द कोई कहे तो श्रेष्ठ नहीं है ॥१२६॥ पीछेसे चलो ऐसा शब्द शुभ है और आगेसे नेष्ट, जलरहित कुंभलिये हुए गैलसे जलकामनाके वास्ते आता हो तो श्रेष्ठ जानना चाहिये ॥ १२७ ॥ यह शकुन चौरको, विद्याकामना और वाणिज्य कामनावालेको विशेषतासे श्रेष्ठ जानना ॥ १२८ ॥ जितने शुभ अशुभ कर्म हैं तथा शकुन हैं सो एक तरफ और जानेवालेका प्रसन्न चित्त एक तरफ है, परंतु चित्त प्रसन्नतासे जैसा कार्य सिद्ध होता है वैसा अन्यबातोंसे नहीं होता है ॥ १२९ ॥

अथ दुःशकुनाः ।कार्पासं कृष्णधान्यं च लोहकारश्च रोदनम् । लोहं च रक्तपुष्पाणि गुडस्तैलं क्षुतं तथा ॥ १३० ॥ पिण्याकं तृणतक्राणि भस्मास्थि लवणं तुषः । पाषाणेंधनचर्माणि सधूमो वह्निरौषधम् ॥ १३१ ॥ मत्तो वांतः खलो हिंस्रो मुण्डितश्च बुभुक्षितः । जटिलश्च तथा रोगी संन्यासी मलिनो रिपुः ॥ १३२ ॥ खंजो नग्नांगहीनश्च तैलाभ्यक्तोऽथ गर्भिणी । कषायवस्त्रधारी च मुक्तकेशोऽथ पाशवान् ॥ १३३ ॥ वन्ध्या च शृंखले चौरः षंढो यानपलायनम् । खरोष्ट्रमहिषारूढाः कुवाक्यश्रवणं तथा ॥ १३४ ॥ कृष्णसर्पोऽथ मंडूकः सरटो ग्रामसूकरः । कृपणः पतितो व्यंगः कुब्जोऽन्धो बधिरो

जडः ॥ १३५ ॥ आर्द्रवासोऽथ विधवा स्वर्णकारो रजस्वला । उपानत्क-र्दमांगी च पुरीषं च वसा तृणम् ॥ १३६ ॥ तथा रजस्वला पुष्प कृष्णोक्षा महिषो वृषः । स्वगेहदहनं युद्धं मार्जारः स्वगृहे कलिः ॥ १३७॥ गोक्षुतं प्राणिनामंमशिरः श्रोत्रप्रकंपनम् । मार्जारान्मार्गरोधश्च स्खलनं रिक्तकुंभकः ॥ १३८ ॥ एते दुःशकुना याने सर्वकार्यनिषेधकाः । छिक्का बिडालसर्पाभ्यां मार्गरोधो मृतेर्वचः ॥ १३९ ॥ मार्जारं माहिषं युद्धं शुनः कर्णप्रकंपनम् । अतिधूमाचितो वह्निः षडेते मरणप्रदाः ॥ १४० ॥ क यासि तिष्ठ आगच्छ किं ते तत्र गतस्य तु । अन्ये शब्दाश्च येऽनिष्टा-स्ते विपत्तिकरा अपि ॥ १४१ ॥

(अथ दुष्ट शकुन) कपास, तिल, उडद आदि कृष्ण अन्न, लोहार, रुदन, लोह, रक्तपुष्प, गुड, तैल, छींक ॥ १३० ॥ तिल, खल, तृण, तक्र, भस्म, हड्डी, लूण, तुष, पत्थर काठ, चर्म, धूँवांसहित अग्नि, औषधी इत्यादि सम्मुख निषिद्ध हैं ॥ ॥ १३१ ॥ उन्मत्त, वमनकृत्, खल, हिंसक, शिर मुंडा हुआ, बुभुक्षित अर्थात भूखसे मरता हुआ, जटाधारी, रोगी, संन्यासी, मलिन, शत्रु ॥ १३२ ॥ खोडा, नंगा, अंगहीन, तैल लगाया हुआ, गर्भिणी स्त्री, भगवा भेषधारी, खुला केशवाला, रस्सी लिये हुए ॥ १३३ ॥ वंध्या स्त्री, बेडी डाला हुआ चौर, नपुंसक भागता हुआ घोडा आदि वाहन, खर, उष्ट्र, महिषपर चढा हुआ, खोटी जबानका सुनना ॥ १३४ ॥ काला सर्प, मंडूक, सरट, (किरडा), ग्रामके सूकर, कृपण, पतित, काना, अंधा, कुबडा, बोला (बहरा), मूर्ख ॥ १३५ ॥ गीला वस्त्र पहरे हुए, विधवा स्त्री, सुनार, रजस्वला, जूता, कादो लगा हुआ, विष्ठा, चर्बी, सूका तृण ॥ १३६ ॥ काला वृषभ, भैंसा, सांड, अपने घरका दग्ध होना, लडाई होना, मार्जार, घरमें कलह ॥ १३७ ॥ गौकी छींक, श्वान आदि जीवोंका शिर तथा कान हिलाना, मार्जारका आगे हाकर जाना, अखडना (ठोकर लगना), रीता घडा मिलना ॥ १३८ ॥ इत्यादि दुष्ट शकुन यात्रामें कार्यका नाश करते हैं और छींक होना, बिलाव या सर्प मार्गको रोके, मृत्युका वचन सुने ॥ १३९ ॥ मार्जार महिषका युद्ध होता हो या कुत्ता कानोंको फट् फट् करता हो, बहुतसे धुंएँकी अग्नि आती हो तो यह मृत्युके देनेवाले खोटे शकुन जानने चाहियें ॥ १४० ॥ कहां जाता है, खडा रह, पीछा आव, वहां जानेमें क्या तेरा प्रयोजन है इत्यादि बहुतसे अनिष्ट शब्द विपत्तिके करनेवाले जानने चाहियें ॥ १४१ ॥

अथ पक्षिशुभशकुनानि । सूकरी कोकिला पल्ली छुच्छुका पिंगला रला । पोतकी च शिवा सर्वे पुमाख्या वामगाः शुभाः ॥ १४२ ॥ मध्याद्वोत्तरतः श्रेष्ठौ चाषबभ्रू च वामगौ । खरोलूकशृगालानां वामे पृष्ठे शुभः स्वनः ॥ १४३ ॥ श्रीकंठो वानरो भासः श्वेतस्तु चटको रुरुः । श्वा ऋक्षो वायसः श्रेष्ठाः स्त्रीसंज्ञाश्चापि दक्षिणे ॥ १४४ ॥ प्रदक्षिणगवाः शस्ता याने तु मृगपक्षिणः । शृगालः सारमेयश्च दक्षिणाद्वामगः शुभः ॥ १४५ ॥

(पक्षीके शकुन) सूरडी (शूकरी), कोकिला, छिपकली, छुछुका, पिंगला, रला, पोतकी, शिवा (गीदडी) और संपूर्ण पुरुषसंज्ञक जानवर वामभागमें श्रेष्ठ हैं १४२ पपैया, नोलिया इनका बीचसे वाम भागको जाना श्रेष्ठ माना है, खर, उल्लूक, गीदड, इतने जानवरोंका शब्द (बोलना) वागभागमें और पीठमें श्रेष्ठ है ॥ १४३ ॥ मयूर, वानर, भास (शिकरा), पक्षी, श्वेतचिडी अर्थात् जिसको सोनचिडी तथा भवानी भी कहते हैं, रुरुजातिका मृग, श्वान, रिच्छ, कागला और स्त्रीसंज्ञक जानवर दक्षिणभागमें लेनेसे श्रेष्ठ हैं ॥ १४४ ॥ यात्रामें मृग तथा पक्षी प्रदक्षिणा (दहना) आवे तो श्रेष्ठ है, गीदड, श्वान, यह दक्षिण भागसे वामभागमें आवें तो शुभ हैं ॥ १४५ ॥

अथ दुष्टशकुनपरिहारः । दृष्टे निमित्ते प्रथमे अमंगल्यविनाशनम् । केशवं पूजयेद्विद्वान् स्तवेन मधुसूदनम् ॥ १४६ ॥ द्वितीये तु ततो दृष्टे प्रतीपे प्रविशेद्गृहम् । अत्यावश्ये तु सघृतं स्वर्णं दत्त्वा व्रजेत्सुखम् ॥ १४७ ॥ अथ छिक्काशकुने विशेषः ॥ छिक्काशब्दं प्रवक्ष्यामि पूर्वस्यामशुभं फलम् । आग्नेय्यां शोकदुःखं स्यादारिष्टं दक्षिणे तथा ॥ १४८ ॥ नैर्ऋत्यां च शुभं प्रोक्तं पश्चिमे मिष्टभक्षणम् । वायव्ये धनलाभस्तु उत्तरे कलहस्तथा ॥ १४९ ॥ ईशान्यां च शुभं ज्ञेयमात्मछिक्का महद्भयम् । ऊर्ध्वं चैव शुभं ज्ञेयं मध्ये चैव महद्भयम् ॥ १५० ॥ बुधैश्छिक्कारवं श्रुत्वा पादच्छायां च कारयेत् । त्रयोदशयुतां कृत्वा चाष्टभिर्भागमाहरेत् ॥ १५१ ॥ लाभः सिद्धिर्हानिशोकौ भयं श्रीदुःखनिष्फले । क्रमेणैव फलं ज्ञेयं गर्गेण च यथोदितम् ॥ १५२ ॥

(दुष्टशकुनपरिहार) यदि प्रथम ही अशुभ शकुन हों तो कृष्ण भगवान्का पूजन करे और सहस्रनामसे स्तुति करके गमन करे ॥ १४६ ॥ यदि दूसरा शकुन

भी खोटा हो तो पीछा घरको आजाना चाहिये, यदि अतिही जरूरत हो तो घृतसहित सुवर्णका दान करके गमन करे ॥ १४७ ॥ (छींकका विचार) गमन समयमें पूर्वको छींक हो तो अशुभ फल है, अग्निकोणमें हो तो शोक, दुःख हो, दक्षिणमें हो तो अरिष्ट हो ॥ १४८ ॥ नैर्ऋत्य कोणमें हो तो श्रेष्ठ जानना, पश्चिममें हो तो मिष्टान्न मिले, वायव्य कोणमें हो तो लाभ हो, उत्तरमें हो तो कलह होवे ॥ १४९ ॥ ईशान कोणमें हो तो शुभ है, यदि खुद जानेवालेको ही छींक होजावे तो महान् भय हो, ऊपरको छींक हो तो श्रेष्ठ जाननी और बीचमें हो तो महान् भय होता है ॥ १५० ॥ प्रथम छींकाका शब्द सुनते ही शरीरकी छायाको पैरोंसे मापे और जितने पैंड होवें उनमें फिर तेरह मिलाके आठका भाग देवे ॥ १५१ ॥ यदि एक बचे तो लाभ हो, दो बचे तो सिद्धि, तीन बचे तो हानि, चार बचे तो शोक, पांच बचे तो भय, छः बचे तो श्री, सात बचे तो दुःख, आठ बचे तो कार्य निष्फल हो । इस प्रकार गर्गाचार्यने छींकका फल कहा है ॥ १५२ ॥

अथ यात्रानिवृत्तौ प्रवेशे मुहूर्त्तः । कुर्यात्प्रवेशं यात्राया निवृत्तौ निजमंदिरे । श्रेष्ठे वारे गुरौ शुक्रे बुधे चन्द्रे शनैश्चरे । १५३ ॥ चित्रोत्तरानुराधाख्ये रोहिणीरेवतीमृगे । त्यक्त्वा रिक्तामभां सूर्यं भौमं लग्नं चरं लवम् ॥ १५४ ॥ स्वस्य नाशः प्रवेशे स्यात्पूर्वासु भरणीमघे । आर्द्राऽऽश्लेषाभिधे मूले ज्येष्ठायां पुत्रनाशनम् ॥ १५५ ॥ कृत्तिकायां गृहे दाहो विशाखायां मृतिः स्त्रियाः । स्थिरेंऽगेशे शुभैरर्थं केंद्रकोणत्रिलाभगैः ॥ १५६ ॥ पापैर्लाभत्रिषट्संस्थैः शुद्धे तुर्ये ४ तथाऽष्टमे । प्रवेशो हि शुभो नृणां विजनुर्भाष्टमे स्मृतः ॥ १५७ ॥

इति श्रीरत्नगढ़नगरनिवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशे अद्‌भुतनिबन्धे सप्तमं ध्वनाद्यर्थयात्राप्रकरणम् ॥ ७ ॥

(यात्राप्रत्यावृत्तिमें प्रवेश मुहूर्त्त) यात्रासे निवृत्ति होके अपने घरमें गुरु, शुक्र, बुध, चन्द्र, शनिवारको प्रवेश होना श्रेष्ठ है ॥ १५३ ॥ चित्रा, तीनों उत्तरा, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, मृगशिर इन नक्षत्रोंमें और रिक्ता ४ । ९ । १४ अमावस्याके विना अन्यतिथियोंमें और सूर्यवार, मंगलवार, चरलग्न १।४।७। १० त्यागके गृहमें प्रवेश होना श्रेष्ठ है ॥ १५४ ॥ यदि तीनों पूर्वा, भरणी, मघामें प्रवेश हो तो आपका नाश हो और आर्द्रा, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठामें प्रवेश हो तो पुत्रका नाश हो ॥ १५५ ॥ कृत्तिकामें हो तो अग्निसे घर जले, विशाखामें हो तो स्त्रीकी मृत्यु हो, स्थिरलग्न हो या लग्नेश स्थिरराशिपर हो और शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५

तीसरे ग्यारहवेंमें हो तो धन प्राप्ति होती है । पापग्रह ११ । ३ । ६ हों तथा चौथा आठवां स्थान ग्रहरहित हो और जन्मराशि आठवें नहीं हो तो घरमें प्रवेश होना शुभ है ॥ १५६ ॥ १५७ ॥

इति मुहूर्त्तप्रकाशे सप्तम यात्राप्रकरणम् ॥ ७ ॥

वास्तुप्रकरणम् ८.

तत्र तावद्गृहारंभकालः । अथातः संप्रवक्ष्यामि गृहकालविनिर्णयम् । यथाकालं शुभं ज्ञात्वा तदा भवनमारभेत् ॥ १ ॥ पौषफाल्गुनवैशाख-माघश्रावणकार्त्तिकाः । मासाः स्युर्गृहनिर्माणे पुत्रारोग्यशुभप्रदाः ॥ २ ॥ चैत्रे व्याधिमवाप्नोति यो नवं कारयेद् गृहम् । वैशाखे धनरत्नानि ज्येष्ठे मृत्युस्तथैव च ॥ ३ ॥ आषाढे भृत्यरत्नानि पशुवर्गमवाप्नुयात् । श्रावणे मित्रलाभं तु हानिं भाद्रपदे तथा ॥ ४ ॥ युद्धं चैवाश्विने मासि कार्त्तिके धनधान्यकम् । धनवृद्धिर्मार्गशीर्षे पौषे तस्करतो भयम् ॥ ५ ॥ माघे त्वग्निभयं विद्याल्लक्ष्मीवृद्धिश्च फाल्गुने । शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम् ॥ **अथ सौरमानेन विशेषः ।** धनु ९ मिथुन ३ कन्यायां ६ मीने १२ च यदि भानुमान् । न कर्त्तव्यं तदा गेहं कृते दुःखमवाप्यते ॥ ६ ॥

अथ वास्तुप्रकरणं लिख्यते ॥ प्रथम नवीन घरके आरंभके कालका निर्णय लिखते हैं क्योंकि शुभ समय जानके घरका आरंभ करना चाहिये ॥ १ ॥ पौष, फाल्गुन, वैशाख, माघ, श्रावण, कार्तिक इन महीनोंमें नवीन घर करे तो पुत्र आरोग्य शुभ होता है ॥ २ ॥ चैत्रमें घर बनानेसे रोग होता है, वैशाखमें धन रत्न प्राप्त होता है, ज्येष्ठमें मृत्यु हो ॥ ३ ॥ आषाढ़में नौकर रत्न गो आदि पशुओंका लाभ, श्रावणमें मित्रोंका लाभ और भाद्रपदमें हानि होती है ॥ ४ ॥ आश्विनमें युद्ध, कार्तिकमें धनधान्य, मार्गशिरमें धनकी वृद्धि और पौषमें चोरोंका भय होता है ॥ ५ ॥ माघमें अग्निका भय, फाल्गुनमें लक्ष्मीकी वृद्धि होती है शुक्लपक्षमें सुख और कृष्णपक्षमें चोरोंका भय होता है, परन्तु धन, मिथुन, कन्या, मीनके सूर्यमें यदि नवीन घर करावे तो दुःख होता है ॥ ६ ॥

अथ गृहारंभे ग्राह्यास्तिथयः। द्वितीया च तृतीया च षष्ठी च पंचमी तथा। सप्तमी दशमी चैव द्वादश्येकादशी तथा ॥ ७ ॥ त्रयोदशी पंचदशी तिथ-

यः स्युः शुभावहाः । अथ निषिद्धतिथिफलम् । दारिद्र्यं प्रतिपत्कुर्याच्चतुर्थी धनहारिणी ॥८॥ अष्टम्युच्चाटनी चैव नवमी शत्रुवर्द्धिनी । दर्शे राजभयं ज्ञेयं भूते चौरभयं तथा ॥९॥ अथ गृहारंभनक्षत्राणि । त्र्युत्तरेऽपि च रोहिण्यां पुष्ये मैत्रे करद्वये । धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारम्भः प्रशस्यते । १०॥ । विश्वकर्मप्रकाशे विशेषः । मृदुध्रुवस्वातिपुष्यधनिष्ठाद्वितये करे । मूले पुनर्वसौ सौम्यवारे प्रारम्भणं शुभम् ॥ ११ ॥ अथ त्याज्यवारादि । आदित्यभौमवर्ज्यास्तु सर्वे वाराः शुभावहाः । केचिच्छनिं प्रशंसंति चौरभीतिस्तु जायते ॥ १२ ॥

(गृहारंभकी तिथि) २।३।६।५।७।१०।१२।११।१३।१५ यह तिथियें घरके आरंभमें श्रेष्ठ हैं । निषिद्ध तिथियोंका फल ॥ प्रतिपदामें घरका आरंभ करे तो दरिद्री हो, चौथ धनको हरे, अष्टमी उच्चाटन करे, नौमी शत्रुओंको बढावे, अमावास्या राजाका भय करे, चौदश चोरोंका भय करे ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ (घरके आरंभके नक्षत्र) उत्तरा ३. रो, पुष्य. अनु. ह. चि. ध. श. रे. (विश्वकर्मप्रकाशमें विशेष) मृ. स्वा. मू. पुन. इन नक्षत्रोंमें गृहारंभ करना शुभ है ॥१०॥११॥ (त्याज्यवारादि) आदित्य मंगलके विना संपूर्ण वार शुभ हैं, परंतु शनिवारमें करनेसे चोरोंका भय होता है ॥ १२ ॥

त्याज्ययोगादि । वज्रव्याघातशूलेषु व्यतिपातातिगंडयोः विष्कम्भे गंडपरिघे वर्ज्ययोगे न कारयेत् ॥ १३ ॥ मासदग्धं वारदग्धं तिथिदग्धं च वैधृतिम् । उत्पातैर्दूषितं भञ्च वर्जयेद्दर्शसंज्ञकम् ॥ १४ ॥ अथ निषिद्धतिथ्यादिफलम् । रिक्ता तिथौ दरिद्रत्वं दर्शे गर्भनिपातनम् । कुयोगे धनधान्यादिनाशः पातश्च मृत्युदः ॥ १५ ॥ वैधृतिः सर्वनाशाय नक्षत्रैक्ये तथैव च । पापवारे दरिद्रत्वं शिशूनां मरणं भवेत् ॥ १६ ॥ कुयोगास्तिथिवारोत्थास्तिथिभोत्था भवारजाः । विवाहादिषु ये वर्ज्यास्ते वर्ज्या वास्तुकर्मणि ॥१७॥ अथ गृहारंभे ग्राह्या मुहूर्ताः । श्वेते मैत्रेऽथ माहेंद्रे गन्धर्वाभिजिद्रौहिणे । तथा वैराजसावित्रे मुहूर्ते गृहमारभेत् ॥ १८ ॥ चन्द्रादित्यबलं लब्ध्वा लग्ने शुभनिरीक्षिते । निषिद्धेष्वपि कालेषु स्वानुकूले शुभे दिने ॥ १९ ॥

(त्याज्ययोग) वज्र, व्याघात, शूल, व्यतिपात, अतिगंड, विष्कंभ, गंड, परिघ इन योगोंमें गृहारंभ नहीं करे ॥ १३ ॥ मासदग्ध, वारदग्ध, तिथिदग्ध, वैधृतियोग और

भूकंप आदि उत्पातोंके दिनका नक्षत्र, अमावास्या जरूर वर्जदेने चाहिये ॥ १४ ॥ और रिक्ता तिथि दरिद्रत्व करे, अमावास्या गर्भका नाश करे, निषिद्ध योग धन-धान्यका नाश करे, और व्यतिपात मृत्यु करे ॥ १५ ॥ वैधृति तथा जन्मनक्षत्र सर्व नाश करे, पाप वार दरिद्र करे और बालकोंकी मृत्यु करे ॥ १६ ॥ तिथि वारोंसे होनेवाले निषिद्धयोग और तिथि नक्षत्रसे होनेवाले दोष जो विवाहमें त्यागे गये हैं सो भी नवीन घरके आरंभमें त्यागदेने चाहिये ॥ १७ ॥ और श्वेत, मैत्र, माहेन्द्र, गांधर्व, अभिजित्, रौहिण, वैराज, सावित्र इन मुहूर्त्तोंमें गृहारंभ शुभ है ॥ १८ ॥ चन्द्रमा सूर्य बलवान् हो और लग्नको शुभ ग्रह देखता हो तथा शुभ दिन हो तो निषिद्ध कालमें भी गृहारंभ श्रेष्ठ है ॥ १९ ॥

अथ तृणदारुगृहारम्भे मासदोषाभावः । पाषाणेष्टचादिगेहादि निंद्यमासे न कारयेत । तृणदारुगृहारम्भे मासदोषो न विद्यते ॥ २० ॥ निंद्यमासेऽपि चांद्रस्य मासेन शुभदं गृहम् । चरलग्ने चरांशे च सर्वथा परिवर्जयेत् ॥ २१ ॥ अथ गृहारम्भे वृषचक्रम् । आरम्भे वृषभं चक्रं स्तंभे ज्ञेयं तु कूर्मकम् । प्रवेशे कलशं चक्रं वास्तुचक्रं बुधैः स्मृतम् ॥२२॥ वास्तुचक्रं प्रवक्ष्यामि यच्च व्यासेन भाषितम् । यदृक्षे वर्तते भानुस्तदादि-त्रीणि मस्तके ॥ २३ ॥ चतुष्कमग्रपादे स्यात्पुनश्चत्वारि पश्चिमे । पृष्ठे च त्रीणि ऋक्षाणि कुक्षौ चत्वारि दक्षिणे ॥ २४ ॥ चत्वारि वामतः कुक्षौ पुच्छे भत्रयमेव च । मुखे भत्रयमेवं स्युरष्टाविंशतितारकाः ॥ २५ ॥

पाषाण मिट्टी आदिका घर निंदित मासोंमें नहीं करे और तृण दारु (काष्ठ) आदिके गृहारंभमें मासदोष नहीं है ॥ २० ॥ निंदित मासमें भी चांद्रमासके हिसाबसे गृहारंभ शुभ है. परंतु चरलग्न और चर नवांशक सर्वथा ही वर्जनीय है ॥ २१ ॥ (वास्तुचक्र) गृहारंभमें वास्तुचक्र देखना, स्तंभस्थापनमें कूर्मचक्र और गृहप्रवेशमें कलशचक्र देखना चाहिये, यह तीन प्रकारके वास्तुचक्र हैं ॥ २२ ॥ अब व्यासजी-करके कहा हुआ वास्तुचक्र कहते हैं, सूर्यके नक्षत्रसे ३ नक्षत्र वास्तुके मस्तक (शिर) के हैं, फिर ४ अगाडीके पगों (पैरों) के हैं. पछाड़ीके पगोंके हैं, ३ पीठके हैं, ४ दक्षिणकूखके हैं, ४ वामकूखके हैं, ३ पुच्छके हैं, फिर ३ मुखके हैं इसतरह २८ नक्षत्र जानने ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥

अथ फलम् । शिरस्थाराग्निदाहाय गृहोद्वासोऽग्रपादयोः । स्थैर्यं स्यात्प-श्चिमे पादे पृष्ठे चैव धनागमः ॥ २६ ॥ कुक्षौ स्याद्दक्षिणे लाभो वामकुक्षौ

दरिद्रता । पुच्छे स्वामिविनाशः स्यान्मुखे पीडा निरंतरम् ॥ २७ ॥ अथ खननमुहूर्त्तः । तत्र तावद्भूशयनविचारः । प्रद्योतनात्पंच ५ नगां ७ क ९ सूर्य्य १२ नवेंदु १९ षड्विंश २६ मितानि भानि ॥ शेते मही नैव गृह विदध्यात्तडागवापीखननं न शस्तम् ॥ २८ ॥ द्वितीयः प्रकारः । बाणाः ५ सप्त ७ शिवा ११ निधि ९ स्तिथि १५ नखा २० द्वाविंश २२ वह्न्यम्बका २३ अष्टाविंशति २८ वासरे च शयने संक्रातिघस्रं त्यजेत् ॥ २९ ॥ अधोमुखे च नक्षत्रे शुभेऽह्नि शुभवासरे । चंद्रतारानुकूल्ये च खननारंभणं शुभम् ॥ ३० ॥

शिरके ३ नक्षत्रोंमें गृहारंभ करे तो घर अग्निसे दग्ध हो, अगाडीके पगोंके ४ नक्षत्रोंमें घर शूना रहे, पिछाडीके पगोंके ४ नक्षत्रोंमें स्थिर हो, पीठके ३ नक्षत्रोंमें धनप्राप्ति हो ॥ २६ ॥ दक्षिण कूखके ४ नक्षत्रोंमें लाभ हो, वाम कूखके ४ नक्षत्रोंमें दरिद्र हो, पुच्छके ३ नक्षत्रोंमें स्वामीका नाश हो और मुखके ३ नक्षत्रोंमें गृहारंभ करे तो पीडा हो ॥ २७ ॥ (खननेका मुहूर्त्त) (भूमिशयनका विचार) सूर्यके नक्षत्रसे ५ । ७ । ९ । १२ । १९ । २६ इतने नक्षत्रोंमें भूमि सोती है सो घर नहीं करना और तालाब, बावडी, कूवा आदि खोदना नहीं चाहिये ॥ २८ ॥ (दूसरा प्रकार) सूर्यकी संक्रांतिसे ५ । ७ । ११ । ९ । १५ । २० । २२ । २३ । २८ । इतने दिनोंमें पृथ्वी सोती है सो गृहारंभ नहीं करना ॥ २९ ॥ मू. आश्ले. म. पू. ३ वि. भ. कृ. इन अधोमुख नक्षत्रोंमें और शुभ दिन वारोंमें चंद्र तारा बलवान् होनेसे घरके खोदनेका आरंभ करना श्रेष्ठ है ॥ ३० ॥

अथ गृहारंभखनने शेषचक्रम् । कन्या ६ सिंहे ५ तुला ७ यां भुजगपतिमुखं शंभुकोणेऽग्निखातं वायव्ये स्यात्तदास्यं त्वलि ८ हय ९ मकरे १० चेशखातं वदति । कुम्भे ११ मीने १२ च मेषे १ निर्ऋतिदिशिमुखं खातवायव्यकोणे चाग्न्ये कोणे मुखं वै वृष २ मिथुन ३ गते कर्कटे ४ रक्षखातम् । अथ सुगमतया गृहे खातदिक्स्पष्टीकरणम् । आग्नेय्यां खननं कुर्यात्सिंहाद्राशित्रये ५ । ६ । ७ रवौ । ऐशान्यां च तथा प्रोक्तं वृश्चिकादित्रये ८ । ९ । १० रवौ ॥ कुंभादित्रितये ११ । १२ । १ वायौ नैर्ऋत्यां वृषभत्रये २ । ३ । ४ ॥ ३१ ॥ अथ देवालयादिषु विशेषः । देवालये त्रये मीना १२ द्गेहे सिंहा-

५ इत्यौ स्थिते । जलाशये मृगाद्वास्तोर्मुखमीशाद्विलोमतः ॥ ३२ ॥ अथ गृहारम्भे लग्नानि तत्फलं च । नाश दिशंति मकरा १० लि ८ कुलीर ४ लग्ने मेषे १ घटे ७ धनुषि ९ कर्मसु दीर्घसूत्रम् । कन्या ६ झषे १२ मिथुनगे ३ ध्रुवमर्थलाभ ज्योतिर्विदः कलश ११ सिंह ५ वृषेषु २ सिद्धिम् ॥ ३३ ॥ अथ लग्नबलविचारः । द्विस्वभावे स्थिरे लग्ने शुभैर्व्ययष्टांत्यगैर्ग्रहैः । पापैरायारिगैः कुर्यान्मंदिरारंभणं बुधः ॥ ३४ ॥ जन्मभाच्चोपचयभे लग्ने वर्गे तथैव च । प्रारंभणं प्रकुर्वीत नैधनं परिवर्जयेत् ॥ ३५ ॥ पापैस्त्रि ३ षष्ठी ६ य १२ गतैः सौम्यैः केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ गैः । निर्माणं कारयेद्धीमानष्टमस्थैः खलैर्मृतिः । ३६ ॥

(खोदनेमें शेषका चक्र) कन्या, सिंह, तुलाके सूर्यमें शेषका मुख ईशानकोणमें होता है इसवास्ते अग्निकोणमें खोदना चाहिये और वृश्चिक, धन, मकरके सूर्यमें वायुकोणमें मुख है सो ईशानकोणमें खोदना; कुम्भ, मीन, मेषके सूर्यमें नैर्ऋत्य कोणमें मुख है सो वायुकोणमें खोदना शुभ है, और वृष, मिथुन, कर्कके सूर्यमें अग्निकोणमें मुख है सो नैर्ऋत्यकोणमें खात, करना श्रेष्ठ है ॥ ३१ ॥ (मंदिर आदिके खननेका विचार) देवमंदिरके आरंभमें मीनके संक्रांतिसे और घरके आरम्भमें सिंहसे और तालाब आदि जलाशयोंके आरम्भमें मकरके सूर्यसे तीन तीन राशियोंमें ईशान आदि विदिशाओंमें वामक्रमसे वास्तुका मुख जानना ॥ ॥ ३२ ॥ (गृहारंभका लग्न) मकर, वृश्चिक, कर्क लग्नमें गृहारम्भ करे, तो नाश हो; मेष तुला, धनमें दीर्घसूत्री (आलसी) हो; कन्या, मीन, मिथुनमें धनका लाभ हो और कुम्भ, सिंह, वृष लग्नमें करे तो सिद्धि होवे ॥ ३३ ॥ द्विस्वभाव या स्थिर लग्न हो और बारहवें आठवें स्थानके विना शुभग्रह, ग्यारहवें, छटे पापग्रह हो वो गृहारंभ करना शुभ है ॥ ३४ ॥ जन्मराशिसे ३ । १० । ११ । ६ इन राशियोंके लग्नमें तथा नवांशकमें घरका आरंभ श्रेष्ठ है परंतु आठवीं राशि वर्जनी चाहिये ॥३५॥ पापग्रह तीसरे छठे ग्यारहवें होवे और शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में हों तो गृहारंभ करना श्रेष्ठ है और आठवें पापग्रह हो तो मृत्यु होती है ॥ ३६ ॥

अथ भावफलानि । लग्नेऽर्के वज्रपातः स्यात्कोशहानिश्च शीतगौ । मृत्युर्विश्वंभरापुत्रे दारिद्र्यं रविनंदने ॥३७॥ जीवे धर्मार्थकामाः स्युः पुत्रोत्पत्तिश्च भार्गवे । चंद्रजे कुशला शक्तिर्यावदायुः प्रवर्त्तते ॥३८॥ द्वितीय-

स्थे रवौ हानिश्चंद्रे शत्रुक्षयो भवेत् ॥ ॥ भूमिजे बंधनं प्रोक्तं नानाविघ्नानि भानुजे ॥ ३९ ॥ बुधे द्रविणसंपत्तिर्गुरौ धर्माभिवर्द्धनम् । यथाकामविनोदेन भृगौ कामं व्रजेत्फलम् ॥ ४० ॥ तृतीयस्थेषु पापेषु सौम्येष्वेव विशेषतः । सिद्धिः स्यादचिरादेव यथाभिलषितं प्रति ॥ ४१ ॥ चतुर्थस्थानगे जीवे पूजा संपद्यते नृपात् । चंद्रजे चार्थलाभः स्याद्भूमिलाभश्च भार्गवे ॥ ४२ ॥ वियोगः सुहृदां भानौ मंत्रभेदो महीसुते । बुद्धिनाशो निशानाथे सर्वनाशोऽर्कनंदने ॥ ४३ ॥ पंचमे तु सुराचार्ये मित्रवसुधनागमः । शुक्रे पुत्रसुखावाप्ती रत्नलाभस्तथेंदुजे ॥ ४४ ॥ सुतदुःखं सहस्रांशौ शशांके कलहः स्मृतः । भौमे कार्यविरोधः स्यात्सौरे बंधुविमर्दनम् ॥ ४५ ॥ षष्ठस्थानगते सूर्ये रोगनाशं विनिर्दिशेत् । चंद्रे पुष्टिः कुजे प्राप्तिः सौरे शत्रुबलक्षयः ॥ ४६ ॥ गुरौ मंत्रोदयः प्रोक्तो भृगौ विद्यागमो भवेत् । सम्यग्ज्ञानार्थकौशल्यं नक्षत्रपतिनंदने ॥ ४७ ॥ सप्तमस्थानगे जीवे बुधे दैत्यपुरोहिते । गजवाजिधरित्रीणां क्रमाल्लाभं विनिर्दिशेत् ॥ ४८ ॥ भास्करे कीर्त्तिभङ्गः स्यात्कुजे विपदमादिशेत् । हिमगौ क्लेश आयासः पतङ्गे व्यङ्गवाभयम् ॥४९॥ नैधने च सहस्रांशौ विद्विषो जनितापदः ॥ हानिः शीतमयूखे च भौमे सौरे च रुग्भयम् ॥ ५० ॥ बुधे मानधनप्राप्तिर्जीवे च विजयो भवेत् । शुक्रे स्वजनभेदः स्यान्मंत्रज्ञस्यापि देहिनः ॥ ५१ ॥ वागीशे नवमस्थाने विद्याभोगादिनंदनम् । बुधे विविधभोगश्च शुक्रे च विजयो भवेत् ॥ ५२ ॥ चंद्रे धातुक्षयः प्रोक्तो धर्महानिश्च भास्करे । कुजे चार्थक्षयो विद्याद्रविजे धर्मदूषणम् ॥ ५३ ॥ दशमस्थानगे शुक्रे शयनासनसिद्धयः । सुराचार्ये महत्सौख्यं विजयः स्त्रीधनं बुधे ॥ ५४ ॥ मार्तंडे च सुहृद्वृद्धिश्चंद्रे शोकविवर्द्धनम् । भौमे रत्नागमः प्रोक्तः कोणे कीर्त्तिविलोपनम् ॥ ५५ ॥ लाभस्थानेषु सर्वेषु लाभस्थानं विनिर्दिशेत् ।

व्ययस्थानेषु सर्वेषु विनिर्देश्यो व्ययः सदा ॥ ५६ ॥ स्वोच्चे पूर्णफलः प्रोक्तः पादोनं स्वर्क्षगोग्रहः । स्वत्रिकोणेऽर्द्धफलदः पादं मित्रगृहाश्रितः ॥ ५७ ॥ समर्क्षे रिपुराशौ च समकष्टफलौ ग्रहौ । नीचस्थो निष्फलः प्रोक्तो वर्गे सत्फलदः स्मृतः ॥ ५८ ॥

(द्वादश भावोंका फल) लग्नमें सूर्य हो तो घरपर बिजली पडे, चंद्रमा हो तो खजानेका नाश हो, मंगल हो तो मृत्यु करे, शनि हो तो दरिद्र करे, गुरु हो तो धर्मार्थकामकी प्राप्ति करे, शुक्र हो तो पुत्रकी उत्पत्ति करे, बुध हो तो कुशलता, करे और शक्ति आयु पर्यंत बढे ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ दूसरे सूर्य हानि करे, चन्द्रमा शत्रुनाश करे, मंगल बन्धन करे, शनि नाना विघ्न करे, बुध धनका लाभ करे, गुरु धर्मकी वृद्धि करे, शुक्र आनंद करे, ॥ ३९ ॥ ४० ॥ तीसरे सम्पूर्ण पाप और शुभग्रह सिद्धि मनोवांछित कार्य करे ॥ ४१ ॥ चौथे गुरु राजासे सन्मान करावे, बुध धनका लाभ करे, शुक्र भूमिका लाभ करे, सूर्य बांधवोंका वियोग करे, मंगल विचारमें भेद करे, चन्द्रमा बुद्धिनाश करे, शनि सर्वनाश करे ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ पांचवें गुरु मित्र धनका लाभ करे, शुक्र पुत्रका सुख करे, बुध रत्नोंका लाभ करे, सूर्य पुत्रका दुःख करे, चन्द्रमा कलह करे, मंगल कार्यमें विघ्न करे, शनि बांधवोंका नाश करे ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ छठे सूर्य रोगका नाश करे, चन्द्रमा क्षीण करे, मंगल प्राप्ति करे, शनि शत्रुओंका नाश करे, गुरु मंत्रका लाभ करे, शुक्र विद्याका लाभ करे, बुध चतुराई देवे ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ सातवें गुरु, बुध, शुक्र हस्ती घोडा, पृथ्वीका लाभ करे, सूर्य कीर्तिनाश करे, मंगल विपदा देवे, चन्द्रमा क्लेश करे, शनि भय करे ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ आठवें सूर्य द्वेष करे, चन्द्रमा हानि करे, मंगल शनि रोगका भय करे, बुध मानकी धनकी प्राप्ति करे, गुरु विजय, करे, शुक्र बांधवोंमें भेद करे ॥ ५० ॥ ५१ ॥ नौवें गुरु विद्या भोग आनन्द करे, बुध नाना भोग देवे, शुक्र विजय करे, चंद्रमा धातुनाश करे, सूर्य धर्मका नाश करे, मंगल धननाश करे, शनि धर्ममें दूषण करे ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ दशवें शुक्र शय्या आसनका लाभ करे, गुरु महान् सुख देवे, बुध स्त्री धनका लाभ करे, सूर्य सुहृदोंकी वृद्धि करे, चंद्रमा शोक बढावे, मंगल रत्नलाभ करे, शनि कीर्तिका नाश करे ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ग्यारहवें स्थानमें संपूर्ण ग्रह लाभ करें, और बारहवें संपूर्ण ही व्यय (खर्च) करें ॥ ५६ ॥ अपनी उच्चराशिपर ग्रह हो तो पूर्ण फल करे, अपनी राशिपर हो तो तीन हिस्सेका फल देवे, अपनी मूलत्रिकोणमें हो तो आधा फल करे और मित्रकी राशिका हो तो एक हिस्सेका फल करे ॥ ५७ ॥ सम ग्रहकी राशिपर या शत्रुकी राशिपर हो तो सम और दुष्ट फल देवे और नीच राशिका निष्फल होता है, अपने वर्गमें ग्रह श्रेष्ठ फल करता है ॥ ५८ ॥

अथ गृहायुर्दाययोगः । गुरुर्लग्ने १ रविः षष्ठे ६ चूने ७ सौम्ये सुखे ४ सिते । तृतीयस्थेऽर्कपुत्रे च तद्गृहं तु शतायुषम् ॥ ५९ ॥ भृगुर्लग्ने १ बरे १० सौम्ये लाभ ११ स्थाने च भास्करे । गुरुः केंद्र १ । ४ । ७ । १० गतो यत्र शतवर्षाणि तिष्ठति ॥ ६० ॥ तुर्य ४ इज्येऽम्बरे १० चंद्रे लाभे च कुजभास्करौ । आरंभः क्रियते यस्य ह्यशीतिस्तु तदायुषम् ॥ ६१ ॥ लग्ने भृगौ पुत्रगे ५ ज्ये षष्ठे भौमे तृतीयगे । रवौ यस्य गृहारंभे स च तिष्ठेच्छतद्वयम् ॥ ६२ ॥ लग्नस्थौ गुरुशुक्रौ च रिपुराशि ६ गते कुजे ॥ सूर्ये लाभगते यस्य द्विशताब्दानि तिष्ठति ॥ ६३ ॥ स्वोच्चसंस्थो १२ भृगुर्लग्ने स्वोच्चे ४ जीवे सुख ४ स्थिते । स्वोच्चे ७ लाभ ११ गते मंदे सहस्राणां समा स्थितिः ॥ ६४ ॥ स्वोच्चे स्वभवने सौम्यैर्लग्नस्थैर्वापि केंद्रगैः । प्रारंभः क्रियते यस्य स तिष्ठति शतद्वयम् ॥ ६५ ॥ कर्कलग्नगते चंद्रे केंद्रस्थाने च वाक्पतिः । मित्रस्वोच्चस्थितैः खेटैर्लक्ष्मीस्तस्य चिरं भवेत् ॥ ६६ ॥

(घरको आयुके देनेवाले योग) गुरु लग्नमें हो, सूर्य छठे हो, बुध ७ हो, शुक्र ४ हो, शनि ३ हो तो घरकी १०० बरसकी आयु होवे ॥ ५९ ॥ शुक्र लग्नमें हो, बुध १० हो, सूर्य ११ हो, गुरु केंद्र १ । ४ । ७। १० में हो तो आयु १०० वर्षकी जाननी ॥ ६० ॥ गुरु ४ होवे. चंद्रमा १० हो, मंगल सूर्य ११ हों तो ८० बरसकी आयु होवे ॥ ६१ ॥ शुक्र लग्न १ में हो, गुरु ५ हो, मंगल ६ हो, सूर्य ३ हो तो घरकी आयु २०० बरसकी होवे ॥ ६२ ॥ लग्नमें गुरु शुक्र हों मंगल ६ हो, सूर्य ११ हो तो २०० बरसकी आयु हो ॥ ६३ ॥ लग्नमें शुक्र मीनका हो, गुरु कर्कका ४ हो, शनि तुलाका हो तो सहस्र बरसकी आयु होती है ॥ ६४ ॥ उच्चस्थानोंमें शुभ ग्रह होकर लग्नमें या केंद्र १ । ४ । ७ । १० में हो तो २०० बरसकी आयु होती है ॥ ६५ ॥ लग्नमें कर्कका चंद्रमा हो, केंद्र १ । ४ । ७।१० स्थानोंमें गुरु हो, बाकी ग्रह मित्रके घरमें या राशिपर हों तो घर करनेवालेके सदा लक्ष्मी रहती है ॥ ६६ ॥

गृहारम्भे सुनक्षत्राणि । इज्योत्तरात्रयाहींदुविष्णुधातृजलोडुषु । गुरुणा सहितेष्वेषु कृतं गेहं श्रिया युतम् ॥ ६७ ॥ द्विदैवत्वाष्ट्रवारीशरुद्रादितिवसूडुषु । शुक्रेण सहितेष्वेषु कृतं धान्यप्रद गृहम् ॥ ६८ ॥ हस्ता-

र्यमत्वाष्ट्रदस्रर्क्षानुराधोडुभेषु च । बुधेन सहितेष्वेषु ध पुत्रसुखप्रदम् ॥६९॥ अथ निषिद्धयोगाः । शत्रुक्षेत्रगतैः खेटैर्नीचस्थैर्वाऽपराजितैः । प्रारंभे यस्य भवने लक्ष्मीस्तस्य विनश्यति ॥ ७० ॥ एकोऽपि परभागस्थो दशमे सप्तमेऽपि वा । वर्णाधिपे बलैर्हीने तद्गृहं परहस्तगम् ॥ ७१ ॥ लग्नगे शशिनि क्षीणे मृत्युस्थाने च भूसुते । प्रारंभः क्रियते यस्य शीघ्रं तद्धि विनश्यति ॥ ७२ ॥

(गृहारम्भमें अच्छे नक्षत्र) पुष्य, उ. ३, आश्ले, मृ, श्र, रो, श, इन नक्षत्रोंपर गुरु होनेसे गृहारंभ करे तो लक्ष्मीवान् होता है ॥ ६७ ॥ विशाखा, चि, श, आ, पुन, ध, इन नक्षत्रोंपर शुक्र होनेसे गृहारंभ करे तो बहुत धान्य देनेवाला घर होता है ॥ ६८ ॥ ह, उ, फा, चि, अश्वि, अनु इन नक्षत्रोंपर बुध होनेसे गृहारंभ करे तो पुत्रोंका सुख होता है ॥ ६९ ॥ (निषिद्धयोग) अपने शत्रुकी राशियोंपर ग्रह हो या नीच राशिपर हो या पापग्रहों करके जीता हुआ हो तो गृहारंभ करनेसे लक्ष्मीका नाश होता है ॥ ७० ॥ एक भी ग्रह दशवें सातवें स्थानमें परभागमें हो और वर्णका स्वामी निर्बल हो तो घर दूसरेके हाथमें चला जाता है ॥ ७१ ॥ लग्नमें क्षीण चंद्रमा हो, आठवें मंगल हो तो गृहारंभ करनेसे थोडे ही दिनोंमे नाश होता है ॥ ७२ ॥

अथ खननविधिः । ज्योतिःशास्त्रानुसारेण सुदिने शुभवासरे । सुलग्ने सुमुहूर्त्ते च सुस्नातः प्राङ्मुखो गृही ॥ ७३ ॥ गणेशं गंधपुष्पाद्यैर्लोकपालानथ ग्रहान् । पूजयेत्क्षेत्रपालांश्च क्रूरभूतांश्च बाह्यतः ॥ ७४ ॥ ब्रह्माणं वास्तुपुरुष तद्गेहस्थाश्च देवताः । गृहादेः शिल्परूपत्वाद्विश्वकर्माणमेव च ॥ ७५ ॥ लोहदंडं च संपूज्य भैरवं च तथव च । तद्दिक्पालान्नमस्कृत्य पृथिवीं च विशेषतः ॥ ७६ ॥ तत्र संपूजयेद्धिमान् दैवज्ञं च तथैव च ॥ ततः कुर्याद्गृहारंभं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ ७७ ॥ अथ शिलान्यासः । दक्षिणपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमाम् । शेषाः प्रदक्षिणेन स्तंभाश्चैवं प्रतिष्ठाप्याः ॥ ७८ ॥

(पाया खोदनेका विधान) ज्योतिष शास्त्रके अनुसार शुभ दिनमें और श्रेष्ठ लग्न मुहूर्त्तमें स्नान किया हुआ गृहस्थ पूर्वको मुख करके गंध पुष्प आदि द्रव्योंसे गणपति, लोकपाल, सूर्यादि नवग्रहोंकी और क्षेत्रपाल, क्रूरभूतगण, ब्रह्मा, वास्तुपुरुष, गृहदेवता, विश्वकर्मा आदि देवोंका पूजन करे ॥ ७३–७५ ॥ और

लोहदंड (करणी कस्सी) आदिको पूजकर भैरवका, पृथ्वीका पूजन करे. फिर इंद्रादि दिक्पालोंको नमस्कार करके ब्राह्मणोंका, ज्योतिषीका पूजन करे, अनंतर गृहारंभ करनेसे सर्वसिद्धिका देनेवाला गृह होता है ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ (शिलास्थनम्.) प्रथम शिला दक्षिण पूर्वके बीचमें अर्थात् अग्निकोणमें स्थापन करनी चाहिये फिर बाकी प्रदक्षिण क्रमसे स्थापन करे ॥ ७८ ॥

शिलान्यासे नक्षत्राणि । शिलान्यासः प्रकर्त्तव्यो गृहाणां श्रवणे मृगे । पौष्णे हस्ते च रोहिण्यां पुष्याश्विन्युत्तरात्रये ॥७९॥ अथ स्तंभन्यासः । प्रासादेषु च हर्म्येषु गृहेष्वन्येषु सर्वदा । आग्नेय्यां प्रथमं स्तंभं स्थापयेत्तद्विधानतः ॥ ८० ॥ अथ स्तंभस्थापने कूर्मचक्रम् । तिथिस्तु पंचगुणिता कृत्तिकाद्यक्षसंयुता । तथा द्वादशमिश्रा च नवभागेन भाजिता ॥ ८१ ॥ जले वेदा ४ मुनि ७ श्चंद्रः १ स्थले पंच ५ द्वयं २ वसु ८ त्रि ३ षट्क ६ नव ९ चाकाशे त्रिविधं कूर्मलक्षणम् ॥ ८२ ॥ अथ फलम् । जले लाभस्तथा प्रोक्तः स्थले हानिस्तथैव च । आकाशे मरणं प्रोक्तमिदं कूर्मस्य चक्रकम् ॥८३॥ अथ स्तंभचक्रम् । सूर्याधिष्ठितभद्वयं प्रथमतो मध्ये तथा विंशतिस्तंभाग्रे रस ६ संख्यया मुनिवरैरुक्तं मुहूर्त्तं शुभम् । स्तंभाग्रे मरणं भवेद्गृहपतेर्मूले धनार्थक्षयो मध्ये चैव तु सर्वसौख्यमतुलं प्राप्नोति कर्त्ता सदा ॥ ८४ ॥

(शिलास्थापन नक्षत्र) श्र. मृ. रे. ह. रो. पुष्य. अश्वि. उ. ३. इन नक्षत्रोंमे करना शुभ है ॥ ७९ ॥ (स्तंभस्थापन) इसीप्रकार राजालोगोंके घरोंमें और देवमंदिर, धनवानोंके घरोंमें प्रथम स्तंभ अग्निकोणमें ही स्थापन करना चाहिये ॥ ८० ॥ (स्तंभस्थानमें कूर्मचक्र) वर्तमान तिथिको पांच गुणी करे, कृत्तिकासे लेकर दिनके नक्षत्रतककी संख्या मिलावे और बारह फिर मिलावे, अनन्तर नौका भाग देवे, यदि ४ । ७ । १ बचें तो कूर्मका जलमें निवास है और ५ । २ । ८ बचे तो स्थलमें जानना, यदि ३ । ७ । ९ बचे तो आकाशमें वसता है ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ जलमें निवास हो तो लाभ करे, स्थलमें हो तो हानि करे और आकाशमें हो तो मृत्यु करे ॥ ८३ ॥ (स्तंभचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे २ नक्षत्र तो स्तंभको मूलके हैं, फिर २० मध्य भागके हैं, ६ नक्षत्र अग्रभागके हैं सो अग्रभागके ६ मृत्यु करें, मूलके २ धनका नाश करें, मध्यके २० नक्षत्र अतुल सुख करें ॥ ८४ ॥

अथ स्तंभस्थापने निषिद्धनक्षत्रादि । धनिष्ठापंचके नैव कुर्यात्स्तंभसमुच्छ्रयम् । सूत्राधारशिलान्यासप्राकारादि समारभेत् ॥८५॥ अथ द्वारशाखारोपणमुहूर्त्तः । द्वारस्थापननक्षत्राण्युच्यंते वह्नयोत्तराः। हस्तपुष्यश्रुतिमृगस्वातीपूषाश्च रोहिणी ॥ ८६ ॥ प्रतिपत्सु न कर्त्तव्यं कृते दुःखमवाप्नुयात् । द्वितीयायां द्रव्यहानिः पशुपुत्रविनाशनम् ॥ ८७ ॥ तृतीया रोगदा ज्ञेया चतुर्थी भंगकारिणी । कुलक्षयकरी षष्ठी दशमी धननाशिनी ॥ ८८ ॥ विरोधकृद्दर्शा पूर्णा शेषाश्च तिथयः शुभाः । पंचमी धनदा चैव मुनिनंदवसौ शुभम् ॥८९॥ अथ द्वारशाखारोपणे लग्नशुद्धिः । केंद्रत्रिकोणेषु शुभैः पापैस्त्र्यायाय ३ । ११ रिगै ६ स्तथा । द्यूनां ७ बरे १० शुद्धियुते द्वारशाखावरोपणम् ॥ ९० ॥

(स्तंभस्थापनमें निषिद्ध नक्षत्रादि) ध. श. पूर्वाभा. उत्तराभा. रे. इन पंचकोंमें स्तंभ स्थापन नहीं करना चाहिये और सूत्राधार, शिलान्यास, भीत आदि करने शुभ हैं ॥ ८५ ॥ (चौखट चढानेका मु.) घरके मुख्यद्वारकी चौखट चढ़ानेमें अश्विनी. उ. ३ ह. पुष्य. श्र. मृ. स्वा. रे. रो. यह नक्षत्र शुभ हैं ॥ ८६ ॥ प्रतिपदाको करे तो दुःख हो, द्वितीयाको धनकी हानि हो. तृतीया रोग करे, चौथे भंग करे, छठे कुलक्षय करे, दशमी धननाश करे ॥८७॥८८॥ अमावास्या, पूर्णिमा विरोध करे, बाकीकी तिथि संपूर्ण शुभ हैं, पंचमी धन देवे, सप्तमी, नौमी, अष्टमी शुभ हैं। ॥ ८९ ॥ (लग्नशुद्धि) शुभग्रह केंद्र १ । ४ । १० त्रिकोण ९ । ५ । में हों, पापग्रह ३ । ६ । ११ स्थानोंमें हों और ७ । १० यह स्थान ग्रहरहित हों तब चौखट रोपना शुभ है ॥ ९० ॥

अथ वारादिशुद्धिः । शुभं स्याच्छुभवारे च पंचके न त्रिपुष्करे । आग्नेयधिष्ण्ये सोमे हि न कुर्यात्काष्ठरोपणम् ॥ ९१ ॥ प्रणम्य वास्तुपुरुषं दिक्पालं क्षेत्रनायकम् । द्वारशाखारोपणं च कर्त्तव्यं तदनंतरम् ॥ ॥ ९२ ॥ शुभं निरीक्ष्य शकुनमन्यथा परिवर्जयेत् । कुड्यं भित्त्वा न कुर्वीत द्वारं तत्र सुखेप्सुभिः ॥ ९३ ॥ अथ द्वारचक्रम् । द्वारचक्रं प्रवक्ष्यामि यदुक्तं ब्रह्मणा पुरा । सूर्यभाद्भचतुष्कं च द्वारस्योपरि विन्यसेत् ॥ ९४ ॥ द्वे द्वे कोणे प्रदातव्यं शाखायुग्मे चतुश्चतुः ४ ।

अधश्च त्रीणि देयानि वेदा ४ मध्ये प्रतिष्ठिताः ॥ ९५ ॥ राज्यं स्यादूर्ध्वनक्षत्रे कोणेषूद्वासनं भवेत् । शाखयोर्लभते लक्ष्मीरधश्चैव मृतिं लभेत् । मध्येषु लभते सौख्यं चिंतनीयं सदा बुधैः ॥ ९६ ॥

(वारादिकी शुद्धि) शुभवारोंमें श्रेष्ठ है पंचक, त्रिपुष्कर योग, कृत्तिका नक्षत्र, सोमवार यह निषिद्ध हैं ॥ ९१ ॥ प्रथम वास्तुपुरुषको, दिक्पाल क्षेत्रपालको प्रणाम करके शाखारोपण करना चाहिये ॥ ९२ ॥ और श्रेष्ठ शकुन देखके द्वारशाखा रोपना, यदि अशुभ शकुन हो तो उस दिन नहीं करना चाहिये और भींतको फोडके सुखकी कामनावालेको द्वार (दरवाजा) कदापि नहीं करना चाहिये ॥ ॥ ९३ ॥ (द्वारचक्र) अब ब्रह्माजीका कहा हुआ द्वारचक्र वर्णन करते हैं. सूर्यके नक्षत्रसे ४ नक्षत्र द्वारके ऊपर लिखने और दो दो चारों कोणोंमें देवे, फिर चार चार दोनों शाखाओंपर रक्खे, तीन नीचे लिखे, चार बीचमें लिखे ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ऊपरके ४ नक्षत्र राज्यप्राप्ति करें, कोणोंके ८ घरको शून्य करें, शाखाओंके ८ लक्ष्मी करें और नीचेके ३ मृत्यु करें, बीचके ४ सुख करें इसको पण्डित सदा विचारें ॥ ९६ ॥

अथ गृहे मुख्यद्वारनियमः । कर्के ४ नक्र १० हरि ५ कुम्भ ११ गतेऽर्के पूर्वपश्चिममुखानि गृहाणि । तौलि ७ मेष १ वृष २ वृश्चिक ८ याते दक्षिणोत्तरमुखानि च कुर्यात् ॥ अन्यथा यदि करोति दुर्मतिर्व्याधिशोकधननाशमश्नुते । मीन १२ चाप ९ मिथुनां ३ गना ६ गते कारयेन्न गृहमेव भास्करे ॥ ९७ ॥ अत्र विशेषः । अथ द्वारादौ वेधविचारः । कोणमार्गभ्रमिद्वारा कर्दमस्तंभभूरुहे । देवालयप्रकूपानां वेधो द्वारेऽथ संमुखे ॥ ९८ ॥ अथ वेधापवादः । गेहोच्चे द्विगुणाधिकस्थे प्रांतरे संस्थिते सति । नैव कोणेषु वेधः स्याद्भित्तिमार्गोत्तरेऽपि च ॥ ९९ ॥ अथ गृहोपस्करचुल्लीमुहूर्त्तः । पूर्वार्द्रारोहिणीपुष्ये उत्तरात्रितयेऽश्विभे । स्थितिर्महानसस्येष्टा गृहोपस्करणैः सह ॥ १०० ॥ शनिवारे दारिद्रत्व शुक्रेऽन्नं धनमेव च । गुरुवारे लभेल्लक्ष्मीर्बुधे लाभो भवेत्सदा ॥ १०१ ॥ भौमवारे मृतिर्नार्याः सोमे धनक्षयो भवेत् । रविवारे भवेद्रोगी चुल्लीस्थापनकर्मणि ॥ १०२ ॥ अथ चुल्लीचक्रम् । सूर्यर्क्षाद्रस ६ पृष्ठभैः सुखयुतं वेदैः ४ शिरो मृत्युदं बाहौ नाग ८ सुसौख्यभोगमतुलं

गर्भे शरे ५ नाशयेत् । द्वौ द्वौ २ भुक्तिकरौ कलत्रमरणमंघ्रौ द्वयं २ च क्रमात् चुल्लीचक्रविचारणं सुधिषणैः प्रोक्तं हि गर्गादिभिः ॥ १०३ ॥

(मुख्यद्वारके मास) कर्क मकरके सूर्यमें पूर्वके दरवाजा करे. तुला मेषके सूर्यमें दक्षिणको करे, सिंह कुंभके सूर्यमें पश्चिमको करे और वृष वृश्चिकके सूर्यमें उत्तरको द्वार करना शुभ है, यदि जो मूर्ख इससे विपरीत करे तो रोग, धननाशको प्राप्त होता है और मीन, धन, मिथुन कन्याके सूर्यमें द्वार कदाचित् भी नहीं करना चाहिये ॥ ९७ ॥ कोना या मार्गके घुमावसे कर्दम, स्तंभ, वृक्ष देवालय, कूप इनमेंसे कोई द्वारके सम्मुख पडे तो द्वारवेध होता है ॥९८॥ घरके ऊँचाईके द्विगुणसे अधिक अन्तरपर यदि पूर्वोक्त वेधक हों तो कोणवेध नहीं लगता । तथा भित्तिका या मार्गका व्यवधान होनेपर भी वेध नहीं हो ॥ ९९ ॥ (चूल्हेका मु.)पूर्वा. रो. पुष्य. उ. ३, अश्वि. इन नक्षत्रोंमें पाक (रसोई) करनेकी सामग्री स्थापन करके चूल्हा स्थापन करना शुभ है ॥ १०० ॥ शनिवारको चूल्हा करे तो दारिद्र्य हो, शुक्रको अन्न धन मिले, गुरुको लक्ष्मी मिले, बुधको लाभ हो ॥ १०१ ॥ मंगलवारको स्त्री मरे, सोमको धननाश हो, आदित्यवारको रोगी होवे ॥ १०२ ॥ (चुल्लीचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे ६ नक्षत्र पीठके हैं सो सुख करें, चार शिरके मृत्यु करें, आठ बाहुओंके सुख करें, पांच गर्भके नाश करें. फिर दो नक्षत्र हाथोंके हैं सो भोग पदार्थ करें; दो पगोंके हैं सो स्त्रीनाश करें । इस प्रकार चुल्लीचक्र गर्ग आदि मुनियोंनें कहा है ॥ १०३ ॥

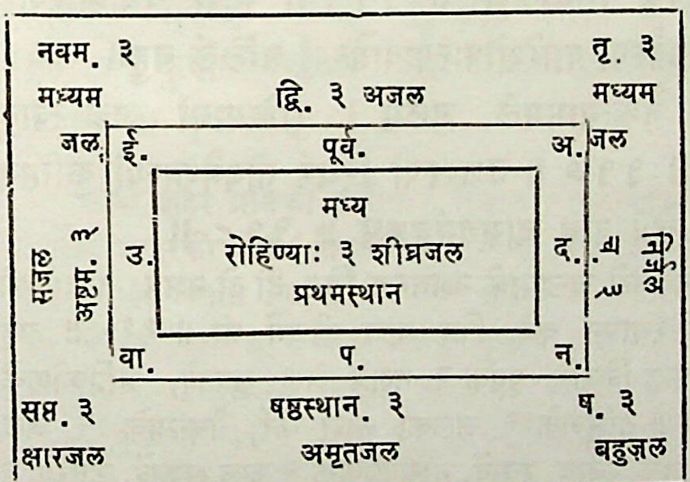
अथ गृहे कूपकरणे फलम् । भूतिं पुष्टिं पुत्रहानिं पुरंध्रीनाशं मृत्युं सम्पदं शत्रुबाधाम् । किंचित्सौख्यं शंभुकोणाद्धि कुर्यात्कूपो मध्ये गेहगा-र्थक्षयं च ॥ १०४ ॥ अथ कूपारम्भनक्षत्राणि । हस्तः पुष्यो वासवं वारुणं च मैत्रं पित्र्यं त्रीणि चैवोत्तराणि । प्राजापत्यं चापि नक्षत्रमाहुः कूपारम्भे श्रेष्ठमाद्या मुनींद्राः ॥ १०५ ॥ अथ वारफलम् । रविवारे जलं नास्ति सोमे पूर्णजलं भवेत् । वालुका भौमवारे तु बुधे बहुजलं भवेत् ॥ १०६ ॥ गुरौ च मधुरं तोयं शुक्रे क्षारं प्रजायते । शनैश्वरे जलं नास्ति कीर्त्तितं वारजं फलम् ॥ १०७ ॥ अथ वाप्यारभे विशेषनक्षत्राणि । स्वात्यश्विपुष्यहस्तेषु मैत्रे चैव पुनर्वसौ । रेवत्यां वारुणे चैव वापीकर्म प्रशस्यते ॥ १०८ ॥

(घरमें कूवा बनानेका विचार) घरके ईशानमें कूवा हो तो विभव करे, पूर्वमें पुष्टि करे, अग्निकोणमें पुत्रनाश करे, दक्षिणमें स्त्रीनाश करे, नैर्ऋत्यकोणमें

मृत्यु करे, पश्चिममें संपदा करे, वायुकोणमें शत्रुकी बाधा करे, उत्तरमें किंचित्सुख करै और घरके बीचमें कूवा हो तो घरके धनका नाश करे ॥ १०४ ॥ (अथ कूपके आरंभके नक्षत्र) हस्त, पुष्य, ध. श. अनु. म. उ. ३. रो. यह नक्षत्र कूवाके करानेमें श्रेष्ठ हैं ॥१०५॥ (वारफल) आदित्यवारको कूवा करावे तो जल नहीं निकले, सोमवारको बहुत जल निकले, मंगलको बालू रेती निकले. बुधवारको बहुत जल होवे ॥ १०६ ॥ गुरुको मीठा जल, शुक्रको खारा जल और शनिवारको बिलकुल जल नहीं निकले॥१०७॥(बावडीके नक्षत्र)स्वा. अश्वि. पुष्य. ह. अनु, पुन, रे. श. इन नक्षत्रोंमें बावडीका आरंभ शुभ है ॥ १०८ ॥

अथ कूपवापिचक्रम् । कूपवाप्योस्तु चक्रं वै विज्ञेयं विबुधैः शुभम् । रोहिणीगर्भमेतस्य त्रित्रिऋक्षाणि चंद्रभम् ॥ १०९ ॥ मध्ये पूर्वे तथाग्नेये याम्ये चैव तु नैर्ऋते । पश्चिमे चैव वायव्यां सौम्यशूलिदिशि क्रमात् ॥ ११० ॥ शीघ्रं जलं न जलं मध्यमजलमजलं बहुजलं च । अमृतजलं बहुक्षारं सजलं मध्यजलं क्रमाज्ज्ञेयम् ॥ १११ ॥ अथ लग्नानि । मत्स्ये १२ कुलीरे ४ मकरे १० ऽधिकं जलं तथैव चार्द्धं वृष २ कुंभयो ११ श्च । अलौ ८ च तौलौ ७ च जलाल्पता मता शेषाश्च सर्वेऽजलदाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ११२ ॥

कूपचक्रम्.



(कूप बावड़ीका चक्र)

अब कूप बावडीका चक्र लिखते हैं–रोहिणी नक्षत्र से दिनके नक्षत्रतक तीन तीन नक्षत्र देखे, प्रथम ३ नक्षत्र मध्यके हैं, सो उनमें शीघ्र जल आवे तीन पूर्वके हैं उनमें जल नहीं मिले, ३ अग्निकोणमें मध्यम जल होवे, ३ दक्षिणकोणमें निर्जल रहे ३ नैर्ऋत्यकोणमें बहुतजल निकले, ३ पश्चिमके नक्षत्रोंमें अमृत जल आवे, ३ वायुकोणमें खारा जल निकले, उत्तरके ३ में शीघ्र जल और ईशानके ३ नक्षत्रोंमें मध्यम जल निकले ॥ १०९ ॥ ११० ॥ १११ ॥

(लग्नविचार) मीन, कर्क, मकर इन लग्नोंमें बहुत जल हो, वृष, कुंभ, वृश्चिक. तुलामें थोड़ा जल रहे और मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, धन इन लग्नोंमें कूवे, बावड़ी तालाबका आरंभ करे तो जल नहीं रहे ॥ ११२ ॥

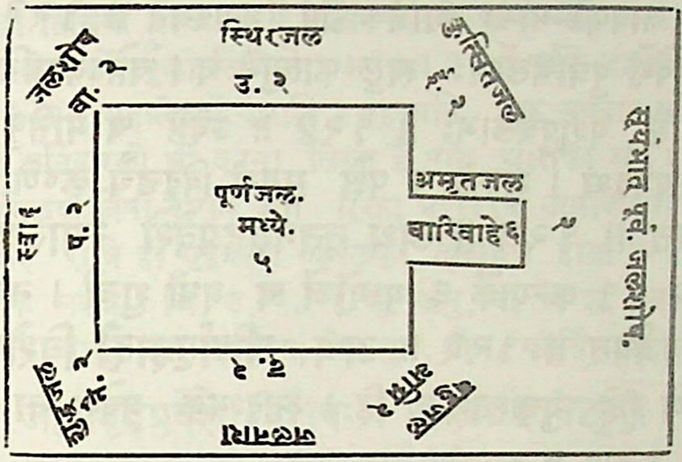
अथ तडागादिखननक्षत्राणि । मूलाग्नेयमघाद्विदैवभरणीसार्पाणि पूर्वात्रयं ज्योतिर्विद्भिरधोमुखं च नवकं भानामिदं कीर्त्तितम् ॥ वापीकूपतडागगर्तपरिखाखातो निधेरुद्धृतिः क्षेपो द्यूतबिलप्रवेशगणितारंभाः प्रसिद्ध्यंति च ॥ ११३ ॥ अथ तडागारंभनक्षत्राणि । मैत्रेन्दुपौष्णोत्तररोहिणीषु देवेज्यवारीश्वरवारिभेषु । प्रारंभणं सर्वजलाशयानां कार्य्यं सितेंद्वंशकवारलग्ने ॥ ११४ ॥

(तालाब कूवा बावडी कुंड आदि खोदनेके नक्षत्र) मू. कृ. म. वि. भ. आश्ले, पूर्वा ३, यह अधोमुख संज्ञाके नक्षत्र हैं सो इनमें बावडी, कूवां, तालाब, गर्त, खाई, खजाना आदिका खोदना और जूवा, बिलमें प्रवेश करना, गणित विद्यारंभ कहना श्रेष्ठ है ॥ ११३ ॥ (तालाबके चिननेके "चेजाके" नक्षत्र) अनु. मृ. रे. उ. रो. पुष्य, श. इन नक्षत्रोंमें और शुक्र चन्द्रमाके नवांशक, वार, लग्नमें तालाब आदिका आरंभ श्रेष्ठ है ॥ ११४ ॥

अथ तडागचक्रम् । सूर्यभाच्चंद्रभं यावद्गणयेत्सर्वथा बुधः । दिक्षु दिक्षु द्वयं न्यस्य मध्ये पंच नियोजयेत् ॥ ११५ ॥ षट्कं दद्याद्वारिवाहे फलं तस्य विचारयेत् । पूर्वस्यां वारिशोषःस्यादाग्नेय्यां सलिलं बहु॥ १६॥ दक्षिणस्यां वारिनाशो नैर्ऋत्यामपलं जलम् । पश्चिमायां जलं स्वादु वायव्यां वारिशोषणम् ॥ ११७ ॥ उत्तरस्यां स्थिरं तोयमैशान्यां कुत्सितं जलम् । मध्ये पूर्णजलं ज्ञेयं वाहे चामृतसंज्ञकम् ॥ ११८ ॥

(तडागचक्र) सूर्यके नक्षत्रसे चन्द्रमाके नक्षत्रतक गिन, दो दो नक्षत्र तालाबकी पूर्व आदि आठ दिशाओंमें स्थापन करे, फिर पांच बीचमें धरे ॥ ११५ ॥ छह जलके वहनेकी तरफ धरके फल विचारे, पूर्वके २ नक्षत्र जल सुकावें, अग्निकोणके २ बहुत, जल रखें ॥ ११६ ॥ दक्षिणके २ जलका नाश करें, नैर्ऋत्यके २ जल साफ रक्खें, पश्चिमके २ जल स्वादु रक्खें, वायुकोणके २ जल सुकावें, उत्तरके २० बहुतदिनोंतक जल रक्खें, ईशानके २ नक्षत्र मलिन जल करें, और मध्यके ५ नक्षत्र तालाबको जलसे पूर्ण रक्खें, जलप्रवाहके स्थानके ६ नक्षत्र अमृतजल करें ॥ ११७ ॥ ११८ ॥

तडागचक्रम् ।



अथ पुरग्रामप्राकारादिनिर्माणमुहूर्त्तः । प्राकारपत्तनग्रामानिर्मितौ सूत्रसाधनम् । प्रशस्तं स्याच्छुभे काले गेहारम्भोक्तभादिषु ॥ ११९ ॥ अथ देवालयमठाद्यारम्भः । गृहारम्भोक्तनक्षत्रैर्मठं कुर्यात्तु साश्विभैः । सर्वदेवालयं तैस्तु पुनर्भश्रवणान्वितैः ॥ १२० ॥ अथ जैनालयाद्यारंभमुहूर्त्तः । पूर्वार्द्राभरणीधिष्ण्ये रोहिण्यां च स्थिरोदये । शुभाहे जैनगेहस्य प्रपाद्योः कृतिः शुभा ॥ १२१ ॥ अथ गृहप्रवेशः । प्रवेशं नवगेहस्य कुर्यात्सौम्यायने नरः । आरम्भोदितमासेऽपि कृत्वा प्राग्वास्तुपूजनम् ॥ १२२ ॥

(नगर शहर ग्रामकी सफील (दिवाल) बनानेका मु.) यदि पुर, ग्राम, गढ़ आदिके बाहरकी भीत (दिवाल) बनाना हो और सूत्र साधन करना हो तो गृहारंभके पूर्वोक्त श्रेष्ठ नक्षत्र मुहूर्त्तमें कराने शुभ हैं ॥ ११९ ॥ (देवमंदिर, मठ, धर्मशाला आदिके बनानेका मु.) यदि देवोंके मंदिर बनाने हों तो गृहारंभके नक्षत्रोंमें और पुनर्वसु, श्रवण नक्षत्रोंमें बनाने और मठ बनाना हो तो अश्विनीसहित गृहारंभके नक्षत्रोंमें बनाना श्रेष्ठ है ॥ १२० ॥ (जैनोंके आलयादि बनानेका मुहूर्त्त) पूर्वा ३, आ. भ. रो. इन नक्षत्रोंमें, स्थिर लग्नोंमें और श्रेष्ठ दिनमें जैनमतवालोंका मंदिर, जलकी पो (प्याऊ) गुफा करनी शुभ हैं ॥१२१॥ इति गृहाद्यारंभ । (गृहप्रवेशका विचार) नवीन घरका प्रवेश उत्तरायण सूर्यमें और गृहारंभके महीनोंमें वास्तुका पूजन करके करना श्रेष्ठ है ॥ १२२ ॥

गृहप्रवेशे ग्राह्यमासविचारः । माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाः शस्ता नवे गृहे । जीर्णादौ श्रावणो मार्गः कार्त्तिकोऽपि प्रशस्यते ॥ १२३ ॥ माघेऽर्थलाभः प्रथमप्रवेशे पुत्रार्थलाभः खलु फाल्गुने च । चैत्रेऽर्थहानिर्धनधान्यलाभो वैशाखमासे पशुपुत्रलाभः ॥ १२४ ॥ ज्येष्ठे च मासेषु परेषु नूनं हानिप्रदः शत्रुभयप्रदश्च । शुक्ले च पक्षे सुतरां विवृद्ध्यै कृष्णे च यावद्दशमी च तावत् ॥ १२५ ॥ अथ नूतनगृहप्रवेशे त्याज्यमासाः । कुलीर ४ कुम्भ ११ कन्यार्के ६ मार्गोर्जे च मधौ शुचौ । नववेश्मप्रवेशं तु सर्वथा परिवर्जयेत् ॥ १२६ ॥ अथ जीर्णगृहादौ विशेषः । पुनर्विनिर्मिते जीर्णे गृहेऽप्युक्तस्तथैव हि । आवश्यके प्रवेशे ना कुर्यादस्तविचारणाम् ॥ १२७ ॥

गृहप्रवेशमें शुभमास) माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ यह मास नवीन घरके प्रवेशमें शुभ हैं और श्रावण, मार्गशिर, कार्त्तिक पुराने घरके प्रवेशमें श्रेष्ठ जानने ॥ १२३ ॥ माघमें प्रवेश करे तो धनका लाभ हो, फाल्गुनमें पुत्रका, धनका लाभ करे चैत्रमें धनकी हानि हो, वैशाखमें धन धान्यका लाभ हो और ज्येष्ठमें पशु पुत्रका लाभ हो, बाकीके महीने हानि करते हैं और शत्रुका भय करते हैं और शुक्ल पक्षमें तथा कृष्णपक्षकी दशमीतक नवीन घरका प्रवेश करे तो वंशकी वृद्धि हो ॥ १२४ ॥ ॥ १२५ ॥ (नवीन घरके प्रवेशमें निषिद्ध मास) कर्क, कुंभ, कन्या इनके सूर्यमें और मार्गशिर, कार्त्तिक, चैत्र, आषाढ इन महीनोंमें नवीन घरका प्रवेश सर्वथा नहीं करना चाहिये ॥ १२६ ॥ पुराने घरको फिर नवीन करते हुए तथा पुराने घरमें प्रवेश करे तो अति जरूरत होनेसे शुक्र आदिके अस्तका और महीनोंका विचार नहीं करना चाहिये ॥ १२७ ॥

अथ प्रवेशे द्वारवशात्तिथयः । नन्दायां १ । ६ । ११ दक्षिणद्वारं भद्रायां २।७।१२ पश्चिमास्यकम् । जयाया ३। ८। १३ मुत्तरद्वारं पूर्णायां ५।१०।१५ पूर्वतो विशेत ॥ १२८ ॥ अथ वारास्तत्फलं च । गुरुशुक्रबुधाख्येषु वारेषु च सुखार्थदम् । प्रवेशे तु शनौ स्थैर्यं किंचिच्चौरभयं भवेत् ॥ १२९ ॥ व्यर्कारवारतिथिषु रिक्तामावर्जितेषु च । दिवा वा यदि वा रात्रौ प्रवेशो मंगलप्रदः ॥ १३० ॥ अथ गृहप्रवेशनक्षत्राणि । चित्रोत्तराधातृशशांकमित्रवस्वंत्यवारीश्वरभेषु नूनम् । आयुर्धनारोग्यसुपुत्रपौत्रसत्कीर्त्तिदः स्यात्त्रिविधः प्रवेशः ॥ १३१ ॥

(गृहप्रवेशकी तिथि) नंदा तिथियों १।६।११ में दक्षिण द्वारके घरमें प्रवेश करना शुभ है, भद्रा तिथियों २।७।१२ में पश्चिम द्वारके घरमें और जया तिथियों ३।८।१३ में उत्तर द्वारके घरमें, पूर्णा तिथियों ५ । १० । १५ में पूर्वके द्वारके घरमें प्रवेश करना श्रेष्ठ है ॥१२८॥ (गृहप्रवेशमें वारादि) बृहस्पति, शुक्र बुधवार प्रवेशमें शुभ हैं और स्थिर कार्य शनिवारको भी करना लिखा है परंतु चोरोंका भय होता है ॥ १२९ ॥ आदित्य मंगलके विना वारोंमें और रिक्ता ४।९।१४ अमावास्याके विना तिथियोंमें दिन हो चाहे रात्रि हो गृहप्रवेश मंगलका देनेवाला होता है ॥ १३० ॥ (नवीन घरमें प्रवेशके नक्षत्र) चि. उ. ३, रो. मृ. अनु. ध. रे. श. इन नक्षत्रोंमें तीनोंही प्रवेश करें तो आयु, धन, आरोग्य, श्रेष्ठ पुत्र, पौत्र, कीर्ति प्राप्त होती है ॥ १३१ ॥

अथ जीर्णगृहप्रवेशे विशेषः । धनिष्ठाद्वितये पुष्ये ह्युत्तरे रोहिणीद्वये । चित्रास्वात्यनुराधांत्ये प्रविशेज्जीर्णमंदिरम् ॥ १३२ ॥ अथ निषिद्धनक्षत्राणि । अर्कानिलेशादितिदस्रविष्णुऋक्षे प्रविष्टं नवमन्दिरं यत् । अब्दत्रयात्तत्परहस्तयात शेषेषु धिष्ण्येषु च मृत्युदं स्यात् ॥१३३॥ अथ वास्तुपूजननक्षत्राणि । चित्रा शतभिषा स्वाती हस्तः पुष्यः पुनर्वसुः । रोहिणी रेवती मूलं श्रवणोत्तरफाल्गुनी ॥ १३४ ॥ धनिष्ठा चोत्तराषाढोत्तराभाद्रपदान्विताः । अश्विनी मृगशीर्षं च ह्यनुराधा तथैव च ॥१३५॥ वास्तुपूजनमेतेषु नक्षत्रेषु करोति यः । स प्राप्नोति नरो लक्ष्मीमिति शास्त्रेषु निश्चयः ॥ १३६ ॥ अथ वास्तुपूजाऽकरणेऽनिष्टफलम् । वास्तुपूजामकृत्वा यः प्रविशेन्नवमन्दिरे ॥ रोगान्नानाविधान् क्लेशानश्नुते सर्वसंकटम् ॥ १३७ ॥ गृहादिकरणे यत्र नार्चिता वास्तुदेवताः । तत्र शून्यं भवेत्सद्म रक्षोविघ्नादिभिर्हतम् ॥ १३८ ॥ निर्माणे मंदिराणां च प्रवेशे त्रिविधेऽपि वा । वास्तुपूजा प्रकर्त्तव्या सर्वदा शुभकांक्षिणा ॥१३९॥

(पुराने घरका प्रवेश नक्षत्र) ध. श. पुष्य उ. ३ रो. मृ. चि. स्वा. अनु. र. इन नक्षत्रोंमें पुराने घरका प्रवेश शुभ है ॥ १३२ ॥ (निषिद्ध नक्षत्र) ह. कृ, पुन अश्वि. श्र. इन नक्षत्रोंमें नवीन घरमें प्रवेश करे तो मृत्यु होवे ॥ १३३ ॥ (वास्तुपूजाके नक्षत्र) चि. श. स्वा. ह. पु. पु. रो. रे. मू. श्र. उत्तराफा, ध. उ. षा. उ भा. अश्वि. मृ. अनु. इन नक्षत्रोंमें वास्तुकी पूजा करे तो लक्ष्मी प्राप्त होवे ॥ १३४–१३६ ॥ (वास्तुकी पूजा न करनेमें अनिष्ट फल) यदि वास्तुकी पूजा शांति करे

विना नवीन घरमें प्रवेश हो तो रोग, नाना क्लेश, सर्व प्रकारका संकट भोगता है ॥ १३७ ॥ घर, दुकान, बैठक, शाला आदि नवीन करके वास्तुकी पूजा शांति नहीं करे तो वह स्थान राक्षस, भूत, प्रेतोंके विघ्नोंसे शून्य (सूना) होजाता है ॥ १३८ ॥ इस वास्ते नवीन घर आदिके तीनों प्रकारके प्रवेशमें शुभकी कामनावालेको वास्तुपूजा करनी चाहिये ॥ १३९ ॥

अथ त्रिविधप्रवेशलक्षणम् । अपूर्वसंज्ञः प्रथमः प्रवेशो यात्रावसाने स तु पूर्वसंज्ञः । द्वंद्वाह्वयस्त्वग्निभयादिजातः प्रवेश एवं त्रिविधः प्रदिष्टः ॥ नवप्रवेशे त्वथ कालशुद्धिर्न द्वन्द्वसौपूर्विकयोः कदाचित् ॥ १४० ॥ अथ विशेषलक्षणम् । अपूर्वो नवगेहादौ प्रवेशे मुनिभिः स्मृतः ॥ १४१ ॥ सपूर्वस्तु प्रवासांते पूर्वाऽपूर्व इतः परः । आरम्भोदितधिष्ण्यैः कार्योऽपूर्वः प्रवेशकः ॥ १४२ ॥ पूर्वाऽपूर्वोऽश्विनीमूलश्रवणार्कान्वितैस्तथा । सपूर्वस्तूत्तराचित्रानुराधारेवतीमृगे ॥ १४३ ॥ रोहिण्यां कथितः प्राज्ञैः प्रवेशस्त्रिविधो गृहे । द्वन्द्वसौपूर्विकगृहे मासदोषो न विद्यते ॥ १४४ ॥

(तीन प्रकारके प्रवेशका लक्षण) नवीन घरमें प्रवेश होवे सो अपूर्व संज्ञक है और यात्राके अनंतर प्रवेश होवे सो पूर्वसंज्ञक है, अग्नि आदि द्वारा नष्ट हुए घरमें प्रवेश होवे सो द्वंद्वसंज्ञक होता है इसप्रकार प्रवेश तीन प्रकारका है नवीन घरके प्रवेशमें कालशुद्धि देखना और पूर्वसंज्ञक द्वंद्वसंज्ञक प्रवेशमें कालकी जरूरत नहीं है ॥ १४० ॥ अपूर्वसंज्ञा नवीन घरमें प्रवेशकी मुनियोंने कही है और यात्राके अनंतरके प्रवेशकी पूर्वसंज्ञा है और तीसरी अग्नि आदिके द्वारा नष्ट हुए घरके प्रवेशकी पूर्वापूर्व संज्ञा है सो गृहारंभके नक्षत्र महीनों करके अपूर्व प्रवेश शुभ होता है और अ. मू. श्र. ह. इन नक्षत्रों सहित गृहारंभ नक्षत्रोंमें पूर्वाऽपूर्व शुभ है और उ. ३, चि. अनु. रे. मृ. रो. इन नक्षत्रोंमें पूर्वप्रवेश शुभ है इस प्रकार तीन भेद प्रवेशका जानना, परंतु द्वंद्वसंज्ञक प्रवेशमें तथा पूर्वसंज्ञक प्रवेशमें मासआदिका दोष नहीं है ॥ १४१–१४४ ॥

अथ त्याज्याः । कुयोगे पापलग्ने च चरलग्ने चरांशके । शुभकर्मणि ये वर्ज्यास्ते वर्ज्याः स्युः प्रवेशने ॥ १४५ ॥ क्रूरयुक्तं क्रूरविद्धं मुक्तं क्रूरग्रहेण च ॥ यद्भंतव्यं न तच्छस्तं त्रिविधोत्पातदूषितम् ॥ १४६ ॥ लत्तया निहतं यच्च क्रांतिसाम्येन दूषितम् । प्रवेशे त्रिविधे त्याज्यं ग्रहणेनाभिदूषितम् ॥ १४७ ॥ स्थिरलग्ने स्थिरांशे च प्रवेशः शुभदः स्मृतः । चर-

लग्ने चरांशे च प्रवेशो न शुभावहः ॥ १४८ ॥ अकपाटमनाच्छन्नमद-त्तबलिभोजनम् । गृहं न प्रविशेदेव विपदामाकरं हि तत् ॥ १४९ ॥ अथ लग्नशुद्धिः । केंद्र १ । ४ । ७ । १० त्रिकोण ९ । ५ य ११ धन २ त्रि ३ संस्थैः शुभैस्त्रिषष्ठाय ३ । ६ । ११ गतैः खलैश्च । लग्नांत्य १ । १२ षष्ठाष्टम ६ । ८ वर्जितेन चंद्रेण लक्ष्मीनिलयप्रवेशः ॥ १५० ॥ प्रवेशलग्नान्निधन ८ स्थितो यः क्रूरग्रहः क्रूरगृहे यदि स्यात् । प्रवेशकर्त्तारमथ त्रिवर्षाद्धंत्यष्टवर्षैः शुभराशिगश्चेत् ॥ १५१ ॥

(त्याज्य योगादि) मृत्यु आदि दुष्टयोगोंमें, पापग्रहकी राशिके लग्नमें, चरलग्न, चरनवांशकमें और शुभकर्ममें वर्जे हुए दुष्ट दिनोंमें गृहप्रवेश नहीं करना ॥ १४५ ॥ पापग्रह करके युक्त नक्षत्र और पापग्रहोंसे वेधित नक्षत्र तथा पापग्रहों करके त्यागा हुआ नक्षत्र या पापग्रह आनेवाला नक्षत्र, या उत्पातोंके दिनका नक्षत्र, लात लगा हुआ नक्षत्र और क्रांतिसाम्य दोष या ग्रहणका नक्षत्र तीनों प्रकारके प्रवेशमें त्यागने चाहिये ॥१४६॥१४७॥ स्थिरलग्न स्थिरनवांशकमें गृहप्रवेश शुभ है और चरलग्न चरनवांशकमें अशुभ है ॥ १४८ ॥ परन्तु किवांड (कपाट) रहित हो और ऊपरसे आच्छादन नहीं किया हुआ हो तथा वास्तुशांति ब्राह्मण भोजनादिसे रहित हो तो उस घरमें प्रवेश न.ीं होना चाहिये, कारण कि दुःखके करनेवाला होता है ॥१४९॥ (लग्नशुद्धि) शुभग्रह केंद्र १ । ४ । ७ । १० । त्रिकोण ९ । ५ । ११ । २ । ३ स्थानोंमें होवे, पापग्रह ३ । ६ । ११ इन स्थानोंमें होवें और १ । १२ । ६ । ८ इन स्थानोंके विना चन्द्रमा अन्यस्थानोंमें हो तो गृहप्रवेश करना शुभदायक है ॥ १५० ॥ यदि लग्नसे आठवें स्थानमें पापग्रह पापराशिपर होवें तो प्रवेश करनेवालेको तीसरे वर्षमें मारते हैं और शुभग्रहोंकी राशिपर होवें तो आठ बरससे मारे ॥ १५१ ॥

अथ स्नानशुद्धिः । विवाहे सप्तमं शुद्धं यात्रायामष्टमं तथा । दशमं च गृहारंभे चतुर्थं च प्रवेशने ॥ १५२ ॥ स्थिरलग्ने स्थिरे राशौ नैधने शुद्धिसंयुते । गृहप्रवेशः शुभदो लग्नात्केंद्रे गुरौ भृगौ ॥ १५३ ॥ अथाष्टमगे चंद्रे विशेषः । अष्टमस्थे निशानाथे यदि योगशतैरपि । तदा ते निष्फला ज्ञेया वृक्षा वज्रहता इव ॥ १५४ ॥ क्षीणचन्द्रोऽन्त्यषष्ठाष्टसस्थितो लग्नतस्तथा ॥ भार्याविनाशनं वर्षात्सौम्ययुक्ते त्रिवर्षतः ॥ ॥ १५५ ॥ अथ प्रवेशे विशेषविचारः । कृत्वा शुक्रं पृष्ठतो वाम-

तोऽर्के विप्रान् पूज्यानग्रतः पूर्णकुंभम् । हर्म्यं रम्यं तोरणस्रग्वितानैः स्त्रीभिः स्रग्वी गीतमाल्यैर्विशेत्तत् ॥ १५६ ॥

(स्थानशुद्धि) विवाहमें सातवां घर ग्रहरहित शुभ होता है और यात्रामें आठवां, गृहारंभमें दशवां और गृहप्रवेशमें चौथा स्थान शुद्ध चाहिये ॥ १५२ ॥ स्थिरलग्न स्थिर नवांशक हो, आठवां स्थान शुद्ध हो और लग्नमें या केन्द्रमें गुरु शुक्र होवें तो गृहप्रवेश शुभका देनेवाला होता है ॥ १५३ ॥ यदि आठवें चन्द्रमा हो तो सैकडों योग ऐसे निष्फल हो जाते हैं जैसे वज्र करके वृक्ष नष्ट हो जाते हैं ॥ १५४ ॥ लग्नसे छठे ६ आठवें ८ क्षीण चन्द्रमा हो तो एक बरससे स्त्री मरजावे और शुभग्रह होवें तो तीन बरसमें मरे ॥ १५५ ॥ शुक्रको पिछाडी तथा अर्कको वामभागमें करके ब्राह्मणोंको पूजके अगाडीको जलसे पूर्ण किया हुआ कुंभ सुंदर तोरन माला चांदनी आदिसे विभूषित गीत गाती हुई स्त्रियों करके सहित घरमें प्रवेश करे ॥ १५६ ॥

अथ वामार्कलक्षणम् । रंध्रा ८ त्सुत्रा ५ द्धना २ दाया ११ त्पंचस्वर्के स्थिते क्रमात् । पूर्वाशादिमुखं गेहं विशेद्वामो भवेयतः ॥ १५७॥

अथ प्रवेशे कलशचक्रम् । भू १ वेंदपंचकं ४ । ४ । ४ । ४ । ४ त्रि ३ द्विः ३ प्रवेशे कलशेऽर्कभात । मृतिर्गतिर्धनं श्रीः स्याद्वैरं शुक् स्थिरता सुखम् ॥ १५८ ॥ **अथ प्रवेशकृत्यम्** । कृत्वाऽग्रतो द्विजवरानथ पूर्णकुंभं दध्यक्षताम्रदलपुष्पफलोपशोभम् । दत्त्वा हिरण्यवस्त्रानि तथा द्विजेभ्यो मांगल्यशांतिनिलयं स्वगृहं विशेच्च ॥ १५९ ॥ गृह्योक्तहोमविधिना बलिकर्म कुर्यात्प्रासादवास्तुशमने च विधिर्य उक्तः । संतर्पयेद्द्विजवरानथ भक्ष्यभोज्यैः शुक्लांबरः स्वभवनं प्रविशेत्सुखपम् ॥ ॥ १६० ॥ **अथ सर्वदेवप्रतिष्ठामुहूर्त्ताः** । **तत्र तावत्सामान्यतः सर्वेषां देवानां प्रतिष्ठाकालः** । अथातः संप्रवक्ष्यामि प्रतिष्ठाकालमुत्तमम् । चैत्रे वा फाल्गुने वाऽपि ज्येष्ठे वा माधवे तथा ॥ १६१ ॥ माघे वा सर्वदेवानां प्रतिष्ठा शुभदा भवेत् । प्राप्य पक्षं शुभं शुक्लमतीते दक्षिणायने ॥ १६२ ॥

(वामरवि) पूर्वको मुखवाले घरमे आठवें स्थानसे पांच स्थानोंमें सूर्य होनेसे वाम रवि होता है और दक्षिण द्वारमें पांचवें स्थानसे पांच घरोमें सूर्य होनेसे वाम रवि होता है, पश्चिम मुखके घरमें दूसरे स्थानसे पांच स्थानोंमें और उत्तर मुखके घरमें ग्यारहवें स्थानसे पांच स्थानोंमें सूर्य होनेसे वाम रवि होता है ॥ १५७ ॥ (कलश)

चक्रम्) सूर्यके नक्षत्रसे १ नक्षत्र मृत्यु करे, ४ घर छुटावं, ४ धन करें ४ श्री करें, ४ वैर करें, ४ शोक करें, ३ स्थिरता करें ३ सुख करें ॥ १५८ ॥ प्रथम ब्राह्मणोंको सुवर्ण वस्त्र देवे फिर उनको अगाडी करके और दधि, चावल, आमके पात, पुष्प, नारेल आदिसे पूर्ण कलश ढके मांगलिक शांति युक्त शब्दोंसे घरमें प्रवेश करे ॥ १५९ ॥ परन्तु पहले दिन वास्तुशांतिके लिखेमुजब होम बलि कर्म करके और ब्राह्मणोंका भक्ष्य भोज्य पदार्थ भोजन कराके नवीन सफेद वस्त्र पहरे हुए श्रेष्ठ घरमें प्रवेश करे ॥ १६० ॥ (सर्व देवोंकी प्रतिष्ठाका मुहूर्त्त)चैत्र, फाल्गुन ज्येष्ठ, वैशाख, माघ इन महीनोंमें तथा शुक्लपक्षमें उत्तरायण सूर्य आनेसे सर्व देवोंकी प्रतिष्ठा शुभ है ॥ १६१ ॥ १६२ ॥

अथ प्रतिष्ठाविधाने तिथिविचारः । पंचमी च द्वितीया च तृतीया सप्तमी तथा । दशमी पौर्णमासी च तथा श्रेष्ठा त्रयोदशी ॥ १६३ ॥ आसु प्रतिष्ठा विधिवत्कृता बहुफला भवेत् । या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा तस्य कीर्त्तिता ॥ १६४ ॥ प्रतिपद्धनदस्योक्ता पवित्रारोहणे तिथिः । श्रियो देव्या द्वितीया च तिथीनामुत्तमा स्मृता ॥ १६५ ॥ तृतीया तु भवान्याश्च चतुर्थी तत्सुतस्य च । पंचमी सोमराजस्य षष्ठी प्रोक्ता गुहस्य च ॥ १६६ ॥ सप्तमी भास्करे प्रोक्ता दशमी वासुकेस्तथा । एकादशी ऋषीणां च द्वादशी चक्रपाणिनः ॥ १६७ ॥ त्रयोदशी त्वनंगस्य शिवस्योक्ता चतुर्दशी । मम चैव मुनिश्रेष्ठ पौर्णमासी तिथिः स्मृता ॥ १६८ ॥

(प्रतिष्ठाकरनेमें तिथियोंका विचार) ५।२।३।७।१०।१५।१३ इन तिथियोंमें प्रतिष्ठा करनेसे बहुत फलको देती हैं, अथवा जिस देवताकी जो तिथि है उसी तिथिमें प्रतिष्ठा शुभ है ॥ १६३ ॥ १६४ ॥ प्रतिपदामें कुबेरकी प्रतिष्ठा शुभ है, द्वितीयामें लक्ष्मीकी, तृतीयामें भवानीकी, चौथमें गणेशकी, पंचमीमें चन्द्रमाकी, छठमें स्वामीकार्त्तिककी, सप्तमीमें सूर्यकी, दशमीमें वासुकिसर्पकी, एकादशीमें ऋषियोंकी, द्वादशीमें विष्णुकी, त्रयोदशीमें कामदेवकी, चतुर्दशीमें शिवकी और पूर्णिमामें ब्रह्माकी प्रतिष्ठा शुभ है ॥ १६५–१६८ ॥

अथ वाराः । सोमो बृहस्पतिश्चैव शुक्रश्चैव तथा बुधः । एते वाराः शुभाः प्रोक्ताः प्रतिष्ठायज्ञकर्मणि ॥१६९॥ **अथ नक्षत्राणि ।** आषाढे द्वे तथा मूलमुत्तराद्वयमेव च । ज्येष्ठाश्रवणरोहिण्यः पूर्वाभाद्रपदा तथा ।१७०॥

हस्तोऽश्विनी रेवती च पुष्यो मृगशिरास्तथा । अनुराधा तथा स्वाती प्रतिष्ठासु प्रशस्यते ॥ १७१ ॥ चंद्रताराबलोपेते पूर्वाह्ने शोभने दिने । शुभलग्ने शुभांशे च कर्तुर्नो निधनोदये ॥ १७२ ॥ अयने विषुवद्वन्द्वे षडशीतिमुखे तथा । सुराणां स्थापनं कार्य्यं विधिदृष्टेन कर्मणा ॥१७३॥ अथ मुहूर्त्ताः । प्राजापत्ये तु शयनं श्वेते तूत्थापनं तथा । मुहूर्त्ते स्थापनं कुर्यात्पुनर्ब्राह्मे विचक्षणः ॥१७४॥ दिनमध्यगते सूर्य्ये मुहूर्त्तेऽभिजिदष्टमे । सर्वकामसमृद्धः स्यात्सर्वोपद्रववर्जितः ॥ १७५ ॥

सोम, गुरु, शुक्र, बुध यह वार प्रतिष्ठामें शुभ हैं ॥ १६९ ॥ पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, मू, उ. २. ज्ये, श्र, रो. पूर्वाभा, ह, अश्वि, पुष्य, मृ, अनु,स्वा. यह नक्षत्र संपूर्ण प्रतिष्ठामें श्रेष्ठ हैं ॥१७०॥१७१ चन्द्रमा तारा बलवान् हो तथा शुभ दिनका प्रातःकाल हो, श्रेष्ठ लग्न शुभ नवांशक हो, यजमानकी जन्मकी आठवीं राशि विना लग्न हो अथवा अयन पलटता हो तथा मेष, तुला, धन, मिथुन, कन्याकी संक्रांतिका पुण्य दिन हो तो विधिपूर्वक देवताओंका स्थापन करना श्रेष्ठ है ॥ १७२ ॥ १७३ ॥ प्राजापत्य मुहूर्त्तमें देवोंका शयन करावे और श्वेतमुहूर्त्तमें उठाना (जागृत) शुभ है, ब्राह्ममुहूर्त्तमें स्थापन करना श्रेष्ठ है ॥ १७४ ॥ अथवा मध्याह्नमें सूर्य आनेसे आठवां अभिजित् मुहूर्त्त है सो संपूर्ण दोषोंके दूर करके कार्य सिद्ध करता है उसमें स्थापन करे ॥ १७५ ॥

अथ देवतांतरेण कालविशेषः तत्र तावच्छिवप्रतिष्ठाकालः । उत्तराशागते भानौ लिंगस्थापनमुत्तमम् । दक्षिणे त्वयनेऽपूज्यं द्विवर्षाद्वै भयावहम् ॥ १७६ ॥ स्वगृहे स्थापनं नेष्टं तथा वै दक्षिणायने । स्थापनं तु प्रकर्त्तव्यं शिशिरादावृतुत्रये ॥१७७॥ प्रावृषि स्थापितं लिंगं भवेद्वरदयोगदम् । हेमंते ज्ञानदं लिंगं शिशिरे सर्वभूतिदम् ॥ १७८ ॥ लक्ष्मीप्रदं वसंते च ग्रीष्मे च जयशांतिदम् । यतीनां सर्वकाले तु लिंगस्यारोपणं मतम् ॥ १७९ ॥ माघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढेषु पंचसु । श्रावणे च नभस्ये च लिंगस्थापनमुत्तमम् ॥ १८० ॥ लग्नं च वृश्चिकः सिंहो मेषो मिथुनकर्कटौ । तथा कन्या तुला कुंभो वृषभश्च प्रशस्यते ॥ १८१ ॥

(जुदे जुदे देवोंकी प्रतिष्ठाका विचार) उत्तरायणसूर्यमें लिंगस्थापन करना शुभ है यदि दक्षिणायनमें करें तो दो बरसके अनंतर भय होता है ॥ १७६ ॥

अपने घरमें तथा दक्षिणायनमें लिंगस्थापन नहीं करना और शिशिर, वसंत, ग्रीष्म ऋतुमें स्थापन करना चाहिये ॥ १७७ ॥ प्रावृट्कालमें स्थापित हुआ लिंग वरको देता है, हेमंतमें ज्ञान देता है, शिशिरमें संपत्ति देता है ॥ १७८ ॥ वसंतमें लक्ष्मी देता है, ग्रीष्मऋतुमें जय शांति करे और यतिसंन्यासियोंको सदैव लिंगस्थापन करना शुभ है ॥ १७९ ॥ माघ, फाल्गुन, वैशाख ज्येष्ठ, आषाढ यह मास और श्रावण भाद्रपद भी लिंगस्थापनमें शुभ हैं ॥ १८० ॥ वृश्चिक, सिंह, मेष मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, कुंभ, वृष, यह लग्न श्रेष्ठ हैं ॥ १८१ ॥

अथ विष्णुप्रतिष्ठायां विशेषः । मार्गशीर्षकमाघौ द्वौ निंदितौ ब्रह्मणा पुरा । मासेषु फाल्गुनः श्रेष्ठश्चैत्रौ वैशाख एव च ॥ १८२ ॥ पूर्वपक्षे शुभे काले स्थिरे चोर्ध्वमुखेऽपि भे । अनुकूले च लग्ने च हरिः स्थाप्यो नरैस्तथा ॥ १८३ ॥ चरराशिं परित्यज्य स्थिरराशिं प्रगृह्य च । सुप्रशस्ते मुहूर्त्ते वै प्रतिष्ठां कारयेद्धरेः ॥ १८४ ॥ अथ देवीप्रतिष्ठाकालः । गुरौ मेषगते शुक्रे देवीं संस्थापयेदथ । इहैव स भवेद्धन्यो मृतो गच्छेत्परं पदम् ॥ १८५ ॥ तस्मान्मेषगते शुक्रे उत्तमा नवमी स्मृता । तथा माघाश्विनौ मासावुत्तमौ परिकीर्त्तितौ ॥ १८६ ॥ न तिथिर्न च नक्षत्रं नोपवासोऽत्र कारणम् । मातृभैरववाराहनारसिंहात्रिविक्रमाः ॥१८७॥ महिषासुरहन्त्र्यश्च स्थाप्या वै दक्षिणायने । सर्वकालं प्रकर्त्तव्यं कृष्णपक्षे विशेषतः ॥१८८॥ रात्रिरूपा यतो देवी दिवारूपो महेश्वरः । अतः स्वकालपूजाभिः सिद्धिदा परमेश्वरी ॥ १८९ ॥

(विष्णुकी प्रतिष्ठाका विशेष विचार) मार्गशिर, माघ यह ९ महीने विष्णुकी प्रतिष्ठामें ब्रह्मा करके पूर्व त्यागे हुए हैं और फाल्गुन, चैत्र, वैशाख यह श्रेष्ठ हैं ॥ ॥ १८२ ॥ शुक्लपक्ष हो स्थिर काल हो और (ऊर्ध्वमुख) उ. २. रो. पुष्य. आ. श्र ध, श, यह नक्षत्र होवें, श्रेष्ठ लग्न हों तव विष्णु स्थापन करना शुभ है ॥ १८३ ॥ चरराशिके लग्नोंको त्यागके स्थिर राशिके लग्नमें श्रेष्ठ मुहूर्त्तमें विष्णुस्थापन करे ॥ ॥ १८४ ॥ (देवीकी प्रतिष्ठाका विचार) गुरु, शुक्र मेषराशिपर हों तव देवीस्थापन करे तो इस लोकमें धन्य धन्य होके मरनेके बाद परम मोक्षको जाता है ॥ १८६ ॥ इस वास्ते मेषके शुक्रमें नौमी तिथिमें और माघ, आश्विनके मासमें देवीप्रतिष्ठा श्रेष्ठ है ॥ १८५ ॥ देवीकी प्रतिष्ठामें तिथि नक्षत्र उपवास व्रत आदिकी जरूरत नहीं है कारण कि मातृका, भैरव, वाराह नृसिंह, वामन, दुर्गा यह देवता दक्षिणायन

सूर्यमें ही स्थापन करने शुभ हैं और सदैव मुहूर्त्त श्रेष्ठ है, परन्तु कृष्णपक्षमें विशेष श्रेष्ठ है ॥ १८७ ॥ १८८ ॥ कारण कि रात्रिरूपा देवी है और दिनरूप महादेव हैं इसवास्ते अपने समय (रात्रि) में ही देवी पूजा करनेसे फलको देती है ॥ १८९ ॥

अथ देवताविशेषेण नक्षत्रविशेषः । विष्णोः पूर्वोदिते भेऽनुराधाचित्राद्वयोः स्थिते । रोहिणीश्रवणज्येष्ठापुष्ये चाभिजितीरितम् ॥ १९० ॥ विधिवासवयोः सम्यक् प्रतिष्ठापनमार्यकैः । भानोर्हस्तेऽनुराधायां कुबेरस्कंदयोरपि ॥ १९१ ॥ मूले दुर्गादिकानां च श्रवणे सुगतस्य हि । रेवत्यां धर्महेरंबफणिप्रथमरक्षसाम् ॥ १९२ ॥ यक्षभूताऽसुराणां च वाग्देव्याः स्थापनं स्मृतम् । व्यासागस्त्यग्रहाणां च वाल्मीकेः पुष्यभे तथा ॥१९३ ॥ यत्र सप्तर्षयो यांति धिष्ण्ये तेषां तु तत्र च । सर्वेषामेव रोहिण्यामुत्तरात्रितये तथा ॥ धनिष्ठायां दिगीशानां प्रतिष्ठापनमीरितम् ॥ १९४ ॥

(जुदे जुदे देवोंके नक्षत्र) विष्णुकी प्रतिष्ठाका नक्षत्र पहिला लिख चुके हैं सो ही जानना और ब्रह्मा, इन्द्रके स्थापनमें, अनु. चि. स्वा. मृ. रो. श्र. ज्ये. पुष्य- अभि, यह नक्षत्र शुभ हैं, सूर्यके स्थापनमें, हस्त नक्षत्र शुभ है, कुबेर स्वामिकार्त्तिकके स्थापनमें अनुराधा शुभ है ॥ १९० ॥ १९१ ॥ दुर्गा भैरव आदि क्रूरदेवोंका मूल. नक्षत्रमें स्थापन श्रेष्ठ है, जैनियोंका पारशनाथ तथा बौद्धका स्थापन श्रवणमें शुभ है, धर्मराज, गणेशजी, शेषनाग, शिवके गण, राक्षस, यक्ष, भूत, दैत्य, सरस्वती इनका रेवतीमें स्थापन करना श्रेष्ठ है, और व्यास, वाल्मीकि, अगस्त्य, सूर्यादिग्रह इनका स्थापन पुष्यनक्षत्रमें शुभ है ॥ १९२ ॥ १९३ ॥ सप्तऋषिलोग जिस नक्षत्रपर हों उसीमें श्रेष्ठ है और रो. उ. ३. यह संपूर्ण देवोंके अर्थ श्रेष्ठ हैं और इंद्रादि दिक्पालोंका स्थापन धनिष्ठा नक्षत्रमें शुभ जानना ॥ १९४ ॥

अथ लग्नानि । सिंहे सूर्यः शिवो द्वंद्वे लग्ने स्थाप्यः स्त्रियां ६ हरिः । कुंभे वेधश्चरे क्षुद्रा ह्यगदेव्यः स्थिरेऽखिलाः ॥ १९५ ॥

अथ लग्नादिस्थग्रहफलम् । लग्नस्थाः सूर्यचंद्रारराहुकेत्वर्कसूनवः । कर्तुर्मृत्युप्रदाश्चान्ये धनधान्यसुखप्रदाः ॥ १९६ ॥ द्वितीये नेष्टदाः पापाः शुभाश्चंद्रश्च वित्तदाः । तृतीये निखिलाः खेटाः पुत्रपौत्रसुखप्रदाः ॥ १९७ ॥ चतुर्थे सुखदाः सौम्याः क्रूराश्चंद्रश्च दुःखदाः ।

हानिदाः पंचमे क्रूराः सौम्याः पुत्रसुखप्रदाः ॥ १९८ ॥ पूर्णः क्षीणः शशी तत्र पुत्रदः पुत्रनाशनः । षष्ठे शुभाः शत्रुदाः स्युः पापाः शत्रुक्षयप्रदाः ॥ १९९ ॥ पूर्णः क्षीणोऽपि वा चंद्रः षष्ठेऽखिलरिपुक्षयम् । करोति कर्तुरचिरादायुःपुत्रधनप्रदः ॥ २०० ॥ व्याधिदाः सप्तमे पापाः सौम्याः सौम्यफलप्रदाः । अष्टमस्थानगाः सर्वे कर्तुर्मृत्युभयप्रदाः ॥ २०१ ॥ धर्मे पापा घ्नंति सौम्याः शुभदाः शुभदः शशी । भंगदाः कर्मगाः पापाः सौम्याश्चन्द्रश्च कीर्तिदाः ॥ २०२ ॥ लाभस्थानगताः सर्वे भूरिलाभप्रदा ग्रहाः । व्ययस्थानगताः शश्वद्बहुव्ययकरा ग्रहाः ॥ २०३ ॥ गुणाधिकतरे लग्ने दोषाल्पत्वतरे यदि । सुराणां स्थापनं तत्र कर्तुरिष्टार्थसिद्धिदम् ॥२०४॥ हंत्यर्थहीना कर्त्तारं मन्त्रहीना तु ऋत्विजम् । स्त्रियं लक्षणहीना तु न प्रतिष्ठासमो रिपुः ॥२०५॥ गृहे स्वे यो विधिः प्रोक्तो विनिवेशप्रवेशयोः । स एव विदुषा कार्य्यो देवतायतनेष्वपि ॥ २०६ ॥

(प्रतिष्ठाके लग्न) सूर्यको सिंहलग्नमें स्थापन करे, शिवको मिथुनमें, विष्णुको कन्यामें, ब्रह्माको कुंभमें, क्षुद्रदेवताओंको चर लग्नमें, कुलकी देवी आदिको स्थिरलग्नमें स्थापन करना श्रेष्ठ है ॥ १९५ ॥ (लग्न आदि १२ भावोंका फल) प्रतिष्ठाके लग्नमें सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, राहु, केतु, शनैश्चर हो तो कर्ताकी मृत्यु करें और गुरु, शुक्र, बुध हों तो धन धान्य सुख दें ॥ १९६ ॥ दूसरे पापग्रह हों तो अशुभ करें और शुभग्रह चन्द्रमा हो तो भी धन देवे । और तीसरे स्थानमें संपूर्ण ही ग्रह पुत्र पौत्र सुखको देते हैं ॥ १९७ ॥ चौथे शुभग्रह सुख देते हैं, पापग्रह दुख करें, पांचवें पापग्रह हानि करें, सौम्यग्रह तथा पूर्णचन्द्रमा पुत्रका सुख देते हैं, क्षीण चन्द्रमा पुत्र नाश करता ॥ १९८ ॥ छठे शुभग्रह शत्रुका भय करें, पापग्रह शत्रुका नाशकरें और चन्द्रमा छठे पूर्ण हो या क्षीण हो तो संपूर्णशत्रुओंका नाश करके कर्ताको आयु, पुत्र, धन देता है ॥ १९९ ॥ २०० ॥ सातवें पापग्रह रोग करें, शुभग्रह शुभफल देवें, आठवें सम्पूर्ण ग्रह मृत्युभयको देते हैं ॥ २०१ ॥ नौवें पापग्रह नाश करें, शुभग्रह शुभफल देवें और दशवें पापग्रह भंग देवें, चन्द्रमा कीर्ति करें ॥ २०२ ॥ ग्यारहवें सम्पूर्ण ग्रह बहुत लाभ करें और बारहवें सम्पूर्ण ग्रह खरच करावें ॥ २०३ ॥ लग्नमें अधिक गुण हो और दोष थोडा हो तब देवोंके स्थापनकर्ताको सिद्धि देते हैं ॥२०४॥ जो प्रतिष्ठा धन विना की हो सो यजमानको मारती है, मंत्रविधिसे रहित हो सो आचार्य ऋत्विजोंको और लक्षणहीन हो सो यजमानकी स्त्रीको मारती है कारण

कि प्रतिष्ठाकर्मके बराबर कोई शत्रु नहीं है इसवास्ते कर्ताको लोभ नहीं करना चाहिये ॥ २०५ ॥ जो विधि घरके प्रवेशमें लिखी है सो ही विधि देवोंकी प्रतिष्ठामें करनी चाहिये ॥ २०६ ॥

अथ तडागाद्युत्सर्गकालः । अधुना कथयिष्यामि वापीकूपक्रिया-विधिम् । तडागपुष्करोद्यानमंडपानां यथाक्रमात् ॥ २०७ ॥ आयव्ययादिसंशुद्धिं मासशुद्धिं तथैव च । यथा गेहे देवगेहे तथैवात्र विचारयेत ॥ २०८ ।

(तड़ाग आदिकी प्रतिष्ठाका मु.) अब बावड़ी, कूवा, तालाव, तलाई, बगीचा, मंडप आदिका मुहूर्त्त कहते हैं ॥ २०७ ॥ ग्यारवें, बारहवें आदि स्थानोंकी शुद्धि और मास, तिथि आदिकी शुद्धि जैसी पहले नूतनघरकी तथा देवप्रतिष्ठाकी जो कही है सो ही देखनी चाहिये ॥ २०८ ॥

अथ वाप्यादीनामुत्सर्गे शुभदिनादि । वापीकूपतडागानां तस्मिन् काले विधिः स्मृतः । सुदिने शुभनक्षत्रे प्रतिष्ठा शुभदा स्मृता ॥ २०९ ॥ कर्कटे पुत्रलाभश्च सौख्यं तु मकरे भवेत् । मीने यशोऽथेलाभस्तु कुम्भे च सुबहूदकम् ॥ २१० ॥ वृषे च मिथुने वृद्धिर्वृश्चिके लक्षणं भवेत् । पितृतृप्तिश्च कन्यायां तुलायां शाश्वती गतिः ॥ २११ ॥ सिंहे मेषे हये नाशं जलस्य द्विज इच्छति ॥ तस्मिन् सलिलसम्पूर्णे कार्तिके च विशेषतः ॥ २१२ ॥ तडागस्य विधिः कार्यः स्थिरनक्षत्रयोगतः । मुनयः केचिदिच्छति व्यतीते चोत्तरायणे । न कालनियमस्तत्र सलिलं तत्र कारणम् ॥ २१३ ॥ अथ नक्षत्राणि । रोहिणी चोत्तरात्रीणि पुष्यं मैत्रं च वारुणम् । पित्र्यं च वसुदैवत्यं भगणो वारिबन्धने ॥ २१४ ॥

और शुभ दिन शुभ नक्षत्रोंमें तालाब आदिका उत्सर्ग श्रेष्ठ होता है ॥ २०९ ॥ कर्कके सूर्यमें उत्सर्ग करे तो पुत्रका लाभ हो, मकरमें सुख हो, मीनके सूर्यमें यश धनका लाभ हो, कुम्भकेमें बहुत जल रहे ॥ २१० ॥ वृष मिथुनकेमें जलकी वृद्धि हो, वृश्चिककेमें अच्छा जल रहे, कन्याकेमें पितरोंकी तृप्ति हो, तुलाकेमें सदैव जल रहे ॥ २११ ॥ सिंह, मेष, धनके सूर्यमें जलका नाश होता है और तालाब जलसे भरगया हो और कार्त्तिकमें विशेष करके स्थिरनक्षत्रोंके योगसे तडागकी प्रतिष्ठा करना शुभ है और कई आचार्य उत्तरायणके अन्तमें भी शुभ मानते हैं, परन्तु

यहां कालका नियम नहीं है जब जलसे भरजावे तब ही प्रतिष्ठा करनी चाहिये ॥ ॥ २१२ ॥ २१३ ॥ रो, उ. ३, पु, अनु, शत, मघा, धनिष्ठा यह नक्षत्र जलाशयों के उत्सर्गमें श्रेष्ठ हैं ॥ २१४ ॥

तडागाद्युत्सर्गे वारविचारः । जलशोषो भवेत्सूर्ये भौमे रिक्तं विनिर्दिशेत् । मंदे च मलिनं कुर्याच्छेषा वाराः शुभावहाः ॥ २१५ ॥ अथ लग्नानि । सर्वेषु लग्नेषु शुभं वदंति विहाय सिंहा ५ लि ८ धनुर्धरां ९ श्च । ग्रहैः सदाऽऽलोकनयोगसौम्यय्योगात्प्रकुर्याज्जलभांशवर्गे ॥ २१६ ॥ केंद्रत्रिकोणेषु शुभस्थितेषु पापेषु केंद्राष्टमवर्जितेषु । सर्वेषु कार्येषु शुभं वदंति प्रासादकूपादितडागवाप्याम् ॥ २१७ ॥ अथानिष्टयोगाः । चतुर्थाष्टमगैः पापैर्लग्नगे वा खलग्रहे । चंद्रेऽष्टमे तदा कर्ता म्रियते मासमध्यतः ॥ २१८ ॥ केंद्रे पापग्रहैर्युक्ते अष्टमे च व्यये १२ ऽपि वा । धर्म ९ स्थानगतैर्वाऽपि तज्जलं क्षीयतेऽचिरात् ॥ २१९ ॥ केंद्रगैः सौरिभौमार्कैरष्टमस्थे निशाकरे । तज्जलं वर्षमध्ये तु न तिष्ठति जलाशये ॥ ॥ २२० ॥ एकः पापोऽष्टमस्थोऽपि चतुर्थे सिंहिकासुतः । नवमे भूमिपुत्रस्तु तज्जलं विषवत्स्मृतम् ॥ २२१ ॥

आदित्यवारको प्रतिष्ठा करे तो जल सूख जावे, भौमवारको जलशून्य रहे शनिवारको मलिन जल रहे, अन्य वार शुभ जानने ॥ २१५ ॥ सिंह, वृश्चिक, धन लग्नके विना अन्य संपूर्णलग्नोंमें शुभग्रहोंकी दृष्टि होनेसे और जलराशिके नवांशकमें जलका उत्सर्ग करना शुभ है ॥ २१६ ॥ शुभग्रह केंद्र १।४।७।१० त्रिकोण ९।५ में हों और पापग्रह केंद्र अष्टमके विना अन्य स्थानोंमें हों तो मंदिर, कूप, बावडी, तालाब आदिका उत्सर्ग श्रेष्ठ होता है ॥ २१७ ॥ यदि पापग्रह चौथे आठवें लग्नमें हों और चंद्रमा आठवें हो तो कर्ताकी एकमासके भीतर मृत्यु होती है ॥ २१८ ॥ केंद्र १।४।७।१० में या आठवें, बारहवें, नौवें पापग्रह हों तो तडागका जल शीघ्र ही नष्ट होता है ॥ २१९ ॥ केंद्र १।४।७।१० में शनि, मंगल आदित्य हों और आठवें चंद्रमा हो तो एकवर्ष भी जल नहीं रहता ॥ २२० ॥ यदि पापग्रह एक भी आठवें हो या चौथे राहु हो, मंगल नौवें हो तो तालाबका जल विष सदृश हो जाता है ॥ २२१ ॥

अथ शुभयोगः । एकोऽपि जीवज्ञसितासितानां स्वोच्चस्थितानां भवने स्वकीये । केंद्रत्रिकोणोपगतो नराणां शुभावहं तत्सलिलं स्थिरं

स्यात् ॥ २२२ ॥ अथ नवदुर्गपुरप्रवेशमुहूर्त्तः । रोहिणीरेवती-हस्तत्रये पुष्ये श्रवस्त्रये । अनुराधोत्तरे नव्ये पुरे दुर्गे प्रवेशनम् ॥ २२३ ॥

इति रत्नगढ़नगरनिवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलालशर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशेऽद्भुतनिबंधेऽष्टमं वास्तुप्रकरणम् ॥ ८ ॥

(शुभयोग) यदि केंद्रमें या त्रिकोणमें गुरु, बुध, शुक्र, पूर्णचंद्रमा इनमेंसे एक भी हो और उच्चराशि या स्वगृहराशिका हो तो कर्ताको शुभ करे और तालावमें जल स्थिर रहे ॥ २२२ ॥ (नवीन किलेके प्रवेशका मु) रो, रे, ह, चि, स्वा, पुष्य, श्र, ध, श, अनु, उ. ३ इन नक्षत्रोंमें नवीन किलेका प्रवेश करना शुभ है ॥ २२३ ॥

इति मुहूर्त्तप्रकाशे. अष्टमं वास्तुप्रकरणम् ॥ ८ ॥

मिश्रितप्रकरणम् ९.

तत्र तावत्सर्वकार्योपयोगिशिवद्विघटिका प्रारभ्यते । अथावश्यके पंचांगशुद्ध्यभावे शिवमुहूर्त्तानि । ईश्वर उवाच ॥ शृणु देवि प्रवक्ष्यामि ज्ञानं त्रैलोक्यदीपकम् । ज्योतिस्सारस्य यत्सारं देवानामपि दुर्लभम् ॥ ॥ १ ॥ न तिथिर्नच नक्षत्रं न योगकरणं तथा । कुलिकं यमयोगं च न भद्रा नच चंद्रमाः ॥ २ ॥ न शूलं योगिनी राशिर्न होरा न तमोगुणः । व्यतिपाते च संक्रांतौ भद्रायामशुभे दिने ॥ ३ ॥ शिवालिखितमित्येतत्सर्वविघ्नोपशांतये । कदाचिच्चलते मेरुः सागराश्च महीच्युताः ॥ ४ ॥ सूर्यः पतति वा भूमौ वह्निर्वा याति शीतताम् । निश्चलश्च भवेद्वायुर्नान्यथा मम भाषितम् ॥ ५ ॥ तत्रादौ कथयिष्यामि मुहूर्त्तानि च षोडश । गुणत्रयप्रयोगेण चलंत्येव ह्यहर्निशम् ॥ ६ ॥

अथ मिश्रप्रकरणं लिख्यते ॥ प्रथम संपूर्ण कार्योंके योग्य दो घडीका शिवलिखित मुहूर्त्त कहते हैं यह मुहूर्त्त पंचांगकी शुद्धि न होनेसे भी शुभ करता है और पंचांगकी शुद्धि सहित तो अतिही श्रेष्ठ हैं, पूर्वकालमें त्रिपुरासुरको मारनेके समयमें महादेवजीने पार्वतीको कहा था, महादेवजी बोले हे देवि ! त्रिलोकीमें दीपकरूप ज्ञान और ज्योतिषका सार देवोंको भी दुर्लभ है सो तुमको कहते हैं ॥ १ ॥ जिसमें तिथि, नक्षत्र, योग, करण, कुलिक, यमयोग, भद्रा, अशुभ चंद्रमा, दिशाशूल, योगिनी, राशि, होरा, तमोगुण, व्यतीपात, संक्रांति, अशुभदिन आदिका

दोष नहीं लगता है. और संपूर्ण विघ्न शांत होते हैं सो "शिवालिखितनाम" मुहूर्त्त यह है ॥ २ ॥ ३ ॥ समय पाकर मेरुपर्वत और समुद्रसहित पृथ्वी भी चल सकती है और सूर्य भी भूमिपर पड सकता है, अग्नि शांत हो सकती है वायु बंद हो सकता है, परन्तु मेरा कहा हुआ यह मुहूर्त्त निष्फल नहीं जाता है ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो ही सोलह मुहूर्त्त तीन गुणोंके प्रयोग करके रातदिन चलते हैं ॥ ६ ॥

अथ मुहूर्त्तानि । रौद्रं १ श्वेतं २ तथा मैत्रं ३ चार्वटं च चतुर्थकम् ४ । पंचमं जयदेवं च ५ षष्ठं वैरोचन ६ तथा ॥ ७ ॥ तुरगं सप्तमं ७ चैव ह्यष्टमं ८ चाभिजित्तथा ॥ रावणं नवमं ९ प्रोक्तं वालवं दशमं १० तथा ॥ ८ ॥ विभीषणं रुद्रसंज्ञं ११ द्वादशं च १२ सुनंदनम् । याम्यं त्रयोदशं १३ ज्ञेयं सौम्यं प्रोक्तं चतुर्दशम् १४ ॥ ९ ॥ भार्गवं तिथिसंज्ञं च १५ सविता षोडशं तथा १६ । एतानि प्रोक्तकार्येषु नियोज्यानि यथाक्रमात् ॥ १० ॥ अथ मुहूर्त्तकर्म्माणि । रौद्रे रौद्रतरं कार्य्यं श्वेते कुंजरबंधनम् ॥ स्नानदानादिकं मैत्रे चार्वठे स्तंभनं भवेत् ॥ ११ ॥ कार्य्यं यज्जयदेवसंज्ञकवरे सर्वार्थकं साधयेत्तद्वैरोचनसंज्ञके भवति व पट्टाभिषेकं क्रमात् ॥ ज्ञात्वैवं तुरगे च नाम्नि विदिते शस्त्रास्त्रकं साधयेत्स्यात्कार्यं ह्यभिजिन्मुहूर्त्तकवरे ग्रामप्रवेशं सदा ॥ १२ ॥ रावणे साधयेद्वैरं युद्धकार्यं च वालवे । विभीषणे शुभं कार्यं यन्त्रकार्यं सुनंदने ॥ १३ ॥ याम्ये भवेन्मारणकार्यमप्यसौ सौम्ये सभायामुपवेशनं स्यात् । स्त्रीसेवनं भार्गवके मुहूर्त्ते सावित्रनाम्नि प्रपठेत्सुविद्याम् ॥ १४ ॥

(मुहूर्त्तोंके नाम) रौद्र १, श्वेत २, मैत्र ३, चार्वट ४, जयदेव ५, वैरोचन ६, तुरग ७, अभिजित् ८, रावण ९, वालव १०, विभीषण ११, सुनंदन १२, याम्य १३, सौम्य १४, भार्गव १५, सविता १६, यह सोलह मुहूर्त्तोंके नाम हैं सो क्रमसे जुदे जुदे कामोंमें लेने चाहिये ॥ ७-१० ॥ (मुहूर्त्तोंके कार्य) रौद्रमुहूर्त्तमें अतिही क्रूर काम करना शुभ है, श्वेतमुहूर्त्तमें हस्तीका बंधन शुभ है और मैत्रमें स्नान दान आदि करना, चार्वटमें स्तंभनकार्य जयदेवमें संपूर्ण शुभकार्य,वैरोचनमें राज्याभिषेक, तुरगमें शस्त्रअस्त्रका कार्य, अभिजित्में ग्राम आदिका प्रवेश करना शुभ है ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ रावणमें वैरका काम, वालवमें युद्धके कार्य; विभीषणमें शुभ कार्य, सुनंदनमें

यन्त्रोंका काय, याम्यमें मारणका कृत्य, सौम्यमें सभाआदिमें बैठना, भार्गवमें स्त्रीसेवन और सवितामुहूर्त्तमें विद्याका आरंभ करना श्रेष्ठ है ॥ १३ ॥ १४ ॥

अथ वारपरत्वेन मुहूर्त्तोदयः । उदये रौद्रमादित्ये मैत्रं सोमे प्रकीर्त्तितम् । जयदेव कुजे वारे तुरगं तु बुधे स्मृतम् ॥ १५ ॥ रावणं च गुरौ ज्ञेयं भार्गवे च विभीषणम् । शनौ याम्यं मुहूर्त्तं च दिवारात्रिप्रयोगतः ॥ १६ ॥ **अथ गुणानामुदयः ।** गुरुसोमदिने सत्त्वं रजश्चाङ्गारके भृगौ । रवौ मंदे बुधे वारे तमो नाडीचतुष्टयम् ॥ १७ ॥ **अथ गुणानां वर्णानि ।** सत्त्वं गौरं रजः श्यामं तामसं कृष्णमेव च । इमं वर्णं विजानीयात्सत्त्वादीनां यथोदितम् ॥ १८ ॥

(वारोंमें मुहूर्त्तोंके उदय होनेका विचार) आदित्यवारको सूर्योदयमें रौद्र मुहूर्त्त आता है, सोमको मैत्र, मंगलको जयदेव, बुधको तुरग, गुरुको रावण, भार्गवको विभीषण और शनिवारको प्रातःकाल याम्यमुहूर्त्त आता है ॥ १५ ॥ १६ ॥ (गुणोंका उदय)गुरु, सोमवारको उदयमें सत्त्वगुण मुहूर्त्त होता है, मंगलको, शुक्रको रजोगुण, और आदित्य, शनि बुधवारको तमोगुण मुहूर्त्त चार घडी रहता है ॥ ॥ १७ ॥ (गुणोंके वर्ण) सत्त्वगुणका गौर वर्ण है, रजोगुणका श्याम है, तमोगुणका कृष्णवर्ण है इस प्रकार सत्त्व आदिके वर्ण जानने ॥ १८ ॥

अथ गुणानां फलम् । सत्त्वेन साधयेत्सिद्धिं रजसा धनसंपदम् । तमसा छेदभेदादि साधयेन्मोक्षमार्गकम् ॥ १९ ॥ **अथ मुहूर्त्ताङ्करेखाज्ञानम् ।** शून्यं नभः खादिभिरेव वर्णैर्विघ्नं धनुर्युग्मगणाधिपाद्यैः । मृत्युस्तथा पादयमादिवर्णैः श्रीविष्णुनामामृतसंज्ञसिद्धिः ॥ २० ॥ **अथ रेखास्वरूपम् ।** अमृतश्चोर्ध्वरेखैका कालरेखात्रयं भवेत् । विघ्नमावर्त्तकं ज्ञेयं शून्ये शून्यमिति क्रमः ॥ २१ ॥ **अथ रेखाफलम् ।** शून्येनैव भवेत्कार्यं विघ्नमावर्त्तके भवेत् । स्यान्मृत्युः कालरेखायां सर्वसिद्धिस्तथाऽमृते ॥२२॥ **अथ राशीनां घातगुणाः ।** धनु ९ मीन १२ कर्कटानां ३ सत्त्वे घातो विनिर्दिशेत् । तुला ७ वृषभ २ मेषानां १ घातो रजसि निश्चितम् ॥२३॥ कन्या ६ मिथुन ३ सिंहानां ५ कुंभस्य ७ मकरस्य च १० । घातस्तामसवेलायां विपरीतं शुभावहम् ॥ २४ ॥

(गुणोंके फल) सत्त्वगुणसे सिद्धिका कार्य करना, रजोगुणसे धनसंपदाका कार्य, तमोगुणसे छेदनभेदन और मोक्षमार्गका कार्य करना शुभ है ॥ १९ ॥ (मुहूर्त्तोंकी रेखा) शून्य, नभ, ख इत्यादि वर्ण आवें तहां शून्य० जानना और धनु, युग्म, गणाधिप आदि वर्ण आवें तहां विघ्नरेखा जाननी, पाद यम आदि वर्ण आवें तहां मृत्युरेखा जाननी और श्री विष्णुके नाम आदि आवें तहां अमृतरेखा जाननी ॥२०॥ (रेखाका स्वरूप) ऊपरको एक रेखा हो सो अमृतरेखा है, तीन रेखा त्रिशूलके आकार हो सो कालरेखा, धनुषके आकार विघ्नरेखा जाननी. शून्यके आकार शून्यरेखा जाननी चाहिये ॥ २१ ॥ (रेखाका फल) शून्यरेखामें कार्य नहीं होता है । विघ्नरेखामें विघ्न होता है । कालरेखामें मृत्यु होती है और अमृतरेखामें कार्यकी सिद्धि होती है ॥ २२ ॥ (राशियोंका घातकगुण) धन, मीन, कर्क राशिको सत्त्वगुण घातक है । तुला, वृष, मेषको रजोगुण घातक है । कन्या, मिथुन, सिंह, कुंभ, मकरको तामस मुहूर्त घातक है ॥ २३ ॥ २४ ॥

अथ राशीनां वर्णाः । धनुष्कर्कटमीनाख्या गौरवर्णाः प्रकीर्त्तिताः । वृषमेषतुलाश्चैव वृश्चिकः श्यामवर्णकः ॥ २५ ॥ मिथुनो मकरः कुम्भः कन्या सिंहश्च कृष्णकः । गौरश्च म्रियते सत्त्वे श्यामवर्णो रजोगुणे ॥ कृष्णस्तामसवेलायां म्रियते नात्र संशयः ॥ २६ ॥ अथ क्षयमासाधिमासयोर्व्यवस्था । यस्मिन्वर्षे भवेन्मासोऽधिकश्चैव तथा क्षयः । मासेन गृह्यते मासः सर्वकार्यार्थसाधने ॥ २७ ॥ अथ मासेषु मुहूर्तव्यवस्था । माघफाल्गुनचैत्रेषु वैशाखे श्रावणे तथा । नभस्यमासि वाराणां मुहूर्त्तानि यथाक्रमात् ॥ २८ ॥ अथ मासेषु रव्यादिवारे क्रमेण दिनरात्र्यो रेखाः । रवौ नभः केशवविघ्नराजो गोविंदनामा नभ आखुगामी । रात्रौ नृसिंहो युगलं नभः पद्लक्ष्मीशलम्बोदररामसंज्ञौ ॥ २९ ॥ सोमे हरिर्विघ्नपतिः सुरेशः शून्यं च गौरीसुतविष्णुसंज्ञौ । पदं निशायां खखविष्णुशून्यं युग्मं च नारायणविघ्ननाथौ ॥ ३० ॥ भौमे यमौ माधवणोऽथ युग्मं युग्मं हरिश्चैव गजाननश्च । नक्तं च विघ्नो द्विपदं मुकुंदः पदत्रयं श्रीपतिखं नभश्रीः ॥ ३१ ॥ बुधे धनुः कृष्णयमौ च सौरिः सिद्धिर्धनुः सौरियमौ च सिद्धिः । रात्रौ सुपर्णध्वज एव युग्मं नभोऽथ दामोदरकुंजरास्यौ ॥ ३२ ॥ गुरौ गोपीनाथस्तथा विघ्नराजो नभः केशवः

कुंजरास्यस्तथैव । निशायां पदं नन्दजः सूर्यसूनुर्नभो माधवश्चापयेकं हरिश्च ॥ ३३ ॥ शुके कृष्णः स्याद्यमः खं मुरारिर्गौरीपुत्रः श्रीपतिः शून्यमेकम् । नक्तं कालः कंसहा खं च युग्मं पादद्वंद्वो वामनः खं च पादौ ॥ ३४ ॥ शनौ पदं श्रीः खनभो नभः खं नारायणः खं हरिखं हारिश्च । रात्रौ च शून्यं यमयुग्ममाधवः खं विघ्नराजौ नृहरिश्च पादौ ॥ ३५ ॥

(राशियोंके वर्ण) धन, कर्क, मीनका गौरवर्ण है, वृष, मेष, तुला, वृश्चिकका श्यामवर्ण है ॥ २५ ॥ मिथुन, मकर, कुंभ, कन्या, सिंहका कृष्णवर्ण है, गौरवर्णका सत्त्वगुणीमुहूर्तमें मरजावे और श्यामवर्णका रजोगुणमें, तथा कृष्णवर्णका तमोगुणमें मरजावे इसमें संदेह नहीं है ॥ २६ ॥ जिस बरसमें जो अधिकमास हो उसी मासकी रीतिसे मुहूर्त संपूर्णकार्योंमें जानने ॥ २७ ॥ (महीनोंके मुहूर्तोंका प्रकार) प्रथम माघ, फाल्गुन, चैत्र, वैशाख, श्रावण, भाद्रपदके वारोंका मुहूर्त क्रमसे लिखते हैं ॥ २८ ॥ (ऊपरके महीनोंमें आदित्य आदिवारोंके दिनरातके मुहूर्तोंकी रेखा) आदित्यवारको प्रथम नभ नाम शून्य, फिर तीन जगह केशव नाम अमृतरेखा, विघ्नराज नाम चार जगह विघ्नरेखा, गोविंद नाम तीन जगह अमृतरेखा, नभ नाम १ जगह शून्य, आशुगामी नाम ४ जगह विघ्नरेखा जाननी । इसीतरह दिनके सोलह मुहूर्तोंकी रेखा हुइ । और रात्रिमें नृसिंह नाम ३ जगह अमृतरेखा, युगल नाम २ जगह विघ्नरेखा, नभ नाम १ शून्यरेखा, पद् नाम १ मृत्युरेखा, लक्ष्मीश नाम ३ अमृतरेखा, लंबोदर नाम ४ विघ्नरेखा, रामनाम २ जगह अमृतरेखा जाननी ॥२९॥ सोमवारके दिनमें प्रथम हरि नाम २ जगह अमृतरेखा, विघ्नराज नाम ४ विघ्नरेखा, सुरेश नाम ३ अमृतरेखा, शून्य १ शून्यरेखा, गौरीसुत नाम ४ विघ्नरेखा, विष्णु नाम २ अमृतरेखा जाननी ॥ रात्रिमें पद नाम १ मृत्युरेखा, खख नाम २ शून्यरेखा, विष्णु नाम २ अमृतरेखा, शून्य नाम १ शून्यरेखा, युग्म नाम २ जगह विघ्नरेखा, नारायण नाम ४ जगह अमृतरेखा, विघ्ननाथ नाम ४ जगह विघ्नरेखा जाननी ॥ ३० ॥ मंगलके दिनमें यम नाम २ मृत्युरेखा, मारमण नाम ४ अमृतरेखा, युग्मयुग्म नाम ४ विघ्नरेखा, हरि नाम २ अमृतरेखा, गजानन नाम ४ जगह विघ्नरेखा जाननी ॥ रात्रिमें विघ्न नाम २ जगह विघ्नरेखा, द्विप नाम २ मृत्युरेखा, मुकुंद नाम २ अमृतरेखा, पदत्रय नाम ३ जगह मृत्युरेखा, श्रीपति नाम ३ अमृतरेखा, ख नभ २ शून्यरेखा, श्री नाम १ अमृतरेखा जाननी ॥ ३१ ॥ बुधके दिनमें धनु नाम २ जगह विघ्नरेखा, कृष्ण नाम २ अमृतरेखा, यम २ मृत्युरेखा, सौरि २ सिद्धि नाम १ अमृतरेखा, धनुनाम २ विघ्नरेखा, सौरि नाम २

अमृतरेखा, यम नाम २ मृत्युरेखा, सिद्धि नाम १ अमृतरेखा और रात्रिमें सुपर्णध्वज नाम ९ अमृतरेखा, युग्म नाम २ विघ्नरेखा, नभ नाम १ शून्यरेखा, दामोदर नाम ४ अमृतरेखा, कुंजरास्य नाम ४ विघ्नरेखा जाननी ॥ ३२ ॥ गुरुके दिनमें गोपीनाथ नाम ४ अमृतरेखा, विघ्नराज नाम ४ विघ्नरेखा, नभ नाम १ शून्यरेखा. केशव नाम ३ अमृतरेखा, कुंजरास्य नाम ४ विघ्नरेखा जाननी । रात्रिमें पद नाम १ मृत्युरेखा, नंदज नाम ३ अमृत० । सूर्यसूनु नाम ४ जगह कालरेखा, नभ नाम १ शून्य० । माधव नाम ३ अमृत० । चाप नाम १ जगह विघ्नरे० । हरिनाम २ अमृत० ॥ ३३ ॥ शुक्रवारके दिनमें, कृष्ण नाम २ अमृतरेखा । यम नाम २ मृत्यु० । ख नाम १ शून्य० । मुरारि ३ अमृत० । गौरीपुत्र ४ जगह विघ्नरे० । श्रीपति ३ अमृत ० । शून्य नाम १ शून्यरेखा । रात्रिमें, काल २ मृत्युरे० । कंसहा ३ अमृ० । ख नाम १ शून्य० । युग्म २ जगह विघ्न० । पादद्वंद्व नाम २ मृत्यु० । वामन नाम ३ अमृ० । ख नाम १ शून्य० । पाद नाम २ मृत्युरेखा ॥ ३४ ॥ शनिवारके दिनमें, पद नाम १ मृत्युरेखा । श्री नाम १ अमृ० । खनभनभख नाम ४ शून्यरे० । नारायण नाम ४ अमृ० । ख नाम १ शून्य० । हरि नाम २ अमृ० । ख नाम १ शून्य० । हरि नाम २ अमृ० ॥ रात्रिमें, शून्य नाम २ शून्य० । यमयुग्म नाम २ मृत्युरे० । माधव नाम ३ अमृ० । ख नाम १ शून्य० । विघ्नराज नाम ४ विघ्नरे० । नृहरि नाम ३ अमृ० । पाद नाम २ मृत्युरेखा ॥ ३५ ॥

अथाश्विने कार्त्तिकमार्गपौषसूर्यादिवारेषु मुहूर्त्तरेखाः । नामाक्षराणां वचनप्रवृत्त्या विचारपूर्वं विबुधैर्विचिंत्यम् ॥ ३६ ॥ सूर्ये नृसिंहो द्विपदश्च चापो हरिर्नभः खं पदमच्युतोऽघ्रिः । रात्रौ पदं चापखमच्युतं च युग्मं यमौ विष्णुखसिद्धिसंज्ञौ ॥ ३७ ॥ सोमेऽघ्रिचापं खनभो मुकुन्दो नभश्च युग्मं हरिखं हरिश्च । पदं निशायां खयुग मुरारिर्विनायको विष्णुनभश्च विष्णुः ॥ ३८ ॥ भौमे तथेभास्यनभोऽथ विष्णुर्नभोयुगं गोपतिखं गणेशः । नक्तं गजेन्द्रास्यखमच्युतं च युग्मं च शून्यं नृहरिश्च शून्यम् ॥ ३९ ॥ बुधे धनुः श्रीपतिपादयुग्मं नारायणः स्याद्गणनाथसिद्धिः । रात्रौ तु कालौ हरिशून्यकालौ गोविन्दगौरीसुतशून्यसिद्धिः ॥ ४० ॥ गुरौ हरिः शून्ययुगं सुरेशः श्रीविघ्नराजो गगनं तथा श्रीः । निश्यंघ्रिदैत्यारिखकार्मुकं च पदे मुरारिः खयुगं पुनः श्रीः ॥ ४१ ॥ शुक्रेऽमृतं चापमरिन्दमश्च लम्बोदरः केशवशून्यपादम् । नक्तं च युग्मं

नृहरिः खयुग्मं नृसिंहयुग्मं गगनं च युग्मम् ॥ ४२ ॥ शनौ पदं श्रीर्न-नभोनकृष्णः खं श्रीः पदं विष्णुनभो हरिः पत् । रात्रौ पदं खं पदनन्द-सूनुर्गजाननौ गोषतिशून्यपादाः ॥ ४३ ॥

(आश्विन कार्त्तिक मार्गशिर पौष मासके वारोंके मुहूर्त्तोंकी रेखा) आदित्यके दिनमें, नृसिंह नाम ३ अमृतरेखा । द्विपद नाम २ कालरे० । चाप नाम २ विघ्नरे० । हरि नाम २ अमृत० । नभख नाम २ शून्य० । पद नाम १ मृत्युरेखा । अच्युत नाम ३ अमृ० । अंघ्रि नाम १ मृत्युरेखा । रात्रिमें, पद नाम १ मृत्यु० । चाप नाम २ जगह विघ्नरेखा । ख नाम १ शून्य० । अच्युत नाम ३ अमृ० । युग्म २ जगह विघ्न० । यम नाम २ मृत्युरेखा । विष्णु नाम २ अमृ० । ख नाम १ शून्य० । सिद्धि नाम २ अमृतरेखा जाननी ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ सोमके दिनमें अंघ्रिनाम १ मृ० । चाप नाम २ जगह विघ्नरेखा । खनभ नाम २ शून्य० । मुकुन्द नाम ३ अमृत० । नभ नाम १ शून्य० । युग्म नाम २ विघ्नरेखा । हरि नाम २ अमृत० । ख नाम १ शून्य० । हरि नाम २ अमृतरेखा ॥ रात्रिमें, पद नाम १ मृत्युरेखा । ख नाम १ शून्य० । युग नाम २ विघ्नरेखा । मुरारि ३ अमृत० । विनायक ४ विघ्न-रेखा । विष्णु २ अमृत० । नभ १ शून्य० । विष्णु नाम २ अमृतरेखा जाननी ॥ ॥ ३८ ॥ मंगलवारके दिनमें, इभास्य नाम ३ विघ्नरेखा । नभ १ शून्य० । विष्णु २ अमृत० । नभ १ शून्य० । युग २ विघ्नरे० । गोपति ३ अमृत० । ख १ शून्य० । गणेश नाम ३ विघ्नरेखा ॥ रात्रिमें, गजेंद्रास्यनाम ४ विघ्नरेखा । ख १ शून्य० । अच्युत ३ अमृतरे० । युग्म २ विघ्नरेखा । शून्य १ । नृहरि नाम ३ अमृत० । शून्य १ जानना ॥ ३९ ॥ बुधके दिनमें, धनु नाम २ विघ्नरेखा । श्रीपति ३ अमृ-त० । पादयुग्म २ मृत्युरेखा । नारायण ४ अमृत० । गणनाथ ४ विघ्नरेखा० । सिद्धि नाम १ अमृतरेखा । रात्रिमें, काल नाम २ मृत्युरेखा । हरि २ अमृत० । शून्य० १ । काल नाम २ मृत्युरेखा । गोविंद नाम ३ अमृत० । गौरीसुत ४ विघ्न-रेखा । शून्य० १ । सिद्धि नाम १ अमृतरेखा ॥ ४० ॥ गुरुके दिनमें हरि नाम २ अमृतरे० । शून्य० १ युगनाम २ विघ्नरे० । सुरेश श्री नाम ४ अमृतरे० । विघ्नराज ४ विघ्नरे० । गगन २ विघ्नरे० । श्री नाम १ अमृतरेखा । गुरुकी रात्रि-में, अंघ्रि १ मृत्युरेखा । दैत्यारि ३ अमृतरेखा । ख १ शून्यरे० । कार्मुक २ विघ्नरे० । पद २ मृत्युरे० । मुरारि ३ अमृतरे० । ख १ शून्य० । युग २ विघ्नरे० । श्री १ अमृतरेखा ॥ ४१ ॥ शुक्रवारके दिनमें; अमृतरे० १ । चाप नाम २ विघ्नरे० । अरिंदम नाम ४ अमृत० । लंबोदर ४ विघ्नरे० । केशव ३ अमृत० । १ शून्यरे० । पाद नाम १ मृत्युरेखा । रात्रिमें, युग्म नाम २ विघ्नरेखा । नृहरि ३ अमृत० । ख १ शून्य० । युग्म २ विघ्नरे० । नृसिंह ३ अमृत० । युग्म २

विघ्नरे० । गगन १ शून्य० । युग्म २ विघ्नरेखा ॥ ४२ ॥ शनिवारके दिनमें पद नाम १ मृत्युरेखा । श्री १ अमृतरे० । ननभोन २ शून्य० । कृष्ण २ अमृत० । ख १ शून्य । श्री १ अमृत० । पद १ मृत्युरे० । विष्णु नाम २ अमृत । नभ १ शून्य० । हरि २ अमृत० । पत् नाम १ मृत्युरे० । रात्रिमें, पद नाम १ मृत्युरे० । ख नाम १ शून्य० । पद १ मृ० । नंदसुनु ४ अमृ० । गजानन ४ विघ्न० । गोपति २ अमृत० । शून्य० १ । पाद नाम १ मृत्युरे० ॥ ४३ ॥

अथ ज्येष्ठाषाढमलमासेषु रव्यादिवारे मुहूर्त्तरेखाः । ज्येष्ठे मासे तथाऽऽषाढे तथा वै मलमासके । सूर्य्यादिवारे संशोध्याः क्रमशो नामभादिमे ॥४४॥ अर्के शून्ये च कृष्णो युगपदयुगलं खं हरिर्विष्णुचापं रात्रौ लक्ष्मी-शयुग्मं युगलहरियुगं युग्मकृष्णं च शून्यम् । सोमे चापद्वयं नोनृहरिखयुगलं पीतवासाश्च शून्यं चापद्वंद्वं निशायामजपदखमजं चापपद्मेशपादाः ॥४५॥ भौमे शून्ये च कृष्णो युगगगनहरिस्त्रीणि चापानि सिद्धिर्नक्तं युग्मं द्विशून्यं युगयुगलपदं श्रीः खचापं हरिश्च । सौम्ये श्रीविघ्ननाथोऽथ हरिगणपतिः पद्मनाभश्च पादो दोषायां सिद्धियुग्मं हरिखगजक्षुखाः कृष्णशून्ये च कृष्णः ॥ ४६ ॥ जीवे विष्णुश्च चापो गगनमजितखं चांघ्रिपादौ नृसिं-हो रात्रौ नो खं मुरारिर्गगनयुगगजो विष्णुचापांघ्रियुग्मम् । शुक्रे युग्मं मुरारिर्गगनयुगगजो रामचापोऽथ पादौ तत्रादौ युग्मगोपीपतियुगगगनं श्रीवरः खं पदे श्रीः ॥ ४७ ॥ मन्दे श्रीयुग्मसिद्धिः खहरिहरिनभः शौरिखं सिद्धिखं वा नक्तं श्रीयुग्मसिद्धिः खयुगलहरिव्योमगोविंदशून्यम् ॥ ४८ ॥ रुद्रप्रोक्तमिदं ज्ञानं शिवायै रुद्रयामले । गोपनीयं प्रयत्नेन सद्यः प्रत्ययकारकम् ॥ ४९ ॥ इति शिवालिखिता द्विघटिकामुहूर्त्ताः ॥

(ज्येष्ठ आषाढ मलमासके वारोंके मुहूर्त्तोंकी रेखा) आदित्यवारके दिनमें शून्य २ शून्यरे० । कृष्ण २ अमृत० । युग २ विघ्नरें० । पद १ मृत्युरे० । युगल २ विघ्नरे० । ख १ शून्य० । हरिविष्णु ४ अमृत० । चाप २ विघ्नरे० ॥ रात्रिमें लक्ष्मी-

श ३ अमृत० । युग्म २ विघ्न० । युगल २ विघ्न० । हरि २ अमृत० । युग २ विघ्न० । युग्म २ विघ्न० । कृष्ण २ अमृत० । शून्य १ शून्यरे० ॥ सोमके दिनमें । चापद्वयनाम ४ विघ्नरे० । नोनाम १ शून्य० । नृहरि ३ अमृत० । ख १ शून्य० । युगल २ विघ्नरे० । पीतवासा ४ अमृत० । शून्य १ शून्यरे० ॥ रात्रिमें, चापद्वंद्वनाम ४ विघ्नरे० । अज २ अमृतरे० । पद १ मृत्यु० । खं १ शून्य० । अज २ अमृत० । चाप २ विघ्नरे० । पद्मेशनाम ३ अमृतरे० । पादनाम १ मृत्युरे० ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ मंगलके दिनमें शून्य २ शून्यरे० । कृष्ण २ अमृत० । युग २ विघ्न । गगन १ शून्य० । हरि २ अमृत० । त्रीणि चापानिनाम ६ विघ्नरे० । सिद्धि १ अमृतरेखा ॥ रात्रिमें, युग्मद्वि नाम ४ विघ्नरे० । शून्य १ शून्यरे० । युगयुगल नाम ४ विघ्नरे० । पद १ मृत्यु० । श्रीः १ अमृत० । ख १ शून्य० । चाप २ विघ्न० । हरि २ अमृत-तरेखा ॥ बुधके दिनमें, श्री १ अमृतरे० । विघ्ननाथ ४ विघ्नरे० । हरि २ अमृतरे० । गणपति ४ विघ्नरे० । पद्मनाभ ४ अमृतरे० । पादनाम १ मृत्युरेखा ॥ रात्रिमें, सिद्धिनाम १ अमृतरे० । युग्म २ विघ्नरे० । हरि २ अमृत० । खनाम १ शून्य० । गजमुख ४ विघ्नरे० । कृष्ण २ अमृत० । शून्य २ शून्य० । कृष्ण २ अमृतरेखा जानना ॥ ४६ ॥ गुरुवारके दिनमें, विष्णुनाम २ अमृतरे० । चापनाम २ विघ्न० । गगननाम, शून्यरे० । अजितनाम ३ अमृतरेखा । खनाम १ शून्य० । अंघ्रिपादौ नाम ४ मृत्युरेखा । नृसिंहनाम ३ अमृतरेखा ॥ रात्रिमें, नोखंनाम २ शून्य० । मुरारिः ३ अमृत० । गगन १ शून्य० । युगगजनाम ४ विघ्नरे० । विष्णु २ अमृत० । चाप २ विघ्न० । अंघ्रियुग्मनाम २ मृत्युरेखा । और शुक्रवारके दिनमें, युग्मनाम २ विघ्न० । मुरारि ३ अमृत० । गगन १ शून्य० । युगगजनाम ४ विघ्नरे० । राम २ अमृ० । चाप २ विघ्न । पादौनाम २ मृत्युरेखा । रात्रिमें, युग्मनाम २ विघ्नरे० । गोपीपति ४ अमृत० । युग २ विघ्न० । गगन १ शून्यरे० । श्रीवर ३ अमृतरे० । ख १ शून्य० । पद २ मृत्यु० । श्री १ अमृतरे० ॥ ४७ ॥ शनिवारके दिनमें, श्री १ अमृत । युग्म २ विघ्न० । सिद्धि २ अमृत० । ख १ शून्य० । हरिहरिनाम ४ अमृतरे० । नभ २ शून्य । शौरि २ अमृत० । ख १ शून्यरे० । सिद्धि १ अमृ० । ख १ शून्यरे० ॥ रात्रिमें, श्री नाम १ अमतरे० । युग्म २ विघ्न० । सिद्धि २ अमृ० । ख १ शून्य० । युगल २ विघ्न० । हरि ४ अमृत० । व्योम २ शून्य० । गोविंद ३ अमृतरे० । शून्य नाम १ शून्यरे० । करनी चाहिये ॥ ४८ ॥ इसप्रकार यह ज्ञान पार्वतीके अर्थ रुद्रयामलग्रंथमें महादेवजीने कहा है सो गुप्त रखने योग्य है और तत्काल परचे (फल) देनेवाला है ॥ ४९ ॥ इति शिवालिखितद्विघटिकामुहूर्त्तः ।

अथाङ्गस्फुरणम् । अंगस्फूर्तिफलं वक्ष्ये दक्षिणांगसमुद्भवम् । पुरुषाणां तु तज्ज्ञेयं वामभागे मृगीदृशाम् ॥ ५० ॥ पृथ्वीलाभः शिरःस्थाने स्थानलाभो ललाटके । प्रियाप्तिः स्याद् भ्रुवोर्मध्ये भ्रुवो युग्मे सुखं महत् ॥ ५१ ॥ शुभवार्त्ताश्रुतिः कर्णे लोचने प्रियदर्शनम् । दृक्कोणभागयोर्लक्ष्मीरधःपक्ष्मणि संजयः ॥ ५२ ॥ गंडदेशे स्त्रियः सौख्यं नासायां गंधजं सुखम् । उत्तरोष्ठे तु वाग्वादश्चुम्बनं चाधरे स्त्रियाः ॥५३ ॥ हनुदेशे भयं ज्ञेयं मुखे मधुरभोजनम्।भूषाप्तिः कंठदेशे स्याद् ग्रीवायां रिपुजं भयम् ५४॥ ज्ञेयः पराजयः पृष्ठे स्कंधे मित्रसमागमः । प्रियाप्तिर्बाहुदेशे स्यान्मध्ये बाह्वोर्धनागमः ॥५५॥ द्रविणाप्तिं करे विद्याद्विजयं वक्षसि ध्रुवम्।प्रमोदं च बलं कट्यां पार्श्वे प्रीतिमनुत्तमाम् ॥५६॥स्थानात्प्रचलनं नाभौ कोशवृद्धिरथांत्रके । कोशाप्तिरुदरे नार्या जघने प्रियसंगमः ॥५७॥ स्फिग्गुदे वाहनाप्तिः स्याल्लिंगे योषित्समागमः । वृषणे पुत्रलाभश्चाभ्युदयो वस्तिदेशके ॥ ५८ ॥ ऊरौ सद्वाससां प्राप्ती रिपुसंधिस्तु जानुनि । क्वचिद्धानिस्तु जंघायां स्थानान्निश्चरणोपरि ॥ ५९ ॥ पादाधो लाभदं ज्ञेयमंगस्फूर्तिफलं त्विदम् । वामे पुंसां फलं चैतद् बुधैर्ज्ञेयं विपर्ययात् ॥ ६० ॥ नारीणां दक्षिणेऽगे स्यादंगप्रस्फुरणे तथा ॥ अथांगे वै तिलोत्पत्तौ कण्डूत्यां वा त्विदं फलम् ॥ ॥ ६१ ॥ अंगस्फूर्तिसमा ज्ञेया लांछनं मशकास्तिलाः । कंडूतिदक्षिणे पाणौ नृपाणां जयदा स्मृता । अन्येषां लाभदा पादतले गमनकारिणी ॥ ६२ ॥ अनन्यथासिद्धिरजन्मनश्च फलस्य शस्तस्य च निंदितस्य । अनिष्टनिद्रोपगमे द्विजानां कार्यं सुवर्णेन तु तर्पणं स्यात् ॥ ६३ ॥

अथ अंग फरकनेका फल लिखते हैं–अंग फरकनेका फल पुरुषोंके दक्षिण अंगोंका और स्त्रियोंके वाम अंगोंका जानना ॥ ५० ॥ शिर फरके तो पृथ्वीका लाभ हो, ललाट फरके तो स्थानका लाभ हो, दोनों भ्रुकुटीके बीचमें फरके तो प्रिय-वस्तु मिले, दोनों भ्रुकुटी फरके तो महान् सुख होवे ॥ ५१ ॥ कान फरकनेसे श्रेष्ठ वार्ता सुने, नेत्रसे प्रिय वस्तु देखे, दृष्टिकी दोनों कोनसे लक्ष्मी मिले, नीचेकी भाफनसे जय होवे ॥ ५२ ॥ गालसे स्त्रीको सुख हो, नाकसे सुगंधिका सुख हो, ऊपरके होठसे बकवाद हो, नीचेके होठसे स्त्रीका चुंबन मिले ॥ ५३ ॥ ठोडी फरकनेसे

भय हो, मुखसे मीठा भोजन मिले, कंठसे आभूषण मिले, नाड फरके तो शत्रुका भय हो ॥ ५४ ॥ पीठसे पराजय हो, खँवाकांधा फरके तो मित्र मिले, भुजासे प्रियवस्तु मिले, हाथ बीचमेंसे फरके तो धन आवे ॥ ५५ ॥ हाथसे द्रव्य मिले, छातीसे विजय हो, कड (कटि) से मोद (उत्साह) बल हो, पसवाडेसे उत्तम प्रीति हो, ॥ ५६ ॥ नाभिसे स्थानको त्यागे, आंतडीसे खजानेकी वृद्धि हो, उदरसे खजाना मिले, जंघासे प्रिय स्त्रीका संगम हो ॥५७॥ कुले तथा गुदा फरके तो वाहन मिले, गुह्यस्थान फरके तो स्त्रीका समागम हो, अंडकोश फरके तो पुत्रलाभ हो, वस्तिस्थान फरके तो अभ्युदय (आनंद) हो ॥ ५८ ॥ जंघा फरके तो श्रेष्ठ वस्त्र मिले, गोडे (घुटने) फरकें तो शत्रुसे प्रीति हो, पींडी फरके तो किंचित् हानि हो, पग ऊपरसे फरकें तो स्थान मिले ॥ ५९ ॥ पग नीचेसे फरके तो लाभ हो; इसप्रकार यह फल अंग फरकनेका समझना, परन्तु पुरुषोंके वामभागमें तथा स्त्रियोंके दक्षिण अंगमें फरकनेका फल विपरीत जानना और इसी प्रकार अंगमें तिल, खाज आदिका फल जानना ॥ ६० ॥ ६१ ॥ अंगफरकनेके समान ही लहसण, मशा, तिलका फल जानो और राजालोगोंके दक्षिणहाथमें कंडूति खाज हो तो जय होती है अन्य ब्राह्मण वैश्य शूद्रोंको लाभ करती है यदि पगके नीचे हो तो गमन कराती है ॥ ६२ ॥ श्रेष्ठ अंग फरकनेकी, या अशुभ फरकनेकी इससे अन्यथा सिद्ध नहीं है यदि अंग फरकनेका अशुभ फल हो तो सुवर्णका दान करना चाहिये ॥ ६३ ॥ इत्यंगस्फुरणफलम् ॥

अथ पल्लीसरटयोः पतनारोहणम् । पल्लीस्पर्शफलं वक्ष्ये यदुक्तं ब्रह्मणा पुरा । ब्रह्मस्थाने भवेद्राज्यं स्थानलाभो ललाटके ॥ ६४ ॥ कर्णयोर्भूषणावाप्तिर्नेत्रयोः प्रियदर्शनम् । नासिकायां सुगंधीनि मुखे मिष्टान्नभोजनम् ॥ ६५ ॥ कपोलयोर्भवेत्सौख्यं हनुदेशे महद्भयम् ॥ भ्रुकुट्यां विग्रहश्चैव कंठे च व्यसनागमः ॥ ६६ ॥ कलिर्वंशे सुखं पृष्ठे दक्षे वामे गदादयः । दक्षांसे विजयो नित्यं वामांसे शत्रुजं भयम् ॥ ६७ ॥ इष्टलाभो भुजे सव्ये कूर्परे मणिबंधके । दक्षे करतले द्रव्यं तत्पृष्ठे सद्व्ययो भवेत् ॥ ६८ ॥ वामे भुजे कूर्परे च मणिबंधे धनक्षयः । वामे करतले हानिस्तत्पृष्ठे चार्थनाशनम् ॥ ६९ ॥ हृदये राजसम्मानं सौभाग्यं दक्षिणे स्तने । दक्षपार्श्वे च भोगाप्तिः स्तने वामे यशो धनम् ॥ ७० ॥

वामपार्श्वे भवेत्पीडा वामकुक्षौ शिशोस्तथा । दक्षकुक्षौ सुखावाप्तिरुदरे च विशेषतः ॥ ७१ ॥ वस्त्राप्तिर्दक्षकट्यां च वामकट्यां सुखक्षयः । नाभ्यां मनोरथावाप्तिर्वस्तौ गर्भच्युतिर्भवेत् ॥ ७२ ॥ गुह्ये मृत्युर्गुदे रोगो दक्षोरौ प्रीतिवर्द्धनम् । वामोरौ मृत्युतो दुःखं दक्षजानौ सुवाहनम् ॥ ७३ ॥ पशुहानिर्वामजानौ दक्षिणे जघने सुखम् । क्लेशः स्याद्वामजंघायां स्फिचि दक्षेऽर्थवृद्धिकृत् ॥ ७४ ॥ स्फिचि वामे स्त्रीवियोगो दक्षे गुल्फे प्रियागमः । उपप्लवो वामगुल्फे पादयोर्गमनं भवेत् ॥ ७५ ॥ पुरोभागे च दुर्वार्ता नष्टवार्त्ता च पृष्ठतः । वामे हानिर्धनं दक्षे परितो भ्रमणेक्षितः ॥ ७६ ॥ वामदक्षिणभागेन यत्फलं कथितं नृणाम् । विपर्ययेण तत्स्त्रीणां ज्ञेयं शेषं द्वयोः समम् ॥ ७७ ॥ इत्थं पल्ल्याः प्रपतने फलं ज्ञेयं विचक्षणैः । एतदेव फलं विद्यात्सरटस्य प्ररोहणे ॥ ॥ ७८ ॥ मृत्युयोगे च जन्मर्क्षे विष्ट्यां पाते च वैधृतौ । चंद्रेऽष्टमे च सक्रूरे लग्ने विघ्नः प्रजायते ॥ ७९ ॥ अंगं दक्षिणमारुह्य वामेनोत्तरते स्फुटम् । तदा हानिकरी ज्ञेया व्यत्ययेन तु हानिदा ॥ ८० ॥ चरणादूर्ध्वगा भूयः सद्यो रोहति शीर्षकम् । प्राप्तं राज्यं तदा दत्ते पल्ली भवेत् विशेषतः ॥ ८१ ॥ चिंतिताभ्यधिकं लाभं स्थितवा भोजनभाजने । पादांगुलीषु संपाताद्धानिश्च महती भवेत् ॥ ८२ ॥ तत्र शांतिं जपं होमं रुद्रं मृत्युंजयादिकम् । पंचगव्ययुतं स्नानं कुर्यादाज्यावलोकनम् ॥ ८३ ॥ तिलमाषादिदानं च स्नात्वा देयं द्विजन्मने । पिनाकिनं नमस्कृत्य जपेन्मंत्रं षडक्षरम् ॥ ८४ ॥ शतं सहस्रमथवा सर्वदोषनिबर्हणम् । शिवालये प्रदद्याद्वै दीपं दोषोपशांतये ॥ ८५ ॥

अथ छिपकली पडनेका तथा किरडे (किरकांट) का अंगपर चढनेका फल लिखते हैं—जैसा पूर्व ब्रह्माजीने कहा है । शिरके ऊपर ब्रह्मरंध्रमें छिपकली पडे तो राज्यका लाभ हो, ललाटपर पडे तो स्थान मिले ॥ ६४ ॥ कानपर पडे तो आभूषण मिले, नेत्रोंपर पडे तो प्रिय वस्तुका दर्शन हो, नासिकापर पडे तो सुगंधि प्राप्त हो, मुखपर पडे तो मिष्टान्नका भोजन मिले ॥ ६५ ॥ गालोंपर सुख हो, ठोडीपर महान्

भय हो, भ्रुकुटीपर राड (कलह) हो, कंठपर पडे तो दुःख हो ॥ ६६ ॥ पीठके हाथपर पडे तो कलह हो, दक्षिण पीठपर सुख हो, वामपीठपर रोग हो, दहने कन्धेपर पडे तो विजय हो, वामकन्धे पर शत्रुका भय हो ॥ ६७ ॥ दक्षिणभुजापर, तथा कूर्परपर मणिबंधपर पडे तो इष्टवस्तुका लाभ हो, दक्षिण हाथकी हथेलीपर द्रव्य मिले, दाहने हाथकी पीठपर पुण्यके निमित्त खरच हो ॥ ६८ ॥ वामभुजा, कूर्पर, मणिबंधपर पडे तो धन नाश हो, वामहाथकी हथेलीपर पडे तो हानि और उसकी पीठपर पडे तो धनका नाश हो ॥ ६९ ॥ हृदयपर राजासे सन्मान मिले, दहिने स्तनपर सौभाग्य और दक्षिण पार्श्वमें भोग तथा वामस्तनपर पडे तो यश धन मिले ॥ ७० ॥ वामपार्श्वमें पडे तो पीडा करे, वामकूखपर पडे तो बालकोंको पीडा करे. दक्षिणकूखपर, या पेटपर पडे तो पुत्र हो ॥ ७१ ॥ दक्षिण कड (कटि) पर वस्त्रका लाभ, वामकडपर सुखका नाश हो, नाभिपर मनोरथसिद्धि और बस्तिस्थान अर्थात् नाभी के नीचे पडे तो गर्भपतन हो जावे ॥ ७२ ॥ गुह्यपर मृत्यु गुदापर पडे तो रोग हो, दक्षिणजंघापर प्रीतिकी वृद्धि और वामजंघापर मृत्युका दुःख दक्षिण गोडपर पडे तो श्रेष्ठ वाहन मिले ॥ ७३ ॥ वामगोडपर पशुहानि, दक्षिणपींडीपर सुख, वाम-पींडीपर क्लेश हो, दक्षिणकूल्लेपर धनकी वृद्धि हो ॥ ७४ ॥ वामकूल्लेमें स्त्रीका वियोग, दक्षिणटकणेपर प्रियका आगमन, वामटकणेपर नाश, और पगोंपर पडे तो गमन करावे ॥ ७५ ॥ अगाडी आके पडे तो खोटीबात सुने, पछाडी पडे तो नष्ट होनेकी वार्ता सुने, वामपार्श्वमें पडे तो हानि और दक्षिणपार्श्वमें पडे तो धनलाभ और आकर फिर जावे तो नाश करे ॥ ७६ ॥ यह छिपकलीका कहा हुआ फल पुरुषोंके दक्षिण-भागका और स्त्रियोंके वामभागका शुभ जानना और विपरीत पडनेसे अर्थात् पुरुषोंके वाम अंगोंमें और स्त्रियोंके दक्षिण अंगोंमें अशुभ जानना ॥ ७७ ॥ इस प्रकार छिपकलीके पडनेका और किरडेके चढनेका फल जानना चाहिये ॥ ७८ ॥ यदि मृत्युयोग, जन्म नक्षत्र, भद्रा, व्यतीपात, वैधृति, आठवां चन्द्रमा पापग्रह सहित लग्नमें पडे तो विघ्न होता है ॥ ७९ ॥ दक्षिण अंगपर चढके यदि वाम अंगोंकरके उतरजावे तो हानि करती है और वाम अंगसे दक्षिणकरके उतरे तो श्रेष्ठ है ॥ ८० ॥ यदि पगोंसे चढके शिरपर जा चढे तो राज्यप्राप्ति करती है ॥ ८१ ॥ भोजन पात्रपर पडे तो विचारे हुए लाभसे अधिक भी लाभ हो और पगोंकी अंगुलियोंपर पडे तो बहुत हानि हो ॥ ८२ ॥ यदि दुष्ट स्थान-पर छिपकली पड जावे तो, शांति, होम, जप, रुद्रीका पाठ, महामृत्युंजयजप करे और पंचगव्यसे स्नान करके घृतम मुख देखे ॥ ८३ ॥ तिल, उडदका दान स्नान

करके ब्राह्मणको दे, महादेवजीको नमस्कार करे "ॐनमःशिवाय" इस मंत्रका हजार या सौ जप करे और शिवालयमें दीपक दे तो दोष दूर होजावे ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ इति पल्लीपतनफलम् ॥

अथ स्वप्नदर्शनफलम् । आद्ये यामे निशि स्वप्नो वर्षेण फलदो भवेत् । द्वितीये मासषट्केन त्रिभिर्मासैस्तृतीयके ॥ ८६ ॥ प्रातः सद्यः-फलः स्वप्नस्ततः स्वप्यान्न चेन्नरः । रोगाच्चितोद्भवा ह्यर्थाश्चिरपाकादि वीक्षताम् ॥ ८७ ॥ अथ शुभदाः स्वप्नाः । सद्राजा ब्राह्मणा देवाः सिद्धगंधर्वकिन्नराः । गुरुः श्वेतांबरा नारी तेषामाशीश्च दर्शनम् ॥ ८८ ॥ प्रासादगजशैलानां श्वेतोक्षासनवाजिनाम् । दर्शनं रोहणं लाभः सिंह-स्यारोहणं तथा ॥ ८९ ॥ छत्रध्वजसुवर्णाब्जरत्नरौप्यदधीनि च । यव-गोधूमसिद्धार्थाः फलं दीपश्च कन्यकाः ॥ ९० ॥ श्रीखंडाक्षतदूर्वक्षुदर्पणाः पुष्पितद्रुमाः । लाभे वा दर्शने चैषां लाभः सौख्यं भवेद्यशः ॥ ९१ ॥ भोजनं रोदनं वीणावादनं नौप्ररोहणम् । अगम्यागनं विष्ठालेपनं शस्त-मीरितम् ॥ ९२ ॥ आरूढो यो हि जागर्ति सपुष्पं फलितं द्रुमम् । दष्टः श्वेताहिना दक्षे करे स्यात्स महाधनः ॥ ९३ ॥ रुधिरस्नानपानं च सर्पदंशो मृतिर्निजा । शय्याहर्म्यासनानां च ज्वलनं स्वशिरश्छिदा ॥९४॥ रक्तस्रावो जलैः स्नानं मरणं मांसभक्षणम् । सुरायाः पयसः पानं प्रश-स्तं पायसाशनम् ॥ ९५ ॥ कदलीकल्पवृक्षाश्च तीर्थं गंगादिकं सरित् । तोरणं भूषणं राज्यं स्वनैश्च ग्रामवेष्टनम् ॥ ९६ ॥ वेदवाद्यादिनिर्घोषो गर्तान्निःसरणं तथा । देशो वृश्चिककीटानां वह्नागोयानदर्शनम् ॥ ९७ ॥ पीतं रक्तं फलं पुष्पं स्वप्ने प्राप्नोति यो नरः । लभते सोऽचिरात्स्वर्णं पद्मरागमणिं तथा ॥ ९८ ॥ जयो द्यूते रणे वादे पुरुहूतध्वजेक्षणम् । आत्मनो बंधनं शीर्षं बाह्वोरानंत्यमुत्तमम् ॥ ९९ ॥ अभिषेककरो विप्रो देवो वा छत्रधारणम् । कुरुते महिषीव्याघ्रीगोसिंहीस्तन्यपानकम् ॥ १०० ॥ स्वनाभौ तृणवृक्षांबुपुष्पाणामुद्भवस्तथा । भुवो भूमिधरस्यापि क्रमेणोत्क्षे-

पणे शुभे ॥ १०१ ॥ मणिसौवर्णरौप्याणां पात्रे वांऽभोजिनीदले । यो-ऽश्नाति पायसं स्वप्ने स राज्यमधिगच्छति ॥ १०२ ॥ गौलिंगी ब्राह्मणो राजा पिता मित्रं च देवता। यद्वदेवत्सदसत्स्वप्ने तत्तथैव प्रजायते । १०३॥ पूजितं शिवलिंगं च देवता वा यथाविधि । स्वप्ने दृष्टाः प्रयच्छंति नराणां विपुलंधनम् ॥ १०४ ॥ त्यक्त्वा वस्त्राणि कार्पासं श्वेतवर्णं शुभं मतम् । सर्वं कृष्णमसद्वित्वा गोदेवांश्च गजद्विजान् ॥ १०५ ॥ यस्तु श्वेतेन सर्पेण दंशितो दक्षिणे करे । सहस्रलाभस्तस्य स्यात्पूर्णे तु दशमे दिने ॥ १०६ ॥ उरगो वृश्चिको वाऽपि जंबूको दंशते यदि । विजयं चार्थसिद्धिं च पुत्रं तस्य विनिर्दिशेत् ॥ १०७ ॥ रुधिरं पिबति स्वप्ने सुरां वा पिबति क्वचित् । ब्राह्मणो लभते विद्यामितरस्तु धनं लभेत् ॥ १०८॥क्षीरं पिबति यः स्वप्ने सफेनं दोहने कृते । सोमपानं भवेत्तस्य धनं वा बहु चादिशेत् ॥ १०९ ॥ दधिलाभे धनं तस्य घृतलाभे ध्रुवं यशः । घृतप्राशे महाक्लेशो यशस्तु दधिभक्षणे ॥ ११० ॥ गोधूमैर्वा यवे-र्वापि लाभं सिद्धार्थकेषु च । पुष्पे प्राप्ते धनं विद्यात्फले वृद्धिरनुत्तमा ॥ १११ ॥ आसने शयने याने शरीरे वाहने गृहे । ज्वलमाने विबुध्येत तस्य श्रीः सर्वतोमुखी ॥ ११२ ॥

(अथ स्वप्नफलम्) यदि स्वप्न रात्रिके प्रथम पहरमें आवे तो बरसभरसे फल दे और दूसरे पहरमें छः महीनोंसे, तीसरे पहरमें तीनमाससे फल होता है ॥ ८६ ॥ प्रातःकालका स्वप्न तत्काल ही फल देता है, परन्तु यदि फिर नहीं सोवे तो रोग, चिन्ता, धनलाभ आदिका कार्य बहुत दिनसे सिद्ध होनेवालोंका शीघ्र सिद्ध होवे ॥ ८७ ॥ (श्रेष्ठस्वप्न) श्रेष्ठराजा, ब्राह्मण, देव, गन्धर्व, सिद्ध, किन्नर, गुरु, श्वे वस्त्रयुक्त स्त्री इनका दर्शन तथा आशीष श्रेष्ठ है ॥ ८८ ॥ महल, मन्दिर, पर्वत, सुफेद वृषभ, आसन, घोडे, सिंह आदिका दर्शन तथा चढना, या मिलना श्रेष्ठ है ॥ ८९ ॥ छत्र, ध्वजा, सुवर्ण, कमल, रत्न, चांदी, दही, यव, गेहूँ, सरसों, फल, दीपक, कन्या, चन्दन, चावल, दूर्वा, ईख दर्पण, पुष्पों करके युक्त दरखत, इनका दर्शन, या लाभ हो तो लाभ, सुख प्राप्त होवे ॥ ९० ॥ ९१ ॥ भोजन, रुदन, वीणाका बजाना, नौकाका चढना, नहीं गमन करने योग्य स्त्रीका संग करना, शरी-

रमें विष्ठा लगाना श्रेष्ठ है ॥ ९२ ॥ पुष्पफलसहित वृक्षपर चढके जागे और दाक्षिण-हाथमें सुफेद सर्प काट जावे तो बहुत धन मिले ॥ ९३ ॥ रुधिरसे स्नान, पान करे, या सर्प खाजावे, या आप मरजावे, या शय्या, महल, आसन यह अग्निसे जलजावे, या अपना शिर कटजावे ॥ ९४ ॥ खून निकल आवे, जलसे स्नान करे, या मरजावे, मांस भक्षण करे, मदिरा पीवे, या पायस दुग्ध पीवे तो शुभ है ॥ ९५ ॥ केलेका वृक्ष, कल्पवृक्ष, तीर्थ, गंगाआदि नदी, तोरण, आभूषण, राज्य, शब्दोंकरके ग्रामका वेष्टन ॥ ९६ ॥ वेद, बाजे आदिका शब्द, खाडेसे निकलना, वृश्चिक, डांस, कीड़े आदिका काटना, तालाब, बगीचा इनका देखना शुभ है ॥ ९७ ॥ पीला लाल फल पुष्प स्वप्नमें मिले तो थोडे ही दिनोंसे सुवर्ण, रत्नमणि प्राप्त हो ॥ ९८ ॥ जूए या रण या वादमें जीतना, इंद्रकी ध्वजा देखना और अपने शरीर शिर बाहुका बंधन देखे तो शुभ है ॥ ९९ ॥ राजाका अभिषेकमें विप्र, देवताओंका छत्रधारण देखे, महिषी, व्याघ्री, गौ, सिंहिणीका स्तन पीवे तो शुभ है ॥ १०० ॥ आपकी नाभिमें तृण, वृक्ष, जल, पुष्प निकले, शेष भगवान् पृथ्वीको उछाले तो शुभ है ॥ १०१ ॥ मणि, सुवर्ण, चांदीके पात्रोंमें, कमलके पत्तेमें पायस भक्षण करे तो राज्य मिलता है ॥ १०२ ॥ गौ, संन्यासी, ब्राह्मण, राजा, पितर, पिता, मित्र, देवता जो स्वप्नमें शुभ अशुभ वार्त्ता कहे सो सच्ची जानना ॥ १०३ ॥ यदि स्वप्नमें पूजित महादेवके लिंगको या पूजे हुए देवताओंको देखे तो बहुत धन मिलता है ॥ १०४ ॥ केवल तक्र, कपासके विना संपूर्ण जिनस सुफेद श्रेष्ठ हैं और गौ, देवता, हस्ती, ब्राह्मणके विना कृष्ण जिनस संपूर्ण निषिद्ध हैं ॥ १०५ ॥ जो स्वप्नमें दाहिने हाथको सुफेद सर्प काट खावे तो दशदिनके भीतर हजार रूपैया मिलता है ॥ १०६ ॥ सर्प, वृश्चिक, जंबुक, स्वप्नमें खावे तो विजय, धनलाभ, पुत्रलाभ होता है ॥ १०७ ॥ स्वप्नमें रुधिर, मदिरा पीवे तो ब्राह्मणको विद्या आवे, औरोंको धन मिले ॥ १०८ ॥ स्वप्नमें दूहते हुए झागसहित दुग्ध पीवे तो अमृतके पानबरोबर समझना और बहुत धन मिलता है ॥ १०९ ॥ दधि मिले तो धनप्राप्ति, घृत मिले तो यशप्राप्ति हो और घृत खानेमें महाक्लेश और दही खानेमें यश मिलता है ॥ ११० ॥ स्वप्नमें गोधूम, यव, सरसों, पुष्प मिलें तो धन हो और फल मिले तो उत्तम वृद्धि हो ॥ १११ ॥ आसन, शय्या, यान, शरीर वाहन, घर अग्निसे जलते हुए देख जाग आवे तो सम्मुख लक्ष्मी आती है ॥ ११२ ॥

अथाशुभस्वप्नाः । तैलाभ्यक्तोऽथ दिग्वासा आरूढो माहिषं खरम् । उष्ट्रं कृष्णं वृषं वाऽश्वं याम्यां गच्छन्न जीवति ॥ ११३ ॥ पाक-

स्थाने वने रक्तपुष्पाढ्ये सूतिकागृहे । विकलांगो विशेत्स्वप्ने सोऽशुभि-र्विप्रयुज्यते ॥ ११४ ॥ जतुकौंकुमसिन्दूरादिधावको यस्य मंदिरे । पतंति वस्तुतस्तस्य गेहदाहश्च चौरभीः ॥ ११५ । नाभेरन्यत्र गात्रेषु तृणपुष्पकुसुमोद्गमः । खरोष्ट्रकपिसर्पाद्यैर्यानं स्नेहस्य भक्षणम् ॥ ११६ ॥ कलुषेणाम्बुना मस्या कर्द्दमैर्गोमयेन च । स्नेहेन वपुषो लेपः कर्द्दमे विनिमज्जनम् ॥ ११७ ॥ पातो दृग्दंतहस्तस्य जिह्वायाश्च त्रयं तथा । एते शोकप्रदाः स्वप्ना दृष्टा हांनिकरा अपि ॥ ११८ ॥ स्वप्ने संदोलनं गीतं क्रीडितं स्फोटितं तथा । हसितं भर्त्सितं स्रोतोवहानीरे ह्यधोगतम् ॥ ११९ ॥ सूर्येंदुध्वजताराणां पातः स्वस्य चितावपि । रज्ज्वा च्छेदः शिरोभागे कांस्यवर्णस्य धारणम् ॥ १२० ॥ प्रवेशो जननीगर्भे दुष्टमेतदरिष्टदम् । करवीरमशोकं च लवापाशेन बंधनम् ॥ १२१ ॥ कृष्णांबरधरायोषालिंगनं मृत्युकारकम् । आरुह्य पुष्पितान् वृक्षान् यो विचिंत्य निजं वपुः ॥ १२२ ॥ भूषयत्यरुणैः पुष्पैः सोऽपि प्राणैर्वियुज्यते । धृतरक्तांबरश्लिष्टो हत्यामाप्नोति मानवः ॥ १२३ ॥ यस्तु धूममथात्मानं व्याप्तं धूमेन चेक्षते । भस्माज्यलोहलाक्षाश्च स च लक्ष्म्या वियुज्यते ॥ १२४ ॥ क्रोष्टुकुक्कुटमार्जारगोधाबभ्रुभुजंगमाः । मक्षिकावृश्चिकादंशा दृष्टाः स्वप्ने न शोभनाः ॥ १२५ ॥ रत्नद्रव्यायुधः पानशय्याभूषाश्च योषिताम् । वस्त्रादिप्रियवस्तूनामपहारोऽर्थनाशकः ॥ १२६ ॥ विवाहोत्सवयोः शोको भ्रंशे वा नखकेशयोः । कराद्यवयवानां तु च्छेदने स्वप्ननाशनम् ॥ १२७ ॥ वपनं श्मश्रुकेशानां नेत्ररुक्पतनं तथा । कूपगर्तदरीध्वांतविवरेषु न शोभनम् ॥ १२८ ॥ कपोतश्येनगृध्राद्या ऋक्षकौशिकवायसाः । सृगालशशकश्वानो दृष्टाः स्वप्ने न शोभनाः ॥ १२९ ॥ शष्कुलीकृसराश्राणागुडापूपादिभक्षणम् । गोमयं चोष्णपानीयं स्वप्ने पीतं न शोभनम् ॥ १३० ॥ रक्ते पुरीषमूत्रे वा स्वपन्मु-

त्युमवाप्नुयात् । रक्तकृष्णानि वासांसि कृष्णानि च बिभर्त्ति यः ॥१३१॥ पितृकार्यं प्रकुर्वाणो म्रियते स न संशयः । भूतप्रेतपिशाचाद्यैः श्वपचैः सह संगवः ॥ १३२ ॥ आहतो वाऽथ तैर्याम्यां स्वल्पाहैर्म्रियते तु सः । असूर्यं दिवसं रात्रिं विचंद्रां गततारकाम् ॥१३३॥ वृष्टिं योऽकालजां पश्येत्स्वप्ने सोऽपि विनश्यति । सीसपित्तलकस्तारकांस्यताम्राज्यसंचयः ॥ १३४ ॥ शुष्कवृक्षौषधं शिल्पी दृष्टाश्चैते न शोभनाः । प्रासादच्छत्रगात्राणां शिखराणां ध्वजस्य च ॥ १३५ ॥ पतनं शक्रचापस्य नृपराष्ट्रविनाशम् । तारं कोलाहलाह्वाननिंदाक्रोशादिसंश्रवात् । विंद्याद्राजभयं दंष्ट्रिश्रृंगिकीशाद्यभिद्रवान् ॥ १३६ ॥

(दुष्टस्वप्न) स्वप्नमें तैल लगावे, नंगा हो, महिष, गधे, ऊंट, काला वृषभ, काले घोडेपर चढके दक्षिणदिशामें जावे तो मृत्यु होती है ॥ ११३ ॥ पाकस्थान रसोईमें, या लालपुष्पोंके बनमें, जापे (जच्चा) के घरमें विकल होके स्वप्नमें प्रवेश हो सो मृत्युको प्राप्त होता है ॥ ११४ ॥ लाख, कुंकुम, सिलारस आदि वृक्षसे घरमें पडे तो घरका दाह, चोरोंका भय होता है ॥ ११५ ॥ नाभिके विना और गात्रोंमें तृण, पुष्प, वृक्ष पैदा होजावे और खर, ऊंट, वानर, सर्प आदिकी स्वारी करे, घृत तेल भक्षण करे ॥ ११६ ॥ मलिन जलसे, स्याहीसे, कादोंसे, गोमयसें, घृत तेलसे शरीरको लेप करे या कीचडमें घुसजावे ॥ ११७ ॥ दांत, नेत्र, हाथ, जिह्वा पडजावे तो यह स्वप्न शोक, हानि करते हैं ॥ ११८ ॥ स्वप्नमें हिंडोलेमें हींडे, गीत गावे, ख्याल करे, कूदे, हँसे, झिडके, या नदीके प्रवाहमें घुसजावे ॥ ११९ ॥ सूर्य, चन्द्रमा, ध्वजा, तारा, पडता दीखे, अपनी चितासे रज्जू टूटे, शिरमें कांसी धारण करे ॥ १२० ॥ माताके गर्भमें प्रवेश हो तो अरिष्ट होता है । कनेर, अशोक, बेलसे लपटा हुआ देखे ॥ १२१ ॥ काले वस्त्र धारण करी हुई स्त्रीसे आलिंगन करे तो मृत्यु हो, फूले हुए वृक्षोंपर चढके जानता हुआ लालपुष्पोंकरके अपने शरीरको भूषित करे तो मृत्यु होती है या लाल वस्त्र धारण करे तो हत्याको प्राप्त होता है ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ जो धूवां देखे या धूंवेकरके व्याप्त शरीरको देखे या भस्म, घृत, लोह, लाखको देखे तो लक्ष्मी नाश हो ॥ १२४ ॥ श्रृगाल, कूकडा, मार्जार, छिपकली, नोलिया, सर्प, मक्षिका, वृश्चिक यह स्वप्नमें काटे तो अशुभ है ॥ १२५ ॥ रत्न, धन, आयुध, पान, शय्या, स्त्रियोंका आभूषण, वस्त्र आदि

प्रियवस्तु चोरी जावे तो धननाश करे ॥ १२६ ॥ विवाह उत्सवमें शोक होजावे, या नख केश टूटजावे या हाथ पग आदि शरीरका अंगच्छेदन होजावे तो अशुभ है ॥ १२७ ॥ दाढी, मूछ, केश, आदिको मूंडावे, नेत्र दूखे या फूटजावे, या कूंवां, गर्त्त, गुफा, अंधेरा, छिद्रमें पडजावे तो अशुभ है ॥ १२८ ॥ कमेडी, शिकरा, गीध, रीच्छ, कौशिक, कागला, शृगाल, शूशिया, श्वान, यह स्वप्नमें देखे तो अशुभ है ॥ १२९ ॥ सुहाली, लापसी, गुड, पूडे आदिका भक्षण, गोमय, गर्मपानीका अशुभ है ॥ १३० ॥ रक्त, विष्ठा, मूत्रमें सोवे तो मृत्यु हो, लाल कालवस्त्र धारण करे और पितृकार्य करावे तो मृत्यु हो, भूत, प्रेत, पिशाच, चांडालोंकरके सहित गमन करे तो भी मरे ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ अथवा भूत आदिकरके दक्षिण दिशामें ले जाया जावे तो थोडेही दिनोंमें मरता है, दिन सूर्यरहित देखे, रात्रि चन्द्र तारारहित देखे ॥ १३३ ॥ ऋतु विना वर्षा देखे तो भी मरता है और सीसा, पीतल, रांग, कांसी, ताम्बा, सूखे वृक्ष, औषधी, चेजारा देखे तो अशुभ हैं, महल, घर, छत्र, पर्वतोंके टोल, ध्वजाको पडी देखे ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ इन्द्रका धनुष पडा देखे, राजाका राज्य नाश हो, कोलाहल सुने, निंदाक्रोश आदि सुने तो देशमें भय होता है, दंष्ट्री, शृंगी, वानर आदि भागते देखे तो अशुभ है ॥ १३६ ॥

अथ दुःस्वप्नदर्शने शांतिः । दुष्टे त्वालोकिते स्वप्ने निवेद्य ब्राह्मणाय च ॥ १३७ ॥ आशीर्भिस्तोषितो विप्रैः पुनः स्वप्यान्नरेश्वरः । न ब्रूयाच्च पुनः स्वप्नं संस्नायात्पुण्यवारिभिः ॥ १३८ ॥ कार्यो मृत्युंजयो होमः शांतिं स्वस्त्ययनादिकम्।सेवाऽश्वत्थगवां भावदानं स्वर्णादि शक्तितः॥१३९॥ श्रवणं भारतादीनां स्वप्नदोषनिवृत्तये । बृहस्पतिप्रणीतं च स्वप्नाध्यायं पठेदपि ॥ १४० ॥ स्तुतिं च वासुदेवस्य तथा तस्य च पूजनम् । गजेंद्रमोक्षश्रवणं ज्ञेयं दुःस्वप्ननाशनम् ॥ १४१ ॥ इति स्वप्नफलम् ।

(दुष्टस्वप्न देखनेमें शान्ति) इसप्रकार दुष्ट स्वप्न आवे तो ब्राह्मणको कहना चाहिये ॥ १३७ ॥ और ब्राह्मणोंका आशीर्वाद लेके फिर सोना शुभ है । सोके उठने के अनन्तर फिर किसीको कहना नहीं चाहिये और पवित्र जलसे स्नान करना शुभ है ॥ १३८ ॥ मृत्युंजयमंत्रसे होम करना, स्वस्तिवाचन आदिसे शांति कराना, पीपल गौ आदिकी सेवा करनी, शक्तिके अनुसार सुवर्णका दान देना ॥ १३९ ॥

भारत आदिकी कथा सुननी, अथवा स्वप्नाध्यायको पढे तो दुष्ट स्वप्न शांति हो ॥ ॥ १४० ॥ विष्णुभगवान्की स्तुति पूजन करे और गजेंद्रमोक्षको श्रवण करे तो दुष्ट स्वप्नका दोष शांत हो ॥१४१॥ इति स्वप्नफलम् ।

अथ होलिकावातपरीक्षा । पूर्वे वायौ होलिकायां प्रजाभूपालयोः सुखम् । पलायनं च दुर्भिक्षं दक्षिणे जायते ध्रुवम् ॥ १४२ ॥ पश्चिमे तृणसंपत्तिरुत्तरे धान्यसंभवः । यदि खे च शिखा वृष्टिर्दुर्गं राजा च संश्रयेत् ॥ १४३ ॥ नैर्ऋत्यां चैव दुर्भिक्षमैशान्यां तु सुभिक्षकम् । अग्नेर्भीतिरथाग्नेय्यां वायव्यां वाहवोऽनलाः ॥ १४४ ॥ अथ होलिकानिर्णयः । प्रतिपद्भूव १।१४ भद्रासु याऽर्चिता होलिका दिवा । संवत्सरं तु तद्राष्ट्रं पुरं दहति सा द्रुतम् ॥ १४५ ॥ प्रदोषव्यापिनी ग्राह्या पूर्णिमा फाल्गुनी सदा।तस्यां भद्रामुखं त्यक्त्वा पूज्या होला निशामुखे ॥१४६॥

अथ वारप्रवृत्तिकस्य विचारः । दिनमानं च रात्र्यर्द्धं बाणेंदुना १५ समन्वितम् । दिनप्रवृत्तिं विज्ञेयं गर्गलल्लादिभाषितम् ॥१४७॥

(होलीके वायुका फल) होलीदीपनके समय में पूर्वकी वायु चले तो प्रजा, राजाको सुख हो और दक्षिणकी वायु हो तो भागड पडे, या दुर्भिक्ष पडे ॥ १४२ ॥ पश्चिमकी हो तो तृण बहुत हो, उत्तरकी चले तो अन्न बहुत हो और आकाशमें होलीकी लटा जावे तो वर्षा हो और राजाको किल्लेका आसरा लेना चाहिये कारण शत्रुका भय होगा ॥ १४३ ॥ नैर्ऋत्यकोणकी वायु हो तो दुर्भिक्ष पडे, ईशानकी हो तो सुभिक्ष हो, अग्निकोणकी वायु हो तो अग्निका भय हो और वायुकोणकी वायु हो तो संवत्भरमें पवन बहुत चले ॥ १४४ ॥ यदि होलिका प्रतिपदा चतुर्दशी, भद्राको जलाई जावे तो बरसभर राज्यको और पुरुषको दग्ध करती है ॥ १४५ ॥ फाल्गुन सुदि पूर्णिमा प्रदोषकालव्यापिनी लेनी चाहिये उस समयमें भद्रा हो तो भद्राके मुखकी घडी त्यागके प्रदोषमें ही होली पूजनी जलानी शुभ है ॥ १४६ ॥ (वारप्रवृत्तिका विचार) दिनमानकी संपूर्ण घडी और रात्रिमानसे आधी घडी मिलाके पंद्रह फेर मिलावे और संपूर्ण घडी जितनी हो उतनी घडियोंके अनंतर वार लगता है यह गर्गलल्लआदि आचार्योंका मत है ॥ १४७ ॥

अथालंकारः । श्रीरामकृष्णपौत्रेण कस्तूरीचंद्रसूनुना । मयाचतुर्थीलालेन कृतोऽयं सारसंग्रहः ॥ १४८ ॥ अनेन प्रीयतां शंभुर्भवान्या सह सर्वदा ।

भवन्तु सुप्रसन्नाश्च दैवज्ञा गुणसूचकाः ॥ १४९ ॥ बाणबाणांकचंद्रेऽब्दे १९५५ विक्रमादित्यसंज्ञके । श्रावणे शुक्लपंचम्यां ग्रंथः पूर्णोऽभवच्छिवः ॥ १५० ॥ शम् ॥ इति श्रीमन्महाराजाधिराजक्षत्रियकुलार्कमरुदेशाधिपतिश्रीगंगासिंहवर्मणो बीकानेरराज्यान्वर्गतश्रीरत्नगढ़नगरनिवासिना श्रीवसिष्ठगोत्रोद्भवेन श्रीरामकृष्ण–अमरचंद्रपौत्रेण श्रीकस्तूरीचंद्रचतुर्भुजसूनुना श्रीमहादेवभक्तमाध्यंदिनवाजसनेयिना पंडितगौडवैद्यश्रीचतुर्थीलाल (चौथमल) शर्मणा विरचिते मुहूर्त्तप्रकाशे अद्भुतनिबन्धे नवमं मिश्रितप्रकरणं समाप्तम् ॥ ९ ॥

(ग्रंथकर्ताका वंशवर्णन) श्रीरामकृष्णजीका पौत्र और श्रीकस्तूरीचंद्रजीका पुत्र श्रीचतुर्थीलाल नाम पंडित मैं हूं सो यह ज्योतिषके सारका संग्रह किया हूं ॥१४८॥ सो इस ग्रंथकरके भवानी (पार्वती) सहित श्रीमहादेवजी प्रसन्न हों और गुणके जाननेवाले ज्योतिषी लोग भी प्रसन्न हों ॥ १४९ ॥ विक्रमादित्यके संवत् १९५५ श्रावणशुक्ल ९ में यह ग्रंथ आनंदपूर्वक समाप्त हुआ ॥ १५० ॥

इति श्रीरत्नगढ़निवासिना पंडितगौडश्रीचतुर्थीलाल (चौथमल) शर्मणा विरचितायां मुहूर्तप्रकाशभाषाटीकायां नवमं मिश्रितप्रकरणं समाप्तम् ॥९॥

समाप्तश्चायं पूर्वार्धः ।

अथ प्रभवादिषष्टिसंवत्सरचक्रम्. पृ. १ श्लो. २

ब्रह्मविंशतिः	विष्णुविंशतिः	रुद्रविंशतिः
प्रभव १	सर्वजित् २१	प्लवंग ४१
विभव २	सर्वधारी २२	कीलक ४२
शुक्ल ३	विरोधी २३	सौम्य ४३
प्रमोद ४	विकृति २४	साधारण ४४
प्रजापति ५	खर २५	विरोधकृत् ४५
अंगिरा ६	नंदन २६	परिधावी ४६
श्रीमुख ७	विजय २७	प्रमादी ४७
भाव ८	जय २८	आनंद ४८
युवा ९	मन्मथ २९	राक्षस ४९
धाता १०	दुर्मुख ३०	अनल ५०
ईश्वर ११	हेमलंबी ३१	पिंगल ५१
बहुधान्य १२	विलंबी ३२	कालयुक्त ५२
प्रमाथी १३	विकारी ३३	सिद्धार्थी ५३
विक्रम १४	शार्वरी ३४	रौद्र ५४
वृष १५	प्लव ३५	दुर्मति ५५
चित्रभानु १६	शुभकृत् ३६	दुंदुभि ५६
सुभानु १७	शोभकृत् ३७	रुधिरोद्गारी ५७
तारण १८	क्रोधी ३८	रक्ताक्षी ५८
पार्थिव १९	विश्वावसु ३९	क्रोधन ५९
व्यय २०	पराभव ४०	क्षय ६०

अथ मासर्तुचक्रम्. पृ. २ श्लो. ९

मासाः	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्त्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
माससंज्ञा	मधु	माधव	शुक्र	शुचि	नभ	नभस्य	इष	ऊर्ज	सह	सहस्य	तपस	तपस्य
ऋतवः	वसंत		ग्रीष्म		वर्षा		शरत्		हेमंत		शिशिर	
ऋतुपतयः	मारुत		अग्नि		इंद्र		विश्वेदेव		प्रजापति		सोम	

अथ तिथिवारचक्रम्. पृ. १ श्लो. १०

तिथयः	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
तिथीशाः	वह्नि	ब्रह्मा	गौरी	गणेश	सर्प	स्कंद	रवि	शिव	दुर्गा	यम	विश्वेदेव	हरि	काम	शिव	चंद्र

वाराः	सूर्य	चंद्र	भौम	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनैश्चर
वाराधिपतयः	शिव	दुर्गा	स्कंद	विष्णु	ब्रह्मा	इंद्र	काल
संज्ञा	स्थिर	चर	उग्र	मिश्र	लघु	मृदु	तीक्ष्ण

अथ नक्षत्रज्ञानचक्रम्. पृ. ३ श्लो. १९.

सङ्ख्या	नक्षत्रनाम.	शुभाशुभसंज्ञा	नक्षत्रस्वामि	मुखसंज्ञा	संज्ञा	संज्ञा	संज्ञा	तारा
१	अश्विनी	शुभद	अश्विनीकु	तिर्यङ्मु.	लघु	क्षिप्र	मदलोचन	३
२	भरणी	नाशक	यम	अधोमुख	उग्र	क्रूर	मध्याक्ष	३
३	कृत्तिका	कार्यनाश	अग्नि	अधोमुख	मिश्र	साधारण	सुलोच.	६
४	रोहिणी	सिद्धि	ब्रह्मा	ऊर्ध्वमुख	ध्रुव	स्थिर	अधलो.	५
५	मृगशिर	शुभ	चंद्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	मंदलो.	३
६	आर्द्रा	शुभ	रुद्र	ऊर्ध्वमु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	१
७	पुनर्वसु	मध्य	अदिति	तिर्यङ्मु.	चर	चल	सुलोच.	४
८	पुष्य	शुभ	गुरु	ऊर्ध्वमु.	लघु	क्षिप्र	अंधलो.	३
९	आश्लेषा	शोक	सर्प	अधोमु.	तीक्ष्ण	दारुण	मंदलो.	५
१०	मघा	नाशक	पितर	अधोमु.	उग्र	क्रूर	मध्यलो.	५
११	पूर्वाफा०	मृत्युप्रद	भग	अधोमु.	उग्र	क्रूर	सुलोच.	२
१२	उत्तराफा०	विद्याप्रद	अर्यमा	ऊर्ध्वमु.	ध्रुव	स्थिर	अंधलो.	२
१३	हस्त	लक्ष्मी	सूर्य	तिर्यङ्मु.	क्षिप्र	लघु	मंदलो.	५
१४	चित्रा	शुभदा	त्वष्टा	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	मध्यलो.	१
१५	स्वाती	अशुभ	वायु	तिर्यङ्मु.	चर	चल	सुलोच.	१
१६	विशाखा	अशुभ	इंद्राग्नि	अधोमु.	मिश्र	साधारण	अंधलो.	४
१७	अनुराधा	सर्वसिद्धि	मित्र	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	मंदलो.	४
१८	ज्येष्ठा	क्षयप्रद	इंद्र	तिर्यङ्मु.	तीक्ष्ण	दारुण	मध्यलो.	३
१९	मूळ	हानिप्रद	राक्षस	अधोमु.	तीक्ष्ण	दारुण	सुलोच.	११
२०	पूर्वाषाढा	हानि	उदक	अधोमु.	उग्र	क्रूर	अधलो.	२
२१	उत्तराषाढा	वृद्धिद	विश्वदेव	ऊर्ध्वमु.	ध्रुव	स्थिर	मंदलो.	२
२२	अभिजित्	सिद्धिद	विधि	ऊर्ध्वमु.	लघु	क्षिप्र	मध्यलो.	३
२३	श्रवण	सुखद	विष्णु	ऊर्ध्वमु.	चर	चल	सुलोच.	३
२४	धनिष्ठा	शुभदा	वसु	ऊर्ध्वमु.	चर	चल	अंधलो.	४
२५	शतभिषा	कल्याण	वरुण	ऊर्ध्वमु.	चर	चल	मंदलो.	१००
२६	पूर्वाभाद्र०	मृत्युदा	अजपात्	अधोमु.	उग्र	क्रूर	मध्यलो.	२
२७	उत्तराभा०	लक्ष्मी	अहिर्बुध्न्य	ऊर्ध्वमु.	ध्रुव	स्थिर	सुलोच.	२
२८	रेवती	फायदा	पूषा	तिर्यङ्मु.	मृदु	मैत्र	अंधलो.	३२

योगचक्रम्. पृ. ९ श्लो. ३७

विष्कंभ १	प्रीति २	आयुष्मान् ३	सौभाग्य ४	शोभन ५	अतिगंड ६	सुकर्मा ७	धृति ८	शूल ९	गंड १०	वृद्धि ११	ध्रुव १२	व्याघात १३	हर्षण १४
वज्र १५	सिद्धि १६	व्यतीपात १७	वरीयान् १८	परिघ १९	शिव २०	सिद्धि २१	साध्य २२	शुभ २३	शुक्ल २४	ब्रह्मा २५	ऐंद्र २६	वैधृति २७	योगनामा

अथ करणज्ञानचक्रम्. पृ. ६ श्लो. ३७

शुक्लतिथि.				कृष्णतिथि.				नाम.	स्वामी.
पूर्वदल		उत्तरदल		पूर्वदल		उत्तरदल			
१	स्थिर	०	०	०	०	०	०	किंस्तुघ्न	वायु
५	१२	१ ८	१५	४	११	७	०	वव	इंद्र
२	९	५	१२	१	८	४	११	वालव	ब्रह्मा
६	१३	२	९	५	१२	१	८	कौलव	मित्र
३	१०	६	१३	२	९	५	१२	तैतिल	सूर्य
७	१४	३	१०	६	१३	२	९	गर	भूमि
४	११	७	१४	३	१०	६	१३	वणिज	लक्ष्मी
८	१५	४	११	७	१४	३	१०	विष्टि(भद्रा)	यम
स्थिर	०	०	०	०	०	०	१४	शकुनी	कलि
स्थिर	०	०	०	३०	०	०	०	चतुष्पद	बैल
स्थिर	०	०	०	०	०	०	३०	नाग	सर्प

भद्राअंगविभागफलचक्रम्. पृ. ६ श्लो. ५२

घडी	५	१	११	४	६	३
अंग	मुख	गल	वक्ष	नाभि	कटी	पुच्छ
फल	हानी	मृत्यु	दरिद्र	उन्मत्तता	नाश	जय

भद्रायाःपुच्छघटीचक्रम्. पृ. ६ श्लो. ६१

तिथि	४	८	११	१५	३	७	१०	१४
प्रहर	८	१	६	३	७	२	५	४
घटी	३	३	३	३	३	३	३	३

अथ दिवारात्रौ पंचदशमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ८ श्लो. ६०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	दिवामुहूर्ता:
शिव	सर्प	मित्र	पितृ	वसु	जल	विश्वेदेव	विधि	वेधा	इंद्र	इंद्राग्नि	राक्षस	वरुण	अर्यमा	भग	देवता:
आर्द्रा	ऽश्लेषा	अनुराधा	मघा	धनिष्ठा	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	अभिजित्	रोहिणी	ज्येष्ठा	विशाखा	मूल	शतभिषा	उत्तराफाल्गु	पूर्वाफाल्गु	नक्षत्राणि
रुद्र	अजैकपाद	अहिर्बुध्न्य	पूषा	दस्र	यम	अग्नि	ब्रह्मा	चंद्र	अदिति	गुरु	विष्णु	सूर्य	त्वष्टा	वायु	रात्रिमुहूर्ता:
आर्द्रा	पूर्वाभाद्र.	उत्त. भाद्र.	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	पुनर्वसु	पुष्य	श्रवण	हस्त	चित्रा	स्वाती	नक्षत्राणि

सूर्यादिवारेषुत्याज्यमुहूर्त्तानांचक्रम्. पृ. ९ श्लो. ६९

रवि	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनैश्चर	वारा:
अर्यमा	ब्रह्मा राक्षस	पितृ अग्नि	अभिजित्	राक्षस अंबु	पितृ ब्रह्मा	शिव सर्प	मुहूर्तानि
उत्तराफाल्गुनी	रो. मू.	म. कृ.	अभिजित्	मू. पू. षा.	म. रो.	आर्द्रा आश्लेषा	नक्षत्राणि
दिवसे १४	दि. ९।१२ रात्रौ ८	दि. ४ रा. ७	दि. ८ रा. ८	दि. १२ रा. ६	दि. ९।८ रा. ९	दि. १।२ रा. १	काला:

अथ दिनरात्रिविभागेनपौराणिकमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ९ श्लो. ६७

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	दिवामुहूर्ता:
रौद्र	चैत्र	सित	मैत्र	सावित्र	वैराज	गांधर्व	अभिजित्	रौहिण	बल	विजय	नैर्ऋत	इंद्र	जलेश्वर	भग	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	रात्रिमुहूर्ता:
रौद्र	गंधर्व	यक्षेश	अरुण	मारुत	अनल	राक्षस	धाता	सौम्य	पद्मज	वाक्पति	पूषा	हरि	वायु	निर्ऋति	

आनंदादियोगचक्रम्. पृ. १० श्लो. ७२.

वार	रवि	चंद्र	मं.	बु.	बृहस्प.	शुक्र	शनि
योग	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र	नक्षत्र
आनंद	अ	मृ	आश्ले	ह	अनु	उ.षा.	श
कालदं.	भ	आ	म	चि	ज्ये	अ	पू
धूम्राक्ष	कृ	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ
प्रजा	रो	पु	उ	वि	पू	ध	रे
सौम्य	मृ	आश्ले	ह	अ	उ	श	अ
ध्वांक्ष	आ	म	चि	ज्ये	अ	पू	भ
ध्वज	पु	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ
श्रीवत्स	पु	उ	वि	पू	ध	रे	रो
वज्र	आ	ह	अनु	उ	श	अ	मृ
मुद्गर	म	चि	ज्ये	अ	पू	भ	आ
छत्र	पू	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु
मैत्र°	उ	वि	पू	ध	रे	रो	पु
मानस	ह	अ	उ	श	अ	मृ	आश्ले
पद्माक्ष	चि	ज्ये	अ	पू	भ	आ	म
लुंबक	स्वा	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू
उत्पात	वि	पू	ध	रे	रो	पु	उ
मृत्यु	अ	उ	श	अ	मृ	आश्ले	ह
काण	ज्ये	अ	पू	भ	आ	म	चि
सिद्धि	मू	श्र	उ	कृ	पु	पू	स्वा
शुभ	पू	ध	रे	रो	पु	उ	वि
अमृत	उ	श	अ	मृ	आश्ले	ह	अनु
मुसल	अ	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये
गद	श्र	उ	कृ	पु	पू	स्वा	मू
मातंग	ध	रे	रो	पु	उ	वि	पू
राक्षस	श	अ	मृ	आश्ले	ह	अ	उ
चर	पू	भ	आ	म	चि	ज्ये	अ
स्थिर	उ	कृ	पु	पू	स्वा	मू	श्र
प्रवर्द्धमान	रे	रो	पु	उ	वि	पू	ध

राशिज्ञानचक्रम्. पृ. ११ श्लो. ८६.

राशि	मेष १	वृषभ २	मिथुन ३	कर्क ४	सिंह ५	कन्या ६	तुल ७	वृश्चिक ८	धन ९	मकर १०	कुंभ ११	मीन १२
संज्ञा	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री	पुरुष	स्त्री
कू.सं.	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौम्य	क्रूर	सौ.	क्रूर	सौ.	क्रूर	सौ.	क्रूर	सौ.
च.सं.	चर	स्थिर	द्विस्व-भाव	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व.	चर	स्थिर	द्विस्व

अथ नामतोराशिचक्रम्. पृ. १४ श्लो. ९९.

मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	राशि
चू	ई	क	हि	मा	टो	रा	तो	ये	भो	गू	दी	०
चे	उ	कि	हू	मि	पा	री	ना	यो	जा	गे	दू	०
चो	ए	कू	हे	मू	पी	रू	नी	भा	जी	गो	थ	०
ला	ओ	घ	हो	मे	पू	रे	नू	भी	खी	सा	झ	०
ली	वा	ङ	डा	मो	ष	रो	ने	भू	खू	सी	ञ	०
लु	वी	छ	डी	टा	ण	ता	नो	धा	खे	सू	दे	०
ले	वु	के	डू	टी	ठ	ती	या	फा	खो	से	दो	०
लो	वे	को	डे	टू	पे	तु	यी	ढा	गा	सो	च	०
अ	वो	ह	डो	टे	पो	ते	यू	भे	गी	द	ची	०

अथ ग्रहाणामुच्चादिज्ञानचक्रम्. पृ. १४ श्लो. ९९.

रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	ग्रहाः
१	२	१०	६	४	१२	७	उच्चराशयः
७	९	४	१२	१०	६	१	नीचराशयः
१०	३	२८	१५	५	२७	२०	परमोच्चांशाः
५	२	१	६	९	७	११	मूलत्रिकोणराशयः

अथ होराचक्रम्. पृ. १६ श्लो. १०८.

ल.	मेष	वृष.	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तूल	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
अं. १५	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं
अं. ३०	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू	चं	सू

अथ द्रेष्काणचक्रम्. पृ. १६ श्लो. १०९

	मेष	वृष.	मिथु.	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चि.	धन	मकर	कुंभ	मीन
१ अंश १०	मं १	शु २	बु ३	चं ४	सू ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	गु १२
२ अंश १०	सू ५	बु ६	शु ७	मं ८	गु ९	श १०	श ११	वृ १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४
३ अंश १०	गु ९	श १०	श ११	गु १२	मं १	शु २	बु ३	चं ४	र ५	बु ६	शु ७	मं ८

अथ नवांशचक्रम्. पृ. १६ श्लो. ११०

		मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म	कु.	मी.
३	२०	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४
६	४०	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५
१०	०	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६
१३	२०	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७
१६	४०	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११	८
२०	०	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९
२३	२०	७	४	१	१०	७	४	१	१०	७	४	१	१०
२६	४०	८	५	२	११	८	५	२	११	८	५	२	११
३०	०	९	६	३	१२	९	६	३	१२	९	६	३	१२

अथ द्वादशांशकथनम्. पृ. १६ श्लो. ११२

अंश	मे	वृ	मि	क	सिं	क	तु	वृ	ध	म	कुं	मी
२ ३०	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु
५ ०	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं
७ ३०	बु	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु
१० ०	चं	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु
१२ ३०	सू	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	च
१५ ०	बु	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	च	सू
१७ ३०	शु	मं	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु
२० ०	म	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु
२२ ३०	गु	श	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	मं
२५ ०	श	श	गु	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	गु
२७ ३०	श	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	म	गु	श
३० ०	गु	मं	शु	बु	चं	सू	बु	शु	म	गु	श	श

अथकेंद्रादिज्ञानचक्रम्. पृ. १८ श्लो. १२०

केंद्र	१	४	७	१०
पणफर	२	५	८	११
आपोक्लिम	३	६	९	१२
उपचय	३	१०	११	६

अथ दृष्टिज्ञानचक्रम्. पृ. १८ श्लो. १२३

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श	०
स्थान	७	७	७ ४ ८	७	७ ५ ९	७	७ ३ १०	पूर्ण दृष्टि
०	४ ८	४ ८	०	४ ८	४ ८	४ ८	४ ८	त्रिपाद
०	९ ५	९ ५	९ ५	९ ५	०	९ ५	९ ५	द्विपाद
०	३ १०	३ १०	३ १०	३ १०	३ १०	३ १०	०	एकपाद

इतिसंज्ञाप्रकरणस्थविषयाणांचक्राणि.

अथत्याज्यप्रकरणविषयचक्राणि. पृ. १९ श्लो. १

अथपक्षरंध्रतिथिचक्रम्. पृ. २३

पक्षरंध्रास्तिथयः	१४	४	८	९	६	१२
वर्ज्यघटिकाः	५	८	१४	२५	९	१०

अथसंक्रांतिस्त्याज्यघ० च० पृ.२४

ग्रहाः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
घटी	२३	२	९	६	८८	९	१६०

अथ षडशीतिमुखादिसंज्ञाचक्रम्. पृ. २४ श्लो. २६

षडशीतिमुख	धन	मिथुन	कन्या	मीन	संक्रांति
विषुव.	तुल	मेष	०	०	सं.
विष्णुपद	सिंह	वृश्चिक	वृष	कुंभ	सं.

अथ विरुद्धयोगानांत्याज्यघटीचक्रम्. पृ. २४ श्लो. २९

योगाः	वैधृति	व्यतीपात	वज्र	विष्कंभ	परिघ	शूल	व्याघात	गंड	अतिगंड	ध्वांक्ष	मुद्गर	
त्याज्यघटिकाः	६०	६०	३	३	३०	५	९	६	६	५	५	
योगाः	काण	मुसल	पद्म	लुंब	धूम्र	गद	चर	मृत्यु	काल	उत्पात	राक्षस	यमघंट
त्याज्यघटिकाः	२	२	४०	४	१	७	३	६०/१५	६०/१५	६०/१५	६०/१५	८

अथ गोचरप्रकरणचक्राणि.

अथ ताराज्ञानचक्रम्. पृ. ३० श्लो. २०

जन्मनक्षत्रात्तारा नामानि.		जन्म	संपत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मैत्र	अतिमैत्र
तारावर्जित कर्म.		यात्रा	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
शुभाशुभसंज्ञा.		युद्ध	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
		विवाह	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
		क्षौर चौल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
		गृ.प्र.	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	शुभ
तारासु दानम्.		शा. १	शा. २	गुड ३	लव. ४	ल. ५	ल. ६	स्व.ति. ७	लवण ८	लवण ९
तारासंख्या.		१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
नक्षत्रतारासं०		१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७

अथ नक्षत्रवशेन शनैश्चर चक्रम्. पृ. ३२ श्लो. ३३

शनिनक्षत्रात् नाम नक्षत्रपर्यंत.	१	४	३	३	४	५	३	२	२
अङ्ग	मुख	दक्षिणहस्त	पाद	पाद	वामहस्त	हृत्	मस्तक	नेत्र	गुह्य
फल.	हानि	लाभ	पर्यटन	पर्यटन	रोग	श्री	राज्य	सुख	मृत्यु

अथ शनेश्चरण ज्ञानचक्रम्. पृ. ३३ श्लो. ४१

जन्मराशेःसका-शाच्छनिचरणम्	सुवर्णपादम्	रजतपादम्	ताम्रपादम्	लोहपादम्
संख्या	१।६।११	२।५।९	३।७।१०	४।८।१२
फल	सुख	सौभाग्य	समता	धननाश

अथ शनैश्चरवाहनचक्रम्. पृ. ३४ श्लो. ४३

जन्मराशेः सकाशात्	१	४	६	५	७	३	८	२
वाहन.	छाग	अश्व	खर	गज	महिष	अश्व	वृष	वायस
फल.	हानि	वैर	भय	श्रम	धन	मान	सौख्य	रोग

अथ गोचरे तन्वादिद्वादशभावस्थसूर्यादीनां फलम्. पृ. ३४ श्लो. ४६

नाम	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.	रा.	के.	ग्रहाः
तनु १	स्थान नाश	अन्नप्राप्ति	शत्रुभय	बंधन	भय	शत्रुना.	सर्व नाश	हानि	रोग	तनु १
धन २	भय	धन	धननाश	धनप्राप्ति	धनप्रा.	धनप्रा.	वित्त नाश	धन लाभ	वैर	धन २
सहज ३	लक्ष्मी	सुख	धनप्रा.	भीति	क्लेश	सौख्य	धन लाभ	धन प्राप्ति	सुख	सहज ३
सुहृत् ४	मान हानि	रोग	भय	धन प्रा.	धननाश	धन प्रा.	शत्रु वृद्धि	वैर	भय	सुहृत् ४
सुत ५	दैन्य	कार्य ना.	अर्थ प्राप्ति	रोग	सुख	पुत्रप्रा.	सुतप्रा.	शुचि	शुचि क्षमता	सुत ५
रिपु ६	विजय	लक्ष्मी	लाभ	स्थानला	रोग	रिपु भय	धन प्रा.	लक्ष्मी	धन प्राप्ति	रिपु ६
जाया ७	मार्ग	लक्ष्मी	खर्च	पीडा	मान	भय	दोष	कलह	मार्ग	जाया ७
मृत्यु ८	पीडा	मृत्यु	शत्रुभय	अप्राप्ति	रोग	शोक	रिपु	धनला.	रोग	मृत्यु ८
धर्म ९	पुण्य नाश	राजभय	पीडा	रोग	सुख	धन प्रा.	धन नाश	पापकर्म	दुष्टकर्म	धर्म ९
कर्म १०	सिद्धि	सुख	शोक	सौख्य	दैन्य	महाव.	अस्वस्थ	वैर	शोक	कर्म १०
आय ११	लाभ	लाभ	धन प्राप्ति	सौख्य	लाभ	विपत्ति	धन प्राप्ति	सौख्य	कीर्ति	आय ११
व्यय १२	हानि	व्यय	हानि	नाश	पीडा	धनप्रा.	धन नाश	शुचि	शत्रु नाश	व्यय १२

अथ दानकालचक्रम्. पृ. २६ श्लो. ५८

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
दान कालः	सूर्योदये	संध्या समये	घ. २ दिन चढे	घ.५दिन चढे	संध्या	सूर्योदये	मध्याह्न	रात्रि	रात्रि

अथ सूर्यादिग्रहाणां दानानि पृ. ३६ श्लो. ६०

	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
	मणिरक्त	वंशपात्र	मुँगा	नीलवस्त्र	शर्करा	चित्र वस्त्र	माष	गोमेद	वैडूर्य
	गोधूम	चावल	गोहूँ	सुवर्ण	हरिद्रा	श्वेत अश्व	तेल	अश्व	रत्न
	गौ	कर्पूर	मसूर	कांस्य पात्र	अश्व	धेनु	नील मणि	नील वस्त्र	तिल
	कौसुंभ वस्त्र	मोती	रक्त वृष	मुद्ग	पीत धान्य	हीरा	तिल	नीलक बल	तेल
	गुड	श्वेत वस्त्र	गुड	घृत	पीत वस्त्र	रजत	कुलित्थ	तिल	कंबल
	सुवर्ण	शंख	सुवर्ण	गरुत्म	पुष्पराज	सुवर्ण	महिषी	तेल	कस्तूरी
	ताम्र	श्वेत वृष	रक्तवस्त्र	पुष्प	सिंधो लवण	चावल	लोह	लोह	शस्त्र
	रक्त चंदन	रजत	कनीर पुष्प	हस्ति दन्त	सुवर्ण	चन्दन	कृष्णा धेनु		छाग
	रक्तकमल	घृतकुंभ	ताम्र	हस्ती					
जप	७०००	११०००	१००००	८०००	१९०००	११०००	२३०००	१८०००	७०००
कलौ	२८०००	४४०००	४००००	३२०००	७६०००	४४०००	९२०००	७२०००	२८०००
साधारण दानम्	तांबूल	चन्दन	ब्राह्मण भोजन	शास्त्र मन्त्र	शिव पूजा	श्वेतवस्त्र	तैला-भ्यंग	विप्र पूजा	विप्र पूजा
रत्नधारणम्	मुँगा	रजत	मुँगा	सुवर्ण	मोती	रजत	लोह	लाजा वर्त	लाजा वर्त

अथ जन्मराशेःसकाशात् ग्रहणफलम्. पृ. ३९ श्लो. ७४

राशि / अशुभफल	१	७	८	१२	९	१०

इति गोचरप्रकरणस्थविषयाणां चक्राणि.

अथ स्त्रीणां रक्तवस्त्रसुवर्णचूडाधारणमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ३९श्लो. ३

ग्राह्यनक्षत्रादि	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	रे.	अश्विनी	धनिष्ठा	भौमवार	आदित्य	गुरुवार	शुक्र
त्याज्यनक्षत्रादि	रो.	उ. फा.	उ. षा.	उ. भा.	पुष्य	पुनर्वसु	बुध	शनि	सोम	रिक्ता	अमावास्या	भद्रा
चूडीचक्रम्	३	५	३	४	७	२	१	२	१			
सूर्यनक्षत्रात् फलम्.	सू अ.	मं अ.	शु शुभ	बु शु	रा. अशु	श अशु	बृ शु	चं शु	के अ.			

अथ खट्वाचक्रम्. पृ. ४१ श्लो. १३

सूर्यनक्षत्रात्	४	८	८	३	४
अंग	मस्तक	कोण	शाखा	मध्य	पादयोः
फल	शुभ	मृत्यु	शुभ	शुभ	हानि

नक्षत्रादि खट्वायाः

रो.उ.ह.पु. पुन.अनु. अश्विनी

शुभयोग. शुभवार.

अथ नवीनभोजनपात्रमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ४२ श्लो. १७

नक्षत्रादि	रो.	मृ.	ह.चि. स्वा.	रेव. अश्वि	श्र. ध. श.	पुष्य पुनर्व.	अनु. उत्त..३	बुधवार शुक्र	बृहस्पति अमृतयोग.
सूर्यनक्षत्रात्	२	२	२	२	२	२	२	२	११
फल	बंधन	सौख्य	हानि	लाभ	सौख्य	मृत्यु	पुत्र	आयु	शोक

अथ विद्यारंभचक्रम्. पृ. ४३ श्लो. ३२

नक्षत्राणि	ह.	चि.	स्वा.	मू.	पू.	रे.	अश्वि.	अनु.	मृ.	आ.	पु.	पु.	आश्ले.
	श्र.	ध.	श.	गुरुवार	शुक्रवार	आदित्य							

अथाश्वचक्रम्. पृ. ४९ श्लो. ४९

सूर्यभात्	५	१०	२	४	५	२
अंग	स्कंधे	पृष्ठे	पुच्छे	चतुष्पादे	उदरे	मुखे
फलं	लक्ष्मी	अर्थसिद्धि	स्त्रीनाश	रणभंग	वाजिनाश	अर्थलाभ

अथ विपणिवाणिज्यमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. ४७ श्लो. ६१.

नक्षत्राणि.	अनु.	उत्तरा.	पुष्य	रेवती	रोहिणी	मृग	हस्त	चित्रा.
०	अश्वि.	लग्ने चं.शु.	शुभवार	०	०	०	०	०

अथ हलप्रवाहमुहूर्त्तचक्रम् पृ. ४८ श्लो. ६७.

ग्राह्यन-क्षत्राणि	अनु. ज्ये.	मू. पू.षा.	म.पु. ह.पु.	स्वा. श्र.रो.	मृ.रे. उ.फा.	उषा.	उत्तरा भाद्र,	०
लग्न	२	३	६	१२	त्याज्य वार	शनि	मंगल	०
त्याज्य तिथि	६	४	९	१४	१२	२	३०	१५
०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्यभाद्धलचक्रम् पृ.४८श्लो.६९

नक्षत्र	३	३	३	५
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि
नक्षत्र	३	५	३	२
फल	हानि	वृद्धि	हानि	वृद्धि

सूर्यभाद्धोमयपिंडच.पृ.४८श्लो.७१.

नक्षत्र	६	६	४	८	४
फल	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.

सूर्यभाद्धोमयपिंडसंचयचक्रंद्वितीयप्रकारेण.

नक्षत्र	६	२	४	४	४	४	४
फल.	रस पाक	शव दाह	सर्प भय	सुहृद् संगम	रोग	भय	सुख

अथ सूर्यभाद्धोमे खेटाहुतिफलचक्रम्. पृ. ९० श्लो. ८१.

नक्षत्राणि	सू. ३	बु. ३	शु. ३	श. ३	चं. ३	मं. ३	गु. ३	रा. ३	के. ३
फल	अ.	शु.	शु.	अ.	शु.	अ.	शु.	अ.	अ.

अथ रोगोत्पत्तौनक्षत्रवशात्पीडादिनसंख्याचक्रम्. पृ. ९२ श्लो.९३.

नक्षत्र.	अश्विनी	कृत्तिका	मूल	रो.	उ.भा.	पुनर्वसु	पुष्य	उत्त. फा.	मघा	शत.	भरणी	चित्रा
पीडादिनसंख्या	९	९	९	७	७	७	७	७	२०	११	११	११
नक्षत्र.	श्रव.	धनि.	विशाखा	हस्त	मृग.	उ.षा.	रे.	अनु.	पूर्वा ३	ऽश्लेषा	ज्येष्ठा आर्द्रा	स्वा.
पीडादिनसंख्या	११	१५	१५	१५	३०	३०	कृच्छ्रं	कृच्छ्र	मृत्यु	मृत्यु	मृत्यु	मृत्यु

अथ ग्रामवासचक्रम्.पृ.९३श्लो.१०८.

ग्रामनक्षत्रात्	७ मस्तके	७ पृष्ठे	७ हृदि	७ पादे
फल	धनीमान्य	हीननिर्धन	सुखसंपत्ति	पर्यटन

अथ सेवाचक्रम्. पृ.९४श्लो.११०

स्वामिभात्	७ मस्तक	७ पृष्ठ	७ कुक्षि	७ पाद
फल	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ

इति नानामुहूर्त्तप्रकरणविषयाणां चक्राणि.

अथ मूलनक्षत्रजननेपादफलम् पृ. ९७ श्लो. १४.

पाद	१	२	३	४
फल	तात मरण	जननी नाश	धन नाश	शुभ

ज्येष्ठायाश्चरणफलम् पृ. ९७ श्लो. १९.

पाद	१	२	३	४
फल	ज्येष्ठ भ्रातर	कनिष्ठ नाश	जननी	आत्मा नं.

आश्लेषायाश्चरणफलम् पृ. ९७ श्लो.१६.

पाद	१	२	३	४
फल	राज्य प्राप्ति	धन नाश	जननी नाश	पितृ नाश

अथाश्विनीमघामूलरेवतीज्येष्ठाश्लेषाणां चरणफलम् पृ. ९७ श्लो. १७

नक्षत्र.	अश्विनी	मघा	मूल	रेवती	ज्येष्ठा	आश्लेषा
चरण	पूर्वार्द्ध	पू.	पू.	पू.	पू.	पू.
फल	जननीनाश	जननीनाश	जननीनाश	जननीनाश	जननीनाश	जननीनाश

अथसूतिकास्नानमु.चक्रं पृ.९८श्लो.२३.

	हस्त	मृग	अनु	रो.
ग्राह्यनक्षत्रादि	रे. अश्वि.	उत्तरा ३	स्वाती	०
वाराः	गुरु	आदित्य	मगल	०
त्याज्यनक्षत्रादि	आर्द्रा	पुन. पुष्य	श्र.वि. भर.	मू. चि. छ. म.
वर्ज्य तिथयः	४ ९ १४	बुध	शनि चंद्र	६ १२ ८

अथनामकर्ममुहूर्तचक्रम् पृ.९८श्लो.२८.

नक्षत्र.	पुनर्वसु	पुष्य	ह.	चि.	स्वा.	अनु.	ज्येष्ठा
	मृग	मूल	उत्त. फा.	उत्त. षा.	उत्त. भा.	धनिष्ठा	०
वाराः	बुध	चंद्र	सू.	गु.	लग्न	२ ५.	८ ११
वर्ज्यतिथ्यादि.	१४	४	८	९	६	१२	१५
आवश्यके वर्ज्यतिथीनां घट्यः	५	८	१४	२४	९	१०	०

अथजलपूजामु.च.पृ.९८श्लो२३

नक्षत्राणि	पुन. अनु.	पुष्य श्रव.	ह.	मृ.	मू.
वाराः	गुरु	बुध	सोम		

अथनिष्क्रमणमु०च०पृ.९९श्लो. ३९.

नक्षत्र	अनु.	पुष्य	पुन वेधु	रेव.	हस्त	ज्येष्ठा	मृग	श्रेष्ठ तारा
वाराः	गुरौबुधे	शुक्रे	लग्न	६	११	७	५	०

अथान्नप्राशनमु०च०पृ.६०श्लो. ३६.

वर्ज्यनक्षत्राणि	पूर्वा ३	आर्द्रा	शतभिषा	भरणी	आश्लेषा	मंगलवार	शनिवार
वर्ज्यतिथि	१२।७		४।९।१४		१५।३०		१।६।११
प्राह्यलग्नानि	१२		२		६		३

कर्णवेधमु०च०पृ.६०श्लो.३९

नक्षत्र	रे. अश्वि. श्र.ध.	पुष्य चि.	पुन. मृ.	अनु. ह.
शुभ तिथि	१ २	३ ५	७ १०	११ १३
वार.	भौम	गुरु	बुध	शुक्र

अथचौलचूडाकर्ममु०च०पृ. ६० श्लो. ४२.

नक्षत्राणि	पुन.	पुष्य	ज्ये	मृ	श्र	ध	ह	चि	स्वा.	रे
लग्न	२	६	९	११	१०	३	वार	सोम	गुरु	भृगु बुध
वर्ज्यतिथ्यादि	४	९	१४	६	१५	३०	१	जन्म मास	जन्म नक्ष.	मातृ गर्भ

अक्षरारंभमु०च०पृ.६१श्लो.४६

नक्षत्राणि	ह.	चि	स्वा	श्र	ध	पू.	पू.	पू
	अश्विन	मृग	आर्द्रा	पुन	पुष्य	आश्ले	मूल	रेवती
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	१२ ९	०	०

अथयज्ञोपवीतधारणमुहूर्तचक्रम्. पृ. ६१ श्लो. ४९.

सर्वेषांग्राह्यनक्षत्र.	ह	चि	स्वा	श्र	ध	श	रो	मृग	उत्तरा ३	अनु.	रेव	अश्वि	पुन.पु.
वर्ज्यनक्षत्राणि.	कृ.	भ	मू	ज्ये	आर्द्रा	विशा.	पू.	पू.	पू.	ऽश्ले.	०	०	०
ऋग्वेदिनां नक्षत्रा.	पू.	पू.	पू.	ऽश्ले.	श्र.	मू	०	०	०	०	०	०	०
यजुषांप्राह्याणि.	रे.	अनु	ह	पुन.	पुष्य	मृग	चि.	रे.	रो	उ.	उ.	उ.	०
सामगानां	श्र.	आ.	ह	ध.	पुष्य	उ.	उ.	उ.	अश्वि.	०	०	०	०
अथर्वणाम्.	पुन	ध.	अनु.	ह	मृ	रे.	सर्वेषां वाराः	गुरु	शुक्र	बुध	शशी	आदि.	०
तिथयः	२	३	५	१३	१०	७	११	६	१२	लग्न २।९	५ ६	३	०
वर्ज्यतिथ्यादिगलग्रहाश्च.	४	७	८	९	१३	१४	३०	१	कृष्णपक्षः	रात्रिः	प्रदोषः	अपराह्णः	अनध्याय

अथवधूवरयोर्मेलनार्थवर्णादिज्ञानचक्रम्. पृ. ६८ श्लो. ९७

राशि	वर्ण.	वश्य.	स्वामि
मेष	क्षत्रिय	चतुष्पद	मंगल
वृष.	वैश्य	चतुष्पद	शुक्र
मिथुन	शूद्र	मानव	बुध
कर्क	विप्र	जलचर	चंद्र
सिंह	क्षत्रिय	वनचर	सूर्य
कन्या	वैश्य	मानव	बुध
तुला	शूद्र	मानव	शुक्र
वृश्चिक	विप्र	कीट	मंगल
धन	क्षत्रिय	मानव	गुरु
मकर	वैश्य	जलचर	शनि
कुंभ	शूद्र	मानव	शनि
मीन	विप्र	जलचर	गुरु

अथयोन्यादिज्ञानच० पृ. ६९ श्लो. १०७

नाडी	गण.	वैरयो०	योनि	नक्षत्र
आद्य	देव	महिष	अश्व	अश्वि.
मध्य	मनुष्य	सिंह	गज	भ
अंत्य	राक्षस	वानर	मेष	कृ
अंत्य	मनुष्य	नकुल	सर्प	रो
मध्य	देव	नकुल	सर्प	मृ
आद्य	मनुष्य	मृग	श्वान	आ
आद्य	देव	मूषक	मार्जार	पु
मध्य	देव	वानर	मेष	पु
अंत्य	राक्षस	मूषक	मार्जार	आ
अंत्य	राक्षस	मार्जार	मूषक	म
मध्य	मनुष्य	मार्जार	मूषक	पू
आद्य	मनुष्य	व्याघ्र	गौ	उ
आद्य	देव	अश्व	महिषी	ह
मध्य	राक्षस	गौ	व्याघ्र	चि
अंत्य	देव	अश्व	महिष	स्वा
अंत्य	राक्षस	गौ	व्याघ्र	वि
मध्य	देव	श्वान	मृग	अ
आद्य	राक्षस	श्वान	मृग	ज्ये
आद्य	राक्षस	मृग	श्वान	मू
मध्य	मनुष्य	मेष	वानर	पू
अंत्य	मनुष्य	व्याघ्र	गौ	उ
अंत्य	मनुष्य	सर्प	नकुल	अ
अंत्य	देव	मेष	वानर	श्र
मध्य	राक्षस	महिष	अश्व	ध
आद्य	राक्षस	गज	सिंह	श
आद्य	मनुष्य	गज	सिंह	पू
मध्य	मनुष्य	व्याघ्र	गौ	उ
अंत्य	देव	सिंह	गज	रे

अथग्रहाणांमैत्रीचक्रम्. पृ. ७० श्लो. ११४.

ग्रहाः	मित्राणि.	सम	शत्रवः
सूर्य	चं.मं.गु.	बु.	श.शु.
चंद्र	सू.बु.	मं.गु.शु.श.	०
मंगल	गु.चं.सू.	शु.श.	बु.
बुध	सू.शु.	मं.गु.श.	चं.
बृहस्प.	सू.मं.चं.	श.	शु.बु.
शुक्र	बु.श.	मं.गु.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	गु.	सू.चं.मं.

अथवर्णमेलनेगुणज्ञानच० पृ. ६८ श्लो. ९८.

वर्ण		वरस्य वर्णम्.			
		ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
कन्याया वर्णः	ब्राह्मण.	१	०	०	०
	क्षत्रिय.	१	१	०	०
	वैश्य.	१	१	१	०
	शूद्र.	१	१	१	१

अथवश्यगुणाः पृ. ६९ श्लो. १०४.

वश्य.	चतु.	मानव	जलचर	वनचर	कीटक
चतुष्पद	२	॥	१	०	२
मानव	॥	२	०	०	०
जलचर	१	०	२	२	२
वनचर	०	०	२	२	०
कीटक	१	०	१	०	२

अथताराग्रुणज्ञानचक्रम्. पृ.६९ श्लो. १०६.

तारा.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	फल
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	अशुभ
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	अशुभ
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥	अशुभ
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३	शुभ
फल	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शभ	शुभ	.०

अथयोनिग्रुणचक्रम् पृ. ७० श्लो. ११२.

योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मा.	मूषक	गौ	महि.	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	२	३	२	२	२	१	०	१	३	३	२	१
गज	२	४	३	३	२	२	२	२	३	१	२	३	२	०
मेष	२	३	४	२	१	२	१	३	३	१	२	०	३	१
सर्प	३	३	२	४	२	१	१	१	१	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	१	२	४	२	१	२	२	१	०	२	१	१
मार्जार	२	२	२	२	२	४	०	२	२	१	३	३	२	२
मूषक	२	२	१	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	१	२	३	२	२	२	२	४	३	०	३	२	२	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	१	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	२	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	३	३	०	२	२	३	२	२	२	१	२	४	३	२
नकुल	२	३	३	०	१	२	१	२	२	२	२	३	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	१	१	१	३	२	२	२	२	४

अथग्रहमैत्रीग्रुणचक्रम्. पृ. ७१ श्लो. ११७.

ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
सू.	५	५	५	३	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	३	१	॥	५	॥	५	४
गु.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

अथगणगुणचक्रम्. पृ. ७१ श्लो. १२३

	वरस्यगणाः			
वधूगणाः	गण	देव	मनुष्य	राक्षस
	देव	६	६	१
	मनुष्य	६	६	०
	राक्षस	१	०	६

अथनाडीगुणचक्रम्.पृ.७२श्लो. १२९

	आद्य	मध्य	अंत्य
आद्य	०	८	८
मध्य	८	०	८
अंत्य	८	८	०

अथराशिकूटगुणचक्रम्. पृ. ७२ श्लो. १२७.

	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मक.	कुंभ	मीन
मेष	७	०	७	७	०	०	७	७	०	७	७	०
वृष.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथु.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तूल	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चि.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धन	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुंभ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

अथवर्गचक्रम्. पृ. ७३ श्लो. १३७.

वर्णनामानि.	गरुड	विलाव	सिंह	श्वान	सर्प	मूषा	मृग	हरिण
वर्णाःस्वरा हसाश्च	अ १४	क ५	च ५	ट ५	त ५	प ५	य ४	श ४
वैर	सर्प	मूषा	मृग	हरिण	गरुड	विलाव	सिंह	श्वान

अथयुंजीनक्षत्रप्रीतिगुणचक्रम्. पृ. ७४ श्लो. १४२.

पूर्वभाग नक्षत्राणि	रे.		अ.		भ.		कृ.		रो.		मृ.	
मध्य भाग न.	आ.	पु.	पु.	ऽश्ले.	म.	पू.	उ.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.
पर भाग न.	ज्ये.	मू.	पू.	उ.	अ.	श्र.	ध.	श.	पू.	उ.		

अथजन्मराशिनामराशिविचारचक्रम्. पृ. ७९ श्लो. १९०.

जन्मराशेः सकाशात्	विवाह आदि संस्कार.			सर्व मांगल्य कर्म.				यात्रा.			ग्रहगोचर फल.		
नामराशितः	देश वासे	ग्राम वासे	गृह वासे	युद्ध	सेवा	व्यव हार	काकि णी	वर्ग शुद्धि	दान	द्यूत	ज्वर	मंत्रे	पुनर्भू विव हे

इति संस्कारप्रकरणस्थविषयाणांचक्राणि.

अथविवाहेरविगुरुचंद्रशुद्धिचक्रम्. पृ. ७८ श्लो. १२.

रवि	शुभस्थान	३	६	१०	११	पूज्य स्थान	१	२	५	७	९	अशुभ ४|८|१२
गुरु	२	५	७	९	११	०	१	३	६	१०	०	४|८|१२
चंद्र	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	+	०	४|८|१२

अथयामार्द्धवारवेलाचक्रम्. पृ ८४ श्लो. ६५

वार	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
प्रहर	४	७	२	५	८	३	६

कुलिकयोगचक्रम्.पृ. ८५ श्लो.

वार	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
तिथि	७	६	५	४	३	२	१

अथसंक्रांतिवशाद्दग्धास्तिथयः पृ. ८६ श्लो. ७३.

संक्रांति राशयः	मे.	वृ.	मि.	क.	सिंह	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
तिथि	६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	२

अथलत्तादोषचक्रम्. पृ. ८७ श्लो. ८९.

ग्रहाः	सू.	मं	बृ.	श.	दक्षिणक्रमेण.	बु.	रा.	शु.	चं.	वामक्रमेण
नक्षत्र.	१२	३	६	८		७	९	५	२२	
फल.	धनना.	मृत्यु	बंधुना.	कुलक्ष.		त्रास	नाश	दुःख	त्रास	

पातनक्षत्राणि	मघा १	आश्लेषा २	चित्रा ३	अनुराधा ४	रेवती ५	श्रवण ६

अथयुतिदोषचक्रम्. पृ. ८८ श्लो. ९३.

ग्रहाः चंद्रयुताः	सू चं	म चं	बु चं	बृ चं	शु चं	श चं
फल.	दारिद्र	मृत्यु	प्रजानाश	दौर्भाग्य	सापत्न	प्रव्रज्या

अथवेधनक्षत्रज्ञानचक्रम्. पृ. ८९ श्लो. ९७

नक्षत्र.	अश्वि.	भरणी	अभिजित्	कृ.	मृ.	आ.	पुन.	पुष्य	ऽश्ले	मघा	उ.फा.	ह.	स्वा.	चि.
नक्षत्र.	पू. फा	अनु.	रो.	वि.	उ. षा.	पू. षा.	मू.	ज्ये.	ध.	श्र.	रे.	उ. भा.	श.	पू. भा.

ग्रहाः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
फलं	वैधव्य	दुःख	कुलनाश	वंध्या	भिक्षुकी	अपुत्रा	दुःख	परपुरुषरता	स्वेच्छानुचारिणी

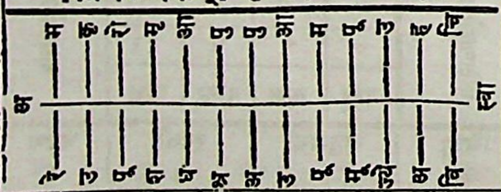
अथबाणदोषज्ञानचक्रम्. पृ. ९० श्लो. १०७.

बाणनामानि	रोग	अग्नि	नृप	चोर	मृत्यु
योजनांकाः	१५	१२	१०	८	४
गतांशाः	८।१७।२६	२।११।२०।२९	४।१३।२२	६।१५।२४	१।१०।१९।२८
सशल्यतावारैः	सूर्ये उपनयने	भौमे गृहाच्छादने	सोमे नृपसेवायां	गुरौ यात्रायां	शनौ विवाहे
परिहारः कालभेदेन	रात्रौ	दिवा	दिवा	रात्रौ	संध्ययोः

अथैकार्गलदोषज्ञानचक्रम्. पृ.९१ श्लो. १११.

नक्षत्राणि	अश्विनी	स्वा	विशाखा	भर.	कृत्ति	अनु.	रोहि.	ज्ये.	मूल	मृग	आर्द्रा	पू. षा.	पुनर्वसु	उ. षा.
योगाः	विष्कंभ	प्रीति	सोभाग्य	आयुष्मा.	शोभन	अति गंड	सुकर्मा	धृति	गंड	शूल	वृद्धि	ध्रुव	व्याघा.	हर्षण
नक्षत्राणि	पुष्य	अभिजित	अश्लेषा	श्रव.	मघा	धनि.	पू.फा.	शत.	उ.फा.	पू भा.	हस्त	उ. भा.	चित्रा	
योगाः	वज्र	सिद्धि	व्यती.	वरि.	परिघ	शिव	सिद्धि	साध्य	शुभ	शुक्र	ब्रह्म	ऐंद्र	वैधृति	

एकार्गलचक्रम्. पृ.९१ श्लोक ११८.



अथोपग्रहदोषचक्रम् पृ.९२श्लो. १२१

सूर्यभात्	८	५	१८	१४
नक्षत्राणि	२२	१९	२३	२४

अथरेखाविश्वाप्रदग्रहाणांचक्रम् पृ. ९६ श्लो. १५१									भंगप्रदग्रहचक्रम्. पृ.९७श्लो.१५८					ग्रहाणां विश्वा:
सू	११	३	८						१	७				३॥
चं	११	२	३						१	६	८	७	१२	५
मं	११	६	३						१	८	७	१०		१॥
बु	११	९	६	२	३	४	५	१०	८	७				२
बृ	११	९	६	२	३	४	५	१०	८	७				३
शु	११	२	३	४	५	९	१०	१	८	६	७	३		२
श	११	३	८						७	१२	१			१॥
रा	११	१०	८	६	५	३	९	१२	१	७	४			१॥

अथविवाहलग्नाद्द्वादशभावस्थितग्रहफलचक्रम्.

भावाः	संख्या	ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.	के.
तनु	१	०	विधवा.	आयुना	विधवा	पतिव्रता	पतिव्रता	पतिव्रता	दरिद्रा	पुत्रनाश	
धन	२	०	दरिद्र	बहुपुत्र	दरिद्रा	सौभाग्य	सौभाग्य	सौभाग्य	दुःख	दरिद्रदुःख	
सहज	३	०	पुत्र	धन	धनाढ्य	पुत्रधन	पुत्र	पुत्र	लक्ष्मी	लक्ष्मीवान्	
सुहृत्	४	०	दरिद्र	दौर्भाग्य	अल्पसं.	सौख्य	सौख्य	सौख्य	दुग्धाल्प	पुत्रनाश	
सुत	५	०	पुत्रनाश	कन्या	पुत्रनाश	संतति	संतति	संतति	रोगी	मृत्युकारक	
रिपु	६	०	धन	विधवा	धन	कलह	धन	वेश्या	धन	धनवान्	
जाया	७	०	रोगी	प्रवास	विधवा	क्षय	भय	मृत्यु	मरण	वित्तनाश	
मृत्यु	८	०	विधवा	मृत्यु	धन	जन वि.	वियोग	मरण	पुत्र	मरणांतवियोग	
धर्म	९	०	धर्म	पुत्र	धर्म	भोग	धर्म	धर्म	वंध्या	वंध्यायोग	
कर्म	१०	०	पाप	दरिद्रा	मृत्यु	धनवती	धन	धन	पाप	वैधव्ययोग	
आय	११	०	पुत्र	लक्ष्मी	पुत्र	सुखी	आयु	पुत्र	धन	सौभाग्य	
व्यय	१२	०	व्यय	दिनांधा	वंध्या	सुपुत्र	सुशीला	पतिव्रता	व्यय	जारिणीयोग	

तैलाऽभ्यंगे वारचक्रम् पृ. १०२श्लो. १९३विवाहांगकार्येनक्षत्रादि पृ. १०१श्लो. ९०१

वारा:	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
फल	ताप	शोभा	मृति	यश	हानि	दुःख	मुख
परिहार	पुष्प	०	मृत्तिका	०	दूर्वा	गोमय	०

त्याज्य नक्षत्राणि	वि. भ. चि.	ज्येष्ठा अश्वि शत.	आर्द्रा पुन	पुष्य ऽश्लेषा
त्याज्य दिन	३	६	९	अशुभ चंद्रमा
स्तंभनिवेशन संक्रांति	ईशान ५।६।७	आग्नि २।३।४	निर्ऋ. १२।१।११	वायु ८।९।१०

वधूप्रवेशमु.च.पृ. १०३श्लो. १९९प्रथमाब्देवध्वानिवासमासावि.च.पृ. १०३श्लो. १०२

नक्षत्राणि	श्र.ध. मू.अनु. रो.मृ	ह. चि. स्वा.म. पुष्य	उ.फा. उ.षा. उ.भा.	रेवती अश्वि.
वारा:	सोम	शुक्र	गुरु	शनि

मासा:	ज्येष्ठ	आषाढ	पौष	चैत्र	अधिक मास
फलं	पत्युर्ज्येष्ठनाश	श्वश्रू नाश	श्वशुर नाश	स्वपितृ नाश	पति नाश

अथद्विरागमनमुहूर्त्तचक्रम्. पृ. १०३श्लो. १२४ अथत्रिरागमनमु.च.पृ. १०९श्लो. २१६

ग्राह्यनक्षत्राणि	अश्विनी मृग रेवती	रो.पुष्य उत्तरा ३ श्र. ध.	श. ह. चि. स्वा.	पुन. मू. अनु.
वारा:	सू.	चं.	बु. गु.	शु.
मासा:	माघ	फल्गुन	वैशाख	शुक्लपक्ष
तिथ.	१।२	३।५	७।८।१५	१०।११ १३
लग्नं	६	१२	७	३।२

नक्षत्राणि.	हस्त रेवती	मृग अश्विनी	अनुरा. श्रवण.
०	स्वाती	मघा	राहुशुद्धि.

प्रतिशुक्रदोषप.च.पृ. १०४श्लो. २१३

एक ग्रामे	नगरे	दुर्भिक्षे	राज्यनाशे
विवाहे	तीर्थयात्रा.	रेवतीअश्वि	भरणी कृ.१च.

इति विवाहप्रकरणस्थविषयाणां चक्राणि.

अथयात्रामासतिथिवारनक्षत्रादिकोष्ठकम्. पृ. १०५ श्लो. १

सूर्यसंक्रां.	१	२	३	४	६	७	८	१०	११शुभ
तिथय:	२	३	५	७	१०	११	१३	१५	शुभ
वारा: फलं	सू. क्लेश	चं. प्रिय	मं. तस्कराग्निभय	बु. अर्थ	बृ. क्षेमसुख	शु. लाभ	श. वंधनहानी	०	०
ग्राह्यनक्ष.	ध.	श्र.	ह.	अनु.	रे.	अश्वि	मृ.	पुन.	पुष्य.
मध्यमन.	मू.	पू.फा.	पू.षा.	पू.भा.	ज्ये.	रो.	शत.	उत्तरात्रितय.	
वर्ज्यन.	चि.	स्वा.	वि.	म.	ऽश्ले.	कृ.	आर्द्रा	भर.	जन्मन
वर्ज्यनक्षत्रघटिका:	१४	१४	१४	११	१४	२१	१४	७	६०

अथयोगिनीचक्रम्. पृ. १०९ श्लो. २६. **दिक्शूलचक्रम्.** पृ. १०७ श्लो. १२. **कालचक्रम्.** पृ. १०८ श्लो. २०.

ईशान ८।३०	पूर्व १।९	अग्नि ३।११	ईशान्यां बु.	पू. श.चं.ज्ये.	अग्नि चं.गु.	ई.	पू. शनि	अ. शुक्र
उत्तर २।१०	०	दक्षिण ५।१३	उत्तर बु. म. उ. फा.	०	दक्षिण गु.पू.भा.	उ. सूर्य	०	द. गु.
वाय. ७।१५	पश्चिम ६।१४	निर्ऋति ४।१२	वायव्य मं.	पश्चिम सू.शु.रोहिणी	नैर्ऋ. सू.शु.	वा. चंद्र	प. मंगल	नै. बुध

पृष्ठे इष्टसिद्धि.	वामे सुख	दक्षिणे धनहा.	संमुखे मृत्यु	पृष्ठे इ.सि.	वामे श्रीप्रा.	दक्षिणे कार्यनाश	संमुखे मृत्यु	वामे इ.सि.	पृष्ठे का.सि.	दक्षिणे धनना.	संमुखे मृत्यु

वाराः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
शूलपरिहारः	घृतप्राशन	पयदान	गुडदान	तिलदान	दधिभक्षण	यवभक्षण	माषदान

सम्मुखचंद्रविचारचक्रम्. पृ. ११०श्लो. ३३ **अथदिगीशाः** पृ. ११२ श्लो. ४६.

पूर्व मे.सिं.ध. १ ५ ९	दक्षिण २।६।१०	पश्चिम ३।७।११	उत्तर ४।८।१२	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.
सम्मुखे अर्थप्राप्ति	दक्षिणे सुख	वामे धननाश	पृष्ठे प्राणनाश	पूर्वस्य	वायु	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	निर्ऋति

अथयात्रायांलग्नविचारचक्रम्. पृ. ११३श्लो. ४९. **समयबलयात्रा.** पृ. ११३श्लो. ५४

लग्नानि.	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुल	वृश्चिक	धन	मकर	कुंभ	मीन	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
फल	विलंब	सिद्धि	धन सुख	सिद्धि	सिद्धि	धन सुख	विलंब	मृत्यु	विलंब	मृत्यु	मृत्यु	धन सुख	मध्ये ह्णे	अपराह्णे	अर्द्धरात्री	पूर्वाह्णे

अथयात्रायांलग्नशुद्धिचक्रम्. पृ. ११६ श्लो. ७३.

शुभफलदाः	ग्रहाः	सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	लग्नेश.
भाव	स्थान	३।१०।११।६	२।३।४।५।७।९।१०।११	३।१०।११।६	१।४।७।१०।५।९	१।४।७।१०।५।९	१।४।१०।५।९	३।६।११	१।२।३।४।५।९।१०।११

अथहोराज्ञानचक्रम्. पृ. ११७ श्लो. ७७.

वाराः	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
होरा	शु. २॥ घ.	श. २॥	सू. २॥	चं. २॥	मं. २॥	बु. २॥	बृ. २॥
होरा	बु. २॥ घ.	बृ. २॥	शु. २॥	श. २॥	सू. २॥	चं. २॥	मं. २॥
होरा	चं. २॥ घ.	मं. २॥	बु. २॥	बृ. २॥	शु. २॥	श. २॥	सू. २॥
होरा	श. २॥ घ.	सू. २॥	चं. २॥	मं. २॥	बु. २॥	बृ. २॥	शु. २॥
होरा	बृ. २॥ घ.	शु. २॥	श. २॥	सू. २॥	चं. २॥	मं. २॥	बु. २॥
होरा	मं. २॥ घ.	बु. २॥	बृ. २॥	शु. २॥	श. २॥	सू. २॥	चं. २॥
होरा	सू. २॥ घ.	चं २॥	मं. २॥	बु. २॥	बृ. २॥	शु. २॥	श. २॥
कार्याणि.	राजसेवा	सर्वकार्य	युद्ध	विया	विवाह	यात्रा	द्रव्यसंग्रह

अथाकालवृष्टिमासज्ञानचक्रम्. पृ. ११७ श्लो. ८१

मासाः	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	आश्विन	कार्तिक	मार्ग	पौष	माघ	फाल्गुन
त्याज्य दिना.	अकाल वृष्टि घटी २	सुकाल ०	सुकाल ०	सुकाल ०	सुकाल ०	सुकाल ०	सुकाल ०	अकाल ३	अकाल ३	अकाल ३	अकाल २	अकाल १

यात्रायाःप्राक्त्याज्यकर्म. पृ. ११९ श्लो. ९०.

क्रोध	क्षौर	स्त्रीसंग	श्रम
मांसभक्षण	गुडभक्षण	द्यूत	अश्रुपात
दुग्धपान	आसव	क्षार	तैलाभ्यंग
भय	कृष्णवस्त्र	वमन कटु	तैलभक्षण
त्याज्यदिनसंख्या.	क्षीर ३	क्षौर ५	स्त्रीसंग ७

अथ स्वरकृत्यज्ञानचक्रम्. पृ. १२० श्लो. ९९

चंद्रस्वर	वामस्वर	गृहग्रामप्रवेशः, विवाहः, यात्रा, वस्त्रालंकारधारणं,संधिः
सूर्यस्वर	दक्षिणस्वर	युद्धं, व्यवहारं, भोजनं, मैथुनं, विग्रहः, द्यूतं, स्नानम्

अथ प्रस्थानद्रव्यदेशदिङ्नियमस्थित्यादिकोष्ठम्. पृ. १२१ श्लो. १००.

ब्राह्मण	यज्ञोपवीत	स्वर्ण	छत्र	ध्वजा	माला	०	०	०	०
क्षत्रिय	शस्त्र	धान्य	खड्ग	धनु	०	०	०	०	०
वैश्य	मधु	वस्त्र	तुरग	०	०	०	०	०	०
प्रस्थानदेशः	ग्राम समीप	नदी	विप्रगृह	देवगृह	उद्यान	वापी तडाग	गृहांतरे	सीमांतरे	नगराद्बहिः
प्रस्थानस्थिति-दिन	पूर्वे दि. ७	दक्षिणे दि. ५	पश्चिमे दि. ३	उत्तरे दि. २	०	०	०	०	०

छिक्काशब्दस्यफलज्ञानच. पृ. १२६ श्लो. १४२.

दिशा	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
फल	अशुभ	अरिष्ट	भिष्टान्न प्राप्ति	कलह
दिशा	ईशान	अग्नि	नैर्ऋति	वायव्य
फल	शुभ	शोक	शुभ	धन लाभ
ऊर्ध्व शुभः	मध्ये भय	आत्म छिक्का यां भयं	०	०

अथ यात्रानिवृत्तौ प्रवेशमु. च. पृ. १२७ श्लो. १४८

ग्राह्य नक्षत्राणि	चि.	उ. ३	अनु.	रो.	रे.	मृ.			
वाराः	गुरु	शुक्र	बुध	सोम	शनि				
त्याज्यनक्षत्राणि	पूर्वा ३	कृ.	भ.	मू.	म.	ज्ये.	आर्द्रा	ऽश्ले	वि.
फलच	स्वनाशः	गृहदाहः	स्वनाशः	पुत्रना.	स्वनाशः	पुत्रनाश	पुत्रनाशः	पुत्रना.	स्त्रीनाशः
ग्राह्यलग्ना.	२	३	५	६	८	९	११	१२	०
त्याज्य तिथयः	४	९	१४	३०	सूर्यवार	मंगलवार.			

इतियात्राप्रकरणस्थविषयाणां चक्राणि.

अथ गृहारंभे वृषवास्तुचक्रम्. पृ. १३० श्लो. २२.

सूर्यभात् नक्षत्राणि.	३	४	४	३	४	४	३	३
अङ्गानि.	मस्तक	अग्रपाद	पश्चिमपादं	पृष्ठ	दक्षिण कुक्षि	वामकुक्षि	पुच्छ	मुख
फलम्.	आग्निदाह	उद्वास	स्थैर्य	धनागम	लाभ	दरिद्रता	स्वामि नाश	पीडा
अथखनने भूशयनविचारयंत्रम्	सूर्यनक्षत्रात्	५	७	९	१२	१९	२६	एषुनक्षत्रेषु भूशयनम्
सक्रांति गतांशाः	५।७	११।९	१५।२०	२२	२३।२८	एतेषुसंक्रांतिगतांशेषुचभूशयनम्.		

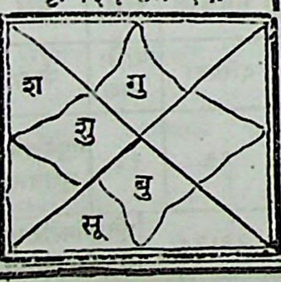
अथगृहारंभमासतिथिनक्षत्रवारादियंत्रम्. पृ. १२८ श्लो. २.

मासाः	चैत्र १२सं.	वैशाख	ज्येष्ठ ३संक्रां.	आषाढ	श्रावण	भाद्रप. ६ सं.	आश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन
मासफलम्.	व्याधि	धनरत्न	मृत्यु	भृत्य रत्न	मित्र लाभ	हानि	युद्ध	धन धान्य	धन वृद्धि	चौर भय	अग्नि भय	लक्ष्मी वृद्धि
ग्राह्यात यय:	२	३	५	६	७	१०	११	१२	१३	१५	शुक्लपक्ष	शुभ दिन
निषिद्ध तिथ्यादि	१	४	८	९	३०	१४	आदित्यवार भौमवा	वज्र. व्याघान	शूल. व्यतीपात	गंड.विष्कंभ.अतिगंड	परिघमासदग्धतिथिद.	वैधृति कृष्णपक्ष.
फल	दारिद्रत्व	धननाश.दरिद्रत्व	उच्चाटन.	शत्रुवृद्धि.दरिद्रत्व	राजभयगर्भनास्र.	चौरभय.दरिद्र.	शिशु मरण	धनधान्यादिनाश.	धननाश.मृत्यु	धनधान्यनाश.	धनधान्यनाश.	सर्वनाश चौरभय.
ग्राह्यनक्षत्राणि	उ.फा.	उ. षा.	उ. भा.	रोहिणी	पुष्य.पुनर्वसु.	अनुराधा	हस्त	चित्रा	धनिष्ठा	शतभिषा	रेवती मूल	मृ.स्वा. अश्वि.
ग्राह्यवारादिकाः	बृहस्पति.	शुक्र	बुध	सोम स्थिरल.	शनि चौरभ.	श्वेत मुहूर्त	मैत्र मुहूर्त	माहेंद्र मु.	गांधर्व मु.	अभिजिन्मुहूर्त	रोहिण मुहूर्त	वैराज. सा.मु.
लग्नानि	मे. १	वृ. २	मि. ३	क. ४	सिं.५	क. ६	तु. ७	वृ. ८	ध. ९	म. १०	कुं. ११	मी.१२
लग्नफलम्.	दीर्घ सूत्री	सिद्धि	धन लाभ	नाश	सिाद्ध	धन लाभ	दीर्घ सूत्र	नाश	दीर्घ सूत्र	नाश	सिद्धि	धन लाभ

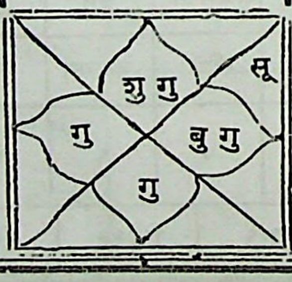
अथगृहारंभदेवालयतडागारंभे खनने शेषचक्रम्. पृ. १३१ श्लो. ३१.

कोण.	ऐशान्यांराहुः अग्नौखातः	वायोराहुः ऐशान्यांखातः	नैर्ऋत्यांराहुः वायौखातः	अग्नौराहुः नैर्ऋत्यांखातः
गृहारंभ	सिं. क. तु. सूर्य ५ ६ ७	वृ. ध. म. सूर्य ८ ९ १०	कुं.. मी. मे. सूर्य १० १२ १	वृ. मि. क. सूर्य २ ३ ४
देवालये.	मा. मे. वृ. सूर्य १२ १ २	मि. क. सिं. सूर्य ३ ४ ५	क. तु. वृ. सूर्य ६ ७ ८	ध. म. कुं. सूर्य ९ १० ११
जलाशये.	म. कु. मो.सूर्य. १० ११ १२	मे. वृ. मि. सूर्य १ २ ३	क. सिं. क. सूर्य ४ ५ ६	तु. वृ. ध. सूर्य ७ ८ ९

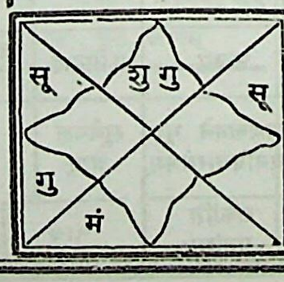
गृहायुयोग : १०० वर्ष.
पृ. १३५ श्लो. ५९.



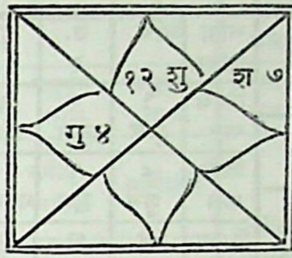
वर्ष. १००



वर्ष. २००



वर्ष. १०००



अथ गृहारंभलग्नाद्द्वादशभावफलयंत्रम्.

स्थान.	नाम.	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	ग्रहा:
१	तनु.	वज्रपात	काश हानि	मृत्यु	कुशलता	धर्मार्थ काम	पुत्रो त्पत्ति.	दरिद्र	हानि	हानि	०
२	धन.	हानि	शत्रु नाश	बंधन	धनसंपत्ति	धर्म वृद्धि	आनंद	नानाविघ्न	हानि	हानि	०
३	सहज.	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि	०
४	सुहृत्.	सुहृद् वियोग	बुद्धि नाश	मंत्र भेद	धनलाभ	नृपा लाभ:	भूमि लाभ	सर्वनाश	हा.	हा.	०
५	पुत्र.	पुत्रदुःख	कलह	कार्य विरोध	रत्नलाभ	धना गम	पुत्र सुख	बंधुवि मदन	हा.	हा.	०
६	रिपु.	रोगनाश	पुष्टि	प्राप्ति	कुशलता	मंत्रो दय	विद्या गम	शत्रुनाश	धन	धन	०
७	जाया	कीर्तिभंग	क्लेश	विपद	अश्वलाभ	गज लाभ	भूमि लाभ	भय	पाप	पाप	०
८	मृत्यु.	द्वेष	पदहा नि	रोग भय	धनप्राप्ति	विजय	स्वजन भेद	रोगभय	रोग	रोग	०
९	धर्म.	धर्महानि	धातु क्षय	धन क्षय	विविध भोग	विद्या भोग	विजय	धर्मदूषण	धर्म नाश	धर्म नाश	०
१०	कर्म.	सुहृद् वृद्धि	शोक	रत्न लाभ	विजय धन	सौख्य	शयना सनला	कीर्तिनाश	अशुभ	अशुभ	०
११	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	लाभ	०
१२	व्यय.	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	व्यय	०

अथस्तंभस्थापनेस्तंभचक्रम्
पृ. १३७ श्लो. ८४.

सूर्यनक्षत्रात्	२	२०	६	०
फल	धन नाश	सौख्य	मृत्यु	०
त्याज्य नक्षत्र	धनि.	श.	पू.भा.	उ.भा. रेवती

अथद्वारशाखारोपणमु. यंत्रम्
पृ. १३८ श्लो. ८६.

ग्राह्य नक्षत्रा.	अश्वि.	उ. ३	ह.	पुष्य	श्र.मृ.	स्वा. रे. रो.	
तिथि फल	१ दुःख	२ धनना.	३ शुभ	४ अशुभ	५ धन	६ अशु.	७ धन
तिथि फल	८ शुभ	९ शुभ	१० ध. ना.	११ ०	१२ ०	१३।१४अशु. १५।३०अशु.	
त्याज्य वारादि	मं.	श. चं.	सू.	त्रिपुष्कर	कृ. ध.	श. उभा. पू. रे.	

अथद्वारशाखाचक्रम्. पृ. १३८ श्लो. ९४

सूर्यभान्नक्षत्र.	४	८	८	३	४
अंग	शिर	कोण	शाखा	अधः	मध्ये
फलम्	राज्य	उद्वास.	लक्ष्मी	मृत्यु	सौख्य

संक्रांतितोद्वारविचारश्च. पृ.१३९श्लो.९७.

दिशा.	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
संक्रांति.	कर्क ४ मकर १०	तुल ७ मेष १	सिंह ५ कुंभ ११	वृषभ २ वृश्चिक८
अशुभ संक्रांति	मीन	धन	मिथुन	कन्या

अथचुल्लीस्थापनमु यंत्रम्
पृ. १३९ श्लो १००

वाराः	सू.	सो.	मं.	बु.	बृ.	शु	श.
वारफल.	रोग	धनना.	भार्या नाश	लाभ	लक्ष्मी	धन धान्य	दरिद्र
ग्राह्य नक्षत्र.	पूर्वा ३	अर्द्रा	रो. पुष्य	उत्तर ३	अश्विनी	चंद्र बल	०

अथचुल्लीचक्रम्.
पृ. १३९ श्लो. १०३.

सूर्य भात्	६	४	८	५	२	२
फल	सुख	मृत्यु	सौख्य	नाश	भोग	मृत्यु
अंग	पृष्ठ	शिर	बाहु	गर्भ	कर	पाद

अथ कूपवाप्यारंभमुहूर्त्तयंत्रम्. पृ. १४० श्लो. १०९.

कूपारंभ नक्षत्र.	हस्त	पुष्य	धनिष्ठा	शतभिषा	अनुराधा	मघा	उत्तरा ३	रोहिणी
वापीनक्षत्र	स्वा	अश्वि.	हस्त	पुष्य	अनुराधा	पुनर्वसु	रेवती	शतभिषा
वाराः	आदित्य	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	०
वारफलम्	जलनाश	पूर्ण जल	वालुका	बहुजल	मिष्टजल	क्षारजल	जलं नास्ति	०
लग्नफलम्	१२ जल	४ जल	१० जल	२ जल	११ जल	८ जल	७ जल	१।३।५।६। ९ जलं नास्ति

अथ गृहप्रवेशमुहूर्त्तयंत्रम् पृ. १४३ श्लो. १२२.

नूतनगृह प्रवेशे मासाः	माघ	फाल्गुन	वैशाख	ज्येष्ठ	जीर्णगृह प्रवेशे मासाः	माघ फाल्गुन	वैशाख ज्येष्ठ	श्रावण मार्गशीर्ष कार्तिक
मास फलम्.	धनलाभ	पुत्र धन लाभ	पशुपुत्र लाभ	पशुपुत्र लाभ	मास फलम्.	शुभ	शुभ	शुभ
नूतनगृ. त्याज्यमासाः	कन्यासू. कार्तिके	कुंभ सू. चैत्रे	कर्कसू. आषाढे	मार्गशीर्षे	जीर्णनक्षत्राणि.	धनि.	पुष्य	चि.स्वा.
द्वारवशात्तिथयः	दक्षिणे १।६।११	पश्चिमे २।७।१२	उत्तरे ३।८।१३	पूर्वद्वारे ५।१०।१५		शतभिषा	उत्तरा ३	रोहिणी
वाराः	गुरु	शुक्र	बुध	शनि चौरभय		मृगशिर	रेवती	अनुराधा
ग्राह्यनक्षत्राणि	चित्रा	उत्तरा ३	रोहिणी	मृगशिर	अनुरा.	धनिष्ठा	रेवती	शतभिषा
फलंच	आयु	धन	आरोग्य	पुत्र	पौत्र	कीर्ति	धन	धन
निषिद्धनक्षत्राणि.	हस्त	स्वाति	अश्विनी	श्रवण	पुनर्वसु	भरणी ज्ये.मू.	कृ.आर्द्रा पुष्य	२श्ले.मघा पूर्वा ३ वि.
फलंच	हानि	हानि	हानि	हानि	हानि	मृत्यु	मृत्यु	मृत्यु
वास्तुपूजा नक्षत्रा.	चि.	श.	स्वा.	ह.	पुष्य.पुन.	रो.रे.	मू श्र. मृ.अनु.	ध. उत्तरा अश्विनी.
लग्न शुद्धि	शुभग्रह १।४।७।१०	शुभ ९।५	शुभ २।३	पापग्रह ३।६।११	चंद्रमा २।३।४	चंद्रमा ५।७।९	चंद्रमा १०।११	चतुर्थस्थानशुद्ध.स्थिरलग्न
त्याज्य योगादि	कुयोग	पापलग्न	चरलग्न	चरांशक	क्रूरग्रहयुक्तनक्षत्र	उत्पातादि दूषितनक्ष.	लातदोष दग्धातिथि	क्रांतिसाम्यदोष.
त्याज्य	क्रूरवेध	क्रूरमुक्त नक्षत्र	क्रूरगंतव्य नक्षत्र	अकपाट गृहे	अनाच्छन्न गृहे	सम्मुखदक्षिणशुक्र	बलिदान रहितगृहे	चंद्रबलरहित.कृष्णप.

अथ वामार्कज्ञानयंत्रम्. पृ. १४८ श्लो. १५७.

दिशा	पूर्वमुखे	दक्षिणमुखे	पश्चिममुखे	उत्तरमुखे
लग्नात् सूर्य स्थान	८।९।१०।११।१२	५।६।७।८।९	२।३।४।५।६	११।१२।१।२।३
वामो.	रवि	रवि	रवि	रवि

गृहप्रवेश कलशचक्रम्. पृ. १४८ श्लो. १५८.

सूर्यनक्षत्रात्	१	४	४	४	४	४	३	३
अङ्ग	मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	कं	गुदा
फल	मृति	गमन	धन	लक्ष्मी	वैर	शोक	स्थिरता	सुख

अथ सर्वदेवानां प्रतिष्ठामुहूर्त्तयंत्रम्. पृ.१४८ श्लो. १६१.

सर्वदेवप्र० मासाः	चैत्र	फाल्गुन	वैशाख	ज्येष्ठ	माघ	शुक्ल पक्ष	उत्तरायण	०
लिंगस्थापने विशेषः	श्रावण	भाद्रपद	आषाढ	देवीस्थापने माघविशेषः	आश्विन	माघ	कृष्णपक्ष	दक्षिणायन
सर्वदेवानां तिथयः	५	२	३	७	१०	१५	१३	०
देवतांतरेण तिथयः	प्रतिपदा १ कुबेरस्य	द्वितीया २ लक्ष्म्याः	तृतीया ३ भवान्याः	चतुर्थी ४ गणेशस्य चतु. शिव.	पंचमी ५ सोमस्य	षष्ठी ६ स्कंदस्य पूर्णि. ब्रह्म.	सप्तमी ७ सूर्यस्य	द्वादशी १२ विष्णोः
वाराः	सोम	गुरु	शुक्र	बुध	लग्नानि ८।५।१।३ ४।६।७	५ ३ सू. शिव	६ ११ हरि ब्रह्मा	स्थिरेषु सर्वदेवाः
नक्षत्रा.	पू. षा. उत्त. षा	मू.उ.फा. उ. भा.	ज्ये.	श्र. पुष्य	रो. मृ.	पू. भा.	हस्त अनु.	अश्वि.स्वा.
मुहूर्ताः	प्राजापत्ये शयनं	श्वेते उत्थापनं	ब्राह्मे स्थापनं	अभिजित स्थापनं	पूर्वाह्णः	शुभदिने	विषुवे १।७ सं.	षडशीती ९।३।६ १२ सं.
देवता नक्षत्राणि	विष्णु प्र. अनु. चि.	ब्रह्मणः रो.श्र.ज्ये. पुष्ये	इंद्रस्य रो.ज्ये.पु.	सूर्यस्य हस्ते	कुबेरस्कंदयोःअनु.	दुर्गायाः मूले	बौद्धस्य श्रवणे	धर्मस्य रेवत्यां
	गणेशस्य रेवती	सर्पस्य रेवती	सरस्वत्या रेवती	ब्रह्मणांच्या सस्य.पुष्ये	दिग्पालानां धनि.	चंद्रबले	शुभशकुने	

भावाः अथ देवप्रतिष्ठायां लग्नादिद्वादशभावस्थितग्रहफलयं. पृ.१५२श्लो.१९६

ग्रहाः	तनु१	धन २	सहज ३	सुहृत् ४	सुत ५	रिपु ६	जाया ७	मृत्यु ८	धर्म ९	कर्म १०	लाभ ११	व्यय १२
सूर्य	मृत्यु	अशुभ	शुभ	दुःख	हानि	शत्रुना.	व्याधि	मृत्यु	नाश	भंगद	ला.	व्यय
चंद्र	मृत्यु	शुभ	शुभ	सुख	पुत्र	श.ना.	शुभ	मृ.	शुभ	कीर्ति	ला.	व्य.
मगल	मृत्यु	अ.	शु.	दुःख	हानि	श.ना.	व्या.	मृ.	नाश	भं.	ला.	व्य.
बुध	धन	शु.	शु.	सुख	सुख	श.वृ.	शु.	मृ.	शु.	की.	ला.	व्य.
गुरु	धान्य	शु.	शु.	सुख	पुत्र	श.वृ.	शु.	मृ.	शु.	की.	ला.	व्य.
शुक्र	सुख	शु.	शु.	सुख	सु.	श.वृ.	शु.	मृ.	शु.	की.	ला.	व्य.
शनि	मृत्यु	अ.	शु.	दुःख	हा.	श.ना.	व्या.	मृ.	नाश	भं.	ला.	व्य.
रा.के.	मृत्यु	अ.	शु.	दुःख	हा.	श.ना.	व्या.	मृ	नाश	भं.	ला.	व्य.

अथ तडागकूपवापीप्रतिष्ठोत्सर्गमुहूर्त्तचक्रम्.पृ. १९३ श्लो. २०७.

माशाः सौरसानेन	कर्क	मकर	मीन	कुंभ	वृष	मिथुन	वृश्चिक	कन्या	तुल	सिंह	मेष	धन
फलम्.	पुत्र लाभ	सौख्य	धन यश	बहूदक	वृद्धि	वृद्धि	लक्षण	पितृ तृप्ति	शाश्वत जल	जल नाश	जल नाश	जल नाश
नक्षत्राणि	रो.	उत्तरा ३	पुष्य	अनु.	शतभिषा	मघा	धनिष्ठा	बुधवार	गुरुवार	भृगुवार	सोम	शुक्ल पक्षः
लग्नानि.	५	२	३	४	६	७	०	१०	११	१२	जल भांश	सौम्य योगे

अथ नवीनदुर्गप्रवेशमु यंत्रम् पृ.१९९ श्लो.२२३.

नक्षत्राणि.	रोहिणी	रेवती	हस्त	चित्रा	स्वाति	पुष्य	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	अनुराधा.	शुभ वार	चन्द्र बल

इति वास्तुप्रकरणस्थविषयाणां यंत्राणि.

अथ शिवप्रोक्तद्विघटीमुहूर्त्तचक्राणि.पृ.१९७ श्लो. ७.

मुहूर्तनामानि.	रौद्र	श्वेत	मैत्र	चार्वट	जयदेव	वैरोचन	तुरग	अभिजित्	रावण	बालव	विभीषण	सुनदन	याम्य	सौम्य	मार्गव	सविता
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
कृत्यानि.	रौद्रकार्य.	कुंजरबंधन.	खातदानादिशु.	स्तंभन.	सर्वकार्यसिद्धि	शुभपट्टाभिषेक.	शस्त्रसाधन.	ग्रामप्रवेशादि.	वैरकार्य.	युद्धकार्य.	शुभकर्म.	यंत्रचालनादि.	मारणकर्म.	सभागृहप्रवेश.	स्त्रीसेवन.	विद्यारंभ.

अथ वारेषु मुहूर्त्तोदयचक्रम्.
पृ. १५७ श्लो. १९.

वाराः	सू	चं	मं	बु	बृं	शु	श
मुहूर्ताः	रौद्र	मैत्र	जयदेव	तुरग	रावण	विभीषण	याम्य

अथ गुणोदयफलचक्रम्.
पृ. १९८ श्लो. १७.

वाराः	सू	चं	मं	बु	बृ	शु	श
गुणाः फलं	तमोगु. श्यामव. अशु.क.	सत्त्वगुण गौरवर्ण सिद्धि	रजोगु. श्या.व. धनसंप.	तमोगु. श्या.व. अशुभ	सत्त्वगु. गौरव. सिद्धि	रजो. श्याव. धनसं.	तमो. श्याम. अशु.क.

अथ रेखाज्ञानचक्रम्.
पृ. १९८ श्लो. २०.

रेखानाम रेखाफल.	अमृतरेखा सिद्धिकर	कालरेखा मृत्युकर	विघ्नरेघा विघ्नकर	शून्यरेखा कार्यहानि
रेखा संज्ञा.	श्रीः विष्णु अमृत ठ सिद्धि	मृत्यु पाद यम काल ♆	विघ्न घनु युग्मठठ गणाधिप	शून्य नभ ख अभ्र०

अथ राशिगुणचक्रम्.
पृ. १९८ श्लो. २३.

गुणाः वर्णाः	सत्त्व गौर	राजस श्याम	तामस कृष्ण
घात राशि घात वर्णानि	धन मीन कर्क गौरवर्ण	तुल वृष मेष श्यामवर्ण	कन्यामिथु. सिं.कुं. मकर कृष्णवर्ण.

अथ माघ-फाल्गुन-चैत्र-वैशाख-श्रावण-भाद्रपद-मासेषु मुहूर्त्तानि नामराशितः शोध्यानि. पृ. १९९ श्लो. २८

रविदिनमु.	रौ.	श्वे.	मै.	चा.	जय	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सुनं.	या.	सौ.	भा.	सा.
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ
रविरात्रौ.	श्वे.	मै.	चा.	ज.	वै.	तु.	अ.	रा.	वा.	वि.	सु.	था.	सौ.	भा.	सा.	रौ.
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०	♆	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ
सोमदिने	मैत्र	चा.	ज.	वै.	तु.	अ	रा.	वा.	वि.	सु	या.	सौ.	भा.	सा.	रौ.	श्वे.
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ
सोमरात्रौ.	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सो	भा	सा	रौ	श्वे	मै
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	♆	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	.ठ	ठ
भौमदिने.	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	♆	♆	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ
भौमरात्रौ.	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	ठ	ठ	♆	♆	ठ	ठ	ठ	♆	♆	♆	ठ	ठ	ठ	०	०	ठ

माघफाल्गुनचैत्रवैशाखश्रावणभाद्रपमासेषु मुहूर्त्तानि. पृष्ठ १६० श्लो. ३०

बुधदि.	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ठठ		ठ	ठ	☿	☿	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठ	ठ	☿	☿	ठ
बु.रात्रौ	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठठ		०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठठ	
गुरुदिने	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठठ		०	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठठ	
गु.रात्रौ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	☿	ठ	ठ	ठ	☿	☿	☿	☿	०	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठ	ठ
शु.दिने	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	ठ	ठ	☿	☿	०	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठठ		ठ	ठ	ठ	०
शु.रा.	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	☿	☿	ठ	ठ	ठ	०	ठठ		☿	☿	ठ	ठ	ठ	०	☿	☿
श.दिने	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	☿	ठ	०	०	०	०	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	०	ठ	ठ
श.रा.	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	०	☿	☿	ठ	ठ	ठ	०	ठठ		ठठ		ठ	ठ	ठ	☿	☿

अथाश्विनकार्तिकमार्गशीर्षपौषमासेषु रव्यादिवारेषु मुहूर्त्तानि. पृ. १६१ श्लो. ३६

र. दिने	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	बि	सु	या	सौ	भा	सा
गुण	त	त	स	रा	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ठ	ठ	ठ	ψ	ψ	ठठ		ठ	ठ	०	०	ψ	ठ	ठ	ठ	ψ
र.रत्रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ψ	ठठ		०	ठ	ठ	ठ	ठठ		ψ	ψ	ठ	ठ	०	ठ	ठ
सो.दि	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	ψ	ठठ		०	०	ठ	ठ	ठ	०	ठठ		ठ	ठ	०	ठ	ठ
सो.रा.	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	ψ	०	ठठ		ठ	ठ	ठ	ठठ		ठठ		ठ	ठ	०	ठ	ठ
भौ.दि.	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ठठ ठठ			०	ठ	ठ	०	ठठ		ठ	ठ	ठ	०	ठठ ठठ		
भौ.रा.	वै	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	ठठ		ठठ		०	ठ	ठ	ठ	ठठ		०	ठ	ठ	ठ	ठठ	
बुधदि.	तु	अ	रा	वा	त्रि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
गुण.	त	त	स	स		र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ठठ		ठ	ठ	ठ	ψ	ψ	ठ	ठ	ठ	ठ	०ठ		ठठ		ठ
बु.रात्रौ	अ	रा	वा	बि	सु	या	सो	भा	सा	रो	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
गुण.	र	र	त	त	रा	रा	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ψ	ψ	ठ	ठ	०	ψ	ψ	ठ	ठ	ठ	ठठ		ठठ		०	ठ

आश्विनकार्तिकमार्गशीर्षपौषमासेषु मुहूर्तानि. पृष्ठ १६२ श्लो. ४१

गुरुदिने	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ȯ	ȯ	०	ȯȯ		ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	ȯȯ		ȯȯ		०	०	ȯ
गु.रात्रौ	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	०	ȯȯ		ψ	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	०	ȯȯ		ȯ
शु.दिने	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ȯ	ȯȯ		ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	ȯȯ		ȯȯ		ȯ	ȯ	ȯ	०	ψ
शु.रात्रौ	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ȯȯ		ȯ	ȯ	ȯ	०	ȯȯ		ȯ	ȯ	ȯ	ȯȯ		०	ȯȯ	
श.दिने	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ψ	ȯ	०	०	०	ȯ	ȯ	०	ȯ	ψ	ȯ	ȯ	०	ȯ	ȯ	ψ
श.रात्रौ	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ψ	०	ψ	ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	ȯȯ		ȯȯ		ȯ	ȯ	ȯ	०	ψ

अथ ज्येष्ठाषाढमलमासेषु रव्यादिवारेषु मुहूर्तानि पृष्ठ १६२ श्लो. ४४

र. दिने	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	०	०	ȯ	ȯ	ȯȯ		ψ	ȯȯ		०	ȯ	ȯ	ȯ	ȯ	ȯȯ	

अथ ज्येष्ठाषाढमलमासेषु मुहूर्तानि पृ. १६२ श्लो. ४४

र.रा.	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	यः	सौ	भा	सा	रौ
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०
च.दिने	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०
चं.रात्रौ	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	♆	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	♆
भौ.दिने	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	०	०	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ
भौ.रा	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज
गुण	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ	♆	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ
बु.दिने	तु	अ	रा	वा	ति	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै
गुण	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	♆
बु.रात्रौ	अ	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु
गुण	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	ठ	०	०	ठ	ठ

ज्येष्ठाषाढमलमासेषु मुहूर्तानि. पृ. १६२ श्लोक ४७.

गु.दि	रा	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	δ	δ	δ	δ	०	δ	०	δ	०	ψ	ψ	ψ	ψ	δ	δ	δ
गु.रा.	वा	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	०	०	δ	δ	δ	०	δ	δ	δ	δ	δ	δ	δ	δ	ψ	ψ
शु.दि.	वि	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	δ	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	δ	δ	δ	δ	δ	δ	ψ	ψ
शु.रा.	सु	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि
गुण.	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र
रेखा.	δ	δ	δ	δ	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	δ	ψ	ψ	०	δ
श.दि.	या	सौ	भा	सा	रौ	श्वे	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु
गुण.	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स
रेखा.	δ	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	०	δ	०
श.रा.	सौ	भा	सा	रौ	श्वें	मै	चा	ज	वै	तु	अ	रा	वा	वि	सु	या
गुण.	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त	स	स	र	र	त	त
रेखा.	δ	δ	δ	δ	δ	०	०	δ	δ	δ	δ	०	δ	δ	δ	०

अथ अङ्गस्फुरणफलम्. पृ. १६९ श्लो. ५०

पुरुषाणां दक्षिणांगेषु स्त्रीणां वामांगेषु च शुभफलं ज्ञेयम्.

अंगानि.	फलम्	अङ्गानि	फलम्.
शिरसि	पृथ्वीलाभ	स्कंधे	मित्रसमागम
ललाटे	स्थानलाभ	बाहौ	प्रियसमागम
भ्रुवोर्मध्ये	प्रियाप्ति	बह्वोर्मध्ये	धनलाभ
भ्रुवोर्युग्मे,	सुख	हस्ते	धनलाभ
कर्णे	शुभश्रुति	वक्षसि.	विजय
नेत्रे	प्रियदर्शन	कट्यां	प्रमोदं बलंच
दृक्कोणभागयो:	लक्ष्मी	पार्श्वे	प्रीति
अध:पक्ष्मणि	जय	नाभौ	स्थानात्प्रचलन
गंडदेशे	स्त्रिया:सौख्यं	अंत्रके	कोशवृद्धि
नासायां	गंधज सुख	उदरे	कोशप्राप्ति
उत्तरोष्ठे	वाग्वाद:	जंघे	प्रियासंगम
अधरोष्ठे	स्त्रियाश्चुंबनं	गुदे स्फिचि (कुल्ला)	वाहनलाभ
हनौ	भयं	लिंगे	स्त्रीसमागम
मुखे	मिष्टभोजन	वृषणे	पुत्रलाभ
कंठे	आभूषणलाभ	बस्तौ	अभ्युदय
ग्रीवायां	शत्रुभय	ऊरौ	वस्त्रलाभ
पृष्ठे	पराजय.	जानुनि	रिपुसंधि
जंघायां	हानि	पादोपरिभागे	स्थानलाभ
पादाध:	लाभ.	०	०

अथ पल्लीसरठयो: पतनारोहणफलम्. पृ. १६६ श्लो. ६४

अंगानि.	फलम्.	अङ्गानि.	फलम्.
ब्रह्मरंध्रे	रज्यप्राप्ति	वामभुजे.कूर्परे.मणिबंधे	धननाश
ललाटे	स्थानलाभ	वामकरतले	हानि
कर्णयो:	भूषणलाभ	वामहस्तपृष्ठे	धननाश
नेत्रयो:	प्रियदर्शन	हृदये	राजसन्मान
नासिकायां	सुगंधलाभ	दक्षिणस्तने	सौभाग्य
मुखे	मिष्टान्नभोजन	दक्षिणपार्श्वे	भोगलाभ

कपोलयो:	सौख्य	वामस्तने	यशधन
हनौ	महाभय	वामपार्श्वे	पीडा
भृकुट्यां	विग्रह	वामकुक्षौ	शिशो: पीडा
कंठे	व्यसनागम	दक्षिणकुक्षौ	पुत्रलाभ
वंशे	कलह	उदरे	पुत्रप्राप्ति
दक्षिणपृष्ठे	सुख	दक्षिणकट्यां	वस्त्रलाभ
वामपृष्ठे	रोगादि	वामकट्यां	सुखनाश
दक्षांसे	विजय	नाभौ	मनोरथपूर्ण
वामांसे	शत्रुभय	बस्तौ	गर्भनाश
द.भुजे.कूर्परे.मणिबंधे	इष्टलाभ	गुह्ये	मृत्यु
दक्षिणहस्ततले	द्रव्य	गुदे	रोग
दक्षिणहस्तपृष्ठे	श्रेष्ठव्यय	दक्षिण ऊरौ	प्रीतिवर्द्धन
वामऊरौ	मृत्युदु:ख	परितोभ्रमणे	नाश
दक्षिणजानौ	श्रेष्ठवाहन	दक्षिणगुल्फे	प्रियागम
वामजानौ	पशुहानि	वामगुल्फे	कलह
दक्षिणजघने	सुख	पादयो:	गमन
वामजघायां	क्लेश	पुरोभागे	दुष्टवार्ता
दक्षिणकुल्ले	धनवृद्धि	पृष्ठत: वामभागे	नष्टवार्ता हानि
वामकुल्ले	स्त्रीवियोग	दक्षिणभागे	धनलाभ

श्रीसूर्यादिग्रहेभ्यो नम: ।

अथ जातकोक्तविंशोत्तरीदशाचक्रम्.

ग्रहा:	सूर्य	चंद्र	मंगल	राहु	बृहस्प.	शनि	बुध	केतु	शुक्र
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०
नक्षत्राणि	कृत्ति.उ.फा.उ.षा	रो.ह.श्र.	मृ.चि.ध.	आ.स्वा.श.	पुन. वि.पू.भा.	पु. अनु.उ.भा.	ऽश्ले.ज्ये.रेवती	मघा.मू.अ.	पू.फा.पू.षा.भ.

अथ सूर्यदशांतराणि. १

ग्रहाः	सू	चं	मं	रा	जी	श	बु	के	शु
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

अथ चन्द्रदशांतराणि २

ग्रहाः	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु	आ
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ भौमांतराणि. ३

ग्रहाः	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	आ	चं
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

अथ राहुदशान्तराणि. ४

ग्रहाः	रा	गु	श	बु	के	शु	आ	चं	भौ
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

अथ गुरोर्दशांतराणि. ५

ग्रहाः	वृ	श	बु	के	शु	आ	चं	भौ	रा
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

अथ शनिदशांतराणि. ६

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

अथ बुधदशांतराणि. ७

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ	श
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

अथ केतुदशान्तराणि. ८

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

अथ शुक्रदशांतराणि. ९

ग्रहाः	शु	आ	चं	भौ	रा	बृ	श	बु	के
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ रविदशामध्ये रव्यंतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि १०

ग्रहाः	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के	शु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घटी	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०
पल	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशामध्ये चंद्रांतरं तन्मध्ये प्रत्यंतराणि. ११

ग्रहाः	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां भौमान्तरे प्रत्यंतराणि. १२

ग्र.	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	७	१८	१६	१८	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां राहोरंतरे प्रत्यंतराणि. १३

ग्रहाः	ग	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां गुरोरंतरे प्रत्यंतराणि. १४

ग्र.	बृ	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां शन्यंतरे प्रत्यंतराणि. १५

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	गु
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. १६

ग्र.	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	गु	श
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	१५	१०	१८
घ.	२९	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. १७

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ सूर्यदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. १८

ग्रहाः	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मा.	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दि.	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि. १९

ग्रहाः	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दि.	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां भौमान्तरे प्रत्यंतराणि. २०

ग्र.	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	र	चं
मा.	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दि.	१२	१	२८	३	२०	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशायां राहोरंतरे प्रत्यंतराणि. २१

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	.र	चं	मं
मा.	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दि.	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	१
घ.	०	२०	३०	३०	३०	०	०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां गुर्वन्तरे प्रत्यंतराणि. २२

ग्र.	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दि.	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां शन्यंतरे प्रत्यंतराणि. २३

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा.	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दि.	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ.	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. २४

ग्र.	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा.	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दि.	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. २५

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु
मा.	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दि.	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चंद्रदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. २६

ग्रहाः	शु	सू	चं	मं	रा	बृ	श	बु	के
मा.	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दि.	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ चन्द्रदशायां स्र्येतरे प्रत्यंतराणि. २७

ग्रहाः	सू	चं	म	रा	जी	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दि.	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ मंगलदशायां मंगलान्तरे प्रत्यंतराणि. २८

ग्र.	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	र	चं
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ मंगलदशायां राहोरंतरे प्रत्यंतराणि. २९

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	र	चं	मं
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ मंगलदशायां गुरोरन्तरे प्रत्यंतराणि. ३०

ग्र.	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ मंगलदशायां शन्यंतरे प्रत्यंतराणि. ३१

ग्रहाः	श	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	जी
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

अथ मंगलदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. ३२

ग्र.	बु	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श
मा.	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प्र.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

मंगलदशायां केतोरंतरे प्रत्यतराणि. ३३

ग्रहाः	के	शु	आ	चं	भौ	रा	गु	श	बु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

मंगलदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ३४

ग्रहाः	शु	आ	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के
मा.	२	०	१	०	२	२	२	१	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलदशायां रव्यंतरे प्रत्यंतराणि. ३५

ग्रहाः	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

मंगलदशायां चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि. ३६

ग्रहाः	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र
मा.	०	०	१	१	१	०	०	१	०
दि.	१७	१२	१	२९	३	२८	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां राहोरंतरे प्रत्यंतराणि. ३७

ग्रहाः	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं	मं
मा.	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां गुरोरंतरे प्रत्यंतराणि. ३८

ग्रहाः	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दि.	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां शनेरंतरे प्रत्यंतराणि. ३९

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा.	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दि.	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. ४०

ग्रहाः	बु	के	शु	आ	चं	भौ	रा	गु	श
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दि.	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ४१

ग्रहाः	के	शु	र	चं	मं	रा	गु	श	बु
मा.	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दि.	२२	३	१८	१	२२	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ४२

ग्र :	शु	आ	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा.	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दि.	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां रव्यंतरे प्रत्यंतराणि. ४३

ग्रहाः	र	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि.४४

ग्रहाः	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	र
मा.	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दि.	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहुदशायां भौमांतरे प्रत्यंतराणि. ४५

ग्रहाः	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु	र	चं
मा.	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दि.	२२	२४	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां गुर्वन्तरे प्रत्यंतराणि.४६

ग्रहाः	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
मा.	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दि.	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घ.	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां शन्यन्तरे प्रत्यंतराणि. ४७

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	बृ
मा.	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दि.	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घ.	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. ४८

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा.	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दि.	२५	१७	१६	१०	८	१७	२	१८	९
घ.	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ४९

प्र.	के	शु	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि.	१९	२६	२६	२८	१९	२०	१४	२३	१७
घ.	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि.५०

प्र.	शु	सू	च	म	रा	गु	श	बु	के
मा.	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दि.	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ५१

प्र.	सू	चं	मं.	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	२४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घ.	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि. ५२

प्र.	चं	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	१	०	२	२	१	२	०	२	०
दि.	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां भौमांतरे प्रत्यंतराणि. ५३

प्र.	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	३६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरुदशायां राहोरंतरे प्रत्यंतराणि. ५४

प्र.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
मा.	४	२	४	४	१	४	१	२	१
दि.	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथशनिदशायांशन्यंतरेप्रत्यंतराणि५५

प्र.	श	बु	के	शु	सू	च	म	रा	गु
मा.	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दि.	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०	२७	२४
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शनिदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि ५६

प्र.	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा.	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दि.	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३१	३०	२७	४५	३१	२१	१२	२५
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शनिदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ५७

प्र.	के	शु	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु
मा.	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दि.	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१६	३०	५७	१५	१६	५१	१२	१०	३१
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

शनिदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ५८

प्र.	शु	सू	चं	भौ	रां	गु	श	बु	के
मा.	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दि.	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायां सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ५९

प्र.	सू	चं	भौ	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घ.	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायां चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि. ६०

प्र.	चं	म	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दि.	१७	३	२५	१६	०	२०	३०	५	२८
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायां भौमांतरे प्रत्यंतराणि. ६१

प्र.	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दि.	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घ.	१६	५१	१२	१०	३१	१६	३०	५७	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शनिदशायां राहोरंतरे प्रत्यंतराणि. ६२

प्र.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा.	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दि.	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
व.	५४	४८	२७	२९	५१	०	१८	३०	५१
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शनिदशायां गुरोरंतरेप्रत्यंतराणि. ६३

प्र.	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दि.	१६	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घ.	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

बुधदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. ६४

प्र.	बु	के	शु	सू	चं	म	रा	गु	श
मा.	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दि.	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घ.	४०	३४	३०	२१	१५	३४	३०	२६	१६
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

अथ बुधदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ६५

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु
मा.	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दि.	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	०
घ.	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१	३४
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

अथ बुधदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ६६

ग्रहाः	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा.	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दि.	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२४	२९
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशायां सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ६७

ग्रहाः	सू	चं	म	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दि.	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घ.	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशायां चंद्रान्तरे प्रत्यंतराणि. ६८

ग्र.	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दि.	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घ.	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशायां मंगलांतरे प्रत्यंतराणि. ६९

ग्रहाः	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दि.	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घ.	४९	३३	३६	३१	३४	४९	३०	५१	४५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

अथ बुधदशायां राहोरन्तरे प्रत्यंतराणि. ७०

ग्र.	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा.	४	२	४	४	१	५	१	२	१
दि.	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घ.	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशायां गुरोरंतरे प्रत्यंतराणि. ७१

ग्रहाः	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा
मा.	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दि.	२८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

अथ बुधदशायां शन्यंतरे; प्रत्यंतराणि. ७२

ग्र.	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा.	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दि.	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घ.	२५	१६	३१	३०	१७	४५	३१	२१	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ७३

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ.	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९
प.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

केतुदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ७४

ग्रहाः	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा.	२	०	१	०	०	१	२	१	०
दि.	१०	२१	५	२४	३	२९	६	२८	२४
घ.	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायां सूर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ७५

ग्रहाः	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ.	१८	३०	३१	५४	४८	५७	३१	३१	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायां चंद्रांतरे प्रत्यंतराणि. ७६

ग्रहाः	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दि.	१७	१२	१	२९	३	२८	१२	५	१०
घ.	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायां भौमांतरे प्रत्यंतराणि. ७७

ग्रहाः	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दि.	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५
प.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

केतुदशायां राहोन्तरे प्रत्यंतराणि. ७८

ग्रहाः	रा	गु	श	बु	के	शु	सू	चं	मं
मा.	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दि.	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५५	३३	३	०	५४	३०	३
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायां गुरोरंतरे प्रत्यंतराणि. ७९

ग्रहाः	गु	श	बु	के	शु	सू	च	मं	रा
मा.	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दि.	१४	२३	१७	१९	६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

केतुदशायां शनेरंतरे प्रत्यंतराणि. ८०

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु
मा.	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दि.	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१६	३०	५७	१५	१६	५५	१२
प.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

केतुदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. ८१

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श
मा.	१	०	१	०	०	१	१	१	१
दि.	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६	३१
प.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्रदशायां शुक्रांतरे प्रत्यंतराणि. ८२

ग्रहाः	शु	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के
मा.	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दि.	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां सुर्यांतरे प्रत्यंतराणि. ८३

ग्रहाः	सू	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु
मा.	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दि.	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां चंद्रान्तरे प्रत्यंतराणि ८४

प्र.	चं	मं	रा	गु	श	बु	के	शु	सू
मा.	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दि.	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां भौमांतरे प्रत्यंतराणि. ८५

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
मा.	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दि.	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां राह्वन्तरे प्रत्यंतराणि. ८६

प्र.	रा	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	भौ
मा.	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दि.	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां बृहस्पत्यंतरे प्रत्यंतरा० ८७

ग्रहाः	वृ	श	बु	के	शु	र	चं	भौ	रा
मा.	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दि.	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां शन्यंतरे प्रत्यंतराणि. ८८

प्र.	श	बु	के	शु	र	चं	भौ	रा	जी
मा.	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दि.	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां बुधांतरे प्रत्यंतराणि. ८९

ग्रह :	बु	के	शु	र	चं	भौ	रा	जी	श
मा.	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दि.	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्रदशायां केत्वंतरे प्रत्यंतराणि. ९०

प्र.	के	शु	र	चं	भौ	रा	वृ	श	बु
मा.	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दि.	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०
प	०	०	०	०	०	०	०	०	०

समाप्त.

मुद्रक और प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅंक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट.
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे. महाराष्ट्र - ४२१ ३०१
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS